श्रीगणेशायनमः ॥

रामचन्द्रिका सटीक ॥

बन्दना ॥

कवित्त ॥ कुंडलित शुंडगण्ड गुंजतमलिंदझुंड बंदन बिराजै मुंड अदभुत गतिको । बालशशिभाल तीनिलोचन विशालराजै फणिगणमाल शुभसदन सुमतिको ॥ ध्यावतबिनाहीं श्रमला- वत न वारनर पावत अपार मोदभार धनपतिको । पाप गनमं- दनको बिघन निकंदनको आठोयाम बंदनकरत गणपतिको १ स० ॥ जिनको अवलोकतहीं मनरंजन कंजनकी रुचिदूरि बहै- ये । मधुपालिन मालिनकी द्युतिशालिन आलिन दासनके म- नठैये ॥ निधिसिद्धि अशेषकेधाम सदासुख पूरणपूरण पुण्य न पैये । पगवन्दनकै गिरिजापतिके रघुनन्दन रामकी कीरतिगैये २ क०॥ तीन्यौरूप तेरेई प्रभावनित्रिदेव उतपति प्रतिपालप्रलै नि- जमति कीजिये। नारद गणेशव्यास बालमीकि शेष आदि तवकृत पूरो लोकलोक यशलीजिये ॥ सागर अपारहौं चहत पैरि पार जायो जग उपहासके प्रकाश भयभीजिये । शारदाभवानि कहौं जोरि युगपानि जन जानकीप्रसाद पै कृपाकी कोर दीजिये ३ दोहा ॥ उतबरणन रघुबर सुयश इतमम प्रणप्रतिपाल । ताते पवनकुमारको करौं भरोस बिशाल ४ बारबार बंदन करौं गुरु चरणन सुखपाइ । निजशिक्षा अंजन हृदय दियो अदृष्ट देखा- इ ५ कवित्त॥ दामिनीसी दमकति पीतपट भांति हीराहारबक पांतिको प्रकाश धरियतहै । जुगुनूसे भूषण जवाहिरजगत सुनि शबदमयूर साधुमोद भरियतहै ॥ जानकीप्रसाद जगहरित करन मीठे बैनरसबैरी ज्यों जवासे जरियतहै । राजसभा बिपदबिराजै छबिधाम नित रामघनश्यामको प्रणाम करियतहै ६ षट्पद ॥

परमप्रीति सियजासु संगदामिनि समसोहै । शीशमुकुट बहुरंग अंगसुर धनुछबि रोहै ॥ कौंधनि हँसनि सुबैन बारिजगहित बरसावहिं । निरखिसंत जनमोर जोरजय शोरमचावहिं ॥ मनचतुर किसान बिचारि करि नहिं उपाय देख्योबियो । घनश्याम रामउर आनिकरि स्वमतिसालि सिंचनकियो ७ दोहा ॥ तापरिपाक अघायमन चंचलतानि बिहाइ ॥ रामचन्द्रिकाको तिलक लाग्यो करनबनाइ ८ कठिनाई तम ग्रंथगृह थलथल बिबिध बिहारु ॥ तिलकदीप विनु अबुध क्यों लखैं पदारथ चारु ९ तासों सुमति बिचारि चित कीन्हे तिलक अपार ॥ देखिरीति तिनकी करचो हौं निजमति अनुसार १० घनाक्षरी ॥ मेदिनी अमर अभिधान चिंतामनि गनि हारावली आदिको समत उर धारिकै । बालमीकि आदि कबिताकी मतिभीनो दीनो ज्योतिष प्रमाण कहुं जुगुति निहारिकै॥ग्रंथ गुरुताके भय सकल न लीन्हों कीन्हों अरथ उकुतिपद कठिन ठिहारिकै । रामचन्द्रजूके चरणनि चितराखि रामचन्द्र चन्द्रिकाको कीन्हों तिलक बिचारिकै ११ चंचलाछंद ॥ नैनसूरजबाजि सिद्धि निशीश सम्मतचारु । शुक्र मंजुत शुक्लपक्ष सुरेश पूजितबारु ॥ चारुदिक् तिथिहस्ततार वरिष्ठयोग नवीन । रामभक्ति प्रकाशका अवतार तादिनकीन १२ सोरठा ॥ रावणादि मतिहीन रामसीय प्रति कटुबचन ॥ तहां अर्थ मृदुकीन जानि प्रभाव सरस्वती १३ दोहा ॥ शब्दलग्यो संबंधमें रह्योछंदमें शेष ॥ ताहि मिलायो आनिकै यों कहुंकथा बिशेष १४ कहुंपूरब पर कथनको लख्यो विरोध बिचारि॥ तहां निवारणको कियो निजमतिकी अनुहारि १५ जहांकेर पर्यायपद अर्थ बोधनहिं होहि॥तहां तासु इतिअंतदै लिख्यो दूसरोजोहि १६ तहां बिरोधाभासहै अर्थ बिरोध प्रकास ॥ लिख्यो अर्थ अविरोधही तासों सहितहुलास १७ कठिन शब्दको अर्थ जहँ एकठौर नहिं देखि । तहांदूसरे ठौरमें जानव लिख्यो बिशेखि १८॥इति॥

रामचन्द्रिका सटीक ॥

बालकमृणालनि ज्यों तोरिडारै सबकाल कठिनकरा
ल त्यों अकालदीहदुखको । बिपतिहरतहठि पद्मिनीके
पातसम पंक ज्योंपतालपेलि पठवैकलुषको ॥ दूरिकैकलं
कअंकभवशीश शशिसम राखतहैं केशवदास दासकेबपु
षको । साँकरेकी साँकरनसनमुख होतही तो दशमुख
मुखजोवै गजमुख मुखको १ ॥

बालक पांच वर्षको हाथीसों जैसे मृणाल पौनारोंको स
कालमें तोरि डारतहै तैसे गणेश कठिन औ कराल भयानक अ
अकाल कहे असमयको जो दीहकहे बड़ोपुत्र मरणादि दासनके
दुखहै ताको तोरतहैं औ जैसे बालकपद्मिनी कमलिनीके पा
तको हरततोरतहै तैसे येबिपत्ति दरिद्रादिको हरतहैं औ बालक
जैसे पगसोंदाबि पङ्ककहे कीचको पेलिकै पातालको पठावतहै
तैसे येकलुष जेपापहैं तिनको पठावतहैं इहांगजराजको त्याग
करि बालकसम यासों कह्यो पद्मिनी पत्रादि तोरनमें बालक
को उत्साह रहतहै तैसे गणेशजूको बिपत्त्यादि बिदारणमें बड़
उत्साह रहतहै कौतुकही बिदारतहैं औ गणेशजू दासनके कल
ङ्कको अङ्ककहे चिह्नको दूरिकरिकै जैसेभव महादेवको शीशक
शशिहै कलङ्करहित ताहीबिधि दासनके बपुष शरीरको राखतहैं

आजनके सन्मुख होतही साँकरराज भयादि ताकी साँकरबंधन जंजीरन कही वही रहति ऐसे जेगजमुख गणेशहैं तिनके मुखको दशमुखजे ब्रह्मा विष्णु महेश हैं तिनके मुखजोवे कहे निरखवे हैं स्तुति करत हैं अथवा दश मुखजे दशौंदिशाहैं तिनके तेमुखहैं अर्थ यहदशौंदिशनके प्राणी स्तुति करतहैं ॥ पंचबर्षो गजोबाल इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ तोइहां स्तुतिसों अभिकांक्षित बस्तु को मांगिबो सूचितभयो तासों आशीर्बादात्मक मंगलहै दूसरो अर्थ जो ग्रंथ कविलोग करतहैं ताकी कथा प्रथम संक्षेपसों कहत हैं सो युक्तिसों याही मंगलाचरणमें कह्योहै बालकथा पदते श्री-रामचन्द्रको जन्मसूचितभयो औ सबको कालरूपजे सुबाहु ता-ड़कादिहैं तिन्हैं मृणालन पौनारनिके समान सहजेही तोरि डारत भये मारतभये औ कठिन औ कराल कहे भयानक ऐसा जोधनुष है औ अकाल कहे कुसमयको जोदीह बड़ोदुखहै व्याह कृत उत्स-वमें परशुरामकृत दुख गर्बगति समेत तिनहुँनको त्योंकहे ताही प्रकार तो मृणालन बहुबचनहै तासों ताड़कादि बध धनुभंग परशुरामगतिभंग सर्बत्र समताकियो इतिबालकांडकथा ॥ औ राज्यत्यागरूप जो बिपत्तिहै ताको हठिकै हरत कहे ग्रहण करत भये भरतादिको कह्योनमान्यो आपपद्मिनी कमलिनीके पात कहे पुष्प पत्रसम सुकुमारहैं इति अयोध्याकांडकथा॥औ पंकज्यों कहे पंकके सदृश नीच ऐसा जो बिराधहै ताको पेलिकै पतालको पठावतभये बाल्मीकीय रामायणमें लिख्योहै कि काहू अस्त्रशस्त्र सों नमरै तब रामचन्द्र जीवतही गाड़ि लियो ताहीप्रकार कलुष पापरूप जे खरदूषणादिहैं तिनहुँनको मारयो इति आरण्य काण्ड कथा॥औ कलंककोहै अंकचिह्न जाके ऐसाजो बंधुपत्नीभोगी बालि है ताको दूरिकरत मारतभये औ दासजो सुग्रीवहै ताकोभव महा-देवके शीशके शशिके सम राखतभये जैसे भवशीश शशिकोराहुको भय नहीं रहत तैसे शत्रु भयरहित सुग्रीवको कियो अथवा महा-देवके माथेमें द्वितीयाको चन्द्रमा है यासों या जनायो कि भव

संसारको राज्यपाइ सुग्रीवकी ओर बढ़ती है है इति किष्किन्धा काण्ड तथा याहीपदमें सुन्दरीकाण्डहै ॥ केशव जे रामचंद्रहैं तिनके दास जे सुग्रीवहैं तिनके दास जे हनुमान्हैं ताके वपुष शरीरको भवशीश शशिसम राखतभये कि लंकामें प्रकाशित करते भये कलंकरूप जे सिंहिका अक्षयकुमारादि हैं तिनको दूरिकरिकै कहे मारिकै इति सुन्दरकाण्ड कथा ॥ औ रामचन्द्रके सन्मुख होतही बिभीषणके साँकर कष्टकी जो साँकर जंजीररही शीतकहे न रहतभई रामचन्द्रके दर्शनहीसों बिभीषणको दुख दूरिभयो तब दशमुख जो ब्रह्मा बिष्णु महेशहैं ते बिभीषणको मुख जोवतभये कि धन्यहै बिभीषण जाको रामचन्द्र अंगीकारकरयो औ गजमुख जे गणेशहैं तिन मुखकहे आदिदै और देवताहैं ते कोकहे कहां हैं अर्थ यह गणेशादि देवता तो जोवतहीभये औ साँकर जे यमादिकहैं तिनको साँकरकहे कष्टदेवैया ऐसा जो रावणहै सो रामचन्द्रके सन्मुख होतही न रहतभयो गजमुख जे गणेशहैं तिनके मुखकहे श्रेष्ठ ऐसे जे रामचंद्रहैं तिनके मुखको जोवतभयो अर्थ यह उनके लोकको प्राप्तभयो अथवा मुख जोवै कहे मुखमें लीन होतभयो तुलसीकृत रामायणमें लिख्यो है कि ॥ तासुतेजप्रभु बदनसमाना । सुरनरसबनअचम्भौमाना ॥ इति युद्धकांड कथा ॥ औ साँकर जो रावणहै ताके साँकर जो रामचन्द्रहैं तिन्हैं अयोध्याके सन्मुख होतही दशमुख जे ब्रह्मा बिष्णु महेशहैं ते मुख कहे मुख्य औ गजमुख जे गणेशहैं ते रामचन्द्रको मुख जोवै कहे स्तुति करतहैं अथवा दशमुख कहे दशौदिशाके मुख औ गजमुख मुखकहे हाथिनमें मुख्यते मुख जोवै कहे रामचन्द्रको मुख निहारतहैं इति उत्तरकांड कथा ॥ कोऊकहै कि एकपदमें कैयो फेरि अर्थ कियो सो संक्षेपकथाहै तासों दूषणनहींहै याही बिधि रामायणादिक तिलककारन अर्थ कियो है याहूपर कोऊ हठकरै ता लिये द्वितीयप्रकारसों अर्थ बालक जो है शिशुसो जैसे बालखेल में मृणालनको बिनहीं श्रमतोरि डारै कहे तोरिडारतहै इहां बा-

लक पदमें जातिमें एकबचनहै त्यों कहे ताही विधि कठिन अति कठोर औ भयानक ऐसा जो शंभु धनुषहै ताको बाल अवस्थामें बालखेलसम रामचन्द्र तोरयो त्यहि मुखकहे आदिदै ताड़का वधादि सीय बिवाहादि जे बालकांडकी संपूर्ण कथाहैं तिनको इहां मुखपद क्रमकी आदि मो नहीं है श्रेष्ठतामो है औ अकाल कहे कुसमयको जो दीह दुखहै अर्थ राम राज्याभिषेकमें केकयी को बरमांगिबो राम बनगवन दशरथ मरण भरतको व्रतकरि नंदीग्राममें बसन या प्रकारको जो अकाल दुखहै त्यहिमुख जे चित्रकूट गमनादि अयोध्याकांड कथाहैं तिनको औ विराध खर दूषणादि राक्षसनको मारिकै ऋषिलोगनकी विपत्तिको सहजही पद्मिनी के पातसम हरतकहे दूरिकरत पंकरत पंक जे पाप हैं तिनको जैसे पेलिकै पतालको पठवै कहे पठैदेतहैं अर्थ आपने दासनके जैसे पातक नाशकरतहैं ताही विधि कलुषकहे पापरूप वं ग़ुपत्नीभोगी जो बालि है ताको पठायो अर्थ मारयो तिन मुख जे आरण्यकांड औ किष्किन्धाकांडकी कथाहैं तिनको ऋषिनकी विपत्तिहरणादि आरण्यकाण्ड कथाजानौ आदि पदते सीय हर-णादि जानौ औ बालिवधादि किष्किन्धाकाण्ड कथा जानौ आदि पद ते सप्तताल बेधन सुग्रीव राज्याभिषेकादि जानौ औक जो है अग्नि तासों लंकके जे अंककही ध्वजादि चिह्नहैं तिन्हैं दूरिकै कहे विध्वंस करिकै जारिकै इति अर्थ हनूमान्के करसों लङ्का जारिकै दास जो विभीषणहै ताके वपुषको आजु पर्यंत राखतहैं रक्षा करतहैं अर्थ रावणादिको मारि जो विभीषणको लंकाको राज्यदियो तामें आजुलों रक्षा करत हैं तिन मुख कथनको हनुमान् के करसों लंकादाहादि सुंदरकांडकी कथा जानौ औ रावणादिको बधकरि विभीषणको राज्यदानादि लंकाकांड कथाजानौ औ भरतको जो सांकरकहे नंदीग्राममें यतीवेष बसि-बेको कष्टहै ताहीको जो सांकरकहे बंधन जंजीर है ताको जोन-शनकहे नाश करिबोहै अर्थ रामचंद्र आइकै जो भरत जो यती

वेषको क्लेशदूरि करयोहै तेहि मुखकसहै आदिदै ओजकहे यज्ञ मुखकहे आदिदै अर्थ अश्वमेधादिजे मुखकहे मुख्य कथाहैं तिन को जोगकहे गीतहै अर्थ कथनहै ताकोजे जोवैं कहे देखतहैं अर्थ इन कथनसों युक्त रामचंद्रिका कोजे पढ़तहैं तेही कहे निश्चय करिकै दशमुख मुख होतहैं अर्थ वक्तृत्व करिकै दशमुखके सदृश जिनको एक मुख होतहै अर्थ बड़े वक्ता होतहैं ॥ मयूरेग्नौचपुंसिस्यात्सुखशीर्षजलेषुकम् ॥ इति मेदिनी ॥ गंगीतंगातुगाताच गौश्रधेनुःसरस्वतीत्येकाक्षरी यजनेयःसमाख्यातःइत्येकाक्षरी १॥

बानीजगरानीकी उदारता बखानीजाइ ऐसीमति कहौधौंउदार कौनकीभई । देवता प्रसिद्धसिद्ध ऋषिराज तपबृद्ध कहिकहिहारे सबकहिनकहूंलई । भावीभूत वर्त्तमानजगत बखानतहै केशवदासकहू न बखानीकाहू पै गई । बरणेपति चारिमुख पूतबरणै पांचमुखनाती बरणै षटमुखतदपि नईनई २ ॥

जगरानी कहे जगमें श्रेष्ठ ऐसीजे बाणी सरस्वतीहैं तिनकी उदारता वड़ाई जासों बखानी जाइ कहौ ऐसी मति बुद्धि उदार वड़ी कौने प्राणिकी भईहै अर्थ काहूकी नहींभई देवता बृहस्पति आदि औ प्रसिद्धजे सिद्ध देवयोनि विशेषहैं अथवा भग आदि ऋषिराज बाल्मीकादि अथवा सिद्धजे ऋषिराजहैं तपबृद्ध लोमश मार्कंडेय आदि जाकी उदारताको कहि कहि कहे वर्णि वर्णि कै सब हारेहैं कहिकै सब उदारता काहून लई कहेपाई अर्थ उदारताको अन्त न पायो हारे यासों कह्यो कि अब नहींबखानत औ भावी कहे जेह्वैहैं औ भूत जेह्वैगये बर्त्तमानजेहैं जगतकहे जगतेके प्राणीते बखानतहैं सो केशवदास कहतेहैं किकेहूं कहे काहूप्रकार सों काहूप्राणीसों उदारता न बखानी गई औ पतिजे ब्रह्माहैं ते चारि मुखसों औ पूत महादेव पांचमुखसों नाती स्वामिकार्तिक षटमुखसों वर्णतहैं ताहूपर नईनईकहे नवीन नवीन रहतिहै अर्थ

यहकि यहिप्रकार मुखवृद्धिसों वर्णतहैं परंतु इनको वर्णन जाकी उदारताको छुइ नहींसकत अथवा ज्यहि बाणीके पतिको चारि मुख औ पूतको पांच मुख नातीको षण्मुख सब बर्णन करत हैं यासोंया जनायोकि चारि मुखसों सम्पूर्ण जगत् उत्पत्तिके कर्त्ता पंचमुखसों नाशकर्त्ता षण्मुखसों देवतनके रक्षक ऐसे पति पुत्र नातीहैं जाके यासों बड़ी बड़ाई जनायो औ ताहूपर नवीन नवीन होति जातिहै २ और अर्थ जामतिसों बाणी जो सरस्वती है तासों जगरानी सीताजूकी उदारता बखानी जाइ ऐसी मति बाणीके कौनकी कीन्हींभई है अर्थ कौने ऐसी मतिबाणीको दीन्हों औ जावाणी के पति पुत्रादि चतुरादि मुखसों वर्णतहैं और अर्थ एकहीहै अथवा सरस्वतीकी उक्तिहै कि वाणी जोमैंहौं तासों जगरानी सीताजूकी उदारता बखानीजाइ कहे जातिहै काकुसों अर्थ यहकि मोसों नहीं बखानी जाति काहेतेकि ऐसी कौनकी उदारमति भई है किजो बखानै काहेते कि देवतादि औ मेरेपति पुत्रादि सब बखानतहैं ताहूपर नईनई रहतिहै ऐसी सरस्वती को अथवा सीताजूको नमस्कार करतहौं इतिशेषः यामें नमस्कारात्मक मंगलहै २ ॥

अन्यच्च ॥ पूरणपुराण अरुपुरुषपुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्तिको। दरशनदेतजिन्हें दरशन समुझैंन नेतिनेतिकहैवेद छांड़िभेदयुक्तिको ॥ योनियह केशवदासअनुदिन रामरामरटतरहत नडरत पुनरुक्तिको । रूपदेहिअणिमाहि गुणदेहिगरिमाहि भक्तिदेहि महिमाहि नामदेहिमुक्तिको ३ ॥

जिन रामचन्द्रको पूरणकहे सम्पूर्ण अठारहो पुराण अथवा पूरणकहेजे कछुवस्तु चाहतनहीं शुकादिपुराण स्कंदादि औपुरुष पुराणलोमश मार्कंडेय आदिते परिपूर्णकहे सर्वत्रव्याप्त बतावत हैं और उक्तिकहे कथाकोनहीं बतावत अर्थकीओर तर्कनहींकरत

श्रीरामचन्द्रजी जाकोदर्शन देतहैं ताको फेरि दर्शनकी समुझ
ज्ञाननहींरहति अर्थ जाकोरामचन्द्रको दर्शनहोतहै सोतिनमेंलीन
ह्वैजातहै सायुज्यमुक्तिको प्राप्तहोतहै अथवा और दर्शनस्त्री पुत्रा-
दिकी समझनहीं रहति अर्थ संसारको बन्धन मोह छूटिजात है
रामरूपहीध्यानमें निरखतहै औवेद जिनको अनेकभेदसों गान
करि नेतिनेति कहे नाइतिनाइति कहे याहीप्रकारकोहै सोनकहे
नहीं हमजानत या प्रकार सबभेदकी युक्तिकोछोड़ि कहतहैअर्थ
यहकि जिनकोप्रमाण वेदऊनहीं जानत रूपजो रामचन्द्रको है
सोअणिमा सिद्धिकोदेतहै औगुणजेहैं तेगरिमा सिद्धिदेतहैं औ
भक्ति महिमा सिद्धिकोदेतिहै औनाम मुक्तिकोदेतहै यहजानि कै
काव्यरीतिमें एकईवस्तुको द्वै बारकहौं तौ पुनरुक्ति दूषणहोतहै
ताकोभय छोड़िकै मुक्तिकीइच्छा करिअनुदिन रोजरोजरामनाम
कोरटतहौं अर्थीदोषंनपश्यतीति प्रमाणात् और अर्थजा रामनाम
को पुराणादि परिपूर्णकहे भुक्तिमुक्त्यादि सबवस्तुसों पूरित अ-
थवा सर्वत्रव्याप्तबखानतहैं सर्वत्ररहतहैं जहांचाहिये तहांलीजिये
सबस्थानमें मिलतहैं औजिनकोदर्शनकहेषट्शास्त्रतिनकीसमुझ
नहींहै तिनकोरामचन्द्रदर्शनदेतहैं अतिमूर्ख बाल्मीकादि नामहीं
के जपसोंरामचन्द्रकोदर्शनपायो अथवादर्शनज्ञानदेतहै नेतिनेति
कहे नाइतिनाइति कि सम्पूर्णार्थ इनहींसे कहे कि बाल्मीकै से
हीनगतिका यमनादि अनेकन पतितनको रामनामै सिद्धताको
प्राप्तकीनहै जातिकुल विद्याकेभेदकी युक्तिको छांड़िकै कछूजाति
कुलविद्यापर नहीं है जोई नामोच्चारणकरै सोईसिद्धहोइ या प्र-
कारवेदकहतहैं अथवा प्रथमहींको अर्थजानो जानामके माहात्म्य
कोवेदनहीं जानत फेरिनामकैसोहै रूपसौंदर्य औअणिमा सिद्धि
औअनेकगुण औ गरिमासिद्धि औ महिमासिद्धि औनामकहे यश
औमुक्तिकोदेतहै तौसौंदर्य्यादि जेदृष्टफलहैं तेजहांदेखियेतहांराम
नामहींके प्रभावसों जानियो औमुक्ति अदृष्टफलहै ताकेअर्थ अ-
न्त्यअवस्थामें सबरामनाम कहावत है यहसनातन रीतिचली

आवतिहै तासों जानियत है कि मुक्तिकोदातारामनामछोड़ि दू-सरोनहीं है अथवारूपजोहै वेषतामें अणिमादि सिद्धिदेतहैं जैसा सूक्ष्मरूप चाहै तैसोधरैं औगुणनमें गरिमा सिद्धिदेतहैं रामनाम केजपप्रभावते सत्वगुण विद्यादि गरुहोत हैं औभक्तिमें महिमा सिद्धि बड़ाईदेतहै जोरामनाम जपतहै सोबड़ोभक्त कहावत है औनाममें मुक्तिकोदेतहै अर्थरामभक्तन प्राणिनकीमुक्ति जीवन मेंसब नामगनतहैं अथवा नामयश औमुक्तिको देतहै सोयहकहे ऐसोप्रभाव जानिकै केशवदास जोहै सोपुनरुक्ति भय छांड़िकै अनुदिन रामनामको रटतहै याग्रन्थमें रामनाम वस्तुहै ताको निर्देशकथनमात्रहै तासों वस्तु निर्देशात्मक मंगलहै ३ ॥

सुगीतछन्द ॥ सनाढ्यजातिगुनाढ्यहैं जगसिद्धशुद्ध स्वभाव। कृष्णदत्तप्रसिद्धहैं महिमिश्रपंडितराव ॥ गणेशसोसुतपाइयो बुधकाशिनाथअगाध । अशेषशास्त्र बिचारिकैजिनजानियो मतसाध ४ दोहा ॥ उपज्योतेहि कुलमन्दमति शठकबिकेशवदास ॥ रामचन्द्रकीचंद्रिका भाषाकरीप्रकास ५ सोरहसैअट्ठावन कातिकसुदिबुध बार ॥ रामचन्द्रकीचंद्रिका तबलीन्ह्योअवतार ६ बाल्मीकिमुनिस्वप्नमें दीन्होदरशनचारु ॥ केशवतिनसोंयों कह्यो क्योंपाऊंसुखसारु ७मुनि-श्रीछंद ॥ सिद्धिऋद्धि ८ सारछंद ॥रामनाम सत्यधाम ९ औरनामकोनकाम १०॥

गुणाढ्य गुणनसों पूरित औ साधुमत उत्तममत छन्दउपजातिहै जाछन्दमें और और द्वैआदि छन्दके चरणहोइँ सो छंद उप-जाति कहावतिहै ४।५ जो मैं तिथि नहींकह्यो सोबार पदते सात वारहैं तासों सप्तमीतिथि सबकहतेहैं परन्तु ज्योतिषके ग्रन्थ ग्रह-लाघवादिके मतसों कल्पान्त अहर्गणकिये बुधबार पञ्चमी औ द्वादशीको आवतहै सो द्वादशी भद्रातिथि हैं औ बुधे भद्रा सिद्धि-

योगहोतहै औ कार्त्तिकसुदी एकादशीको विष्णुजागतहैं बिष्णुके जागेके उपरान्त ग्रन्थारम्भ करयो तौ चैत्रादिमास गणनासों कार्त्तिक पर्यंत आठ औ रविवारादिबार गणनासों बुधपर्यंत चारि जोरि द्वादशीतिथि जानो ६ सुखसार मुक्ति चौबीसयें प्रकाशमें रामचन्द्र कह्योहै कि जगछूटे सुखयोग तासोंजानो ७ तीनिछंद की अन्वय एक है सिद्धि जो आठ अणिमादिक हैं और सिद्धि सम्पति औ सत्यकोधाम ऐसो जो रामनामहै तासों सुखसारपैहौ सुखसारदेवेको और नामको कामनहीं है तौ सिद्धिको धाम कहि ऐहिकसुखप्रद जनायो औ सत्तकोधामकहि सत्यही ब्रह्म है तासों ब्रह्मरूप प्रद जनायो अर्थ जीवतमें याल्लोकमें सुखदहै औ अन्तमें ब्रह्मपद प्रदहै ८ । ९ । १० ॥

केशव-रमणछंद ॥ दुखक्योंटरिहै ॥ मुनि-हरिजूहरी है ११ मुनि-तरनिजाछंद ॥ बरणिबेबरणसो ॥ जगतको शरणसो १२ प्रियाछंद ॥ सुखकंदहैरघुनंदजू॥जगयों कहैजगबंदजू १३ सोमराजीछंद ॥ गुनोएकरूपीसुनो वेदगावैं ॥ महादेवजाको सदाचित्तलावैं १४ कुमारललिताछंद ॥ बिरंचिगुणदेखै । गिरागुणनिलेखै ॥ अनंत मुखगावै । बिशेहीनपावै १५ ॥

केशवपूछ्यो कि लोभ मोहादि कृत जो दुखहै सो कैसेटरिहै तब मुनिकह्यो कि जब तू रामनाम ग्रहणकरिहै तब रामचन्द्र हरिहैं छोड़ाइहैं इहां हरिशब्द यासों कह्यो कि हरति दुःखमिति हरिः अर्थ दुखहरिबो उनके नामहींको अर्थहै ११ दुखछोड़ाइ रामचन्द्र मुक्तिदेहैं यानिश्चयके अर्थ रामचन्द्रको ईश्वरत्व केशवको मुनि चारिछन्दमें देखावतहैं जो जगत्को शरणरक्षकहै सो बरण रूप रामरूप अथवा रामनामांक तुमकरिकै बर्णिबे है अर्थ राम-

चन्द्रको रूप अथवा रामनाम बर्णनकरो १२ सब जगकहतहै कि रघुनन्दन जे रामचन्द्रहैं ते सुखके कन्दकहे मूलहैं इनहींके आश्रित सबसुखहैं औ जगबन्द्यहैं सबजग जिनको बन्दना करत है सुखकन्दकही या जनायो कि सुखसार रामचन्द्रहीसों पाइहै और देव देवेको समर्थनहींहैं १३ जिन रामचन्द्रको वेद जो हैं सो एक रूपीकहे जो सदाएकरूपरहतहैं ब्रह्मज्योति जासों गुन्योकहे ठहरायोहै सो गानकरत हैं सो हम वेदवाक्यसों सुन्यो है अथवा एक कहे जिनसम दूसरो नहीं है औ रूपीकहे अनेकरूपसों सर्वत्रव्याप्त हैं फिरि कैसेहैं जिनको महादेव सदाध्यावते हैं १४ यामें रामचंद्र के गुणनको माहात्म्यहै अनन्त शेष बिशेष निर्णय १५ ॥

नगस्वरूपिणीछंद ॥ भलोबुरोनतूगुनै । बृथाकथा कहैसुनै ॥ नरामदेवगाइहै । नदेवलोकपाइहै १६ षट्पद ॥ बोलिनबोल्योबोल दयोफिरिताहिनदीन्हो । मारिनमारचोशत्रुक्रोधमनवृथानकीन्हो ॥ जुरिनमुरेसंग्रामलोककीलीकनलोपी । दानसत्यसन्मानसुयशादिशिविदिशाओपी ॥ मनलोभमोहमदकामवशभयोनकेशवदासभणि । सोइपरब्रह्मश्रीरामहैं अवतारीअवतारमणि १७ दोहा ॥ मुनिपतियहउपदेशदैजबहींभयोअदृष्ट ॥ केशवदासतहींकरचोरामचन्द्रजूइष्ट १८ ॥

तू अनेक कथा वृथा कह्यो सुनो करतहै आपनो भलोबुरो नहीं गुनतो बिचारतो जबलौं जैसो पूर्व कहिआये ऐसे रामदेव को न गाइहै तबलौं अनेक कथनसों देवलोक नपैहै इहां देवलोक वैकुंठ जानो बैकुंठ देबेकी शक्ति रामचन्द्रही में है और देव नहीं दैसकत कहूं रामलोक पाइ है पाठ है तौ रामलोक बैकुंठ १६ प्रथम ईशत्व वर्णनकरचो अब यामें रामचंद्रको स्वभावगुण वरणयोहै रामचन्द्रजू बोले सो फेरि नहीं बोले अर्थ जो एकबात

कह्यो सोईकरयो है फेरि बदलिकै और बात नहीं कह्यो वनगमनादि बचनतें जानो औजाको दानदियो ताको फेरि वही दीन्हो अर्थ एकही वार ऐसो दियो जामें वाके फेरि मांगिबेकी इच्छा नहीं रही विभीषणादि को लंकदानादि ते जानो औशत्रुको एकहीबार ऐसो मारिकै नाश कियो जामें फेरि नहीं मारिबे परयो खरदूषण रावणादि वधते जानो औसंग्राममें जुरिकै नहीं मुरे खरदूषण रावणादिके युद्धतेजानो औ लोककी लीकमर्यादाको लोप नहीं कियो रावणकेबधसों ब्रह्मदोषमानि अश्वमेध करणादि सोंजानो औदान औसत्य औसन्मानके सुयशकरिकै दिशा औ विदिशा ओपी हैं अर्थ जिनको सुयश दिशि विदिशन में छाइरह्यो है औ जिनकोमन लोभ औ मोह औ मद औ कामके बश नहीं भयो राज्य त्यागादि सों लाभ विवशजानी माता पिताको दुखितहुये देखि वनगमन करनादि सों मोह विवश जानो औ अगस्त्यादि ऋषिन के यथोचित सत्कारसों मद विवश जानी एक पत्नी व्रतसों काम विवशजानो जाके ऐसे स्वभाव गुण हैं सोई श्रीराम वाराहादि अवतारन में मुनिश्रेष्ठ अवतारी कहे अवतारको धरे साक्षात् परब्रह्म हैं अथवा श्रीराम अवतारी कहे अनेक अवतारनको धरतहैं औ परब्रह्म हैं १७ अदृष्ट अंतर्द्धान इष्टपूज्य देवता १८ ॥

गाहाछंद ॥ रामचंद्रपदपद्मं वृन्दारकवृन्दाभिवंदनीयम् ॥ केशवमतिभूतनया लोचनंचंचरीकायते १९ चतुष्पदीछंद ॥ जिनकोयशहंसा जगतप्रशंसा मुनिजनमानसरंता॥लोचन अनुरूपनि श्यामस्वरूपनि अंजनअंजितसंता ॥कालत्रयदर्शी निर्गुणपर्शी होतबिलम्बनलागै। तिनकेगुणकहिहौं सबसुखलहिहौं पापपुरातनभागै २०

वृन्दारक जे देवता हैं तिनके वृन्दसमूह तिन करिकै अभिबन्दनी अर्थ जिनको अनेक देवता बन्दना करतहैं ऐसे जे रामचं-

द्रके पदपद्म पदकमल हैं तिन तनप्रति केशवदास की मतिरूपी जो भू तनया सीताहैं ताके लोचन चञ्चरीकाय ते कहेचञ्चरीक भ्रमरके ऐसे आचरण करत हैं अर्थ जब मुनिकी आज्ञा सों रामचंद्रको इष्टदेवता करयो तब सीतासम सदा राम निकट वर्त्तिनी हमारी मतिके लोचन कमल में भ्रमर सदृश रामचंद्र चरणमें अनेक कौतुक करनेलगे १९ मानस मानसर औमन आय आपने लोचननके अनुरूप कहे योग्य और के लोचनके योग्य कज्जलादि अंजनहै संतनके लोचननके योग्य रामरूपही है ऐसे जे जिनरामचंद्रके अनेकप्रतिबिंब श्यामस्वरूपरूपीअंजनहै तिनकरिजे सन्तअंजितहैं अर्थ रामचन्द्रकेप्रतिबिंब रूपनको जे सन्तजन ध्यानमें आनतहैं अथवा श्याम स्वरूपनि कहे श्याम रूपता रूपी जो अंजनहै ता करिकै जे संत अंजितहैं तिन संतनको त्रिकालदर्शी औ निर्गुणपर्शी नेत्रनकरि ज्योति स्पर्शकरै या अर्थ ब्रह्मज्योतिके द्रष्टाहोतबेर नहीं लागति जे रामचन्द्रको ध्यानकरतहैं ते त्रिकालदर्शी होत हैं औ ब्रह्मज्योतिको देखत हैं इति भावार्थः अथवा निर्गुणपर्शी होत कहे निर्गुण ज्योतिमें मिलिजात बेर नहीं लागति अथवा निर्गुणते पर अन्य विष्णुकी श्री शोभा होत बेर नहीं लागति पुरातन पूर्व कृत २० ॥

दोहा ॥ जागतिजाकी ज्योतिजग एकरूपस्वच्छंद॥ रामचंद्रकी चंद्रिका वरणतहौंबहुछंद २१ रोलाछंद ॥ शुभ सूरजकुलकलश नृपतिदशरथभयेभूपति । तिनके सुतभयेचारि चतुरचित चारुचारुमति॥ रामचन्द्रभुव चन्द्र भरतभारत भुवभूषण । लक्ष्मण अरुशत्रुघ्न दीह दानवदलदूषण २२ घत्ताछंद ॥ सरयूसरिता तट नगर बसैअवध नामयश धामधर ॥ अघओघविनाशी सब पुरबासी अमरलोक मानहुनगर २३ ॥

ज्योति ब्रह्मज्योति अथवा अंगछबि औ बहुछंदकहे अनेक रं-ग तौ जा रामरूपी चन्द्रकी ज्योति तौ एकरूप है ताकी चन्द्रि-का अनेकरंग ह्वैबो आश्चर्य है यह युक्तिहै औ अर्थ यह कि बहुत छन्द जे दोहादि हैं तिनसों युक्त २१ सूर्य कुलके कलश जे नृप-ति अजादिहैं तिनमें दशरथ भूपति राजाभये भारत भरतखण्ड २२ यशको धामकहे घरहै धरा पृथ्वी जाकी औ जा पुरीके बासी देवतन सरिस अघपापनके ओघ समूहन के बिनाशी हैं तासों देवलोक सम है २३ ॥

छप्पै ॥ गाधिराजकोपुत्र साधि सब मित्रशत्रुबल । दानकृपानबिधान बश्यकीन्हो भुवमण्डल ॥ कैमनअप नेहाथजीति जगइन्द्रिय गनअति । तपबलयाहीदेह भ येक्षत्रियते ऋषिपति॥ तेहिपुरप्रसिद्ध केशवसुमति काल अतीतागत निगुनि । तहँअद्भुतगतिपगुधारियो बिश्वा मित्र पवित्रपुनि २४ प्रभ्भटिकाछंद॥ पुनिआये सरयूसरि ततीर । तहँदेखे उज्ज्वल अमलनीर ॥ नवनिरखिनिर खिद्युतिगतिगँभीर । कछुवरणनलागेसुमतिधीर २५ अ तिनिपटकुटिलगतियदपिआप । वहदेतशुद्धगतिछुवत आप ॥ कछुआपुनअधअधगतिचलंति । फलपतितन कोऊरधफलंति २६ मदमत्तयदपिमातंगसंग । अतितद पिपतितपावनतरंग ॥ बहुन्हाइन्हाइजेहिजलसनेह । स बजातस्वर्गशूकरसुदेह २७ ॥

त्रिकालदर्शीत्वते जेतो कालबीते रामचन्द्रको अवतार होनो रहै सो काल अतीतकहे बीतो गुनिकै औ जाकालमें रामचन्द्रजू यज्ञरक्षा करनलायकभये सोकाल आगत आयो गुनिकै २४।२५ दवौछंदनमें बिरोधाभास है आप कहे अपना औ आप कहे जल के छुवतही शुद्धगति मुक्तिदेतहै अथवा जाके जलको कहूँ अन-

तहूँ छुवौ तौ शुद्धगति देत है ऊरधपदते स्वर्गजानो २६ मंद मन्दिरा सों मत्त यद्यपि मातंग चाण्डालनको संग है बिरुद्धार्थः ॥ मातंगः स्वपचीहस्तीत्यभिधानचिन्तामणिः औ मत्तगज जामें स्नान करते हैं इत्यबिरोधः पतित पावन कहे पतितन को पवित्र कर्त्ता स्नेहसों ताके जलमें न्हाइ न्हाइकै शूकर पर्यंत बहुप्राणी सुन्दर देहकोधरि सब स्वर्ग जात हैं अथवा सनेह कहे अप्सरादिकनके इतिशेषः ॥ स्नेह सहित अर्थ अप्सरादि स्नेहसहित ताको स्वर्ग लै जाती हैं अथवा तेहि के जलके स्नेहहू सों कहूंहोइ सरयू जलमें स्नेहकरै स्वर्गजाइ कहूं सदेहपात है देहसहित स्वर्गजाइ अर्थ याहीदेहमें देवरूपताको प्राप्त ह्वैजात हैं जिनको देहत्यागहूको कष्टनहीं होत इति भावार्थः अथवा शूकर देहसहित जेजीवहैं तेस्वर्गजातहैं और देहधारी तौजातहीहैं २७॥

नवपद्दीछंद ॥ जहँतहँलसतमहामदमत्त । बरवारनवारनदलदत्त ॥ अंगअंगचरचेअतिचंदन । मुण्डनभुरके देखियबंदन २८ दोहा ॥ दीहदीहदिग्गजनकेकेशवमनहुंकुमार ॥ दीन्हेराजादशरथाहिदिगपालनउपहार २९ अरिल्लछंद ॥ देखिबागअनुरागउपज्जिय । बोलतकलध्वनिकोकिलसज्जिय ॥ राजतिरतिकीसखीसुबेषनि । मनहुंबहतिमनमथसंदेशनि ३० ॥

ग्रामबाहर जहाँतहाँ महावत हाथिनको फेरतहैं तिनका वर्णन है सुभावोक्तिहै अथवा स्थानपर बँधे हैं वारण हाथी तिनके दल चमूको अकेलेई दलिडारतहैं यासों अतिबली जानो अथवा बार कहे बेरनहीं लागति शत्रुदलको दलिडारतहैं भुरके लगाये चंदन रोरी २८ दिग्पालइन्द्रादि उपहार भेंट २९ कलअव्यक्त मधुर ३०॥

फूलिफूलितरुफूलबढ़ावत । मोदतमहामोदउपजावत ॥ उड़तपरागनचित्तउठावत । भँवरभ्रमतनहिंजीवभ्र

मावत ३१ पादाकुलकछंद ॥ शुभसरशोभै । मुनिमनलोभै ॥ सरसिजफूले । अलिरसभूले ॥ जलचरडोलैं । बहुखगबोलैं ॥ बरणिनजाहीं । उरअरुझाहीं ३२ चतुष्पदी छंद ॥ देखीबनवारीचंचलभारीतदपितपोधनमानी । अतितपमयलेखीगृहथितपेखीजगतदिगंबरजानी ॥ जगयदपिदिगंबरपुष्पवतीनरनिरखिनिरखिमनमोहै । पुनिपुष्पवतीतनअतिअतिपावनगर्भसहितसभसोहै ३३ पुनिगर्भसँयोगीरतिरसभोगीजगजनलीनकहावै । गुणिजगजललीनानगरप्रवीनाअतिपतिकेचितभावै ॥ अतिपतिहिरमावैचित्तभ्रमावैसौतिनप्रेमबढ़ावै । अबयोंदिनरातिनअद्भुतभांतिनकविकुलकीरतिगावै ३४ ॥

मोदतकहे सुगन्धको पसारत ३१।३२ दैछन्दको अन्वय एक है वनवारीकहे उपवन औ श्लेषते बनकीवारी कुमारी कुमारीपक्ष विरोध है वाटिका पक्ष शुद्धार्थ है विरोधाभास अलंकारहै चंचल स्वभाव चंचल औ वायुयोगसों चंचलहैं पत्तजा भारीकहे गरूहै देहजाकी औ दीर्घवृक्षयुक्त तपोधन तपस्विनी औ तपस्वीसम शीत घामतोय दुख सहतिहै गृहघर औ परिखा छार दीवालीति दिगम्बर वस्त्ररहित दुवौपक्ष में पुष्पवती रजोधर्मिणी औ प्रफुल्लिततन अतिकहे स्थूलकाय औ बहुतभूमिमें बिस्तारहै जाको अतिपावन पवित्र अति दुवौपक्ष में गर्भ सहित गुर्विणी औ फल गर्भ सहित यासों सदाफलोत्पत्ति जनायो रतिरस सुरति औ प्रीति जगजन लीना अनेकपुरुष भोगिनी परकीयाइति । औ जगके जननकरिकै युक्त अर्थ अति सुखपाइ जगजन बैठत हैं जामैं प्रवीणा दोष रहित औ सर्वोत्तमा नवीनापाठहोइ तौ नवोढा औ नूतनयाने आपनो पुरुष औ राजासौंपी पतिकी और स्त्री औ राजपत्नी ३३ । ३४ ॥

हाकलिकाछन्द॥ संगलियेऋषिशिष्यनघने। पावकसेतप तेजनिसने॥ देखतसरिताउपबनभले। देखनअवधपुरीक हँचले ३५ मधुभारछन्द ॥ ऊँचेअवास । बहुध्वजप्रका स ॥ शोभाबिलास । शोभेअकास ३६ आभीरछन्द ॥ अतिसुंदरअतिसाधु । थिरनरहतपलआधु ॥ परमतपो मयमानि । दण्डधारिणीजानि ३७ हरिगीतछन्द ॥ शुभ द्रोणगिरिगणशिखरऊपरउदितऔषधिसीगनो । बहुवा युवशबारिदबहोरहिअरुझिदामिनिद्युतिमनो॥ अतिकि धौंरुचिरप्रतापपावकप्रकट सुरपुरकोचली । यहकिधौंस रितसुदेशमेरीकरोदिवखेलतिभली ३८ ॥

उपबन वाटिका ३५ अवासपर ३६ दंडधारिणी हैं दंडिन के अंतको धरे हैं दंडी दंड धरेरहते हैं ये दंडकहे ध्वज दण्डधरे हैं कैसो है ध्वजा औ दंडी अति सुन्दरहैं सुवस्त्र रचित औ तप ते-जकरि भव्यरूपहैं साधुराग द्वेषरहित दुवौ हैं थिर न रहत वायु योगसों चंचलरहती हैं औ अनेक तीर्थनमें फिरयोकरतहैं औ प-रम तपोमय हैं सदा शीत घाम तोय सहती हैं औप्राणायामादि अनेकतप करतहैं और अर्थबिरोधाभासहै बिरोधार्थअतिसाधुहैं औ पल आधु थिरनहीं रहती तौसाधुबिषेचंचलता बिरोधहै औ परम तपोमयकहे बडेतपको करतीहैं औदंडधारिणीहैं दंडकहे राजदण्ड डांडइति धारणकरताहै लेताहै तौ तपस्वीको दंडलेबो बिरोध है अविरुद्धार्थ प्रथमको तेजानो ३७ द्रोणगिरि सदृशमंदिरहै शिखर अग्रभाग औषधि सरिस करयो तासों अरुण पताका बर्णनजानो औकि दामिनी बिजुलीकी द्युतिहैं अरुझिरही हैं तिनको बारिद क बश्यहै अर्थ बारिदकी आज्ञासों वायु वशकहे अनेकप्रकारसों बहोरतहै मेघनके पास लैजायो चहतहै यासों मंदिरनकी अति उच्चता जनायो प्रताप पावक रघुवंशिनको इति शेषः या प्रकार

अरुणपताका पंक्तिको बर्णनकरि यह पदसों दूसरी श्वेत पताका पंक्तिको अवलोकि वर्णनलगे सो जानो मेरी करीकहे बनाई बिश्वामित्र सृष्टिकरनलागे हैं तब नदी बनायो है सो आकाशमें है पुराणोक्तहै कबिप्रियाहूमें कह्यो है कि ऊँचे ऊँचे अटनि पताका अतिऊँची जनु कौशिककी कीन्ही गंगाखेलैं ये तरलतर । अथवा मेरी कहे हमारी भगिनी भगिनीतिशेषः । दिबि कहे दिव्यरूप कहे खेलतिहै आकाशमें कौशिकी नदी है सो बिश्वामित्रकी भगिनी है ३८ ॥

दोहा ॥ जीतिजीतिकीरतिलईशत्रुनकीबहुभांति॥ पुरपरबांधीशोभिजैमानोतिनकीपांति ३९ त्रिभंगीछन्द॥सुमसबघरशोभैंमुनिमनलोभैंरिपुगणक्षोभैंदेखिसबै। बहुदुंदुभिबाजैंजनुघनगाजैंदिग्गजलाजैंसुनतजबै॥जहँतहँश्रुतिपढ़हींबिघननबढ़हींजययशमढ़हींसकलदिशा। सबईसबबिधिक्षमबसततयाक्रमदेवपुरीसमदिवसनिशा४० ॥

ताही श्वेतपताका पंक्तिमें फेरितर्क है ३९ है छंदको अन्वय एकहै क्षोभैं डरतहैं हम समर्थ रातिउदिन देवपुरी समहै यामें श्लेषार्तहूहै कैसी देवपुरी औ अयोध्याहै सम बराबरिहै दिन राति जामें घटत बढ़त नहीं छः महीना उत्तरायण दिनरहतहै दक्षिणायन राति रहतहै औ समहै तुल्य आनन्ददायकहै रातिउ दिन जामें रात्रिहूको चौरादिको भय नाहीं होत और अर्थ दुवोपक्ष एकही है ४० ॥

कबिकुलबिद्याधरसकलकलाधर राजराजबरबेष बने । गणपतिसुखदायक पशुपतिलायक सूरसहायक कौनगने ॥ सैनापतिबुधजन मंगलगुरुगन धर्मराजमन बुद्धिघनी । बहुशुभमनसाकर करुणामयअरु सुरतरंगिणी शोभसनी ४१ ॥

फेरिकैसीहै देवपुरीकबि शुक्रऔ कुलकहे समूह विद्याधरनके विद्याधर देवयोनि बिशेषहै औसकलकलाधरचन्द्रमाऔराजराज कुबेर ये सबबरबेषकहे सुन्दरवेष कहे रूपसों बनेहैं औसुखदायक जोगणपतिगणेशहैं औलायककहे श्रेष्ठपशुपति महादेवहैं औसूर कहेसूर्य और जेइन्द्रसहायक कामादिहैं तिन्हैंकोगनै अर्थकौअनेक हैंसेनापति स्वामिकार्तिक औबुधजन चन्द्रपुत्र जनपदइहां स्वरूपकोबाचीहै औमंगलभौम औगुरुवृहस्पति औगणकहे गण देवता ॥ आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः महाराजिकसाध्याश्चरुद्राश्चगणदेवताः इत्यमरः ॥ औमन में बुद्धि है घनीजिनके ऐसेधर्मराजकहे यमराजहैं बहुशुभयुक्तहैं मनसाकर कहेकल्पवृक्ष औकरुणामय कहे विष्णु औसुरतरंगिणी आकाश गंगाइनसबकी शोभासोंसनीहै अर्थ ये सबबसतहैं यामेंअयोध्या कैसीहै कबिकाव्यकर्त्ता बाल्मीकिसदृश औविद्याचतुर्दश ॥ अंगानिवेदाश्चत्वारो मीमांसान्यायविस्तरः ॥ पुराणंधर्मशास्त्रंचविद्याश्चैताश्चतुर्दश ॥ इतिमनुः ॥ अथवाधनुर्विद्यादितिनके धर्त्ता औसकलकहे चौसठिहूकलनके धर्त्ताऔराजराज कहे बड़ेराजाते वरवेषसोंबनेहैं अनेकराजा राजादशरथकी सेवामें हाजिरपुरीमें बसेरहतहैं औ सुखदायक गणपतिकहे यूथप औलायक श्रेष्ठपशुपतिगोपालादि अथवागजादि औसहायककहे जेसबकी सहाय करतहैं ऐसे जे शूरयोधाहैं तिन्हैंकोगनै बहुतहैं औसैनापति चमूनाथ बुधजन पण्डित औमंगलकहे मंगलपाठी औगुरुगणवशिष्ठादि अथवामंगलकर्त्ता जेगुरुगण वशिष्ठादिहैं औमनमें बुद्धिहै घनीजाके ऐसोधर्मराज कहे न्यायदर्शीहैं कोतवालेति औ बहुत प्राणी शुभ जोमनसामनोभिलाषहैताकेकरनहारहैं अर्थ मनोरथ के दाता हैं औ वहुत करुणामयकहे दयाशील हैं औसुरतरंगिणी सरयू इनकी शोभासोंसनीहै अर्थ इनसबसों युक्तहै ४१ ॥

हीरकछन्द॥पंडितगणमंडितगुण दंडितमतिदेखिये ।

क्षत्रियब्ररधर्मप्रवर क्रुद्धसमरलेखिये ॥ वैश्यसहितसत्य रहित पापप्रकटमानिये । शूद्रशकति विप्रभगति जीव जगतजानिये ४२ ॥

पण्डितपदते ब्राह्मणजानौ तेअनेक गुणजेशास्त्रादिहैं तिनसों पंडित युक्तहैं औ दंडितहैं सक्षितहै मति जिनकी अर्थ सतमति सों युक्तहैं औ क्षत्रिय क्षत्र धर्मकरिकै प्रवरबली हैं औ समरही में क्रोधकरतहैं औ वैश्य बनियां सत्यसों युक्तहैं औ पापसों रहित हैं औ शूद्रनके जीवमें ब्राह्मणको भक्ति जगतिहै ताहीमें तिनकी शक्तिबल जानियतहै अर्थ शूद्र भक्ति युक्त ब्राह्मणनकी सेवाकरत हैं अथवा शूद्रनके जीवमें शक्तिकहे देवी औ विप्रकी भक्ति जगति है शूद्रनको देवी औ ब्राह्मणनकी उपास बासना उचितहै या प्रकार आपने आपने धर्मसों युक्त चारो वर्ण बहतहैं यामें ४२ ॥

सिंहविलोकितछन्द ॥ अतिमुनितनमनतहँमोहि रह्यो । कछुबुधिबलवचननजाइकह्यो ॥ पशुपक्षिनारि नरनिरखितबै । दिनरामचन्द्रगुणगनतसबै ४३ मरहट्ठाछंद ॥ अतिउच्चअगारनिबनीपगारनिजनुचिंतामणिनारि । बहुशतमखधूपनिधूपितअंगनिहरिकीसीअनुहारि ॥ चित्रीबहुचित्रनिपरमबिचित्रनिकेशबदासनिहारि । जनुबिश्वरूपकोअमलआरसी रचीबिरंचिबिचारि ४४ सोरठा ॥ जगयशवंतबिशाल राजादशरथकी पुरी ॥ चंद्रसहितसबकाल भालथलीजनुईशकी ४५ ॥

दिनकहे दिनप्रति ४३ बहुत जे अति उच्च अपारघर हैं बहु पदको सम्बन्ध सर्वत्रहै तिनकी जे बनी पगार परिखा हैं छारदेवालीति कहूँ शिरबंदी कहतहैं तिनमेंलगी अनेक पुर कौतुकदेखिबेको चिंतामणि सदृश नारी स्त्री ठाढ़ी हैं चिंतामणि सदृश

जिनको देखि मनोभिलाष पूरे होतहैं या प्रकारके स्त्रीभवनहैं औ बहुत घरशत कहे उत्तम जे मखयज्ञ हैं तिनके धूपन कहे धूमन करिकै धूपित अंगनिसों युक्तहैं ते हरि विष्णुके अनुहारि हैं अर्थ श्यामरूप हैं ऐसे यज्ञशालाहैं औ बहुत घर परमविचित्र कहे अद्भुत चित्रनिसों चित्रितहैं तिन्हैं मानो विरंचिब्रह्मा बिचारि एकाग्र चित्त करिकै विश्वरूप जो संसार है अथवा विराट रूप ताकी आरसी ऐना बनायो है जैसे ऐनामें बिम्ब सदृश प्रतिबिम्ब देखिपरत है तैसे संसारमें जो बस्तु है सो सब मन्दिरनमें चित्रितहै ऐसे चित्रशाला हैं पुरी में पैठि तिन्हैं विश्वामित्र निहारि कहे देखतभये ४४ जगमें विशाल सुंदर औ यशवंत कहे यश युक्त जो राजादशरथकी पुरी है सो सबकाल चंद्रमा सहित मानो ईश महादेवकी भालथली है चंद्र सरिस यश है विशाल दुवौ हैं यासों सदा निष्कलंक यश युक्त पुरीको जनायो ४५ ॥

कुंडलिया ॥ पंडितअतिसिगरीपुरी मनहुंगिरागति गूढ़ । सिंहनियुतजनुचंडिकामोहतिमूढ़अमूढ़ ॥ मोहति मूढ़अमूढ़देवसँगदितिसोंसोहै । सबशिंगारसदेहमनो रतिमन्मथमोहै ॥ सबशिंगारसदेहसकलसुखसुखमामंडित। मनोशचीबिधिरचीबिबिधबिधिबरणतपंडित४६॥

सिगरी पुरी अति पंडितहै अर्थ पुरीके निवासी जन सब पंडितहैं यासों मानोगति कहे दशाहै गूढ़जाकी अर्थ रूप पुरी है आपनी दशाको छपाये मानो गिरा सरस्वती हैं गिराहू के आश ते जन अतिपंडित होतहैं अथवा मनहूँको औगिराकहे वचननहूँकी गतिहै गूढ़जाकी अर्थ जाकी दशाको अंत मन वचन नहीं पावत चंडिकाको सिंहबाहन है औ विकरालरूप देखि मूढ़ औ अमूढ़के भयसे मोहहोत है पुरी पुरुष सिंहनसों युक्तहै औ अति विचित्रशोभा निरखिमूढ़ अमूढ़के आनन्दसे मोहहोतहै अदिति केदेवतापुत्रहैं तासों संगमें देवरहतहैं इहांअदितिपदकी अकारको

लोपहै भाषाके कविनको नियमहै कहूँअकारादि पदकीअकारको लोपकरिडारतहैं यथाबिहारीकृत सप्तसतिकायाम् । अधिक अँधेरोजगकरै मिलिमावसरविचन्द ॥ अथवा दिति दैत्य मातासमहै जैसेदितिसों बड़ेबीर दैत्यभयेहैं तैसेअयोध्याहूमें अनेकबीर उत्पन्नहोत हैं रतिमन्मथ कामकी स्त्रीहै तासों मनको मोहति है पुरी शोभासोंकामहूको मनमोहतिहै तासों अतिशोभायुक्तजानो शची इंद्राणिहू राज्यादिसबसुख औसबसुखमाशोभा सों मंडितहै औ अनेक विधिसों पंडित वर्णनकरतहैं ऐसीपुरीहूहै अथवा सुखमा सोंमंडित युक्तसकल जेसुखहैं तिनसोंसचीकहे संचित पूंजीभूत मानोविधातैंरच्योहै अर्थ पूर्णसुख औपूर्णशोभा एकत्रकरि ताहीको पुरी बनायोहै ४६ ॥

काव्यछंद ॥ मूलनहींकोजहांअधोगतिकेशवगाइय। होमहुताशनधूम्रनगरएकैमलिनाइय ॥ दुर्गतिदुर्गनहीं जोकुटिलगतिसरितनहींमें । श्रीफलकोअभिलाषप्रकट कबिकुलकेजीमें ४७ दोहा ॥ अतिचंचलजहँचलदलै बिधवाबनीननारि ॥ मनमोह्योऋषिराजको अद्भुतनगर निहारि ४८ सोरठा ॥ नागरनगरअपार महामोहतम मित्रसे । तृष्णालताकुठार लोभसमुद्रअगस्त्यसे ४९ दोहा ॥ बिश्वामित्रपवित्रमुनि केशवबुद्धिउदार । देखत शोभानगरकीगयेराजदरबार ५० इतिश्रीमत्सकल लोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकाया मिन्द्रजिद्विरचितायां बिश्वामित्रस्याऽयोध्यागमनंनाम प्रथमःप्रकाशः १ ॥

मूलजर अधोगति नरक औ नीचेको गति गमन हुताशन अग्नि दुर्गति नरक औदुष्करिकहे गति जिनमें कुटिलता इति श्री-

फलद्रव्य औ बिल्वफल कुचनकी उपमादेवेको परिसंख्यालंकारहै ४७ चलदल पीपर वृक्षबनी बाटिका सोई बिधवाहै याहूमें परिसंख्याहै ४८ नागर प्रवीण मित्र सूर्य जो सदा सबबस्तु पाइबेकी इच्छाहै सो तृष्णाजानो औ जो कछूवस्तु देखिसुनिकै इच्छा चलैसो लोभजानो ४९।५०इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांप्रथमःप्रकाशः १ ॥

दोहा ॥ यादूसरेप्रकाशमें मुनिआगमनप्रकास । राजासोंरचनाबचनराघवचलनबिलास १ ॥ हंसछन्द॥ आवतजातराजकेलोग । मूरतिधारीमानहुभोग २ मालतीछंद ॥ तहँदरबारी । सबसुखकारी ॥ कृतयुगकेसे । जनुजनबैसे ३ दोहा ॥ महिषमेषमृगबृषभकहुं भिरतमल्लगजराज । लरतकहूंपायकनटत बहुनर्त्तकनटराज ४ समानिकाछंद ॥ देखिदेखिकैसभा । बिप्रमोहियोप्रभा ॥ राजमंडलीलसै । देवलोककोहँसै ५ मल्लिकाछंद ॥ देशदेशकेनरेश । शोभिजैसबैसुबेश ॥ जानियेनआदिअन्त । कौनदासकौनसन्त ६ दोहा॥ शोभितबैठेतेहिसभा सातद्वीपकेभूप ॥ तहँराजादशरथ लसैं देवदेवअनुरूप ७ देखितिन्हैंतबदूरिते गुदरानो प्रतिहार ॥ आयेविश्वामित्रजू जनुदूजोकरतार ८ उठि दौरेनृपसुनतही जाइगहेतबपाइ ॥ लैआयेभीतरभवन ज्योंसुरगुरुसुरराइ ९ सोरठा ॥ सभामध्यबैताल ताहिसमयसोपढ़िउठ्यो ॥ केशवबुद्धिविशाल सुन्दरशूरोभूपसो १०॥

१।२ कृतयुग सत्ययुग २ मल्लबाहु युद्धकर पायक पटेबाज

नटतकहे नाचतहैं नर्तक नृत्यकारी ४।५ जहां सिंहासनमें राजा दशरथ बैठेहैं सो आदिहै तहांते जहांपर्यंत दरबारी बैठे हैं सो अंतहै सो आदिते अंततक दरबारिनमें कौनदासकहे सेवकहै औ कौनसंतकहे स्वामीहै यहनहीं जानियत अर्थ सब दरबारी राज साज सँवारे हैं । सद्विद्यमाने सत्येच प्रशस्तार्चित साधुषु इति अभिधानचिंतामणिः इहां अर्चितपदको पर्य्याय स्वामीजानौ ६ देवदेवइंद्र ७ गुदरानो जाहिरकियो कर्तार ब्रह्मा ८।९ बैतालभाट १० ॥

बैताल-घनाक्षरी ॥ विधिकेसमानहैंविमानीकृतराजहंस विविधविबुधयुत मेरुसोंअचलहै । दीपातिदिपाति अतिसातौद्वीपदीपियत दूसरोदिलीपसोंसुदक्षिणाकोबलहै ॥ सागरउजागरकीबहुबाहिनीकोपति छनदानप्रियकिधौंसूरजअमलहै । सबविधिसमरथराजैराजादशरथ भगीरथपथगामीगंगाकैसोजलहै ११ दोहा ॥ यद्यपिईंधनजरिगये अरिगणकेशवदास ॥ तदपिप्रतापानलनके पलपलबढ़तप्रकास १२ तोमरछंद ॥ बहुभांतिपूजिसुराइ । करजोरिकैपरिपाइ ॥हँसिकैकर्‍योऋषिमित्र । अबबैठराजपवित्र १३ मुनि-सुनिदानमानसहंस। रघुबंशकेअवतंस॥मनमांहजोअतिनेहु।यकबातमांगेदेहु १४ ॥

बिमानीकृत कहे बाहनीकृतहैं राजहंस जिनकरिकै ब्रह्माको हंस बाहनहै और राजा बिमानी कृतकहे मानरहित कियेहैं राजनके हंस जीव जिनकरिकै अथवा विमानी कृत बाहिनी कृत हैं राजनके हंसजीव जिनकरिकै अर्थ शत्रुभयसों मित्रप्रेमसों मनमें चढ़ाये रहतहैं बिबुध देवता औ पंडित दिलीपकी स्त्रीको सुदक्षिणा नामरह्यो ताके पातिव्रतको बलरहो औ सुष्ठु जो दक्षिणा दान द्रव्यहै बाहिनी नदी औ चमूछनदारात्रिनहो हेप्रिय जाकीसूर्यके

अमलमें अर्थसूर्यके प्रकाशमें रात्रिको नाशहोतहै अथवा छनदान कहे जलांजलिदान औ क्षण क्षणप्रतिहै दानहीप्रिय जिनको क्षण क्षणमें दानदीबो करतहैं गंगाजल सगरके सुतनके तारिबेको भगीरथके पीछेपीछे आयोहै औ राजा कुलपंथगामी हैं श्लेषधर्मोपमाहै कोऊ परंपरित रूपक कहतहैं ११।१२ ऋषिनमों मित्र सूर्यसमहैं १३ दानरूपी जो मानस मानसरहै ताके तुम हंसहौ अर्थ दानहीमेंहै बिहार जिनकोबड़ेदाताहौ अवतंसकर्णभूषण १४॥

राजा—अमृतगतिछंद ॥ सुमतिमहामुनिसुनिये । तनमनधनसबगुनिये ॥ मनमहँहोइसोकहिये । धनि जोआपुनलहिये १५ ॥ ऋषिदोधकछंद ॥ रामगयेजबतेबनमाहीं । राकसबैरकरैंबहुधाहीं ॥ रामकुमारहमैंनृप दीजै।तौपरिपूरणयज्ञकरीजै १६ ॥ तोटकछंद ॥ यहबात सुनीनृपनाथजबै । शरसेलगेआखरचित्तसबै ॥ मुखते कछुबातनजाइकही । अपराध बिनाऋषिदेहदही १७ राजा—अतिकोमलकैसबबालकता । बहुदुष्कर राक्षस घालकता ॥ हमहींचलिहैंऋषिसंगअबै । सजिसैनचलै चतुरंगसबै १८ बिश्वामित्र-षट्पद ॥ जिनहाथनहठिहरषिहनतहरिणीरिपुनन्दनि । तिननकरतसंहारकहामदमत्तगयन्दनि ॥ जिनबेधतसुखलक्षलक्षनृपकुंवरकुंवरमनि । तिनबाणनिबाराहबाघमारतनहिंसिंहनि ॥ नृपनाथनाथदशरथसुनियअकथकथायहमानिये । मृगराजराजकुलकलशअबबालकवृद्धनजानिये १९ ॥

जो बस्तु आपलहिये लीजिये सो धन्यहै १५ राम परशुराम १६ । १७ हाथी घोड़ा रथ पियादा चारौं सैनाके अंगहैं १८ हरिणीके साहचर्यते रिपुपदते हरिणी रिपुकहे सिंहजानो जिन

हाथन सिंह हरिणी मारतहैं तिनसों कहा गजनको नहींमारत अर्थ गजहू मारतहैं औ कुँवरनमें मणि श्रेष्ठ ऐसे नृप कुंवर जिन बाणनि सुखकहे सहजेही लक्षकहे लाखन लक्ष निशाना बेधतहैं तिनसों बाराह बाघ सिंहनहूँको नहीं मारत अर्थ मारत हैं हेनृप नाथ यह कथा अकथ कहे अतर्कमानो निश्चय इति अथवा अकथकहे अद्भुत जो यहकथाहै ताको मानिबेकहे निश्चयमानो आशय यह रामचन्द्र राक्षसनको बधकरि हैं यामें संदेहनाकरो १९॥

सुन्दरीछंद॥राजनमेंतुमराजबड़ेअति । मैंमुखमांगौं सोदेहुमहामति ॥ देवसहायकहौंनृपनायक । हैयहकारजरामहिंलायक २० राजा-मैंजोकह्योऋषिदेनसो लीजिय।काजकरौहठभूलिनकीजिय॥ प्राणदियेधनजाहिंदियेसब । केशवरामनजाहिंदियेअब २१ ऋषि-राजतज्योधनधामतज्योसब। नारितजीसुतशोचतज्योतब॥ आपनपौजोतज्योजगबन्दहै । सत्यनएकतज्योहरिचन्दहै २२ ॥

२०।२१ एकसमय इन्द्र नारदसों हरिश्चन्द्रके सत्त प्रतापादिको माहात्म्य सुनि इंद्रासन लेबेको भयमानि दुःखितभये हैं तब ब्रह्मादि देवन इंद्रको धीर्य्यदैकै हरिश्चन्द्रका सत्यभंग करिवेके लिये नारदको विश्वामित्रके पास पठयो बिश्वामित्र नारद मुखसों देवनकी आज्ञा सुनि काहू कामरूपी राक्षसको बोलाइ कह्यो कि तू शूकररूपह्वै अयोध्यामें जाइ राजा हरिश्चन्द्रको मृगयामिस हमारे आश्रममें ल्याउ राक्षस सो कियो विश्वामित्रके आश्रममें राजाको ल्याइ लुप्तभयो आश्चर्ययुक्त ह्वै राजा आश्रमनदीमें नहाइ कपट द्विजरूपधारि बिश्वामित्रको सब पृथ्वी औसर्वस्व दानकरयो है फेरि विश्वामित्र कह्यो है कि शतभार सुवर्ण दक्षिणादेहि तौ सर्वस्वलेहै नाहीं तौ सत्यको छोड़ो तब

काशीमें जाइकै मदना नामस्त्री औ रोहिताश्व नाम पुत्रको देवशर्मा ब्राह्मणके हाथ साठिभार सुवर्णको बेंच्योहै और चालीसभार सुवर्णको कालसेन चांडालकेहाथ अपना बिकाइ सौभार सुवर्ण विश्वामित्रको दियो फेरि चांडालकी आज्ञाते श्मशानघाटपर उचितद्रव्यलेबेको बैठेहैं कछूदिनमें पुष्पतोरतमें रोहिताश्वको सर्पकाट्यो मरयो ताकोलै मदना बहाइबेको गई तहां चांडालको उचित पंचमुद्रा लैहीकै बहावन दियोहै याप्रकार सुतको शोचछोंड़्यो सत्यपाल्यो यहसंक्षेप कथा लिख्यो है बिशेषसों हरिश्चन्द्रोपाख्यान पुराणनमें प्रसिद्धहै २२ ॥

राजवहैवहसाजवहैपुर । नामवहैवहधामवहैगुर ॥ झूठेसोंझूठइबांधतहौमन । छोंड़तहौनृपसत्यसनातन २३ दोहा ॥ जान्योविश्वामित्रके कोपबढ्योउरआइ । राजादशरथसोंकह्यो वचनवशिष्ठबनाइ २४ षट्पद ॥ इनहींकेतपतेजयज्ञकीरक्षाकरिहैं । इनहींकेतपतेजसकलराक्षसबलहरिहैं॥ इनहींकेतपतेजतेजबाढ़िहैंतनतूरण। इनहींकेतपतेजहोहिंगेमंगलपूरण ॥ कहिकेशवजययुत आइहैं इनहींकेतपतेजघर । नृपवेगिरामलक्ष्मणदुवौ सौंपौविश्वामित्रकर २५ ॥

साजछत्र चामर चमू आदि नाम यश गुरु वशिष्ठ झूठे जे पुत्रादिहैं तिनसों झूठईकहे बृथाही मनको बांधतहौ लगावत हौ अथवा झूठेसों कहे झूठेन सहितहै अर्थ पुत्रादि झूठे माया के प्रपंचहैं तिनसों मिलिकै झूठई जो झुठाई है तासों मनको बांधतहौ अर्थकि नाबांधौ अथवा झूठेकीसोंकहे झूठेकीतरहजैसे झूठाप्राणी झुठाईमें मनलगावतहै तैसे तुमहूं लगावतहौ औ सनातनकहे परंपराको सत्यछांड़तहौ देनकहि अबनहींदेत सोन चाहिये २३।२४ तेजप्रताप तूरणजल्दी मंगल विवाहादि२५॥

सोरठा ॥ राजाऔरनामित्र जानहुविश्वामित्रसे । जिनकोअमितचरित्र रामचन्द्रमयमानिये २६ दोहा ॥ नृपपैवचनवशिष्ठको कैसेमेट्योजाइ । सौंप्योविश्वामित्र कर रामचन्द्रअकुलाइ २७ ॥ पंकजवाटिकाछन्द ॥ रामचलतनृपकेयुगलोचन।वारिभरितभयेवारिदरोचन॥ पांयनपरिऋषिकेसजिमौनहिं । केशवउठिगयेभीतरभौनहिं २८ ॥ चामरछन्द ॥ वेदमंत्रतंत्रशोधिअस्त्रशस्त्रदै भले । रामचन्द्रलक्ष्मणौसोविप्रक्षिप्रलैचले ॥ लोभक्षोभमोहगर्वकामकामनाहई । नींदभूखप्यासत्रासवासना सबैगई २९ ॥

राक्षसबधमें अमितकहे सम्पूर्ण जो चरित्रहैं सोरामचन्द्रमय कहे रामचन्द्र चरितमय रामचंद्र चरितस्वरूपति जिनकोविश्वामित्रहीको चरित्रमानौ अर्थ जोराक्षसबधमें वावेधनादिकृतरामचन्द्र करिहैं सो कृतरामचन्द्रद्वारहै विश्वामित्रही करिहैं आशय यह कि यामें कछुश्रम रामचंद्रको नहीं है ये केवल तुम्हारेपुत्रको यश दियोचाहतहैं याते इनसममित्र दूसरोनजानौ अथवा रामचन्द्रमय कहे रामचन्द्र प्रतिसमर्पितमानिये अर्थजो करतहैं सो रामचंद्रको समर्पण करतहैं २६।२७ वारि जलसों भरित रोचनको वारिद मेघ भये अरुण रंग ह्वै आंशुनकी बर्षा करनलागे२८ वेदके मंत्र औ तंत्र शास्त्रके मंत्र शोधिशोधिकै दियो अथवा वेदके मन्त्र दिये बलातिबला विद्यादियोहै सो बाल्मीकीय रामायणमें लिख्योहै औ तन्त्र शास्त्रके मन्त्रनसों शोधि शोधिकै मन्त्रित करिकै अस्त्र शस्त्र दिये क्षिप्र कहे जल्दी तिन विद्यनके प्रभाव सों लोभादिकी बासना दूरिभई यथा । रघुवंशे । तौबलातिबलयोःप्रभावतोः विद्ययोः पथिमुनि प्रदिष्टयोः। मम्लतुर्नमणिकुट्टिमोचितौ मातृपार्श्वपरिवर्तिनाविव २९ ॥

निशिपालिकाछन्द ॥ कामवनरामसबबासतरुदेखि यो । नैनसुखदैनमनमैनमयलेखियो ॥ ईशजहँकामतनु कैअतनुडारियो । छोड़िवहयज्ञथलकेशवनिहारियो ३० दोहा ॥ रामचन्द्रलक्ष्मणसहित तनमनअतिसुखपाइ ॥ देख्योविश्वामित्रको परमतपोवनजाइ ३१ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीराम चन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामचन्द्रलक्ष्मण योर्विश्वामित्रतपोवनगमनंनामद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

जाबनमें महादेव कामकोजारयोहै ताकोकामबननामहै अथ- वा कामबनकहे अभिलाषको दाताबन ताबनमें रामचंद्र सब वासकहे ऋषिनके वास कुटीति औ तरु वृक्ष देख्यो अथवा बास तरु सुगंध युक्त तरु मैनमय कहे कामस्वरूपता बनमें ईशमहा- देव जहां जास्थानमें कामको जारयो है तास्थानको देखि छोंडि कै विश्वामित्रको यज्ञथल जाइ कै देख्यो ३०।३१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकिजानिप्रसादायजनजा नकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वितीयः प्रकाशः २ ॥

दोहा ॥ कथातृतीयप्रकाशमें वनवरणनशुभजानि ॥ रक्षनयज्ञमुनीशको श्रवणस्वयम्बरमानि १ ॥ षट्पद ॥ तरुतालीसतमालतालहिंतालमनोहर । मंजुलबंजुल तिलकलकुचकुलनारिकेरवर ॥ एलाललितलवंगसंग पुंगीफलसोहै । सारीशुककुलकलिताचित्तकोकिलअलि मोहै ॥ शुभराजहंसकलहंसकुल नाचतमत्तमयूरगन । अतिप्रफुलितफलितसदारहै केशवदासविचित्रवन २ ॥

सुप्रियाछन्द ॥ कहुँद्विजगणमिलिसुखश्रुतिपढ़हीं । कहुँ हरिहरिहरहररटरटहीं ॥ कहुँमृगपतिमृगशिशुपयपियहीं । कहुँमुनिगणचितवतहरिहियहीं ३ ॥ नाराचछन्द ॥ विचारमानब्रह्मदेवअर्चमानमानिये । अदीयमानदुःखसुःखदीयमानजानिये ॥ अदण्डमानदीनगर्वदण्डमानभेदवै । अपट्ठमानपापग्रन्थपट्ठमानवेदवै ४ ॥

तालीस वृक्ष विशेष हिंताल खजूरि बंजुल अशोक लकुच बड़हर २ मृगपतिपदते सिंहकी स्त्रीपुरुष जातिमात्रजानौ अर्थ सिंहिनिनको पयदूध मृगबालक पियतहैं यासों या जनायो कि जहां सहजहू बैरनहीं है कृत्रिमकी कहावतहै औ कहूं तेई मृग शिशु मुनिनके हियको हरिकै मुनिनकी ओर चितवतहैं यासोंमृग बालकनकी अति सुन्दरता जानो ३ जहांसदा ब्रह्मजो वेदहै सोई विचार्य्यमानहै बिचारयोजातहै अथवा परब्रह्मदेवपदते यहां विष्णुजानौ अथवा सदेवयासों या जनायो कि सुदेव सेवामें सवरहतहैं कोऊ कुदेव यक्षिणीआदिकी सेवा नहीं करत औ दुःख अदीयमान है कोऊ काहूको दुःख नहींदेत सुखदीयमान है औ दीन अदंडमान है दीनको कोऊ दंड ताडन नहींकरत औ वैकहे निश्चय करि गर्व औभेददण्ड मानहै पाप ग्रंथ मारण मोहनादिके ग्रंथ अपट्ठमानहैं कोऊ नहीं पठत ४ ॥

विशेषछन्द ॥ साधुकथाकथियेतहँकेशवदासजहां । विग्रहकेवलहैमनकोदिनमानतहां ॥ पावनबाससदाऋषिकोसुखकोवरषै । कोवरणैकविताहिविलोकतजीहरषै ५ चंचला ॥ रक्षिबेकोयज्ञकूलबैठेवीरसावधान । होनलागेहोमकेजहांतहांसबैविधान ॥ भीमभांतिताड़कासोभंगलागिकरनआइ । बानतानिरामपैननारिजानिछांड़ि

जाइ ६ ऋषि-सोरठा ॥ कर्मकरातियहघोर विप्रनकोदश हूदिशा ॥ मत्तसहसगजजोर नारीजानिनछांड़िये ७ ॥ राम-शशिबदना ॥ सुनुमुनिराई । जगदुखदाई ॥ कहि अबसोई । जेहियशहोई ८ ऋषि-कुण्डलिया ॥ सुता विरोचनकीहुती दीरघजिह्वानाम । सुरनायकवहसंहरी परमपापिनीबाम ॥ परमपापिनीबाम बहुरिउपजीकवि माता । नारायणसोहतीचक्रचिन्तामणिदाता ॥ नाराय णसोहतीसकलद्विजदूषणसंयुत । त्योंअबत्रिभुवननाथ ताड़कातारहुसहसुत ९ ॥

साधुकथा उत्तमकथा विष्णु विषयकिनी आदि अथवा साधु जेसंतजनहैं नारदादि तिनकीकथा तहांतेहिआश्रममें मुनिजनन करिकै कथिये कथनकरियतहै औ जहाँ केवल मनहीको निग्रहहै मन इन्द्रिनकोराजाहै मनकेनिग्रहसों सबइन्द्रिनको निग्रहजानो औ तहांमान दिनहीकेहै और काहूके नाहीं है दिनपक्षमें मानप्रमाण दिनमानकेतौ है यहपूछिबेकी रीति लोकमें प्रसिद्धहै अन्यत्रमानगर्व परिसंख्यालंकारहै अथवा दिनहीको मान आदर है यज्ञादिसत्कर्म दिनहीमें होतेहैं तासों ५ । ६ । ७ । ८ विरोचन बलिके पिताकीसुता दीर्घजिह्वानाम पापिनी रही ताको सुरनायकइन्द्र मारयो है औ फेरि अतिपापिनी कवि जेशुक्रहैं तिनकी माता भई ताको नारायण मारयोहै एक समय देवन के युद्धमें हारिकै दैत्य ब्राह्मणके शरण में बचिबो जानिकै शुक्र माता के शरणजाइ लुकाने तहांशत्रुको रक्षकजानि इंद्रकीआज्ञा सों विष्णु शुक्रमाताकाशिर चक्रसों खण्डनकरि दैत्यनको मारयोहै ताही कोपसों भृगुमुनि जाइ विष्णुके उरमें लातमारयो है औ आपने पुत्रशुक्रको दैत्यगुरु कियोहै यह कथा पुराणनमें प्रसिद्धहै कैसेहैं नारायण चिन्तामणिके दाताहैं अथवा चिंतामणि सरिस दाताहैं

सकलद्विजदूषणसंयुत ताड़काको विशेषण है औसहसुत कहे मारीच सहित याको या जनायो कि इन्द्र विष्णुहूं दुष्टस्त्रीबधकियोहै ९ ॥

दोहा ॥ द्विजदोषीनविचारियेकहापुरुषकहनारि ॥ रामविरामनकीजियेवामताड़कातारि १० ॥ अरहट्टाछंद ॥ यहसुनिगुरुबानीधनुगुनतानीजानीद्विजदुखदानि । ताड़कासँहारीदारुणभारीनारीअतिबलजानि ॥ मारीचबिडारयोजलधिउतारयोमारयोसबलसुबाहु । देवनिगुणपर्योंपुष्पनिबर्ष्योंहर्ष्योंअतिसुरनाहु ११ ॥ दोहा ॥ पूरणयज्ञभयोजहींजान्योविश्वामित्र ॥ धनुषयज्ञकीशुभकथालागेसुननबिचित्र १२ ॥

बिरामकहे बेर १० ताड़कादि बधसों गुणनकी परीक्षाकियो कि ये गुण विष्णुही में हैं तासों विष्णुको अवतार भयो अब रावण बधहै है यह जानि इन्द्र हर्षितभये ११ । १२ ॥

चंचरीछंद ॥ आइयोतेहिकालब्राह्मणयज्ञकोथलदेखिकै । ताहिपूंछतबोलिकैऋषिभांतिभांतिबिशेखिकै ॥ संगसुंदररामलक्ष्मणदेखिदेखिसोहर्षई । बैठिकैसोइराजमंडलबर्णईसुखबर्षई १३ ब्राह्मण-शार्दूलबिक्रीड़ितछंद ॥ सीताशोभनब्याहउत्सवसभासंभारसंभावना । तत्कार्यसमग्रव्यग्रमिथिलाबासीजनाशोभना ॥ राजाराजपुरोहितादिसुहृदोमंत्रीमहामंत्रदा । नानादेशसमागतान्नृपगणापूज्यापरासर्वदा १४ ॥

जनकपुरको ब्राह्मण सीयस्वयम्बर के अर्थ काहू राजाको निमन्त्रण दिये जातरह्यो सो यज्ञको स्थान देखिबेको स्वभावही आयो अथवा ऋषिहीको निमन्त्रण ल्यायोहै अथवाकोऊ साधारण पथिक ब्राह्मणहै ताको निकट बोलिकहे बोलाइकै बिश्वा-

मित्र भाँति भाँति विशेषसों जनकपुरकी कथा पूँछतहैं सो ब्राह्मण ऋषिकेसंग राम लक्ष्मणको देखि ऋषिकी स्त्री के वचन सत्यजानि अब सीताको व्याहह्वै है यह निश्चयकरि हर्षित आनन्दितहोतहै काहेते पञ्चम प्रकाशमें तृतीयछन्दमें ब्राह्मण कहि है कि काहू ऋषिकी स्त्री चित्रमें सीताका ऐसो कोऊ बरुलिखि ल्याई जैसो रामचन्द्रको देखियत है १३ सीताको जो शोभनकहे सुन्दरव्याहहै ताको जो उत्सवसभा कहे कौतुकसभाहै स्वयंबर सभा इति ताके जे अनेक संभार सामग्रीहैं अनेकराज सत्कारादि वस्तु तिनकी जो संभावना बिचारहै तासों राजा जनक औ राज पुरोहित सतानन्द तिन्हैं आदिदै और जे सुहृद मित्रहैं औ महा मन्त्रके देनहार जेमंत्री हैं औ समग्रकहे सम्पूर्ण मिथिलावासी जे शोभनकहे सुबुद्धिजनहैं ते सब तत्तत्कार्य कहे आपने आपने उचित कार्यमें व्यग्रकहे आसक्त हैं संलग्नइति अथवा आकुलहैं व्यग्रोव्यासक्त आकुले इति मेदिनी । औसर्वदापूज्य औ पर कहे उत्कृष्ट ऐसेनानादेश अनेकदेशके नृपगण समागतकहेआयेहैं १४॥

दोहा ॥ खंडपरेकोशोभिजैसभामध्यकोदंड ॥ मानहुँ शेषअशेषधरधरनहारबरिबंड १५ सवैया ॥ शोभित मंचनकीअवलीगजदंतमयीछविउज्ज्वलछाई । ईशमनोवसुधामेंसुधारिसुधाधरमंडलमंडिजुन्हाई । तामहँकेशवदासबिराजतराजकुमारसबैसुखदाई । देवनसोंजनुदेवसभाशुभसीयस्वयम्बरदेखनआई १६ दोहा ॥ नवतिमंचपंचालिकाकरसंकलितअपार ॥ नाचतिहैजनुनृपतिकी चित्तवृत्तिसुकुमार १७ सोरठा ॥ सभामध्यगुणग्रामबंदीसुतद्वैशोभहीं ॥ सुमतिबिमतियहनामराजनकोबर्णनकरैं १८सुमति-दोहा ॥ कोयहनिरखतआपनीपुलकितबाहुबिशाल॥सुरभिस्वयम्बरजनुकरीमुकुलितशाखरसाल १९॥

जामें देशान्तरन के राजालोग आय आय बैठत हैं ऐसी स्वयम्बरसभामें चारोंओरमंचकहे मचाननकी अवलीपंक्तिबन-तिहै १५ सोमंचावली सीयस्वयम्बरमें गजदंतहाथी दाँतनकी बनीहै तामेंब्राह्मण उत्प्रेक्षाकरतहै कि ईशजेविधाताहैं तेमानो जुन्हाईसों मंडिकै युक्तकरिकै वसुधापृथ्वीमें सुधाधरचन्द्रमाको मण्डलकहे परिवेषसुधारि कहे सुधारयो बनायोहै ज्योत्स्नायुक्त चन्द्रपरिवेष समकहे मंचावलीकी अतिश्वेतता जनायो ईशबना-योसमकहे अतिरुचिररचना जनायो औदेवसरिस राजकुमारहैं देवसभासरिस मंचावलीजानो १६ पंचालिकानृत्यकी जाति विशेषहै अपारकर कहेहस्तक भेदसों संकलितयुक्त १७ । १८ सुरभिकहे वसंतरूपीजो स्वयम्बरहै त्यहिमानो रसाल आँबकी शाखको मुकुलितबौरयुक्त करयोहै जैसेवसंतमें आँबकीशाखबौ-रतिहै तैसेधनुष उठाइवेको मोदकरि बाहुरोमाञ्चितभयो अथवा सुरभिरूपीजोहै स्वयंकहे अपना त्यहिवरकहे सुन्दर रसालशाख को मुकुलित कियोहै १९ ॥

विमति-सोरठा ॥ ज्यहियशपरिमलमत्तचंचरीकचार णफिरत ॥ दिशिबिदिशनअनुरक्तसुतौमल्लिकापीड़नृप २० सुमति-दोहा ॥ जाकेसुखमुखबासुतबासितह्वोतादि गंत ॥ सोपुनिकहुयहकौननृपशोभितशोभअनंत २१ बि मति-सोरठा ॥ राजराजदिगबाम भालखालसोभीस दा ॥ अतिप्रसिद्धजगनामकाशमीरकोतिलकयह २२ ॥

पांचछंदनमें विमतिकेपांच प्रश्नोंकोश्लेषसों उत्तरदियोहै म-ल्लिकनामजो पर्वतहै ताकोआपीडकहे शिखाभूषणहै अर्थमल्लिक पर्वतकोराजाहै । यथाच पद्मपुराणे । मल्लिकाख्यो महाशैलो मोक्षदःपश्यतांनृणां । यत्रांगेषुतृणांतोयं श्यामंवानिर्मलंभवेत् । पातकस्यापहारीदं मयादृष्टंतुतीर्थकम् ४ औमल्लिकाजोचँवेलीहै ताकोआपीड शिखाभूषणश्रेणी मालादि शिखास्वापीडशेखरौइ-

ष्यमरः कैसोहैराजा औ मालती मालाज्यहिके यशरूपी जोपरि-
मलसुगंधहै तासोंमत्त चंचरीक भ्रमरसदृशजे चारणभाटहैं ते
दिशिबिदिशनमें अनुरतसंलग्न फिरतहैं अर्थजाको यशदिशि बि-
दिशनमें भाटगावत फिरतहैं औ यशसदृश जोपरिमल सुगंध है
तामेंमत्त चारणसदृश जेचंचरीकभ्रमरहैं तेदिशिबिदिशनमें अनु-
रक्तफिरतहैंअर्थ जाकेसुगन्धमें मत्तहै भ्रमरदिशि बिदिशनमेंउड़त
फिरतहैं २० सुखकहे सहजसुखके बाससुगंधते २१ काश्मीरको
तिलककहे काश्मीरदेशको राजाऔकाश्मीरकहे केशरिको तिल-
ककैसोहै राजाऔ तिलकराजराजजे कुवेरहैं तिनकीदिशाउत्तर
दिशारूपी जोबामस्त्रीहै ताकेभालको लालरक्त जोसुमेरुहै सोहै
लोभीसदाज्यहि राजाकोअर्थ सुमेरुके यहइच्छारहतिहै किइंद्र
कोराजछोड़ि या राजाको राजहमपरहोय यासों या जनायो कि
राजारूपगुणकरि इन्द्रहूसोंअधिकहै अथवायहराज सुमेरुकोसदा
लोभीहै इंद्रको जीतिसुमेरुपर राज्यकरिबेकी इच्छाराखतहै औ
राजराजदिक् सदृशजेबामस्त्रीहैं राजराजदिक् सदृशकहे या ज-
नायोजैसे द्रव्यरूप लक्ष्मीसोंयुक्त उत्तरदिशा है तैसे शोभारूप
लक्ष्मीसोंयुक्त स्त्रीहै तिनकेभालको जोलालरत्नहै शोभाहै सदा
जातिलकको अर्थ जोतिलकलालहूकी शोभाबढ़ावतहै तासों
तिलककेनिकट रहिबेकीभाललालके इच्छारहतिहै आशयहकि
अतिभूषणनसोंभूषित औ अति सुन्दरीहू स्त्रिनकै शोभाबढ़ावतहै
साधारणनहींहै औअर्थ राजराजकहे राजनकोराजाहै और दिशा
रूपीजोबामस्त्रीहै ताकेभालको लालहै औलोभीहै सदाकहे या-
चकनकी याचकताको याचकनको याचिबोसर्बदाजाको भावतहै
अर्थबड़ोदाताहै सदापर सोमैं याचकताकी कहतहैं औरअर्थ रा-
जदिक् जोउत्तरदिशाहै ताके बामभागजो पूर्बदिशाहै ताकेभालको
लाल सूर्य्य ताको सदा लोभी ऐसा जो काश्मीर देशहै ताको
राजा है अति जाड़े सों जा देशबासिन के सदा सूर्य्योदय की इ-
च्छा रहति है २२ ॥

सुमति-दोहा ॥ निजप्रतापदिनचरकरतलोचनकम
लप्रकास ॥ पानखातमुमुकातमृदुकोयहकेशवदास २३
अर्थ यह जाके अंगनमें प्रताप कांतिकी झलक सब लोचन
पसारिकै निहारतहैं २३ ॥

बिमति-सोरठा ॥ नृपमाणिक्यसुदेशदक्षिणातियजि
यभावतो । कटितटसुपटसुवेशकलकांचीशुभमंडई २४
सुमति-दोहा ॥ कुण्डलपरसतमिसकहतकहौकौनयह
राज ॥ शंभुशरासनगुनकरोकरणालम्बितआज २५
बिमति- सोरठा ॥ जानहिंबुद्धिनिधान मत्स्यराजयहि
राजको ॥ समरसमुद्रसमान जानतसबअवगाहिकै २६
सुमति-दोहा ॥ अंगरागरंजितरुचिरभूषणभूषितदेह ॥
कहतविदूषकसोंकछू सोपुनिकोन्नृपयेह २७ ॥

नृप माणिक्य नृप श्रेष्ठ औ उत्तम माणिक्य राजा कैसो है
कि सुंदरहै देशद्रविड़ादि जामें ऐसी जो दक्षिणदिशा रूपीतियहै
ताको अति भावतहै जा दक्षिणदिशाके कटि तटमें कहे मध्यभा-
गमें सुंदरहै पटपद्धति जाको औ कल कहे दुःखरहित ऐसी जो
कांचीनाम पुरी है ताको मण्डतहै भूषित करतहै अर्थ कि याके
देशमें मध्यभागमें विष्णुकांची शिवकांची पुरीहै तामें जाको बा-
सहै माणिक्य कैसो है कि सुदेशकहे सुंदरी दक्षिण कहे प्रवीणजे
तिय स्त्री हैं तिनको अतिभावतो है फेरि कैसो है कि सुष्टुपट वस्त्र
युक्त जो कटितटहै तामें कलकहे अव्यक्त मधुरस्वर युक्त जो कां-
ची क्षुद्रघण्टिकाहै ताको मण्डई कहे भूषित शोभितकरै है २४
कर्णालंबितकरो कर्णपर्यंत खैंचो २५ मत्स्यनाम जो देश विशेष
है मछरी बंदरकरि प्रसिद्धहै ताको यह राजाहै और मत्स्यराज
राघव मत्स्यसों जैसे समुद्रको अवगाहि मँझाइकै सब जानत हैं
ऐसे राजा समररूपी समुद्रको मँझाइकै सब समर भेदको जा-

नतहै अर्थ कि बड़ोशूरहै मत्स्योमीनेपुमान् भूम्निदेशे इति मेदि-
नी २६ बिदूषकमसखराहास्यकारी विदूषक इत्यमरः २७ ॥

बिमति-सोरठा ॥ चन्दनाचित्रतरंगासिंधुराजयहजा
नियै ॥ बहुतबाहिनीसंगमुक्तामालविशालउर २८ दोहा ॥
सिगरेराजसमाजकेकहेगोतगुणग्राम ॥ देशस्वभावप्रभा
वअरुकुलबलबिक्रमनाम २९ घनाक्षरी ॥ पावकपवन
मणिपन्नगपतंगपितृजेतेज्योतिवंत जगज्योतिषिनगाये
हैं । असुरप्रसिद्धसिद्धतीरथसहितसिंधु केशवचराचर
जेवेदनबतायेहैं ॥ अजरअमरअजअंगीऔअनंगीसब
बरणिसुनावैऐसेकौनेगुणपायेहैं । सीताकेस्वयम्बरकोरू
पअवलोकिबेको भूपनकोरूपधरिबिश्वरूपआयेहैं ३०
सोरठा ॥ कह्योबिमतियहटेरिसकलसभाहिसुनाइकै ॥
चहूंओरकरफेरिसबहीकोसमुझाइकै ३१ गीतिकाछंद ॥
कोइआजुराजसमाजमेंबलशंभुकोधनुकर्षिहै । पुनिश्रव
णकेपरिमाणतानिसोचित्तमेंअतिहर्षिहै ॥ वहराजहोइ
किरङ्ककेशवदाससोसुखपाइहै । नृपकन्यकायहतासुके
उरपुष्पमालहिनाइहै ३२ ॥

सिंधुराज सिंधुदेश लाहौरको राजा, औ समुद्रचन्दनके चित्र
कीतरंगहै अंगनमें जाके अर्थ चित्र विचित्र चन्दन अंगनमें लायेहै
औचन्दन वृक्षनसों चित्रबिचित्र है तरंगजाकी अनेकचन्दन वृक्ष
जाकी तरंगनमें बहतहैं वाहिनी चमू औनदी मुक्तनकी मालाप-
हिरे है औमुक्तनकी मालपङ्क्ति समूहेति सोहै उरमें बदनमें जा-
के ॥ सिंधुर्वमथुदेशाब्धिनदेनासरितिस्त्रियां इतिमेदिनी २८ बल
अंग बलविक्रम बुद्धिबल २९ पन्नगसर्प शेषादिपतंग पक्षी गरु-
ड़ादि असुरदैत्य राक्षस बाणासुर रावणादि सिद्धदेव जातिविशे-
षः अथवातपस्वी अजरकहे जराबुढ़ाईसों रहित देवता अमर

हनूमानादि अजब्रह्मादि अंगीअंगधारी अनंगी कामादि विश्वरूप संसार भरेके रूपप्राणी ३० । ३१ कर्षि है उठाइ है ३२ ॥

दोहा ॥ नेकशरासनआसनै तजैनकेशवदास ॥ उद्य मकैथाक्योसबैराजसमाजप्रकास ३३ विमति—सुन्दरी छन्द ॥ शक्तिकरीनहिंभक्तिकरीअब । सोननयोपलशी शनयेसब ॥ देख्योंमैंराजकुमारनकेवर । चापचढ्योनहिं आपचढ़ेखर ३४ विजय ॥ दिग्पालनकी भुवपालनकी लोकपालनहूकिनमातुगईच्वै । भाँड़भयेउठिआसनतेक हिकेशवशम्भुशरासनकोछ्वै॥काहूचढ़ायोनकाहूनवायो सुकाहूउठायोनआँगुरहूद्वै । स्वारथभोनभयोपरमारथ आयेकैबीरचलेबनिताकै ३५ इतिश्रीमत्सकललोकलो चनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्वि रचितायांस्वयम्बरसभावर्णननामतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

जो याधनुषको उठाइहै ताको नृपकन्या व्यर्थ पुष्पमाला पहिराइहै ऐसे विमतिके बचनसुनि सब राजसमाज समूह धनुष उठाइवेमें उद्यमकहे उपाइकरतभये परन्तु शरासननेकु आसनकोहून छोड़तभयो अर्थरंचकहूना उठ्यो ३३ जब धनुष काहू सों न उठ्यो तबक्रोध युक्तह्वै विमतिकह्यो धनुष उठाइबे में राज कुमारन शक्तिबल नहींकियो धनुषकी भक्तिकियोहै काहेकी धनुष न नयो औपलमात्रसबके शीशनवतभये तौजाकी जो भक्तिकरत हैं ताको शिशनावत प्रणामकरतहैं तासों आप खर गर्दभमें चढ़े अर्थ गर्दभमें चढ़ेप्राणी सबनिन्दितभये ३४ किन च्वैगई कहेगर्भ पतनकाहे नाभयो ३५ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायांरामभक्ति प्रकाशिकायांतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

दोहा ॥ कथाचतुर्थप्रकाशमें बाणासुरसम्वाद ॥ रा-

वणसोंअरुधनुषसोंदशमुखबाणविषाद १ सबहीकोसमु
झेउसबन बलविक्रमपरिमाण ॥ सभामध्यताहीसमय
आयेरावणबाण २॥ अडिल्लछंद॥नरनारिसबै। भयभीत
तबै॥ अचरिज्जुयहै। सबदेखिकहै ३ दोहा ॥ हैराकसद
शशीशकोदैयतबाहुहज़ार॥ कियोसबनिकेचित्तरसअद्भु
तभयसंसार ४ रावण-विजोहाछंद॥ शंभुकोदंडदै। राज
पुत्रीकितै॥ टूकद्वैतीनिकै। जाहुंलंकाहिलै५विमति-शशि
बदनाछंद॥ दशशिरआवो। धनुषउठावो॥कछुबलकीजै।
जगयशलीजै ६ बाण–गीतिकाछंद ॥ दशकंठरेशठ
छांड़िदेहठ बारबारनबोलिये। अबआजुराजसमाज
मेंबलसाजुचित्तनडोलिये॥ गिरिराजतेगुरुजानियेसुर
राजकोधनुहाथलै। सुखपायताहिचढ़ायकैघरजाहिरेय
शसाथलै ७॥

रावणसों बाणासुरको सम्बाद है ना उठ्यो तासों दशमुख
औ बाणको धनुषसों बिषाददुःखहै १। २ बाण रावणको देखि
सबप्राणी आश्चर्य यहै शब्द कहतभये ३ दशशिशको राक्षस औ
हज़ारबाहुको दैत्य सबनके चित्तमें अद्भुत औ भयरसको संसार
रच्यो अर्थ अतिआश्चर्य औ भयसों युक्तकियो दशशिर हज़ारबाहु
देखि अद्भुत रसभयो भयानकरूप देखि भयरस भयो ४ रावण
बिमतिसों कह्यो कि शंभुको दंड हमको देकहे दीजिये औ राज-
पुत्रीकहांहै ताको बतावो धनुषतोरि राजपुत्रीलै लंकहिजाउँ५।६
बिमतिसों कहत ऐसे सबनके गर्व वचन सुनि रोषकरि बाणबो-
लतभये राजसभामें बलकोसाज पराक्रमकरु चित्तकरिकै ना
डोलु अर्थ मनोरथ ना करु अथवा बलकी साजसों अथवा बल
औ साज सैन्यादिसों चित्त ना डोलावो मनोरथ ना करौ अर्थ इहां
तुम्हारो बल ना चलि है सुरराज महादेवके गिरिराजते कैलास

ते सुरराज को धनुष गुरू गरूजानो सुरराज पदको सम्बन्ध गिरिराजहूमें है ७॥

मंथनाछंद॥ बाणीकहीबान। कीन्हीनसोकान॥ अद्यापिआनीन। रेवंदिकानीन ८ बाण-मालतीछंद॥ जो पैजियजोर। तजौसबशोर॥ शरासनतोरि। लहौसुख कोरि९शवण--दंडक॥ वज्रकोअखर्वगर्वगंज्योज्यहिपर्ब तारिजीत्योहैसुपर्वसर्बभाजेलैलैअंगना। खंडितअखंड आशुकीन्होहै जलेशपाशुचन्दनसीचन्द्रिकासोंकीन्हीचं दबंदना॥ दंडकमेंकीन्हो कालदण्डहूकोमानखंड मानो कोहूकालहीकीकालखंडखंडना। केशवकोदंडबिशदंड ऐसेखंडेअबमेरे भुजदंडनकीबड़ीहैबिडंबना १०॥

अतिगर्बसों बाणकी बाणी कानमें ना करयो अर्थ ना सुन्यो फेरि विमतिसों कह्यो कि रेकान्नीन क्षुद्रवंदि अद्यापि राजपुत्रीको नाल्यायो ८ अर्थ राजपुत्री प्राप्तरूपी सुखशरासन तोरे बिना न पैहै ९ जिन भुजदण्डन बज्रको जो अखर्व बड़ोगर्बहै ताको गंज्यो बिदारयो अर्थ इंद्रकी रक्षा औ शत्रुबध करिबेमें बज्रके अमोघ ताको गर्बरह्योसो इनमें निःफलभयो पर्बतारि इन्द्रको इनजीत्यो तब सर्व सुपर्वदेवता आपनी आपनी स्त्री लैलै भागत भये फेरि अखंड काहूके खंडिवेयोग्य नहीं ऐसो जो जलेश बरुणको पाशु फांसहै ताको आशु जल्दी जिनखण्डन कियो तोरयो औ जिनकी वन्दना पूजा चन्दनसी चन्द्रिकासों चन्द्रकरयो अर्थ अतिभयमानि चन्द्रमा जिनको सुखद चांदनीसों सुखदियो युद्ध ना कियो औ कालदण्ड यमराजकी आयुधताके यमराजरक्षा शत्रुबधकरिबेको मान गर्बरह्यो ताको खण्डनकियो औ काल जेयमराज हैं तिनहीं को खण्ड खण्डना इनऐसी कियो मानो कालकहे यमके काल ईश्वर कीन्हो अर्थ जैसे यमको काल निर्भयहै यमके खण्डनकरन है तैसे करयो यासोंया जनायो कि मैं इन भुजदण्डनसों इनको

सबको जीत्यों है केशव कवि कोदण्ड धनुष विशयो नारी बिड-म्बना निंदा १० ॥

बाण-तुरंगमछंद ॥बहुतबदनजाके।विविधबचनताके॥ रावण॥ बहुभुजयुतजोई । सबलकहियसोई ११ रावण दोहा ॥ अतिअसारभुजभारहीं बलीहोहुगेबान॥ममबा हुनकोजगतमें सुनिदशकंठबिधान १२ सवैया ॥ हौंजब हौंजबपूजनजात पितापदपावनपापप्रनासी । देखिफिरौं तबहींतबरावणसातौरसातलकेजेबिलासी ॥ लैअपनेभु जदंडअखंडकरौंक्षितिमंडलछत्रप्रभासी । जानैकोकेशव केतिकबारमैंशेषकेशीशनदीनउसासी १३ रावण--कमल छंद ॥ तुमप्रबलजोहुते । भुजबलनिसंयुते । पितहिभुव ल्यावते । जगतयशपावते १४बाण-तोमरछंद ॥ पितुआ नियेकिहिओक । दियदक्षिणासबलोक ॥ यहजानुराव णदीन । पितुब्रह्मकेरसलीन १५ ॥

रावणके बचनमें काकूक्तिहै ११असार बल रहित १२ अखण्ड सम्पूर्ण १३ । १४ हेरावण दीन हमारो पिता ब्रह्मपरब्रह्म के रस स्वादमें लीनहै तू यह जानि कहे जानु १५ ॥

सवैया ॥ कैटभसों नरकासुरसों पलमेंमधुसों मुरसों ज्यहिमारयो । लोकचतुर्दशरक्षककेशवपूरणबेदपुराण बिचारयो ॥ श्रीकमलाकुचकुंकुममंडितपंडितदेवअदेव निहारयो॥सोकरमाँगनकोबालिपै करतारहुनेकरतार पसा रयो १६ रावण— दोहा ॥ हमैंतुम्हैंनाहिंबूझिये विक्रम बादअखण्ड। अबजोयहकहिदेहिगोमदनकदनकोदण्ड १७ संयुतछन्द ॥ ब्रतबाणरावणकीसुन्यो । शिरराजमं डलमेंधुन्यो ॥ विमति ॥ जगदीशअबरक्षाकरौ । विपरी

तबातसबैहरौ १८ दोहा ॥ रावणबाणमहाबली जानत सबसंसार । जोदोऊधनुकर्षिहैं ताकोकहाबिचार १९ बाण—सवैया ॥ केशवऔरतेऔरभईगतिजानिनजाइ कछूकरतारी । शूरनके मिलिबेकहँआयमिल्योदशकण्ठ सदाअबिचारी ॥ बाढ़िगयोबकवादबृथायहभूलिनभाट सुनावहिगारी ।चापचढ़ाइहौंकीरतिकोयहराजकरैतेरीरा जकुमारी २० ॥

जाकरने कैटभादि बली दैत्यनको मारयो फेरिचौदहौलोक की रक्षाकरतहैं यों कहिकरकी बड़ी शक्ति जनायो फेरि श्रीकम-लालक्ष्मीके कुचनमें कुंकुमकेशरिके मण्डित में भूषितकरैमें अर्थ मकरिका पत्र बनावै मों पण्डितहै यासों या जनायो कि जिन विष्णुके लक्ष्मीस्त्रीहैं तासोंसबसब पदार्थसों पूरणजानो यामेंयेती शक्ति है शारदकर हाथ करतार जेब्रह्माहैं तिनहुँनके करतार जे विष्णुहैं तिन बलिपै मांगिबेको पसारयो ऐसे बली बिष्णुबलिपै भिक्षाही मांगिपायो जीतिकैनपाई तासों विष्णुहूँसों अधिकब-लीऔदाता जानो इतिभावार्थः १६ । १७ ब्रत धनुष उठाइबेकी प्रतिज्ञा १८ । १९ विमतिके ऐसेविकल बचन सुनि बाणकह्यो कि हे भाट सीताके ब्याहिबे को बाणधनुष उठावतहै ऐसीजो गारीहै ताको भूलिहूना सुनाउ सीताहमारी मातहैं उनतिसयें दोहामें कह्योहै किसीतामेरीमाइ २० ॥

रावण-- मधुछन्द ॥ मोकहँरोंकिसकैकहिकोरे । युद्ध जुरेयमहूंकरजोरे ॥ राजसभातिनुकाकरिलेखों । देखिकै राजसुताधनुदेखों २१ सवैया ॥ बाणकह्योतबरावणसों अबबेगिचढ़ाउशरासनको । बातैंबनाइबनाइकहाकहै छोड़िदेआसनबासनको॥ जानतहौकिधौंजानतनाहिंनतू अपनेमदनासनको । ऐसोहिकैसेमनोरथपूजतपूजेबिना

नृपशासनको २२ रावण-बंधुछंद ॥ बाणनबाततुम्हैं कहिआवै ॥ बाण॥सोईकहौंजियतोहिंजोभावै॥ रावण॥ काकरिहौहमयोंहींबरैंगे ॥ बाण ॥ हैहयराजकरीसोकरैंगे २३ रावण-दण्डक॥भौंरज्योंभँवतभूतवासुकीगणेशयुतमानोंमकरन्दबुन्दमालगंगाजलकी। उड़तपरागपटनालसीबिशालबाहुकहाकहौंकेशवदासशोभापलपलकी । आयुधसघनसर्व मङ्गलासमेतिशर्व पर्वतउठाइगतिकीन्हीहै कमलकी । जानतसकललोकलोकपालदिगपाल जानतनबाणबातमेरेबाहुबलकी २४ ॥

२१ । आसनबिछावने औ बासन वस्त्रनकोछोड़िदे अर्थ मल्लरूपकाछि धनुषउठावोआइ अथवा सीताके लीबेकी जे आशाहैं तिनकी वासना स्मरण छोड़िदे अपने मदनाशनको मोको तूजानतहै कि नहीं जानत जो ऐसीबात कहतहै कि सीताको बिना धनुषतोरेही बरिहैं अथवा अपने मदनाशनको धनुषको अर्थ यहधनुष तुम्हारे मदको नाश करिहै नृपशासन धनुष उठाइबो२२ हैहयराज सहस्रार्जुन २३ वासुकी सर्प औ गणेश सहित भूत गण जापर्वतमें कमल के भौंरसम भँवत भये औ महादेव के शीशको जो गंगाजलगिरयो ताकीमाल मकरंद पुष्परसभयो औ उड़त जे पार्वतीआदिके पटवस्त्रहैं तेईपराग पुष्प धूलि औ मेरो बाहुजोहै सो नाल कमलदण्डभयो एते मैं या जनायो कि जब मैं कैलास उठायो तब अतिभयसों गणेशादि भ्रमतभये औ अति शीघ्रउठायो तासों शंभुशीशको गंगाजल गिरयोऔवस्त्र उड़तभये औआयुधसघनकहियाजनायोकितुमएकशंभुधनुषउठाइबोकाठिन मानतहौ वापर्वतमेंऐसे अनेकआयुधरहे सर्वमंगलापार्वती२४॥

मधुभारछन्द ॥ तजिकैसुरारि । रिसचित्तमारि ॥ दशकण्ठआनि । धनुछुयोपानि २५ बिमति ॥ तुमबल

निधान । धनुअतिपुरान ॥ पीसजहुअंग । नहिंहोहिभं ग २६ सवैया ॥ खण्डितमानभयोसबकोनृपमण्डल हारिरह्योजगतीको । व्याकुलबाहुनिराकुलबुद्धिथक्यो बलविक्रमलंकपतीको । कोटिउपायकियेकहिकेशवकेहूंन छांड़तभूमिरतीको । भूरिबिभूतिप्रभावसुभावहिज्योंनच लैचितयोगयतीको २७ पद्धटिका ॥ धनुअतिपुरानलं केशजानि । यहबातबाणसोंकहीआनि ॥ हौंपलकमाहँ लैहौंचढ़ाइ । कछुतुमहूंतौदेखोउठाइ २८ ॥

सुकहे सोरारिवाग्विवादअथवासुरारि । बाणासुर २५ । २६ निराकुल शिथिल बलदेह बल विक्रम उपाय विभूति ऐश्वर्य सुवर्णरत्न गजादियोग यतीयोगी २७ धनुषमोसों उठनलायक नहींहै यहजानिकै लंकेशरावण अपनोभरमराखि धनुषछोड़ि भाइबाणसों यहवातकह्यो कि धनुषअति पुरानहै २८ ॥

बाण--दोहा ॥ मेरेगुरुकोधनुषयह सीतामेरीमाइ ॥ दुहूँभाँतिअसमंजसैबाणचलेसुखपाइ २९ रावण--तोट कछंद ॥ अबसीयलियेबिनहौंनटरौं । कहुंजाहुंनतौलगि नेमधरौं ॥ जबलौंनसुनौंअपनेजनको । अतिआरतश ब्दहतेतनको ३० ब्राह्मण-मोदकछंद ॥ काहूकहूंशरआस रमारिय । आरतशब्दअकाशपुकारिय ॥ रावणकेवहकान पर्योजब । छोड़िस्वयंबरजातभयोतब ३१ दोहा ॥ जबजा न्योसबकोभयो सबहीबिधिब्रतभंग ॥ धनुषधर्योलैभवन में राजाजनकअनंग ३२ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचन चकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितां यांबाणरावणयोर्वाक्विवादवर्णनंनामचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

२९ हतेकहे बाणादिसोंवेधे अर्थ मेरेदासइहां उहांयज्ञादिवि-

घ्नकरत फिरतहैं तिनको जोकोऊ सताइहै तौतिनकीरक्षाकोजै हौं ३० जबमारीचादिको रामचन्द्र मारयोहै तबतिनकोत्रारत पीड़ितदुःखितेति शब्दसुनि रावणस्वयंबर सभातेगयो सोभेद कछूब्राह्मण तौजानत नहींतासों संदेहविशिष्टह्वै कहतहै किकाहू बलीकहूं कौन्योस्थानमें शरबाणसों आसरकहे काहू राक्षसको मारयो क्रव्यादोऽस्रप आसरइत्यमरः । सुदभासुरमारियकहूं यहपाठहै तौसुदनामा राक्षसतेभा कहे उत्पन्न जोअसुरराक्षस है मारीचताको सुदनाम राक्षसकी स्त्री ताड़का है ताको पुत्र मारिचहै औ कहूं शरमारिच मारिय पाठ है तौ शरसों मारीचनाम राक्षसको मारयो ३१ अनंगविदेहे ३२ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजन जानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

दोहा ॥ यहप्रकाशपंचमकथा रामगवनमिथिलाहि॥ उद्धारणगौतमघरणि स्तुतिअरुणोदयत्राहि १ मिथिलापतिकेवचनअरु धनुभंजनउरधार ॥ जैमालादुंदुभिअमर बर्षनफूलअपार २ ब्राह्मण-तारकछंद ॥ जबआनि भईसबकोदुचिताई। कहिकेशवकाहुपैमेटिनजाई ॥ सिय संगलियेऋषिकीतियआई। इकराजकुमारमहासुखदाई ३ ॥ मोहनछंद ॥ सुंदरबपुअतिश्यामलसोहै। देखतसुर नरकोमनमोहै ॥ आनियलिखिसियकोबरुऐसो। रामकुमारहिदेखियजैसो ४ तोटकछंद ॥ ऋषिराजसुनीयहबातजहीं। सुखपायचलेमिथिलाहितहीं ॥ बनरामशिलादरशीजबहीं। तियसुंदररूपभईतबहीं ५ बिश्वामित्र-सोरठा ॥ गौतमकीयहनारिइंद्रदोषदुर्गतिगई ॥देखितुम्हैंनरकारिपरमपतितपावनभई ६ कुसुमविचित्राछंद॥ तेहिअ

तिरूरेरघुपतिदेख्यो । सबगुणपूरेतनमनलेख्यो ॥ यहबर मॉग्योदियोनकाहू । तुममममनतेकहूंनजाहू ७ कलहंसछन्द ॥ तहँताहिदैबरुकोचलेरघुनाथजू । अतिशूरसुन्दरयोंलसैंऋषिसाथजू ॥ जनुसिंहकेसुतदोउसिद्धीश्रीरये । बनजीवदेखतयोंसबैमिथिलागये ८ ॥

१ । २ जब धनुष काहूसों न उठ्यो तब सबके जनकादिके मनमें दुचिताई भई कि सीताको व्याह अबनाहै ता दुचिताई मेटिबेके लिये त्रिकालदर्शिनी काहू ऋषिकी स्त्री एक राजकुमार सीताके संग चित्रमें लिखिकै ल्याई कि सीताको या प्रकारको वरु मिलिहै आशय कि जब या प्रकारको राजकुमार आवै तब शम्भु धनुष चढ़ाइकै सीताको व्याहै ३ सो हे ऋषि जैसो इन रामकुमारको देखियतहै तैसोई बरु ऋषिकी स्त्री सीताको लिखि ल्याई ४ । ५ दुर्गति दुर्दशाको गईकहे प्राप्तभई ६ रूरे सुंदर ७ अतिशूर औ सुन्दर दुवौ राम लक्ष्मण ऋषिकेसाथमें ऐसे शोभितभये मानों सिद्धि जो तप सिद्धिहै ताकी श्री शोभामें रमे कहे अनुरागे सिंहके सुत पुत्रहैं सिंहादिबन जीव तपस्विनके वश्य होतहैं यह प्रसिद्धहै औ सिद्धहै श्रीरये पाठहोइ तौ सिद्ध स्वाभाविक श्री शोभासोंरये युक्त ८ ॥

दोहा ॥ काहूकोनभयोकहूं ऐसोसगुननहोत । पुरपैठतश्रीरामके भयोमित्रउद्दोत ९ राम--चौपाई ॥ कछुराजतसूरजअरुणखरे । जनुलक्ष्मणकेअनुरागभरे ॥ चितवतचित्तकुमुदिनीत्रसै । चोरचकोरचितासीलसै १० ॥ लक्ष्मण-षट्पद ॥ अरुणगातअतिप्रातपद्मिनीप्राणनाथभय । मानहुंकेशवदासकोकनदकोकप्रेममय ॥ परिपूरणसिंदूरपूरकैधौंमंगलघट । किधौंशक्रकोछत्रमढ्योमाणिकमयूषपट ॥ कैशोणितकलितकपालयहकिलकपालिका

कालको । यहललितलाल कैधौंलसत दिग्भामिनिके भालको ११ ॥

९ अति अनुरागकरि पुरमें पैठतही लक्ष्मणके सगुनार्थ उदितभये ताही अनुराग प्रेमसों मानो भरे कहे पूरितहैं अथवा लक्ष्मणको व्याजकरि सगुनसमय उदयसों आपने ऊपर सूर्य्य को प्रेमजनायो यह कहनूति लोकरीतिहै १० पद्मिनी प्राणनाथ सूर्य अरुणतामें तर्कहै कोकनद कमलनको फुलावत हैं कोक चकवानको संयोगी करतहैं तासोंमानों तिनके प्रेममयीहै अर्थ तिनप्रति जो प्रेमहै सोऊपर छाइरह्योहै सिंदूरकी पूर प्रवाह जलेति अर्थ सिन्दूर मिश्रित जलसों भरयो अथवा परिपूर्ण सिंदूरसों पूरकहे पूरित अर्थसिंदूरहीसों भरयो अथवासिंदूरसों रँग्यो कै मङ्गल बिवाहादिको घटपूजनकलशहैं माणिक रत्नकी मयूष किरणि तिनकोबीन्यो पटवस्त्र औ कोकिलकहे निश्चयकरि यह कपालिकाकाली पै शोणितरुधिर कलितकालको कपालशीशहैं अथवा कपालिकाको व कालकोशोणित कलित कपालहैं काली को रुधिर मांसभक्षकतासों कालको सर्वभक्षकतासों कालोजगद्भक्षक इतिप्रमाणात् ११ ॥

तोटकछन्द ॥ पसरेकरकुमुदिनकाजमनो । किधौंपद्मिनिकोसुखदेनघनो ॥ जनुऋक्षसबैयहित्रासभगे । जियजानिचकोरफँदानठगे १२ रामचन्द्र-चंचरीछंद ॥ व्योममेंमुनि देखिये अतिलालश्रीसुखसाजहीं । सिंधुमेंबड़वाग्निकीजनुज्वालमालबिराजहीं ॥ पद्मरागनिकोकिधौं दिविधूरिपूरितशोभई । सूरबाजिनकीखुरीअतितीक्षता तिनकीहई १३॥ बिश्वामित्र-सोरठा॥ चढ़योगगनतरु धायदिनकरबानरअरुणमुख ॥ कीन्होझुकिझहराय सकलतारकाकुसुमाबिन १४॥

कुमुदिनि कोई के काजकहे गहिबेको कुमुदिनी भयसों संकोचको प्राप्ति होतीहै तासों ऋक्षनक्षत्र यहित्रास कहे फन्दाभ्रमके त्रास १२ यामें आकाशमें सूर्यकी लालीछाइ रहीहै ताको वर्णन है मुनिविश्वामित्रको संबोधनहै १३ सूर्योदय सों नक्षत्रास्त भयेतामें विश्वामित्रने तर्ककरयो दिनकर सूर्यरूपी जो अरुण मुख वानरहै सो गगन आकाशरूपी तरुवृक्षमें धायकै चढ्यो है सो झुकि कहेरिसायकै भ्रहरायकहे हलायकै सकलतारका नक्षत्ररूपी जे कुसुमफूले हैं तिन बिनकीन्ही सकलनक्षत्रास्त भयो तासों झुकिपद कह्यो १४ ॥

लक्ष्मण-दोहा ॥ जहींबारुणीकीकरीरंचकरुचिद्विजराज ॥ तहींकियोभगवन्तबिनसंपतिशोभासाज १५ तोमरछन्द ॥ चहुँभागबागतड़ाग। अबदेखियेबड़भाग॥ फलफूलसोंसंयुक्त। अलियोंरमैंजनमुक्त १६ राम-दोहा॥ तिननगरीतिननागरी प्रतिपदहंसकहीन ॥ जलजहार शोभितनजहँ प्रकटपयोधरपीन १७ ॥

वारुणी पश्चिमदिशा औ मदिराद्विजराज चन्द्रमा औब्राह्मण भगवंतसूर्य औ ईश्वर सम्पत्ति चांदनी औद्रव्यशोभा अंग छवि दुवौमें जानौ सूर्योदय सों पश्चिम दिशामें शोभा रहित चन्द्र बिम्बदेखि श्लेषोक्तिसोंवर्णनकरयो जोब्राह्मण मदिराकी रुचि इच्छाकरतहै ताकोईश्वर सम्पत्त्यादिसों हीनकरतहै १५ चहुँ भागचारौवीरमुक्त साधुजन १६ जोजनकदेशगे तेनगरीपुरीऔते नागरीस्त्रीनहींहैं जेप्रतिपद स्थानस्थानप्रति औधरणचरणप्रति हंसपक्षी औककहे जल औहंसक बिछुवनसों हीनहैं औजहाँकहे जिनमें पनिबड़ेपयोधर बापीतड़ागादि औकुचनमें जलजकमल औमोतिनकेहार समूह औमालानहीं शोभितअर्थ सबनगरिनमें जलाशय जलयुक्तहैं तिनमें कमलफूलहैं औहंसबसतहैं औ स्त्री मोतिनकेमालाऔबिछुवापहिरेहैं यासोंयाजनायो कि बिधवानहीं

हैं औरअर्थ जोदेशतिननगरिन औतिन नागरिनसोंयुक्तहै युक्तेति-शेषः । जिनकेप्रतिपदकहे मगराजमार्गेति औपगचिह्नजे धूरि में अंकितहोतहैं तेईहंसपक्षी औकजल औ बिछुवनकरिहीनहैं अर्थ नगरिनमें राजमार्गछोंड़िअन्यत्रहंसयुक्तजलशोभितहै औस्त्रिनके पगचिह्नहीमें बिछुवानहींहैं औपगनमें सबबिछुवा पहिरे हैं औ जहँकहे जिननगरिनमें औस्त्रिनमें शोभितन जलजहारनकमल समूहन औ मोती मालनसों युक्त पीनबड़े पयोधर तड़ागादि औ कुचहैं १७ ॥

सवैया ॥ सातहुद्वीपनकेअवनीपतिहारिरहेजियमेंजब जाने।बीसबिसेब्रतभंगभयोसोकहौअबकेशवकोधनुताने ॥ शोककि आगिलगीपरिपूरण आइगयेघनश्यामबिहाने । जानकिकेजनकादिककेसब फूलिउठेतरुपुण्यपुराने १८ दोधकछंद ॥ आइगयेऋषिराजहिलीने । मुख्यसतानँदबिप्रप्रबीने । देखिदुवौभयेपाँयनिलीने। आशिषसोऋषिबासुलैदीने १९ बिश्वामित्र-सवैया॥ केशवयेमिथिलाधिपहैंजगमें जिनकीरतिबेलिबईहै । दानकृपानबिधातनसोंसिगरीबसुधाजिनहाथलईहै । अंगछसातकआठकसोंभवतीनिहुंलोकमेंसिद्धिभईहै । वेदत्रयी अरुराजसिरी परिपूरणताशुभयोगमईहै २० ॥

घनश्याम रामचन्द्र औसजलमेघ जैसे सजलमेघनके आगमनसों वृक्षनकी दावाग्नि बुझातिहै औ हरितह्वै जातहैं तैसे धनुषकाहूसोंना उठ्यो अबसीताको ब्याहना ह्वैहै ऐसेगाढ़ समयमों हमकछू सहायना कियो यहजासों कहे ताको आगि जनकादिके पुण्य वृक्षनमों लगिरहैसो रामागमनसों धनुषउठिबो निश्चय करि बुझानी औ फूलिउठे प्रफुल्लितह्वैउठे हरितह्वैउठे १८ मुख्य जे सतानन्द प्रवीने विप्रऋषिहैं ते राजाजनकको लीन्हे

विश्वामित्रको आगे ह्वै लेवेको आइगये विश्वामित्र कोदेखि दुवौसतानन्द औ जनकपाँयनमें लीनभये विश्वामित्र शीशसूं- घि आशिषदियो १९ विश्वामित्र रामादिसों जनककी बड़ाई करतहैं वेदत्रयीकहे तीनोंवेद ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद तिनकेछः अंगसों औ राज श्रीके सात अंगसों औ योगके आठ अंग सों मन्त्र जोसंसारहै तामें तीनिहुँ लोकमें जनककीसिद्धि कार्यसिद्धिभईहै यासोंया जनायो षडंग युक्तवेद सप्तांगयुक्त राज्य अष्टांगयुक्त योग साधन करतहैं वेदांगानियथा । शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्ति ४ ज्योतिष ५ छन्द ६ यथोक्तं षट्पञ्चाशिकायांभट्टोत्पलटीकायां शिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तंछन्दोज्योतिषमिति । राज्यांगानियथा ॥ राजा १ मन्त्री २ मित्र ३ खज़ाना ४ देश ५ कोट ६ सैन्य ७ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशं राष्ट्रदुर्गबलानिच । राजांगानीत्यमरः । योगांगानियथा ॥ यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ ध्यान ६ धारणा ७ समाधि ८ यथोक्तंप्रबोधचन्द्रोदये । यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारध्यानधारणासमाधयश्च २० ॥

जनक-सोरठा ॥ जिन अपनोतनस्वर्ण मेलितापमय अग्निमें ॥ कीन्होउत्तमवर्ण तेईविश्वामित्रये २१ लक्ष्मण-मोहनछंद ॥ जनराजवंत । जगयोगवंत । तिनकोउदोत । केहिभांतिहोत २२ श्रीराम-विजय ॥ सबक्षत्रिन आदिदैकाहूछुईनछुथेबिजनादिकबातउगे । नघटैनबढ़ै निशिबासरकेशव लोकनकोतमतेजभगे । भवभूषणभूषितहोतनहींमदमत्तगजादिमषीनलगे । जलहूथलहूपरिपूरणश्रीनिमिकेकुलअद्भुतज्योतिजगे २३ ॥

जबबिश्वामित्र जनककी स्तुतिकरचुके तबजनक अपनेमन्त्री आदिसों बिश्वामित्रकी बड़ाईकरतहैं उत्तमवर्णब्राह्मण औ अरु-

णरंग अर्थ तपस्याकरि क्षत्रियसोंब्राह्मणभये २१ जबविश्वामित्र जनककेराज्य औयोगकी स्तुतिकियो जबसन्देह युक्तह्वै लक्ष्मण पूँछ्यो कि जेजनजगत्में राज्यऔयोगदुवौसाधतहैंते कैसेउदयको प्राप्तहोतहैं काहेते राज्य औयोगपरस्परकर्मविरुद्धहैं २२ लक्ष्मण पूँछ्यो कि जे जनराजवन्त योगवन्तहैं तिनको उदोत कैसेहोतहै सो सुनिकै कहिबेकी अद्भुत युक्ति मनमें प्राप्तभई तासों विश्वामित्रसों प्रथमही रामचन्द्रही उदोत के हेतु कहनलगे उदोत ज्योतिको होतहै तालिये ज्योतिरूप करि कहत हैं कि निमि जे जनकके पुरिखा हैं तिनके कुलकी जो ज्योतिप्रकाशकी शिखाहै सोअद्भुतजगैकहे जगतिहै दीपितहै इतिअर्थ और दीप ज्योतिके समनहींहै सो अद्भुतता कहतहैं कि दीपज्योतिको औरदीपज्योतिछ्वैसकतिहै अर्थ समताकारिसकतिहै अर्थ जैसे एकदीपकी ज्योतिहोतिहै तैसीसजातीय औरहू दीपकी होतिहै औथानिमि कुलकी ज्योतिकोआदिदै कहेआदिहीसों जबसों प्रगटभईहै अर्थ जबसों निमि बंशभयो तबसोंकाहू क्षत्रिननहींछुयो अर्थ समता करचो फेरि कैसी है कि और ज्योति व्यजनादि बातसों डगमगातिहै यहज्योतिव्यजनादि बातसोंनहींडगति आदिपदते चामरादिजानो अर्थव्यजनादिबात भोगादिको सुखजामें लिप्तनहीं है सकत फेरिकैसीहै कि औरदीपज्योति दिनमें घटतिहै औ यह निशिवासरकहे रातिउदिन घटतिबढ़ति नहींहै अर्थ सबप्राणी जाबंशमें बराबरहोतजातहैं तासों घटतिनहीं औ पूर्णताकोप्राप्तहै तासों बढतिनहीं औ और दीपज्योतिसों थलमात्रहीको तमअंधकारदूरिहोतहै यासों कनकोत्तमतेजकहे अज्ञानको तेजदूरिहोत है अर्थ जिनके उपदेशसों अथवा गानकरेसों अथवा कथासुनिकै लोकनके प्राणिनको अज्ञानदूरिहोतहै ज्ञानीहोतहैं फेरिकैसीहै कि दीपज्योति भवभूषण जोभस्महै तासोंअर्थगुलसों भूषितहोतिहै औ यहभवजोसंसारहै ताकेजेभूषण कुण्डलादिहैं तिनसों नहींभूषितहोति अर्थ कुण्डलादिधारण सुखमें नहीं लिप्तहोति औ

दीपज्योतिमें मषीजोमसिहै कज्जलरतिसों लगतिहै अरु यामें गजादिरूपी जोमषीहै सोनहींलागति अर्थगजादि आरोहनसुख भोगमें लिप्तनहींहोति आदिपदते रथाश्वादिजानो औ दीपज्योतिथलहीमेंपूरण रहतिहै औ यह जलहूथलमें परिपूरण है अर्थ जलथलमें प्रसिद्धहैं योगसों जीवन्मुक्तहैं तासों राज्यसुखमें लिप्त नहींहोत इतिभावार्थः २३ ॥

जनक-तारक ॥ यहकीरतिऔरनरेशनसोहै । सुनिदेव अदेवनकोमनसोहै ॥ हमकोबपुरासुनियेऋषिराई । सब गाउँछसातककीठकुराई २४ विश्वामित्र-विजय ॥ आपनेआपनेठौरनितौभुवपालसबैभुवपालैंसदाई । केवल नामहींकेभुवपालकहावतहैंभुवपालिनजाई । भूपनिकी तुमहींधरिदेहबिदेहनमेंकलकीरतिगाई । केशवभूषणकी भवभूषणभूतनतेंतनयाउपजाई २५ ॥

जाप्रकार तुमबरणयोयह कीरति और बडेराजनमें सोहतिहै यालायक हमनहींहैं २४ पतिकोधर्महै स्त्रीसों पुत्रकन्याउपजाइवो सोभूमिरूपी स्त्रीहै तासों और काहूभूपति नहींउपजायो तासोंकेवल नामहींके भूपालहैं भूपतिकीदेह कोऊ नहींधरे औतुम भवसंसारमें भूषणनहूंको भूषण अर्थ जातेभूषणशोभा पावत हैं अतिसुन्दरीति ऐसी तनया पुत्रीभूतनपृथ्वीके तनदेहते उपजायो तासों भूपनकीदेह केवलतुमहींधरेहौ औताहूपर तुम्हारी कल कहेनिर्दोष कीरति विदेहनमें गाईहै कहावत विदेहहौ यासों या जनायो कि भोगराजकोकरतहौ यशजीवनमुक्ततपस्विनमें गायो है याते तुम सम कोऊराजानहीं है २५ ॥

जनक-दोहा ॥ इहिबिधिकीचितचातुरी तिनकोकहा अकत्थ । लोकनकीरचनारुचिर रचिबेकोसमरत्थ २६ सवैया ॥ लोकनकीरचनारचिबेकोजहींपरिपूरणबुद्धिबि

चारी। कैगइकेशवदासतहींसबभूमिअकाशप्रकाशितभारी। शुद्धशलाकसमानलसीअतिरोषमयीदृगदीठितिहारी।होतभयेतबसूरसुधाधरपावकशुभ्रसुधारँगधारी २७।
दोहा ॥ केशवबिश्वामित्रकेरोषमईदृगजानि ॥ संध्यासी तिहुंलोकमें किहिनिउपासीआनि २८ जलक-दोधक छंद ॥ येसुतकौनके शोभहिंसाजे। सुंदर श्यामलगौर बिराजे ॥ जानतहौंजिय सोदरदोऊ। कैकमलाबिमलापतिकोऊ २९ ॥

जिनके लोकरचना रचिबेकी सामर्थ्य है तिनको बचन रचना करिबो कहाहै २६ परिपूरण बुद्धिकहे निश्चय बुद्धिसों बुद्धि भूमि औ आकाशमें प्रकाशितभई अर्थ फैलतभई अथवा भूमि आकाश सहित प्रकाशितभई प्रकटभई अर्थ सब विषय हस्तामलकवत् देखिपरयो ता समय शुद्धकहे तीक्ष्णशलाकाबाण समान तिहारी रोषमयी दृष्टिलसी तासों सूर सूर्य सुधाधर चन्द्रमा सरिसभयो औ अग्नि अमृतकेरंगभये अर्थ अतिभयसों तेजहीन श्वेतभये शलाकाशल्यसदन शारिकाशल्यकीपुच छत्रादिकाष्ठी शरयो रिति मेदिनी २७ सन्ध्यासम अरुण नेत्रभये तब जैसे तीनोंलोकमें सबदोष निवारणार्थ सन्ध्याकी उपासनाकरत हैं तैसे रोषनिवारणार्थ ब्रह्मादि सबउपासना करतभये अर्थ सब आधीन ह्वै स्तुति करतभये २८ दुहुँनको सम सौंदर्यादि देखि यह मैं जीमें जानतहौं किये दूनों सहोदर सगे भाई हैं औकै कोऊकहे कौनो रूपधारी कमलापति विष्णु विमलापति ब्रह्मा हैं आशय यह कि इनमें विष्णु ब्रह्मा सम सौंदर्य्यादि गुणहैं २९ ॥

विश्वामित्र ॥ सुन्दरश्यामलरामसुजानो। गौरसुलक्ष्मणनामबखानो ॥ आशिषदेहुइन्हैं सबकोऊ। सूरजके कुलमंडनदोऊ ३० दोहा ॥ नृपमणिदशरथनृपतिकेप्र-

कटैचारिकुमार ॥ रामभरतलक्ष्मणललितअरुशत्रुघ्न उदार ३१ घनाक्षरी ॥ दानिनकेशीलपरदानके प्रहारी दीनदानवारिज्योंनिदानदेखियेसुभायके । दीपदीपहूके अवनीपनकेअवनीप पृथुसम केशौदासदास द्विजगाय के ॥ आनँदकेकंदसुरपालकसेबालकये परदारप्रियसाधुमनवचकायके । देहधर्मधारीपैबिदेहराजजूसेराज राजतकुमारऐसेदशरथरायके ३२ ॥

३०।३१ यामें विरोधाभासहै दानी जे हरिश्चंद्रादि राजाहैं तिनके ऐसे शीलस्वभावहैं जिनके अरुजे शत्रुहैं तिनसोंदान दंडके प्रहारी लेवैयाहैं औ दिनप्रति दानवारि विष्णुके जैसे सुभायहैं ऐसे सुभायनके निदानकहे आदि कारणहैं अर्थ विष्णुके ऐसे सौर्यादि सुभायनको प्रकटकरतहैं औ दीपक हैं प्रकाशकहैं दीपकहूके अर्थ अति कांतियुक्तहैं औ अवनीपनके अवनीप राजा हैं अथवादीपदीपके अवनीपनके अवनीपराजाहैं अर्थसातौदीपनके राजनके राजाहैं औ राजापृथुके समानहैं औ गोब्राह्मणके दासहैं तौ एतेबड़े राजाको अतिहीन गोब्राह्मणकी सेवा विरोधहै अविरोध यह गो ब्राह्मणकी सेवाक्षत्रीको उचितहै परदार लक्ष्मी अथवा पृथ्वी विदेह राजकाम अथवा जन वा राजाजनकको संबोधनहै दानवारिसम सुभावकहि औ लक्ष्मी प्रियकहि जनकको जनायो कि येविष्णु अवतारहैं अथवा ऐसे जे दशरथ रायहैं तिनकेये कुमारराजत हैं सुरपाल कैसे हैं बालकहीते ये दशरथराय जिनको वर्णन करियतहैं ३२ ॥

सोरठा ॥ जबतेबैठेराज राजादशरथभूमिमें ॥ सुख सोयोसुरराज तादिनतेसुरलोकमें ३३ स्वागताछंद ॥ राजराजदशरत्थतनैजू । रामचंद्रभुवचंद्रबनैजू ॥ त्यों बिदेहतुमहूंअरुसीता । ज्योंचकोरतनयाशुभगीता ३४

तारकछंद ॥ रघुनाथशरासनचाहतदेख्यो । अतिदुष्कर राजसमाजनिलेख्यो ॥ जनक ॥ ऋषिहैवहमन्दिरमांभ मंगाऊं । गहिल्यावहिंहौंजनयूथबुलाऊं ३५ पद्धटिका छंद ॥ अबलोगकहाकरिबेअपार । ऋषिराजकही यह बारबार ॥ इनराजकुमारहिदेहुजान । सबजानतहैंबलके निधान ३६ जनक–दंडक ॥ बज्रतेकठोरहै कैलासते बिशालकालदंडतेकरालसबकालकालगावई । केशव त्रिलोककेबिलोकिहारेभूपसब छोड़िएकचंदचूरऔरको चढ़ावई ॥ पन्नगप्रचंडपतिप्रभुकीपनचपीनपर्बतारिप बैतप्रमान मानपावई । बिनायकएकहूपै आवैनपिनाक ताहि कोमलकमलपाणिराम कैसेल्यावई ३७ ॥

यासों या जनायोकि इंद्रकी सहायकरतहैं ३२ राजनके राजा दशरथके तनयपुत्र रामचन्द्र जैसे भूतलके चन्द्रमाबनेहैं अर्थ राजनकोराजा ऐसोतौ जाको पिताहै आपु चन्द्रमासरिससबको सुखदहैं औ चांदनीसम यशप्रकाशकहैं याते बड़ेभाग्यवान्हैं इति भावार्थः तैसे हे बिदेह तुमहूं औ सीताहो अर्थ तुम राजनके राजाहौ औ सीता चकोरतनयासरिस शुभगीताहैं तौजाको तुमसों पिता है आप ऐसे यशकोप्राप्तहैं तैसे सीताहूबड़ी भाग्यवती है इतिभावार्थः औ चकोरी को औ चंद्रही को प्रेम उचित है तैसे सीताको औ रामचन्द्रको ह्वैहै इति व्यंग्यार्थः ३४।३५ इनको बलकेनिधान अर्थ बड़ेबलवान् सबजानतहैं औ बिधानपाठहोइ तौ बिधानकहे बिधि जहां जाप्रकार चाहिये तहां ताप्रकार बल करवी ३६ याप्रकार जाको सबप्राणी काल कालमेंकहे समय समयमों गावतहैं अथवा कालजे यम हैं तिनहूंको कालनाश कर्त्ता चन्द्रचूड़ महादेव प्रचण्ड जेपन्नगसर्पनके पतिहैं बड़ेसर्प तिनहुँन के जे प्रभु बासुकी हैं तिनहींकी पीन कहे मोटी पनच

रोदाहै अथवा पन्नगप्रचण्डपति जे बासुकी हैं तेई प्रभुकी महादेवकी पनचहैं आशय यह और रोदा जाको बल नहींसहिसकत औ पर्वतारि इन्द्र और जे पर्व्वतनके प्रभा सदृश हैं दैत्यादि ते जाके गरुआईके मान प्रमानको नहीं पावत औ एक कहे अकेले जो विनायक गणेशहू ल्यायो चहैं तौ नाहीं आइसकत ३७ ॥

सुनि–दोहा ॥ रामहत्योमारीचज्यहि अरुताड़का सुबाहु । लक्ष्मणको वहधनुषदैतुम पिनाककोजाहु ३८ जनक–त्रिभंगीछंद ॥ सिगरेनरनायक असुरबिनायक राक्षसपति हियहारिगये । काहूनउठायोथलनछुड़ायो टरयोनटारयोभीतभये ॥ इनराजकुमारनि अतिसुकुमारनि लैआयेहैं पैजकरे । व्रतभंगहमारो भयोतुम्हारो ऋषितपतेज नजानिपरे ३९ बिश्वामित्र–तोमर ॥ सुनिरामचंद्रकुमार । धनुआनियेयहिबार ॥ पुनिबेगिताहि चढ़ाव । यशलोकलोकबढ़ाव ४० ॥

जनक कोमल पानकरयो ताल ये मारीचादिको बध सुनाइ कठोर पाणि जनायो ३८ असुर बाणासुरादि विनायक गणेश अथवा असुरनमें विनायक श्रेष्ठ बाणासुर औ राक्षसपति रावण पैज कहे धनुषउठाइबेमें पराक्रम करिबेको लैआयेहैं अथवा पैज कहे श्रमकोकरिकै तुमइन्हैं ल्यायेहौ अथवा पैज प्रतिज्ञा ३९।४०॥

दोहा ॥ ऋषिहिदेखिहरषैहियो रामदेखिकुम्हिलाइ ॥ धनुषदेखिडरपैमहा चिन्ताचित्तडोलाइ ४१ स्वागताछंद ॥ रामचन्द्रकटिसोंपटुबांध्यो । लीलयैवहरकोधनुसाध्यो ॥ नेकुताहिकरपल्लवसोंछ्वै । फूलमूलजिमिटूककरयोद्वै ४२ सवैया ॥ उत्तमगाथसनाथजबै धनु श्री रघुनाथजुहाथकैलीनो । निर्गुणतेगुणवंतकियो सुखके

शवसंतअनंतनदीनो। ऐंचोजहींतबहींकियोसंयुत तीक्ष्ण कटाक्षनराचनबीनो। राजकुमारनिहारिसनेहसोंशम्भुको सांचोशरासनकीनो ४३ प्रथमटंकोरझुकिझारिसंसार मदचंडकोदंडरह्योमंडिनवखंडको । चालिअचलाअच लघालिदिगपालबलपालिऋषिराजकेबचनपरचंडको। शोधुदैईशकोबोधुजगदीशको क्रोधउपजाइभृगुनंदबरि वंडको । बांधिबरस्वर्गकोसाधिअपबर्गधनुभंगकोशब्द गयोभेदिब्रह्मण्डको ४४ ॥

४१ कटिसों कहे कटिमें फूल मूलपोनारी लीलहिसों हर को धनुसाध्यो यहौ पाठहै ४२ उत्तमगाथ कहे गान जिनको औ सनाथ विश्वामित्र सहित गुणवन्त रोदायुक्त औ धनुष खैंचतमें तिरछी दृष्टिपरतिहै सोई नाराच बाण हैं तासों संयुत कियो राजकुमार जे रामचन्द्रहैं ते स्नेहसहित निहारिकै शंभुको शरासन सांचो कीन्हो शरान अस्यति क्षिपतीति शरासनः अर्थ धन्वी शरनको चलावतहै जासों तासों शरासन कहावतहै सो कटाक्ष रूपी शर युक्तकरि सत्यकियो ४३ धनुभंगको जो शब्दहै सो चंड कहे प्रचण्ड जो कोदण्ड धनुषहै ताको जो प्रथम टंकोर खैंचिबे को शब्दहै ताके साथही इति शेषः यासों प्रथम टंकोरही के संग धनुष टूटिबो जनायो झुँकि कहे क्रुद्ध ह्वै अर्थ क्रूरताको प्राप्तह्वैकै संसारकोमद झारिकै अर्थ संसारके सबप्राणिनको कादर करिकै नवहूखण्डमें मंडि कहे छाइरह्यो औ फेरि अचला जो पृथ्वीहै औ अचलपर्वतनको चालि कहे चलाइकै औ दिगपाल इंद्रादिकनके बलको घालिकै अर्थ बिह्वलकरिकै औ रामचन्द्र धनुषउठाइहैं यह वचन विश्वामित्रको जनकप्रति रह्यो ताको पालिकै औ ईश महादेवको शोधु कहे खोज संदेश इतिदैकै औ क्षीरसागरमें सोवत जे जगदीश विष्णुहैं तिन्हैं बोधि कहे जगाइकै औ

भृगुनन्दन परशुरामके क्रोधउपजाइकै औ स्वर्गको बांधिकै कहे स्वर्गभरेसों व्याप्तह्वैकै औ बाधिपाठहोइ तौ स्वर्गको बाधाकरिकै अर्थकोबेधिकै अथवा स्वर्गके प्राणिनको बिह्वलकरिकै या प्रकार ब्रह्माण्डको बेधिकै मुक्तिकोसाधि साधनकरिकैगयोअर्थ ब्रह्माण्ड फोरि विष्णुलोकको प्राप्तभयो ऐसोउच्चशब्दभयो इतिभावार्थः औरामचन्द्रके करस्पर्शसों याही विधि सबकोमुक्ति मिलति है इतिव्यंग्यार्थः ४४ ॥

जनक--दोहा ॥ सतानंदआनंदमतितुमजुहुतेउनसाथ ॥ बरज्योकाहेनधनुषजबतोरयोश्रीरघुनाथ ४५ सतानंद-तोमर ॥ मुनिराजराजाबिदेह । जबहींगयोवहिगेह ॥ कछु मैंनजानीबात । कबतोरियोंधनुतात ४६ दोहा ॥ सीता जूरघुनाथको अमलकमलकीमाल ॥ पहिराईजनुसबन की हृदयावलिभूपाल ४७ ॥

४५।४६ सीतामें सबभूपालनके हृदयलगेरहैं तिनको बेधि मालबनाइ मानो रामचन्द्रको पहिरायो हृदयको कमलसदृश वर्णनहै तासों ४७ ॥

चित्रपदाछंद ॥ सीयजहींपहिराई । रामहिमालसुहाई ॥ दुंदुभिदेवबजाये । फूलतहींबरसाये ४८ इतिश्रीमत्सक ललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया मिंद्रजिद्विरचितायांधनुर्भंगवर्णनोनाम पंचमःप्रकाशः ५

४८ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानि प्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्ति प्रकाशिकायांपञ्चमःप्रकाशः ५ ॥

दोहा ॥ छठैंप्रकाशकथारुचिर दशरथआगमजानि ॥ लगनोत्सवश्रीरामकी ब्याहबिधानबखानि १ सतानंद-तोटकछंद ॥ बिनतीऋषिराजकिचित्तधरौ । चहुंभैयन

केअबव्याहकरौ ॥ अबबोलहुबेगिबरातसबै। दुहितास मदौसुतपाइअबै २ दोहा ॥ पठईतबहींलगनलिखिअ वधपुरीसबबात ॥ राजादशरथसुनतही चाह्योचलीबरा त ३ मोटक छंद ॥ आयेदशरत्थबरातसजे। दिगपाल गयंदनिदेखिलजे ॥ चारयोदलदूलहचारुबने। मोहेसु र औरनिकौनगने ४ ॥

१ दशरथकी प्रभुतासुनि औ रामचन्द्रको पराक्रमदेखि जनक चारौ सुतनके व्याहकरिबेको बिश्वामित्रसों बिनतीकीन्ही सोस- तानन्द बिश्वामित्रको समुझावतहैं कि हेऋषिराज जनककी बि- नती चित्तमेंधरौ समदौ बिवाहौ २ राजादशरथकेलगनपत्री सु- नतही चारौबरातैंचलीं अर्थ चारौबरातैं साजि राजादशरथ ब्या- हिबेको चले ३। ४ ॥

तारकछंद ॥ बनिचारिबरातचहूंदिशिआई। नृपचा रिचमूअगवानपठाई ॥ जनुसागरकोसरितापगुधारी। तिनकेमिलिबेकहँबाँहपसारी ५ दोहा ॥ बारोठेकोचारु करि कहिकैसबअनुरूप। द्विजदूलहपहिराइयो पहिरा येसबभूप ६ त्रिभंगीछन्द ॥ दशरत्थसँघातीसकलबरा तीबनिबनिमंडपमाँहगये। आकाशबिलासीप्रभाप्रका सीजलजगुच्छजनुनखतनये ॥ अतिसुन्दरनारीसबसु खकारीमंगलगारीदेनलगीं। बाजेबहुबाजतजनुघनगा जतजहांतहांशुभशोभजगीं ७ दोहा ॥ रामचन्द्रसीतास हितशोभतहैंत्यहिठौर। सुबरणमयमणिमयखचित शु- भसुन्दरशिरमौर ८ ॥

जो एकही दिशासों चारोंबरातैं आवतीं तौएकएक बरातकी अगवानीमें बेरहोती व्याहकी लगन टरिजाती तासोंएकही बार

अगवानी होवेके लिये चारोंबरातैं चारों दिशा ह्वैआईं सागरसरिस राजाजनकहैं सरिता सरिस चारोंबरातैं हैं बांहसरिस अगवानीकी चारोंचमूहैं ५ बारोठेको चारुकहेद्वारपूजा अनुरूप यथोचित पहिराइयो पदते भूषणवस्त्र पहिराइयो जानो ६ बारोठेको चारुकरि जनवास मन्दिरकोगये इतिकथाशेषःजनवासमन्दिरते भांवरि करिवेके लिये मराडपकहे माडवमेंगये सोमराडपकैसोहै आकाश बिलासीकहे आकाशकोऐसोहै बिलास कौतुक जाको अर्थ अति दीर्घ अतिउच्चहै औ आकाशमें नक्षत्र हैं इहांझलरनमेंलगे प्रभाप्रकाशीकहे अति शोभायुक्त जेजलजमोतिन के गुच्छ हैं तेई नये नवीन नखतहैं ७ खचित कहे चित्रित ८ ॥

षटपद ॥ बैठेमागधसूतबिबिधबिद्याधरचारण । केशवदासप्रसिद्धसिद्धशुभअशुभनिवारण ॥ भरद्वाजजाबालिअत्रिगौतमकश्यपमुनि । बिश्वामित्रपवित्रचित्रमति बामदेवपुनि ॥ सबभांतिप्रतिष्ठितनिष्ठमतितहँबशिष्ठपूजतकलस । शुभसतानंदमिलिउच्चरतशाखोच्चारसबैसरस ९ अनुकूलछंद ॥ पावकपूज्योसमिधसुधारी । आहुति दीनीसबसुखकारी ॥ दैतबकन्याबहुधनदीन्हो । भांवरि पारिजगतयशलीन्हो १०स्वागताछंद ॥ राजपुत्रकनिसों छबिछाये । राजराजसबडेरहिआये ॥ हीरचीरगजबाजि लुटाये । सुंदरीनबहुमंगलगाये ११ सोरठा ॥ बासरचौथे यामसतानन्दआगूदिये ॥ दशरथनृपकेधामआयेसकल बिदेहबनि १२ भुजंगप्रयातछन्द ॥ कहूंशोभनादुंदुभी दीहबाजें । कहूंभीमभंकारकर्नालसाजें ॥ कहूंसुन्दरीबेनु बीनाबजावैं । कहूंकिन्नरीकिन्नरीलैसुगावैं १३ कहूंनृत्यकारीनचैंशोभसाजैं । कहूंभांडबोलैंकहूंमल्लगाजैं ॥ कहूंभाट भाट्योकरैंमानपावैं । कहूंलोलिनी बेड़िनी गीतगावैं १४

कहूंबैलभैंसाभिरैंभीमभारे । कहूंएनएनीनकेहेतकारे ॥
कहूंबोकबांकेकहूंमेषशूरे। कहूंमत्तदन्तीलरैंलोहपूरे १५॥

मागध बंशावलीवर्णन करैया सूत स्तुतिकरैया चारणप्रेष्य ये भाटकीजातिहैं शुभअशुभ निवारणकहे शुभमेंअशुभके निवारण मेटनहार निष्ठमतिकहे उत्तममति ९ समिधहोमकी लकरी १०। ११ बासरके चौथेयामकहे तीनिपहर दिनबीतेके उपरान्तदशरथ केधामकहे जनवासमन्दिरमें बिदेहकहे जनककेगोत्री १२ तीनि छन्दकोअन्वयएकहै राजादशरथके फौजमेंऐसो कौतुकदेखतभये किन्नरी सारंगी एनी हरिणीनसों हेतकरिएनहरिण परस्पर भिरतहैं भिरतपदको अनुषंगएतहूमेंहै मेषभेड़ा लोहपूरे जंजीरहूको पहिरे अथवा बीरतासों युक्त १३।१४।१५ ॥

दोहा ॥ आगेह्वैदशरथलियोभूपतिआवतदेखि ॥ राजराजमिलिबैठियो ब्रह्मब्रह्मऋषिलेखि १६सतानंद-शोभनाछंद॥ सुनिभरद्वाजबशिष्ठअरु जाबालिबिश्वामित्र। सबैहोतुमब्रह्मऋषिसंसारशुद्धचरित्र॥ कीन्होजोतुमयाबंशपैकहिएकअंशनजाइ । स्वादकहिबेकोसमर्थनगूंगज्योंगुरखाइ १७ अन्यच्च-सुखदाछंद॥ ज्योंअतिप्यासोपावैमगमेंगंगाजल।प्यासनएकबूझाइबुझैत्रैतापबल॥ त्योंतुमतेहमकोनभयोअबएकसुख। पूजेमनकेकामजोदेख्योराममुख १८ ॥

राजर्षि दशरथादि राजर्षि जनकादिकनसों मिलिकै बैठे ब्रह्मर्षि वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि सतानन्दादिकनसों मिलिकैबैठे ऋषिपद की अनुषंग राजपदहमेंहै १६ संसारमेंशुद्धहै चरित्रजिनको अथवा संसारको शुद्धकर्त्ताहै चरित्रजिनको अर्थ जिनकेचरित्र कहिसुनि संसारकेप्राणी शुद्धहोतहैं १७ जैसेमगमें अतिप्यासो प्राणीजल मात्रकोचाहतहै औवहभाग्य योगते गंगाजलपावै तौ वाकी एक

प्यासही नहीं बुझाति दैहिक दैविक भौतिक जे तीनों ताप हैं तिनको बलबुझात है अर्थत्रयताप दूरिहोत हैं तैसे केवल धनुष चढ़ावै ताहीको व्याहकरिये हमारी इतनीही प्रतिज्ञापूर्वक इच्छा रही सोतुमतेहमको केवलव्याह इच्छापूर्णरूपही सुखनहीं भयो रामचन्द्रको मुखदेखि रूप बल बिद्याकुलादि के काम अभिलाष पूजे पूर्णभये १८ ॥

जनक-सवैया ॥ सिद्धसमाजसजैंअजहूंनकहूंजगयोगिनदेखनपाई । रुद्रकेचित्तसमुद्रबसैंनितब्रह्महुपैबरणीजोनजाई ॥ रूपनरंगनरेखविशेखनआदिअनन्तजोवेदनगाई । केशवगाधिकेनंदहमैंवहज्योतिसोमूरतिवंतादिखाई १९ अन्यच्च—तारकछन्द ॥ जिनकेपुरिखाभुवगंगाहिल्याये । नगरीशुभस्वर्गसदेहसिधाये ॥ जिनकेसुतपाहनतेतियकीनी । हरकोधनुभंगभ्रमेपुरतीनी २० जिनआपुअदेवअनेकसँहारे । सबकालपुरंदरकेरखवारे ॥ जिनकीमहिमाहिकोअंतनपायो । हमकोबपुरायशवेदनिगायो २१ बिनतीकरियेजनज्योंजियलेखो । दुखदेख्योज्योंकाल्हित्योंआजहुदेखो ॥ यहजानिहियेढिठईसुखभाषी । हमहैंचरणोदककेअभिलाषी २२ ॥

रुद्र महादेवके चित्तरूपी समुद्रमें जो बसतहैं अर्थ जाको महादेव आराधन करतहैं १९ तीनिछंदको अन्वयएकहै भगीरथ सगरके सुतनके तारिबेको गंगाकोल्यायेहैं औ हरिश्चन्द्र नगरी अयोध्यासहित स्वर्गकोगये दुवौकथाप्रसिद्धहैं औ जिनके सुत रामचन्द्र गौत्तमीको पाहनसों स्त्रीकीन्ही और हरकाधनुष भंगकीन्हो जाधनुषमें तीनिपुरकहे तीनिलोकभ्रमेअर्थ जाधनुष को तीनोंलोकके प्राणिन उठायो ना उठ्यो तबभ्रमेकहे संदेह को प्राप्तभये अथवा ऐसीअवस्था में ऐसोधनुष तोरयो यासों

तीनिहूंलोकभ्रमे औ आपुकैसेहैं कि जिनअनेक अदेव दैत्यनको मारयोहै औ सदापुरंदर इन्द्रकी रक्षाकरतहौ यासों याजनायो कि ऐसे उद्धतकर्म करिबेको तुम्हारे घरकी परम्पराकीरीतिहै अनंतशेषऔ जिनकी महिमा महि अंत न पायो पाठहोइ तौमही भरेके प्राणिनकी महिमाको अंतनहींपायो यह बिनती करियतहै किहमको अपनेजन सेवकके समान जियमेंलेखो कहे जानो औ जैसे काल्हि हमारेइहां वासकरि दुःखदेख्योहै तैसे आजहूं देखो अर्थ आजहूबासकरौ हमचरणोदककहे चरण जलके अभिलाषी हैं तासों एतीढिठाई मुखसों भाष्यो है यहतुम जी में जानि कहेजानौ चरणोदकके अभिलाषी कहि या जनायो कि हमारेघर मेंचलि भोजन करौ जाते हमचरणधोइ चरणोदकलेइँ जाते हमारेगृहादि पवित्रहोइँ याभांति निमंत्रणदियो २०।२१।२२ ॥

तामरसछन्द ॥ जबऋषिराजबिनयकरिलीनो । सुनिसबकेकरुणारसभीनो ॥ दशरथराययहैजियजानी । यह वहएकभईरजधानी २३ ॥ दशरथ-दोहा ॥ हमको तुमसेनृपतिकीदासीदुर्लभराज । पुनितुमदीनीकन्यका त्रिभुवनकीशिरताज २४ भारद्वाज—तामरसछन्द ॥ सुखदुखआदिसबैतुमजीते।सुरनरकीबपुराबलरीते ॥ कुलमाहोहिबड़ोलघुकोई॥प्रतिपुरुषानिबड़ोसोबड़ोई २५

ऋषि सतानंद राजाजनक २३।२४ अतिबली जेदुःखसुखादिहैं आदि पदते काम क्रोधादिहू जानौ तिनहीं को तुमजीतेहौ अर्थदुःख सुखादिके वश्यनहींहौ तौ बलकरिकै रीते कहे खाली बपुराकहे दीनजे सुर औनरहैं तेतुमको जीतिबेको कहे कहाहै औकुलमें चाहौ प्रतापादि करि बडोहोइचाहे छोटोई जो प्रति पुरुषन बड़ोहोतहै सो बड़ोई रहतहै यासों याजनायोकि जोप्रति पुरुषबड़ोहै ताकेकुलमें लघुहूहोइ तौ बड़ोहै औ तुमप्रति पुरुषानहूं बड़ेहौ औतुम्हारे दुःखसुखादि जीतिबे की सामर्थ्य है तासों

तुम समान कोऊ नहीं है अथवा और कोई अपने कुलमें बड़ो लघुहोतहै अर्थकोऊ प्राणी बड़ोभयो कोऊ छोटो भयो औई कहे जनकप्रति पुरुषान बड़ोसो बड़ोकहे बड़ेते बड़ेहैं अर्थ इनके कुल में क्रमसों एकते एकबड़े होतआवतहैं २५ ॥

वशिष्ठ-विजयछन्द ॥ एकसुखीयहिलोकविलोकियेहैं वहिलोकनिरैपगुधारी। एकइहांदुखदेखतकेशवहोतउहां सुरलोकविहारी ॥ एकइहांऊउहांअतिदीनसोंदेतदुहूंदि शिकेजनगारी। एकहिभांतिसदासबलोकनिहैप्रभुतामि थिलेशतिहारी २६ जाबालि—विजयछन्द ॥ ज्योंमणि मयअतिज्योतिहुतीरबितेकछुऔरमहाछबिछाई। चन्द्र हिबन्दतहैंसबकेसबईशतेबन्दनताअतिपाई ॥ भागीर थीहुतिपैअतिपावनबावनतेअतिपावनताई। त्योंनिमिबं शबड़ोईहतोभइसीयसँयोगबड़ीयबड़ाई २७ बिश्वामित्र मालिनछन्द ॥ गुणगणमणिमाला॥चित्तचातुर्यशाला॥ जनकसुखदगीता। पुत्रिकापाइसीता॥ अखिलभुवनभ र्त्ता। ब्रह्मरुद्रादिकर्त्ता॥थिरचरअभिरामी। कीयजामातु नामी २८ दोहा॥पूजिराजऋषिब्रह्मऋषिदुंदुभिदीन्हि बजाइ। जनककनकमन्दिरगयेगुरुसमेतसुखपाइ २९॥

२६ ईश महादेव २७ जनक संबोधनहै गुणगणरूपीजेमणि मुक्तादिहैं तिनकी मालाहै अर्थ अनेक गुणनसोंयुक्तहै औचि-त्तको जोचातुर्य्य चातुरीहै ताकी शालावरहै अथवाचित्तहै चा-तुर्य्यको शालाजाको अथवा चित्तकी चातुर्य्यसे शाला कहे गुहि रहयोहै औसुखदहै गीतागानजाको अर्थ जाकोगानकरेसुने सब को सुखहोतहै ऐसीसीतानामा पुत्रिकाको पाइकै अथवा ये तीनों लक्ष्मीके विशेषणहैं विशेषणनहीं सो लक्ष्मी जनायो कि ऐसी जो लक्ष्मी हैं ताको सीतानामा पुत्रिका पाइकै अखिल संपूर्ण

भुवनकहे चौदहौं भुवनके भर्त्तापोषक औ ब्रह्म रुद्रादिके कर्त्ता औ थिरवृक्षादि चर मनुष्यादि सबमें अभिरामीकहे बासकर्त्ता अथवाशोभाकर्त्ता औ नामीकहे यशी ऐसो जामातुतुमकोयकहे करयो जैसेतीनोंविशेषणनसों लक्ष्मी जनायो तैसेचारों विशेषणनसों विष्णु जानो तौलक्ष्मीजाकीपुत्रिकाभई औविष्णु जामातुभये तासों अतिभाग्यवान्हौ इतिभावार्थः अथवा विश्वामित्रकहतहैं कि जनकसुखद जेईश्वर हैं जिनकरिकै गीता कहे गाई अर्थ जाको विष्णुतू गानकरतहैं यासों लक्ष्मी जनायो और अर्थएकई है ऐसीजो सीतानामा तुम्हारी पुत्रिकाहै ताको हम पायो औ सो जामातु तुमकयि कहे करयो यासोंयाजनायो कि दूनोंतरफबड़ालाभभयो २८ । २९ ॥

चामरछन्द ॥ औसमुद्रकेक्षितीशआरजातिकोगनै । राजभौनभोजकोसबैजनैगयेबनै ॥ भांतिभांतिअन्नपान व्यञ्जनादिजेवहीं । देतनारिगारिपूरिभूरिभूरिभेवहीं ३० हरिगीतछन्द ॥ अबगारितुमकहँदेहिंहमकहिकहादूलह रामजू । कछुबापत्रियपरदारसुनियतकरीकहतकुबामजू ॥ कोगनैकितनेपुरुषकीन्हेकहतसबसंसारजू । सुनिकुंवर चितदैबरणिताकोकहियसबब्योहारजू ३१ ॥

आ समुद्रके कहे समुद्र पर्यंतके अर्थ पृथ्वीभरेके भूरिभूरि भेवहीं कहे अनेक भेदसों ३० सातहरिगीतछंदको अन्वयएक है यामेंश्लेष सों आशीर्वादात्मक व्याजस्तुति है परदार कहे परस्त्री उत्कृष्टदार कुबाम कुत्सित बाम औकुकहे पृथ्वीरूपबाम ब्योहारकहे संबन्ध मित्रता इतिकुबाम पक्षरत्नाकर कहेअनेक रत्नयुक्त पृथ्वीयह समुद्रशीश पश्चिम करिकै औपांय पूरबकरिकै प्रलयकालके उपरांत जबशेषके फणिकहे फणनिकी मणिमाला मणिसमूहकी पलिका अथवा शेषजे फणिकहे सर्पहैं तिनकी मणिमालाकी पलिकामें परति पौढ़तिहै तबअनेक पु-

रुषनको युद्धादि कराइ ग्रहणत्यागरूप प्रबन्धकियो करतिहै गात हैं सहजेही सुगन्धयुक्तजाके गंधवती पृथ्वीतिन्यायशास्त्रोक्तत्वा-त्जाप्रबन्धसों हिरण्याक्षादि जोपुरुषकरयो सोकमहीगनायोसर-बसकहे सबसार कहे रसस्वादेति औ द्रव्यभ्रमि कह भूलिहूके ज्योंकहेजाते औरपतिकोमुख न निरखै त्यों कहे ताप्रकारसों तुम ताको राखियो जाल्याको दशरथ राख्यो ताको तुम राखियो यह परिहास है औताहीपृथ्वीकीरक्षातुमकरियो यह आशीर्वादहै ३१॥

बहुरूपसोंनवयौवनाबहुरत्नमयबपुमानिये। पुनिबस नरत्नाकरवन्योअतिचित्तचंचलजानिये॥ शुभशेषफणि मणिमालपलिकापरतिकरतिप्रबन्धजू। करिशीशपाइच मपांयपूरबगातसहजसुगन्धजू ३२ वहहरीहठिहिरण्या क्षदैयतदेखिसुन्दरदेहसों। बरबीरयज्ञबराहबरहीलईछी निसनेहसों॥ कैगईबिह्वलअंगपृथुफिरिसजेसकलशृंगा रजू। पुनिकछुकदिनबशभईताकेलियोसरबससारजू३३ वहगयोप्रभुपरलोककीन्होहिरणकश्यपनाथजू। तेहिभां तिभांतिनभोगयोभ्रमिपलनछोंड्योसाथजू॥ वहअसुर श्रीनरसिंहमारयोलईप्रबलछड़ाइकै।लैदईहरिहरिचंदरा जाहिंबहुतजोसुखपाइकै ३४ हरिचन्द्रबिश्वामित्रकोदइदु ष्टताजियजानिकै। तेहिबरोबलिबरिबंडबरहींबिप्रतपसी जानिकै॥ बलिबांधिछलबलनलईबावनदईइन्द्रहिआनि कै। तेहिइन्द्रतजिपतिकरयोअर्जुनसहसभुजकोजानि कै ३५ तबतासुमदछबिछयोअर्जुनहत्योऋषिजमद ग्निजू। परशुरामसोसकुलजारयोप्रबलबलकीअग्निजू॥ तेहिबैरतबहींसकलक्षत्रिनमारिमारिबनाइकै। यकईश बेरादईबिप्रनरुधिरजलअन्हवाइकै ३६ वहरानरेपितु

करोपलीतजीबिप्रनथूंकिकै । अरुकहतहैंसबरावणादि करहेताकहंढूंढ़िकै ॥ यहिलाजमरियततहितुमसोंभयो नातोनाथजू । अबऔरमुखनिरखैंनज्योंत्योंराखियोरघु नाथजू ३७ सोरठा ॥ प्रातभयेसबभूप बनिबनिमंडपमें गये । जहांरूपअनुरूपठौरठौरसबशोभिजैं ३८ नाराच छन्द॥रचीविरंचिबाससीनिथम्भराजिकाभली॥जहांतहां बिछावनेबनेघनेथलीथली॥बितानश्वेतश्यामपीतलाल नीलकारगे।मनोंदुहूंदिशानकेसमानबिम्बसेजगे ३९ ॥

३२।३३।३४।३५।३६।३७ रूपजो सौंदर्य्य है ताके अनुरूप सदृश अर्थ अतिसुंदर ३८ जामंडपमें बिरञ्चिजे ब्रह्मा हैं तिनके बासगृहकी ऐसी निथंभकहे थंभनकी राजिका पंगतिरची है अर्थ ब्रह्माके मंदिर सदृश मंडप बन्यो है बिचित्रबाससीनि पाठ होइ तौ बिचित्र बाससीनि कहे बिचित्र बस्त्रनकरिकै अर्थ परदा न करिकै थंभराजिका रची है बनीहै अर्थ अनेक रंगके परदालगे हैं बितान चँदोवा श्यामकहे बैंजनी नीलिका जो लीलहै तासों रँगहरिणजानो मानो भूआकाश जे दूनोंदिशा हैं तिनके परस्पर समान बिंबकहे प्रतिबिंबसे जगे हैं अर्थ भूमें जे बिछावने हैं तिन- के प्रतिबिम्ब आकाशमें जगे हैं औ आकाशमें बितानहैं तिनके प्रतिबिम्ब भूमें जगे हैं यासों या जानो जहां जारंगको बितान तन्योहै तहां ताहीरंगके बिछावने हैं बिम्बन्तुप्रतिबिम्बे पीति मेदिनी ३९ ॥

पद्धटिकाछन्द ॥ गजमोतिनकीअवलीअपार । तहँ कलशनपरउरमतिसुढार ॥ शुभपूरितरतिजनुरुचिरधा र । जहँतहँअकाशगंगाउदार ४० गजदन्तनकीअव लीसुदेश । तहँकुसुमराजिराजितसुबेश ॥ शुभनृपकुमा रिकाकरतिगान । जनुदेविनकेपुष्पकबिमान४१तामरस

छन्द ॥ इतउतशोभितसुन्दरिडोलैं । अर्थअनेकनिबोलनिबोलैं ॥ सुखमुखमंडलचित्तनिमोहैं । मनहुंअनेककलानिधिसोहैं ४२ भृकुटिबिलासप्रकाशितदेखे । धनुषमनोजमनोमयलेखे ॥ चरचितहासचन्द्रिकनिमानो । सुखमुखबासनिवासितजानो ४३ ॥

मण्डपकीरतिकहे प्रीतिसों पूरितमानो रुचिरधारकहे प्रबाहनकरिकै मण्डपमें जहां तहां उदार सुन्दर आकाश गंगाहैं अर्थ गजमोतिनकी मालाहैं ते मानों अनेकधारा है मण्डपमें आकाश गंगा राजती हैं ४० गजदन्त जे टोड़ाहैं तिनकी अवली सुदेशकहे सुन्दर रौस युक्त बनी हैं पुष्प युक्त आकाशमें बर्त्तमान विमान सदृश गजदन्तके रौसहैं देवीसरिस नृपकुमारिकाहैं ॥ नागदन्तो हस्तिदन्तेगेहान्निःसृतदारुणी त्यभिधानचिन्तामणिः ४१ कलानिधि चन्द्रमा ४२ मानों मनोजमय कहे मनोज प्रधान मनोज जो कन्दर्प है सोई है प्रधान देवता जिनके ऐसे धनुष हैं अर्थ मानों कामके धनुषहैं यह लेखे कहे ठहरायो है अथवा मनोमय कहे अनेक मनन करिकै युक्त अर्थ सुन्दरता सों जिनमें अनेक मन बसेहैं ऐसे मनोजके धनुषहैं चर्चित पूजित युक्तेति सुखकहे स्वाभाविक ४३ ॥

दोहा ॥ अमलकपोलेंआरसीबाहूचम्पकमार ॥ अवलोकनैबिलोकियेमृगमदमयघनसार ४४ गतिकोभार महावरैअंगअंगकोभार ॥ केशवनखशिखशोभिजैशोभाईशृंगार ४५ सवैया ॥ बैठेजराथजेरपलिकापररामसिया सबकोमनमोहैं । ज्योतिसमूहरहेमढ़िकैसुरभूलिरहेबपुरेनरकोहैं । केशवतीनिहुंलोकनकीअवलोकिबृथाउपमाकविटोहैं । शोभनसूरजमंडलमांझमनोकमलाकमलापतिसोहैं ४६ दोहा ॥ गंगाजीकीपागशिरसोहतिश्रीरघु

थ ॥ शिवशिरगङ्गाजलकिधौंचन्द्रचन्द्रिकासाथ ४७
मरछन्द ॥ कछुभृकुटिकुटिलसुबेश । अतिअमलसुमि
सुदेश ॥ बिधिलिख्योशोधिसुतंत्र । जनुजयाजयके
त्र ४८ ॥

४४।४५ टोहैं कहे खोजतहैं ४६ गंगाजल कपरा पश्चिममें
सिद्ध है तो बड़ेलोग ब्याह समयहीमें पीतपाग बांधत हैं औ
बिदाके रोजको वर्णनहै तासों श्वेतपाग कह्यो अथवा चौदहें
ाशमें कह्योहै कि ॥ समुझैन सूरप्रकास । आकाशबलित बि-
स ॥ पुनिऋक्षलक्षनिसंग । जनुजलधिगंगतरंग ॥ औ पन्द्रहें
ाशमें कह्योहै कि बीचबीचहैंकपीशबीचबीचऋक्षजाल । लंक
यका गरे किपीतनीलकण्ठमाल ॥ तौ पीत बानरनको गंगत-
समकह्यो तैसेंह्योऊं पीतपागको गंगाजल समकह्यो तासों
तपीतकी औ हरित श्यामकी कहूंसमता करतहैं यहकबि नि-
हैं ४७ सुमिल चिक्कण सुदेश सुन्दर सुतंत्रकहे स्वच्छंद जे
धे हैं तिन लिख्यो है अथवा सुष्ठु जो तंत्रशास्त्र है तासों
धिकै ढूंढ़िकै अथवा शुद्धकरिकै मानों बिधातैं जाके पासहोइ
के जयको शत्रुके अजयको मंत्र लिख्यो है अथवा जयके अर्थ
ाय कहे काहूके जीतिबे योग्यनहीं ऐसे जे रामचन्द्र हैं तिनको
कहे जीतिको मंत्र विधि लिखिदियोहै जासों रामचन्द्र सब
जीततहैं वश्य करतहैं अथवा जया जो पार्वती हैं तिनहूंके
ाको जीतिबेको मंत्र लिख्यो है यासों या जनायो पतिव्रतनमें
गणनीय जो पार्वती हैं तेऊ जिनको देखि बश्यहोयँ तो और
पुरुषकी कहावातहै आशय कि अति सुन्दर हैं जयाजयन्तीति
भिरपथोमातस्सखीपुच इतिमेदिनी ४८ ॥

दोहा ॥ यदपिभृकुटिरघुनाथकीकुटिलदेखियतज्यो
॥ तदपिसुरासुरनरनकीनिरखिशुद्धगतिहोति ४९

श्रवणमकरकुण्डललसतमुखसुखमाएकत्र॥शशिसमीप सोहतमनोश्रवणमकरनक्षत्र५० पद्धटिकाछंद॥ अतिबद नशोभसरसीसुरंग।तहँकमलनयननासातरंग॥ जनुयुव तिचित्तविभ्रमविलास।त्यइभ्रमरभँवतरसरूपआस५१

मानों शशिके समीप कहे दोनोंओर निकट उदित हैश्रवण नक्षत्रमें हैमकरराशि शोभित हैं नक्षत्रपदको सम्बन्ध श्रवणमों है अथवा श्रवणमों मकरराशिस्वरूपके नक्षत्रकहे तारामकरराशि स्वरूपेति शोभित हैं युक्ति यह कि उत्तराषाढ़ श्रवण धनिष्ठा तीनि नक्षत्रनमें मकरराशिको वास है सो मानों श्रवणहीमें बर्त्तमानहै शशिके दुवौ ओर शोभित हैं श्रवण नक्षत्रकी औ कर्ण की शब्दसाम्य है औमकरराशिकी औ कुण्डलको रूपसाम्य है शशि सदृशमुख है ४९।५० सरसीतड़ाग सुरंगनिर्मल रामचन्द्रके नेत्र शोभामें भ्रमणंते हैं विलास कौतुक जिनको ऐसे जे युवतिनके चित्तहैं तेई भ्रमर भँवतहैं रस मकरंदरूपी जोरूपशोभा है ताकी आशासों अर्थ जैसेमकरन्दकी आशकारितड़ागमें भँवर भँवतहैं तैसे रूपकीआशकरि रामचन्द्रकेमुखपर तिनके चित्तभ्रमतहैं५१॥

निशिपालिका छन्द ॥ शोभिजातिदन्तरुचिशुभ्रउर आनिये । सत्यजनुरूपअनुरूपकबखानिये ॥ ओठरुचिरेखसविशेषशुभश्रीरये । शोधिजनुईशशुभलक्षणस बैंदये ५२ दोहा॥ग्रीवाश्रीरघुनाथकीलसतकम्बुबरबेख॥ साधुमनोबचकायकीमानोलिखीत्रिरेख ५३ सुन्दरीछंद॥ शोभनदीरघबाहुबिराजत। देवसिहातअदेवतेलाजत॥ बैरिनकोअहिराजबखानहु । हैहितकारिनकीध्वजमानहु ५४ योंउरमेंभृगुलातबखानहु।श्रीकरकोसरसीरुहमान हु॥ सोहतिहैउरमेंमणियोंजनु।जानकीकोअनुरागिरह्यो मनु ५५ दोहा ॥ सोहतजनरतरामउरदेखतजिनको

भाग ॥ आइगयोऊपरमनो अंतरकोअनुराग ५६ ॥

शुभ्रश्वेत सत्य कहे निश्चय जानोरूप सुन्दरताके अनुरूपक कहे प्रतिमा बखानियतहै अथवा जानो सत्य जो पदार्थहै ताकेरूप के अनुरूपक प्रतिमाहै सत्यको रूपश्वेतहै ५२ कंबुशंखमनसा वाचाकर्मणा करिकै जो रामचन्द्र साधुहैं तिनतीनोंकी मानों विधातैं तीनिरेखा लिखिदियो है निश्चयबातको रेखाखांचि कहिबेकी रीति लोकमें प्रसिद्धहै ५३ । ५४ रामचन्द्रके उरमें लक्ष्मीबास कियेहैं ताकेकरको मानो कमल हैं मणिकौस्तुभमणि अनुरागी मन सदृशकह्यो तासों अरुण जानो ५५ वाही मणिकी फेरिउत्प्रेक्षा करतहैं जनजेदास हैं तिनमें रतकहे संलग्न जो अनुराग रामचन्द्रके उरमें शोभितहै सो बांटिकै उर अन्तरते मानो ऊपर आइगयो है ताको जेदेखतहैं तिनके बड़े भागहैं ५६ ॥

पद्धटिकाछंद ॥ शुभमोतिनकीदुलरीसुदेश । जनुवेदनकेअक्षासुवेश ॥ गजमोतिनकीमालाविशाल । मनमानहुसंतनकेमराल ५७ विशेषकछंद ॥ श्यामदुवोंपगलाललसैद्युतियोंतलकी । मानहुसेवतिज्योतिगिरायमुनाजलकी ॥ पाटजटीअतिश्वेतसोहीरनकीअवली । देवनदीकनमानहुसेवतभांतिभली ५८ दोहा ॥ कोबरणैरघुनाथछबि केशवबुद्धिउदार ॥ जाकीकिरपाशोभिजतिशोभासबसंसार५९दंडक ॥ कोहैदमयंतीइंदुमतीरातिरातिदिनहोहिनछबीलीछबिइनजोशृंगारिये।केशवलजातजलजातजातवेदओपजातरूपबापुरेविरूपसोनिहारिये । मदनलिरूपमनिरूपणानिरूपभयोचंदबहुरूपअनुरूपकैविचारिये । सीताजूकेरूपपरदेवताकुरूपकोहैंरूपहीकेरूपकतौवारिवारिडारिये ६० ॥

मरालहंस ५७ या प्रकार मानो त्रिबेणी रामचन्द्रके चरण सेवतिहै पाठपदश्लेषहै रेशम औ दुबौकूलको अन्तर ५८ बुद्धि तुसार पाठ होइ तौ बुद्धि है तुसार हेवारसम क्षणभंगुर जाकी ५९ दमयंती नलकी स्त्री इन्दुमती अजकीस्त्री रति कामकीस्त्री इनको रातिदिन शृंगारिये तौ सीताकी छबिसमान इनकी छबि न होय जातवेद अग्नि जातरूप सुवर्ण निरुपमकहे जाके उपमा कोऊ नहीं अर्थ अति सुन्दर जो मदनहै सो सीताजूकेरूपसमता के निरूपण में निर्णयमें लाजसों निरूपकहे निःस्वरूप निर्देहेति भयोऔघाटि बढ़िकै अनेकरूपको धर्त्ताजोचन्द्रहै ताकोअनुरूप कै कहेअसदृशै बिचारियतहै रूपजोसौंदर्य्यहै ताहीके रूपककहे साम्यको वारिवारि डारियतहै ६०॥

गीतिका छन्द ॥ सीशोभिजैसखिसुन्दरीजनुदामिनी बपुमंडिकै। घनश्यामकोजनुसेवहीं जड़मेघओघनछंडिकै॥ यकअङ्गचर्चितचारुचन्दनचन्द्रिकातजिचन्दको। जनुराहुकेभयसेवहीं रघुनाथआनँदकन्दको ६१मुखएक हैनतलोकलोचनलोललोचनकीहरे। जनुजानकीसँगशोभिजैशुभलाजदेहनकोधरे। तहँएकफूलनकेबिभूषणएक मोतिनकेकिये। जनुक्षीरसागरदेवतातन क्षीरछीटनिको छिये ६२ सोरठा ॥ पहिरेबसनसुरङ्ग पावकयुतस्वाहामनो ॥ सहजसुगन्धितअङ्गमानोदेवीमलयकी ६३ चामर छन्द ॥ मत्तदन्तिराजराजि बाजिराजराजिकै। हेमहीर मुक्तचीर चारुसाजसाजिकै॥ वेषवेषबाहिनी अशेषब स्तुशोधियो। दाइजोबिदेहराजभांतिभांतिकोदियो ६४ बस्त्रभौनस्योबितान आसनेबिछावने । अस्त्रशस्त्रअङ्गत्रानभाजनादिकोगने ॥ दासिदासबासिबास रोमपाटको

किये । दाइजोबिदेहराज भांतिभांतिकोदियो ६५ ॥

बपुमरिाडकै यहचंद्रिकाहूमें जानो ६१ एकनके मुख नतकहे लाजसों नीचेको नयेहैं तेलोललोचनकरिकै लोकलोचननको हरतीहैं ६२ स्वाहा अग्निकी स्त्री पावकसम बस्त्रहै स्वाहा समस्त्री है ६३ मत्तजेदंतिराज गजराजहैं तिनकीराजिकहे समूह औबाजिराज घोड़ेनकी राजिकाकहेसमूह और जेदीबेके उचितबस्तुहैं तिन्हैं शोधियोकहे दीबेकेलिये ढूंढ़ि २ मँगाइयो ६४ वितानकहे चँदोवा सामियानेति आसन भूपासन गद्दीति बिछावने फरश स्योकहे सहित बस्त्रभौन कहेपाल डेराइतिदियो अंगत्राण बखतर भाजनसुवर्णादिके पात्रबासि सुगन्धसों युक्तकरिकै रोमवास उत्तम कंबलादि पाठबास पीताम्बरादि दियो ६५॥

दोहा ॥ जनकराजपहिराइयोराजादशरथसाथ ॥ छत्र चमरगजबाजिदैआसमुद्रक्षितिनाथ ६६ निशिपालिका छन्द॥दानदियराजदशरत्थसुखपाइकै। शोधिऋषिब्रह्म ऋषिराजनिबुलाइकै॥ तोषियाचकसकल दादुरमयूरसे । मेघजिमिवर्षिगजबाजियमयूरसे ६७ इतिश्रीमत्सकल लोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचन्द्रिकायामिंद्र जिद्विरचितायांसीतारामब्याहवर्णननामषष्ठःप्रकाशः६॥

राजादशरथके साथ जेआसमुद्रके क्षितिनाथरहे तिन्हैं राजा दशरथकेसाथ जनकराज बरतौनी पहिरायो बिदासमयकी पहिरावनि बरतौनी नामकरि पश्चिममों प्रसिद्धहै ६६ बरतौनीकी पहिरावनिके बादि जनकपुरबासिनको राजादशरथ यथोचित दानदियो ऋषिराजतपस्वीः ब्रह्मऋषिराज ब्राह्मण राजपदके अनुषंग ऋषिहूमों है ६७॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानि प्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां सीतारामब्याहबर्णननामषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

दोहा॥ याप्रकाशसप्तमकथापरशुरामसम्बाद॥ रघुबरसोंअरुरोषत्यहिंभंजनमानबिषाद १ बिश्वामित्रबिदाभयेजनकफिरेपहुंचाइ ॥ मिलेआगिलीफौजकोपरशुरामअकुलाइ २ चञ्चरीछंद॥ मत्तदंतिअमत्तहोइगयेदेखिदेखिनगज्जहीं । ठौरठौरसुदेशकेशवदुन्दुभीनहिंबज्जहीं॥ डारिडारिहथ्यारशूरजजीवलैलैभज्जहीं । काटिकैतनत्राणइकतिननारिवेषनसज्जहीं ३ दोहा ॥ बामदेवऋषिसोंकह्योपरशुरामरणधीर ॥ महादेवकोधनुषयहकोतोरेउबलबीर ४ बामदेव ॥ महादेवकोधनुषयहपरशुरामऋषिराज॥तोरेउराजाकहतहींसमुझेउरावणराज ५ परशुराम ॥ अतिकोमलनृपसुतनकीग्रीवादलीअपार॥ अबकठोरदशकंठकेकाटहुँकंठकुठार ६ परशुराम-बिजयछन्द ॥ बाँधिकैबाँध्योजोबालिबलीपलनापरलैसुतकोहितठाढ़े । हैहयराजलियोगहिकेशवआयोहोक्षुद्रजोछिद्रनिडाढ़े । बाहिरकाढ़िदियोबलिदासिनजाइपरेउजोपतालकोबाढ़े । तोकोकुठारबड़ाईकहाकहितादशकंठकेकंठनकाढ़े ७ ॥

या प्रकाशमें परशुरामसों औ रघुबरसों सम्बादहै औ ताही रघुबरके रोषकरिकै परशुरामकेमानको औ आपने सैन्यके बि-षादके दुःखको भंजनहै १।२यामें परशुरामके तेजको बर्णनहै कि जिनपरशुरामको देखि भयसों दशरथ चमूमें या दशाभई शूरज कहे शूरनकेपुत्र अर्थ परम्पराके शूर अथवा सूरय सूर्यबंशी ३। ४। ५। ६ बांध्योकहे मारयो सुतजोअंगदहै ताको पलनापरसों अंकमेंलैकै ताकोहित कौतुकरावणमें ठाढ्यो अर्थरावणको बाल खेलबनायो सोकथा प्रसिद्धहै बालको अंकमेंलैकै कौतुकदेखाइ-

बो लोकरीति है छिद्रनिको डाढ़ै कहे देखे अर्थ समय बिचारिकै हैहयराज सहस्रार्जुन पै युद्धकरिबे को आयोहो आयोरहै अथवा जाको हैहयराजा गहिलियो सोक्षुद्रछिद्रनिको डाढ़ै अर्थयासमय जनकपुरमें परशुराम नहीं हैं ऐसे अवसरको बिचारिकै आयोरहै ताके कंठ जो तू न काटै तौ तोको कहाबड़ाई है अथवा ताके कंठनको जोतू काटै तौ तोको कहा बड़ाई है जाकी बालिआदि ऐसीदुर्दशाकरी ताको कण्ठकाटिबो सहज है इतिभावार्थः ७ ॥

सोरठा ॥ यद्यपिहैअतिदीनमोहितऊखलमारने ॥ गुरुअपराधहिलीनकेशवक्योंकरिछांड़िये ८ चंद्रकलाछन्द ॥ बरबाणशिखीनअशेषसमुद्रहिसोखिसखासुखहमतरिहौं । पुनिलंकहिऔटिकलंकितकैफिरिपंककलंकहिकीभरिहौं । भलभूजिकैराकसखाकसकैदुखदीरघदेवनकोहरिहौं । सितकंठकेकंठनकोकठुलादशकंठकेकंठनकाकरिहौं ९ परशुराम-संयुताछंद ॥ यहकौनकोदलदेखिये । बामदेव ॥ यहरामकोप्रभुलेखिये ॥ परशुराम ॥ कहिकौनरामनजानियो । बामदेव ॥ शरताड़काजिनमारियो १० परशुराम—विनयछंद ॥ ताड़कासँहारीतियनबिचारीकौनबड़ाईताहिहने । बामदेव ॥ मारीचहुतेसँगप्रबलसकलखलअरुसुबाहुकाहूनगने ॥ करिक्रतुरखवारीगुरुसुखकारीगौतमकीतियशुद्धकरी । जिनरघुकुलमंड्योहरधनुखंड्योसीयस्वयम्बरमांझबरी ११ ॥

जो ऐसोदीनहै ताको मारिबो अनुचितहै तालिये कहतहैं ८ शिखीनकहे अग्निसों सखा कुठारको सम्बोधन है सुखही कहे सहजही ९ । १० गुरु जे विश्वामित्रहैं तिनको सुखकारी क्रतुजो यज्ञहै ताको रखवारी करिकै ११ ॥

दोहा॥हरहूहोतोदंडद्वैधनुषचढ़ावतकष्ट॥देखोमहिमा कालकीकियोसोनरशिशुनष्ट १२ विजय॥ बोरोंसबैरघु बंशकुठारकिधारमेंबारनबाजिसरत्थहि । बाणकिबायुउ ड़ाइकैलक्षनलक्षकरौंअरिहासमरत्थहि । रामहिंबामस मेतपठैबनकोपकेभारमेंभूजौंभरत्थहि। जोधनुहाथलियो रघुनाथतोआजुअनाथकरौंदशरत्थहि १३ ॥

१२ सरस्वती उक्तार्थःसकहेसहित बेकहे निश्चयअर्थनिश्चय करिरघुबंशके जे कुठारशत्रुहैं तिन्हैं वारनबाजिरथ सहितकीकहे समुद्रादि जलाशयकी धारप्रबाहमेंबोरों कंजलमस्मिन्नस्तीतिकी अर्थजामें जलरहै सोकीकहावै बंशपदश्लेषहै बांसहूको नामहै ता कुठारपदकह्यो बारनबाजिसरथ कहियाजनायो किजामें उनको चिह्नऊनरहै औलक्षन कहेलाखन जेरघुबंशकेशत्रुहैं तिन्हैंबाण कीबायुसों उड़ाइकै हाकहे हाइहाइ जोशब्दहै ताही में समरत्थ लक्षकहे निशानाकरों अर्थ ऐसीबाणवृष्टिकरों जामें केवल हाइ हाइकरै औरपराक्रमकरिबेलायकनारहै औजयरामहिकहे केवल रामचन्द्रहीसों बामकहे कुटिलता समेतिहैं अर्थजेरामहींके शत्रुहैं तिन्हैं बनकोपठैदेउँ औजेभरत्थहि बामसमेतिहैं अर्थभरतकेशत्रुहैं तिन्हैं शोककेभारमें भूजों औजोधनुषको रघुनाथहाथमें लियोकहे उठायो तौआजुदशरथको अनाथकहे जाको नाथकोऊनहीं अर्थ सबको नाथकरों कहेकरिमानों तौसबकेनाथ जे बिष्णुहैं तिनहीं केशंभुधनुषतोरिबेकी सामर्थ्यहै तातेतई बिष्णुरामरूपह्वै दशरथ के पुत्रभये यह निश्चयकरि दशरथको सर्बोपरि मानों इति भावार्थः १३ ॥

सोरठा ॥ रामदेखिरघुनाथरथतेउतरेवेगिदै॥ गहेभ रतकोहाथआवतरामविलोकियो १४ परशुराम—दण्ड क॥अमलसजलघनश्यामवपुकेशौदासचन्द्रहूतेचारुमु

खसुखमाकोग्रामहै । कोमलकमलदलदीरघविलोचननि सोदरसमानरूपन्यारोन्यारोनामहै । बालकविलोकियत पूरणपुरुषगुणमेरोमतमोहियतऐसोएकयामहै । बैरमा निबामदेवकोधनुषतोरोइनजानतहौं बीसबिसेरामवेषकामहै १५ भरत-गीतिकाछन्द ॥ कुशमुद्रिकासमिधैंश्रुवा कुशऔकमण्डलकोलिये । करमूलशरघनतर्कसीभृगुलातसीदरशैहिये ॥ धनुबाणतिक्षकुठारकेशव मेखलामृगचर्मसों । रघुबीरकोयहदेखियेरसबीरसात्त्विकधर्मसों १६ राम—नाराचछंद॥ प्रचण्डहैहयादिराजदण्डमानजानिये । अखण्डकीर्त्तिलेयभूमिदेयमानमानिये ॥ अदेवदेवजेअभीतरक्षमानलेखिये । अमेयतेजभर्गभग्नभार्गवेशदेखिये १७ ॥

रामपरशुराम १४ पूरणपुरुषबिष्णु याम पहर बामदेव महादेव १५ कुशमुद्रिकाकहे पैंती समिधैं होमकी लकरी करमूल कहेकांधामें हैं शरघन घनेबाणनसों पूरिततरकस जाके मेखला कटिभूषण धनुर्बाण धारणादि बीररसको धर्महै औ कुशमुद्रिका धारणादि सात्त्विक प्राणीको धर्म है १६ प्रचंड जे हैहयादि सहस्रार्जुनादि राजाहैं तिनके दंडकर्त्ताहैं अर्थ सहस्रार्जुनादिकन को नाश इनहिंन कियोहै औ अखण्डकहे पूर्ण कीर्त्तिके लेयमानलेवैयाहैं औ अखण्ड भूमिके देयमान कहेदेवैया हैं अखण्ड पदको सम्बन्धभूमिहूमें है अदेवदैत्य औ देवनके जेयमान जीतनहारहैं मानपदको संबंधलेय जेयहूमें है औभीत जेभययुक्त हैं तिनके रक्षमान रक्षकहैं अमेय कहे अपरिमान बड़ो इतिहै तेज जिनको औ भर्ग महादेवके भक्त हैं औ भार्गव जे भृगुबंशी हैं तिनके ईश हैं अर्थ भृगुवंशमें ये बड़े ऐश्वर्य युक्तहैं १७ ॥

तोमरछंद ॥ सहभरथलक्ष्मणराम । चहुंकियेआनि

प्रणाम ॥ भृगुनन्दआशिषदीन । रणहोहुअजयप्रवीन १८ परशुराम ॥ सुनिरामचंद्रकुमार । मनवचनकीर्त्तिउदार ॥ राम ॥ भृगुवंशकेअवतंश । मनवृत्तिहैक्यहिअंश १९ परशुराम--मदिराछंद ॥ तोरिशरासनशंकरको शुभसीयस्वयंवरमांझबरी । तातेबढ़्योअभिमानमहामनमेरियोनेकनशंककरी ॥ राम ॥ सोअपराधपरोहमसों अबक्योंसुधरैतुमहूंधौंकहो । परशुराम ॥ बाहुदैदोऊ कुठारहिकेशवआपनेधामकोपंथगहो २० ॥

अजयकहे जाको कोऊ न जीतिसकै १८ हमारे बचन सुनो औ उदार कीर्ति सुनो अथवा कीर्तिहै उदार जिनकी ऐसे हमारे बचन सुनो अथवा कीर्ति उदार रामचंद्रको सम्बोधनहै तुम्हारो मन वृत्तिके केहि अंशकहे भागमों है अर्थ मनोभिलाष कहाहै जो होइ सो कहौ १९ सरस्वती उक्तार्थः अनेक राजा जामें हारिगये ता शरासनको तोरयो स्वयम्बरके मध्यमें सीताको बरयो तासों तुम्हारे बड़ो अभिमान बाढ़्यो है सो उचितही है जो एतो पराक्रमकरै ताके अभिमान बढ़्योई चाहै औ सकल क्षत्रिनको नाशकर्त्ता जो मैंहौं ताहूकी शंका तुम ना करी तासों तुम्हारे बलको समुझि हमारे भयभयो है तासों सकल क्षत्रिनके नाशको हमारो दोष क्षमाकरि हमारे दोऊ बाहु औ हमारो कुठार आपनो करि हमको दैकै आपने घरको जाउ इनहीं करनसों याही कुठारसों क्षत्रिनको क्षय करयो हैं तासों तुम करिकै बाहु कुठार खंडिबेकी शंकाहै सो तुम बचनकरि हमको दैकै निर्भयकरौ इति भावार्थः अथवा या कुठारको दोऊ बांहदैकै आपने धामको जाउ बांह बीर देबेकी रीति लोकमें प्रसिद्धहै कुठारको बड़ो दोषहै तासों दोऊ बांह देबे कह्यो २० ॥

राम--कुंडलिया ॥ टूटैटूटनहारतरु बायुहिदीजतदोष ।

त्योंअबहरकेधनुषकोहमपरकीजतरोष ॥ हमपरकीजत रोषकालगतिजानिनजाई । होनहारह्वैरहैमिटैमेटीनमिटाई ॥ होनहारह्वैरहैमोहमदसबकोछूटै । होइतिनूकाबज्रबज्रतिनुकाह्वैटूटै २१ परशुराम—बिजयछंद ॥ केशवहैहयराजकोमांसहलाहलकौरनखाइलियोरे । तालगिमेदमहीपनकोघृतघोरिदियोनसिरानोहियोरे । खीरषड़ाननकोमदकेशवसोपलमेंकरिपानलियोरे । तौलोंनहींसुखजौलहुंतूरघुबंशकोशोनुसुधानपियोरे २२ ॥

२१ हैहयराजको मांसरूपी जो हलाहल बिष है मेद चरबी खीर दूध षडानन स्वामिकार्तिक या युक्तिसों आपनो सकल बल कृत सुनाय भय दिखायो सरस्वती उक्तार्थः हे कुठार यद्यपि तू ऐसे क्रतु करयो है परन्तु जबलग स्ववश जे रामचन्द्रहैं तिनको सो कहे तिनको ऐसो न कहे स्तुत्य मधुर इति सुधा सरिस बचन नहीं पियो तौलौं तोको सुख नहीं है इहां सुधा जो उपमान है ताके उच्चारसों मधुर बचन उपमेयको ग्रहण कियो तू सकल क्षत्रिनको क्षय करयो है औ ये अति बलवान् क्षत्रबंशमें उत्पन्न भये सो बैर समुझि तेरो नाशकरिबेको समर्थ हैं ताते ये जबलौं मधुर बचनसों तेरो दोष क्षमा नहींकरत तौलौं तोको सुख नहींहै इति भावार्थः न पुण्यान्सुगतेबंधेद्विरण्डेप्रस्तुतेपिचेतिमेदिनी २२

भरत--तंत्रीछंद ॥ बोलतकैसेभृगुपतिसुनियेसोकहियेतनबनिआवै । आदिबड़ेहौबड़पनराखौजातेसबजगयशपावै ॥ चंदनहूमेंअतितनघरियेआगिउठैयहगुणसबलीजै । हैहयमारेनृपतिसँहारे सोयशलैकिनयुगजीजै २३ परशुराम--नाराचछंद ॥ भलीकहीभरत्थतैंउठायआगिअंगतैं । चढ़ाउचोपिचापआपबाणलेनिषं

गतैं ॥ प्रभाउआपनोदिखाउछोड़िबालभाइकै । रिझाउ राजपुत्रमोहिंरामलेछड़ाइकै २४ सोरठा ॥ लियोचाप जबहाथतीनिहुंभैयनरोषकरि ॥ बरज्योश्रीरघुनाथतुम बालकजानतकहा २५ राम--दोहा ॥ भगवंतनसोंजीति येकबहुंनकीनेशक्ति ॥ जीतियएकैबातमेंकेवलकीनेभक्ति २६ हरिगीतछंद ॥ जबहन्योहैहयराजइनविनक्षत्र क्षितिमंडलकरेउ । गिरिबेधषणमुखजीतितारकनंदकोज बज्योंहरेउ ॥ सुतमैंनजायोरामसोंयहकह्योपर्वतनंदिनी । वहरेणुकातियधन्यधरणीमेंभईजगवंदिनी २७ ॥

सोबातकहौ जोतनसों बनिआवै अर्थकरत बनिपरै यासों या जनायो कि जोकहतहौ सोतुमका मनहूंसों करिबेको दुर्लभहै २३ भरतकह्योहै कि घसतघसतचन्दनहूंमें आगि उठतिहै तासों पर- शुरामकह्यो कि अंगसों आगिउठावो सरस्वतीउक्तार्थः कि हमारे संग परशुरामसों रामचन्द्रलरिहैं यहजोरामचन्द्रप्रति तुम्हारो लेकहेचोपहै ताकोछिड़ाइकहे त्यागिकै तुमहमका आपनी कृत देखायकै रिझाउकहे प्रसन्नकरो अर्थ रामचन्द्रको भरोसो छोड़ि हमसों तुमलरौ तौ हमलरैं रामचन्द्रसों लरिबेलायक हमनहीं हैं २४।२५।२६ क्रौंचनामजे गिरिहैं ताके बेधनहार जेषणमुखकहे स्वामिकार्तिकहैं तिनकोजीतिकै तारकासुरको जोनंदपुत्रहै ताको ज्योंहत्यो मारयो ऐसेऐसे इनके कृतदेखिकै पार्वती कह्यो कि ऐ- सोपुत्रहमारे न भयोतब रेणुकापरशुरामकी माता जगबंदिनीभई औ धन्यभई ऐसेपराक्रम परशुरामके देखिकै रेणुकाको सबजग बंदनाकरिकै कह्यो धन्यहै रेणुकाजाके ऐसोपुत्रभयो या प्रकार रामचन्द्र परशुराम की स्तुति कियो २७ ॥

परशुराम--तोमरछंद ॥ सुनुरामशीलसमुद्र । तवबंधुहैअतिक्षुद्र ॥ ममबाड़वानलकोप । अबकियोचाहत

लोप २८ शत्रुघ्न--दोधक ॥ हौभृगुनंदबलीजगमाहीं । रामबिदाकरियेघरजाहीं ॥ हौंतुमसोंफिरियुद्धहिमाड़ौं । क्षत्रियबंशकोबैरलैछांड़ौं २९ तोटकछंद ॥ यहबातसुनी भृगुनाथजबै । कहिरामहिंलैघरजाहुअबै ॥ इनपैजगजीवतजोबचिहौं । रणहौंतुमसोंफिरिकैरचिहौं ३० दोहा ॥ निजअपराधीक्योंहतोंगुरुअपराधीछाँड़ि । तातेकठिन कुठारअबरामहिंसोरणमाँड़ि ३१ ॥

बड़वानलरूपी जोहमारोकोपहै सोइनकोलोप भस्म कियो चाहतहै २८।२९ शत्रुघ्नकी यहबातसुनि भरतसों कह्यो कितुम रामचन्द्रकोलैकै घरजाहु इनपैशत्रुघ्नपै युद्धकरि जोजीवतबचिहौं तबतुमसोंरणकरिहौं३०गुरुअपराधी रामचन्द्रनिजअपराधीशत्रुघ्नसरस्वतीउक्तार्थः निजतेअपनाते हमते इतिहै अपराकहे अन्य अधिकइतिहै धीबुद्धिजिनकी इहांबुद्धिउपलक्षणमात्र है बुद्धिपद तेबुद्धिबल विद्यादिजानो ऐसे जेरामचन्द्रहैं तिनको कैसे मारौं अर्थइनके मारिबेकोसमर्थ नहींहौं फेरिकैसेहैं येगुरुजे शिवहैं तिनहुंनते अपराधकिहे बलविद्यादि कारिअधिकहैं जिनको शिवहू ध्यान करतहैं ताते मारिबेकी आशाकरि छांड़िकै हेकठिनकुठार रामचन्द्रही को सो रणकहे स्तुतिसों रणसों मांड़ि कहे युक्तकरौ अर्थ रामचन्द्रकी स्तुतिकरौ जोकहौकुठार तौ बोलतनहीं कैसे स्तुतिकरि है तोसबमें अभिमानी देवतारहतहैं ताकरिकै स्तुति करिबे को समर्थ है जैसे समुद्रको अभिमानी देवतारामचन्द्रकी स्तुति करयोहै औलंका हनुमानको रोंक्यो है ३१ ॥

परशुराम—विजयछन्द ॥ भूतलकेसबभूपनकोमद भोजनतौबहुभांतिकियोई । मोदसोंतारकनन्दकोमेदप छयावरिपानसिरायोहियोई ॥ खीरषड़ाननकोमदकेशव सोपलमेंकरिपानलियोई।रामतिहारेइकण्ठकोशोणितपा

नकोचाहैकुठारकियोई ३२ लक्ष्मण–तोटक ॥ जिनका सुअनुग्रहवृद्धिकरै । तिनकोंकिमिनिग्रहचित्तपरै ॥ जिन केजगअक्षतशीशधरै । तिनकोतनसक्षतकौनकरै ३३ राम–मदिराछन्द ॥ कण्ठकुठारयशैअवहारकिफूलोअ शोकसशोकसमूरो । कैचित्रसारीचढैकिचितातनचन्दन चित्रकिपावकपूरो ॥ लोकमेंलोकबड़ोअपलोकसुकेशव दासजोहोउसोहोऊ । बिप्रनकेकुलकोभृगुनन्दनसूरजके कुलशूरनकोऊ ३४ ॥

पछ्यावरि शिखरनिको भेदहै खीरदूध सरस्वती उक्तार्थः हे राम तिहारेकंठको कहेशब्दको अर्थमधुरबचन पानिको सो कुठार नितहींपियो पानकरयो चाहतहै अर्थसुन्यो चाहत है ॥ कंठो गलेसन्निधौनेध्वनौमदनपादपे इति मेदिनी ३२ जिनब्राह्मणन को अनुग्रह कृपासबको बृद्धिकरतहै तिनको निग्रह दंडहमारे चित्तमें कैसेपरै कहे आवै औजिनके शीशमें जग अक्षत धरतहै अर्थपूजनकरतहै तिनकोतन सक्षतकहे खंडितकोकरै या जनायो ब्राह्मण अबध्यहै तासों तुमको नहीं मारत ३३ चहै अशोक सुखचहै शोक दुःखफूलो कहेहोइ लोकयश अपलोक अयश ३४ ॥

परशुराम–बिशेषकछन्द ॥ हाथधरेहथियारसबैतुम शोभतहौ । मारनहारहिदेखिकहामनक्षोभतहौ ॥ क्षत्रि यकेकुलक्वैकिमिबैननदीनरचौ । कोरिकरोउपचारनकै सेहुमीचबचौ ३५ लक्ष्मण ॥ क्षत्रियक्वैगुरुलोगनकेप्र तिपालकरै । भूलिहुतौतिनकेगुणऔगुणजीनधरै ॥ तौह मकोगुरुदोषनहींअबएकरती । जोअपनीजननीतुमहीं सुखपाइहती ३६ ॥

लक्ष्मण औरामचन्द्रके नम्रबचन सुनिकैभययुक्त जानि परशु-

राम कह्यो कि मारनहार जो मैंहूं ताकोदेखिकै कहाक्षोभतडरा-
तहौ सरस्वती उक्तार्थः सबैकहे चारोभाई तुमहाथन में हथियार
धरे ऐसे शोभतहौ कि मारनहारजे यमराजहैं तिनहुंनको देखिकै
कहाक्षोभत डरातहौ अर्थ तुमयमराजहूको नहीं डरातहौ औ
क्षत्रियके कुलमेंह्वैकै किमिकहेकाहे दीनबैन हमसों नारचो ब्रा-
ह्मणसों क्षत्रियको आधीन रहिबोई उचितधर्महै कछू भयसों
तुम दीनबचन नहीं कहत काहेते कि कोरिउपचार यत्नकरौ कहे
करै अर्थ ब्रह्मादिहूकी शरणमेंजाइ औतुम मीचको मारौचाहौ
तो कैसेहून बचोकहे बचैं ३५ जो तुमहीं अपनी जननी माताको
सुखपाइकै मारयो तुमको कुछ गुरु दोषनाभयो तौ तुम्हारे मारे
सों हमहूंको रत्तिहूभरि गुरुदोषनहीं है जननीको बधजनाइ या
जनायोकि तुम ऐसेई स्त्रीबधादिपराक्रम करयोहै अथवा गुरु-
दोषी जनायो ३६ ॥

परशुराम—बिजयछन्द ॥ लक्ष्मणकेपुरिखानकियोपु
रुषारथसोनकह्योपरई। बेषबनाइकियोबनितानकोदेख
तकेशवहर्योहरई॥क्रूरकुठारनिहारितजैफलताकीयहैजो
हियोजरई । आजुतेकेवलताकोमहाधिकक्षत्रिनपैजोद
याकरई ३७ गीतिकाछन्द ॥ तबएकविंशतिबेरमैंविनक्ष
त्रकीपृथिवीरची । बहुकुण्डशोणितसोंभरेपितृतर्पणादि
क्रियासची ॥ उबरेजेक्षत्रियक्षुद्र भूतलशोधिशोधिसँहारि
हौं । अबबालवृद्धनज्वानछांड़हुंधर्मनिर्दयपारिहौं ३८
सरस्वती उक्तार्थः लक्ष्मणके पुरिखान बड़ेन जो पुरुषारथ
कियोहै सो कह्योनहीं परत कहा पुरुषारथकरयो जिन बनित
को वेषबनायो अर्थ बनितारच्यो गौतमकी स्त्रीको पाथरसों रु
बनायो जाको देखत हियो हरिजातहै अर्थ अतिसुन्दरी बना
तौ या जनायो सृष्टिकरिबेको समर्थ हैं याहीविधि दशरथ भग
रथादिके कृत गंगाल्याइबो आदिजानो सो हेक्रूर कुठार तिन

निहारिकै तजैकहे छोंड़ै अर्थ इनके समीपते अन्यत्रजाइ तौ ताको इनके बियोगको यहै फलहै जो हृदय जरईकहे जरतहै अर्थ अतिसुन्दररूप जेये हैं तिनके वियोगसों हृदय जरतहै इनके योग को यहै फलहै तासों जो तेरो इनको बियोगह्वैहै तौ तैसेहियो जरिहै सो आज केवलकहे एकतोको महाअधिक कहे महाउत्तम है जो क्षत्रिनकेऊपर दयाकरु आजुतक क्षत्रिनको बधकरयो ता क्षत्र वर्णनमें ये ऐसेरूप गुणबलादि पूरितभये तासों अब क्षत्र वर्णकी रक्षाकरिवो तोहिं उचितहै तिनके निकटरहि सहायता करि क्षत्रीवर्ण तोको रक्षणीयहै ३७ सचीकहेकरी ३८ ॥

राम--दोहा ॥ भृगुकुलकमलदिनेशसुनिजीतिसकल संसार ॥ क्योंचलिहैइनाशिशुनपैडारतहौयशभार ३९ परशुराम—सोरठा ॥ रामसबन्धुसँभारिछोड़तहौंशरप्राणहर ॥ देहुहथ्यारनडारिहाथसमेतिनवेगिदै४० राम-प्रज्झटिकाछन्द ॥ सुनिसकललोकगुरुजामदग्नि । तपबिशिखअशेषनकीजोअग्नि ॥ सबबिशिखछांड़िसहिहौं अखण्ड । हरधनुषकरयोजिनखण्डखण्ड४१परशुराम-सवैया ॥ बाणहमारेनकेतनत्राणबिचारिबिचारिबिरंचि करेहैं । गोकुलब्राह्मणनारिनपुंसकजेजगदीनसुभावभरे हैं॥रामकहाकरिहौतिनकोतुमबालकदेवअदेवडरेहैं । गाधिकेनन्दतिहारेगुरुजिनतेऋषिवेषकियेउबरेहैं ४२॥

सकल संसारको जीतिकै जो यशएकत्रकरयो है सो इनसों लरिकै हारिकै तायशको बोझ इनबालनपै डारतहौ इनसों कैसे चलिहै इनसों लरिहौ तौ हारिजैहौ इतिभावार्थः ३९ रामचंद्र के सतर्क बचनसुनि परशुराम कोपकरिबोले सो अर्थ खुलो है सरस्वती उक्तार्थः हे हरमहादेव इनके शरकरिकै मैं प्राणछोंड़त हौं अर्थ येब्राणसों मेरेप्राण हरयोचाहत हैं तासों बन्धुसहित जो

कोपयुत रामचन्द्रहैं तिनको तुमसँभारिकहे सँभारौ ये अब तुम्हा-
रेई सँभारन लायकहैं जासों ये हाथनसों समेतन कहे सबन ह-
थ्यारनको डारिदेहिं जबतक ये हाथ में हथ्यार धरेरहि हैं तबतक
हमारे भयबन्यो है तासों तुमइनको कोपशांत करि हथ्यार उत्त-
रावो आगेमहादेव आयबेऊभये हैं ४० तपके जे अशेष विशिख
बाणहैं विशिखपदते शापजानो तिनकी अग्नि औ और सब बा-
णनको छांडौ ते अखंडकहे निर्विघ्नसहिहौं अर्थ हमारेऊपर शाप
औ बाणडुवो चलाओ हमसहि हैं ४१ सरस्वती उक्तार्थः हेराम
तिनबाणन को तुम कहाकरिहौ अर्थ कहा कियो चाहतहौ अर्थ
इनको प्रभावलोप कियो चाहतहौ तुमकैसे हौ बालक ताही में
देव औ अदेव तुमको डरे हैं ४२ ॥

श्रीराम-षट्पद ॥ भगनभयोहरधनुषशालतुमकोअ
बशालै । वृथाहोइबिधिसृष्टिईशआसनतेचालै ॥ सकल
लोकसंहरहुशेषशिरतेधरडारो । सप्तसिंधुमिलिजाहिंहो
हिसबहीतमभारो ॥ अतिअमलज्योतिनारायणीकहिके
शवबुड़िजाहिबरु । भृगुनन्दसँभारुकुठारमैंकियोशरास
नयुक्तशरु ४३ स्वागताछन्द ॥ रामरामजबकोपकरयो
जू । लोकलोकभयभूरिभरयोजू ॥ बामदेवतबआपुनआ
ये । रामदेवदोऊसमुझाये ४४ दोहा ॥ महादेवकोदेखि
कैदोऊरामबिशेष ॥ कीन्होपरमप्रणामउनआशिषदियो
अशेष ४५ महादेव-चतुष्पदी ॥ भृगुनन्दनसुनियेमन
महँगुनियेरघुनन्दननिर्दोषी । निजयेअबिकारीसबसुख
कारीसबहीबिधिसंतोषी ॥ एकैतुमदोऊऔरनकोऊएकै
नामकहायो । आयुर्बलखूट्योधनुषजोटूट्योमैंतनमनसु
खपायो ४६ महादेव-पद्धटिकाछन्द ॥ तुमअमलअन

तअनादिदेव । नहिंवेदबखानतसकलभेव ॥ सबकोस मानर्नाहिंबैरनेह । सबभक्तनकारणधरतदेह ४७ ॥

जबगुरुजे बिश्वामित्र हैं तिनकी निंदाकरयो तब रामचन्द्र कोपकरिकै बोले ईश महादेव आसन योगासन तेचालै कहेचले सबही कहे सर्वत्र अर्थ चौदहो लोकमें ४३। ४४। ४५ निर्दोषी हैं अर्थ धनुष तूरनेमें इनको कछूदोष नहीं है औ अबिकारी कहे मायाकृत विकाररहितहैं यासोंयाजनायो कछू द्रोहादिसों धनुष नहीं तोरयो औ संतोषी कहि याजनायो कि इनके कछू इच्छा नहीं है दुवोगुणन सों याजनायो ईश्वरहैं ४६ द्वैछंदको अन्वय एकहै महादेव परशुराम सों कहत हैं कि तुम अमल कहे माया विकाररहित औ अनंत जाको अन्त नहीं है कि ये तो हैं औअ-नादि कहे जाकीआदि नहीं कोऊजानत कि कबसों हैं ऐसे देव हौ अर्थपरब्रह्महौ औ तुम्हारो सबभेवकहे भेदवेद नहीं बखानि सकत अर्थ वेदहूनहीं जाको प्रमाण यावत् सबप्राणिन को स-मानहौ काहूको स्वाभाविक बैर औ स्नेह तुम्हारे नहीं है केवल प्रह्लादादि जेभक्तहैं तिनके हेतु देहधरिदुःखदूरि करतहौ यासों भक्तबत्सलता जनायो आपनपौको पहिंचानिकै कि हम औ ये एकई हैं यहजानिकै इनकेहाथ सों होनहार जो रावणादि बध आगिलो काजहै ताको करौ तब महादेवके बचन सों जानिकहें ये नारायणहैं यहजानिकै नारायणको धनुष परशुराम पै रह्यो सो रामचन्द्र को दियो ४७ ॥

अबआपनपौपहिंचानिबिप्र । सबकरहुआगिलोका जक्षिप्र ॥ तबनारायणकोधनुषजानि । भृगुनाथदियोरघु नाथपानि ४८ मोटनकछंद ॥ नारायणकोधनुबाणलि यो । ऐंच्योहँसिदेवनमोदकियो ॥ रघुनाथकहेउअबका हिहनो । त्रैलोक्यकँप्योभयमानिघनो ४९ दिग्देवदहेब

हुबातबहे । भूकम्पभयेगिरिराजढहे ॥ आकाशबिमान अमानछये । हाहासबहीयहशब्दरये ५० परशुराम--शशिबदनाछन्द ॥ जगगुरुजान्यो । त्रिभुवनमान्यो ॥ ममगतिमारौ । हृदयविचारौ ५१ ॥

४८ हू छंदको अन्वयएकहै ४९ । ५० त्रिभुवनमें मान्यो अर्थ जाकोतीनों भुवनमानत हैं पूजत हैं औ जगत्के गुरु जो ईश्वरहैं सो हम तुमको जान्यो अर्थ तुम ईश्वरहौ ताते और सब को निर्दोष हमको सदोष बिचारि हमारी सुरपुरकी गति मारो ५१ ॥

दोहा॥विषयीकोज्योंपुष्पशरगतिकोहनतअनंग । रामदेवत्योंहींकियोपरशुरामगतिभंग ५२ चतुष्पदीछंद ॥ सुरपुरगतिभानी शासनमानीभृगुपतिकोसुखभरो । आशिषरसभीने सबसुखदीनेअबदशकण्ठहिमारो ५३ दोहा ॥ सोवतसीतानाथकेभृगुमुनिदीन्हीलात।भृगुकुलपतिकीगतिहरीमनोसुमिरिवहबात ५४ मधुभारछंद ॥ दशरथजगाइ । संभ्रमभगाइ ॥ चलेरामराइ । दुन्दुभिबजाइ ५५ ताड़कातारिसुबाहुसँहारिकैगौतमनारिकेपातकटारे । चापहत्योहरकोहँसिकैसबदेवअदेवहुतेसबहारे ॥ सीतहिब्याहिअभीतचल्योगिरिगर्बचढ़ेभृगुनंदउतारे । श्रीगरुड़ध्वजकोधनुलैरघुनन्दनऔधपुरीपगुधारे ५६ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां परशुरामसंवादवर्णनंनामसप्तमःप्रकाशः ७॥

५२ सब जेदेव ऋषिआदिहैं तिनको सुखदीने अब दशकंठको मारौ ऐसी जो परशुरामकृत आशिषहै ताके रसमें भीने५३।५४

परशुरामके भयसों मूर्च्छाको प्राप्त जे दशरथहैं तिनको जगाइकै औ परशुराम हारिकै गये यह कहि संभ्रम भगाइकै ५५ गर्बके गिरिपर चढ़ेरहे तासों उतारयो अथवा गर्बका गिरि सोई परशुरामपरचढ़ोरहैसोउतारयो५६इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्ति प्रकाशिकायांसप्तमःप्रकाशः ७॥

दोहा॥ यहप्रकाशअष्टमकथाअवधप्रवेशबखानि। सीताबरणयोदशरथहिऔरबन्धुजनमानि १ सुमुखीछंद॥ सबनगरीबहुशोभरये । जहँतहँमंगलचारठये ॥ बरणतहैंकबिराजबने । तनमनबुद्धिबिबेकसने २ मोटनकछंद॥ ऊंचीबहुबर्णपताकलसैं । मानोपुरदीपतिसीदरसैं ॥ देवीगणव्योमबिमानलसैं।शोभैंतिनकेशुभअंचलसैं ३ दोहा॥ कलभनलीनेकोटपरखेलतशिशुचहुँओर । अमलकमलऊपरमनोचंचरीकचितचोर ४ कलहंसछंद॥ पुरआठआठदरबारबिराजैं । युतआठआठसैनापतिराजैं॥ रहैंचारिचारिघटिकापरिमानै । घरजाहिंऔरजब आवतजानै ५ ॥

मंगलचार बंदनवारादि १ । २ । ३ कलभ छोटे हाथी कमल सदृशकह्यो तासों पद्माख्य कोट जानो ताको भेद आगे कहिहैं ४ पुरकहे अग्रभाग जे पुरीके आठहैं तिनमें आठ दरबार कहे सभा विराजत हैं अर्थ आठ प्रकारके कोट होतहैं यथा नरपतौ ॥ अतिदुर्गकालवर्मचक्रावर्त्तचडिंबुरं । तटावर्तंचपद्माख्यंयक्षभेदंचसावरं ॥ कोटचक्रंप्रवक्ष्यामिविशेषादष्टधाचतत् ॥ सो जैसे एकऔर पद्माख्यकोट देख्यो तैसे पुरीके आठहू ओर शहरपनाहमें आठहू प्रकारके कोटबने हैं तिनमें राजाके आठमन्त्री

हैं यथावाल्मीकीये ॥ धृष्टिर्जजन्तीविजयः सिद्धार्थोत्यर्थसाधकः ॥ अशोकीमन्त्रपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमोमहान् ॥ तेमन्त्री तिनकोटनमें आठहू दिशनके प्रजानसंग सभाकरतहैं अर्थ तिनमें बैठि आठहू दिशनको मामिलो करत हैं अथवा दरबारकहे मुख्यद्वार पुरद्वार इति अर्थ पुरीके शहरपनाहमें आठहू दिशनमें आठद्वार बनेहैं यथा कविप्रियायां ॥ नीकेकै केवारदैहौं द्वार द्वार दरबार केशवदास आसपास शूरजौन छावैगो ५ ॥

दोहा ॥ आठौदिशिकेशीलगुणभाषावेषबिचार ॥ वाहनबसनविलोकियेकेशवएकहिबार ६ कुसुमबिचित्रा छंद ॥ अतिशुभबीथीरजपरिहरे । चन्दनलीपीपुष्पनिधरे॥दुहुंदिशिदीसतसुवरणमये। कलशविराजतमणिमयनये ७ तामरसछंद ॥ घरघरघंटनकेरवबाजें । बिचबिचशंखजुझालरिसाजें॥ पटहपखाउजआउझसोहैं । मिलिसहनाइनसोंमनमोहैं ८ ॥ हीरकछंद ॥ सुंदरिसब सुन्दरप्रतिमंदिरपरयोंबनी। मोहनगिरिशृंगनपरमानहुं महिमोहनी ॥ भूषणगणभूषिततनभूरिचितनचोरहीं। देखतिजनुरेखतितनुबाणनयनकोरहीं ९ सुन्दरीछंद ॥ शङ्करशैलचढ़ीमनमोहति। सिद्धनकीतनयाजनुसोहति ॥ पद्मनऊपरपद्मिनिमानहु। रूपनऊपरदीपतिजानहु १०॥

६ यामें चौकीदारसेनापतिनकी रीतिकहतहैं किआठौ दिशिके चौकीदारनके शीलकहे स्वभावगुणशूरता आदिऔभाषा कहे बोली चौकी समयकी चौकीदारनकी बोलीभिन्नहै औबेषकहे देहकी उच्चता स्थूलता आदि औबिचार औबाहन गज अश्व रथादि बसन श्याम श्वेत पीतादि एकहिबारकहे एकही तरहबिलोकियत है जावेषसों जापहरकी चौकी जैसेसेनापतिकीहै तैसीआठहूओर कीहै इतिभावार्थः अथवा जापुरीमें आठौदिशिकेशील आदिएकही

बार एकहीसमय विलोकियतहै यासों या जनायो किआठौदिशि के राजा जापुरमें हाज़िररहतहैं औ आठौ दिशिकेप्राणी जापुरमें बसतहैं बीथी गली ७। ८ प्रतिमंदिरकहे आपने आपने मन्दिर-नपर बरातको कौतुकदेखिबेको सुंदरीकहे स्त्री चढ़ी हैं मोहनारि सदृश कहि अतिसुन्दर मन्दिर जनायो जब देखती हैं तबबाण सम जेनयनकोरहैं तिनसों मानों तनको देखतीहैं कहेबेधतीहैं ९ सिद्धदेवयोनिविशेषहैं पद्मिनिकमलिनी रूपसौंदर्य्य कैलास औ पद्म औरूपसमगेहहै सिद्धतनयाकमलिनी दीपतिसमस्त्रीहैं १०

कीरतिश्रीजयसंयुतसोहति। श्रीपतिमन्दिरकोमनमोहति ॥ ऊपरमेरुमनोमनरोचन। स्वर्णलताजनुरोचति लोचन ११ विशेषकछंद ॥ एकलियेकरदर्पणचन्दन चित्रकरे । मोहतिहैंमनमानहुचाँदनिचन्दधरे ॥ नैनविशालनिअंबरलालनिज्योतिजगी। मानहुरागनिराजति हैअनुरागरँगी १२ नीलनिचोलनकोपहिरेयकचित्तहरे। मेघनकीद्युतिमानहुदामिनिदेहधरे ॥ एकनकेतनसूक्षम सारिजरायजरी। सूरकरावलिसीजनुपद्मिनिदेहधरी १३ तोटकछन्द ॥ बरषैंकुसुमावलिएकघनी। शुभशोभनकामलतासिबनी ॥ बरषैंफलफूलनलायककी। जनुहैंतरुणीरतिनायककी १४ ॥

की जयसंयुत कीर्ति है जयसम गेह है कीर्तिसम स्त्रीहै की पतिके विष्णुकेमन्दिरमें श्रीलक्ष्मी है की मनरोचनकहे सुन्दर अनेकमेरु सुमेरुपर स्वर्णलताहैं रोचतिकहेनीकी लागतिहैं लोचननकी ११ मानोंचन्द्रमाकेमनको चांदनी मोहतीहै चंद्रसरिस दर्पणहै चाँदनीसरिस चन्दनचर्चितस्त्रीहैं नयनहैं बिशाल जिनके ऐसी जे स्त्री हैं तिनकेअम्बरबस्त्र लालनकीशोभा जगी है रागिनी समस्त्री हैं अनुरागप्रेम समबस्त्रहैं प्रेमकोरंगअरुणहै १२ मेघद्युति

समश्याम बस्त्रहैं दामिनीसमस्त्रीहैं पद्मिनी कमलिनीसम स्त्री हैं सूरकरावलिसम जरायजरीसारीहैं १३ फल पूगीफलादि १४॥

दोहा ॥ भीरभयेगजपरचढ़ेश्रीरघुनाथबिचारि ॥ तिनहिंदेखिबरणतसबैनगरनागरीनारि १५ तोटकछन्द तमपुंजलियोगहिभानुमनो॥गिरिअंजनऊपरसोमभनो॥ मनमत्थबिराजतशोभतरे।जनुभासतलोभहिदानकरे१६ मरहट्टाछन्द ॥ आनन्दप्रकासीसबपुरबासीकरतेदौरादौरि। आरतीउतारैंसरबसवारैंअपनीअपनीपौरि ॥ पढ़ि मंत्रअशेषनिकरिअभिषेकनिआशिषदैसबिशेष। कुंकुम कर्पूरनिमृगमदचूरनिबर्षतिबर्षाबेष १७ आभीरछन्द॥ यहिबिधिश्रीरघुनाथ। गहेभरतकोहाथ ॥ पूजतलोग अपार। गयेराजदरबार १८ गयेएकहीबार। चारौराज कुमार॥ सहितबधूनिसनेह। कौशल्याकेगेह १९ त्रिभंगीछन्द ॥ बाजेबहुबाजैंतारनिसाजैंसुनिसुरलाजैंदुखभाजैं। नाचैंनवनारीसुमनशृंगारीगतिमनुहारीसुखसाजैं॥ बीणानिबजावैंगीतनिगावैंमुनिनरिझावैंमनभावैं। भूषण पटदीजैसबरसभीजैदेखतजीजैछबिछावैं २० सोरठा॥ रघुपतिपूरणचन्ददेखिदेखिसबसुखमढ़ैं ॥ दिनदूनेआनन्दतादिनतेतेहिपुरबढ़ैं २१ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यायोध्यानगरप्रवेशोनामाष्टमःप्रकाशः ८

ताहीक्षण गजपरचढ़े रामऐसेशोभितभये तमपुंजमानों भानु सूर्यकोगहिलियो अथवातमपुंजहीको मानोंभानु गहिलियोजानो लोभहितरेकरे दानभासतहै तरेपदको सम्बन्ध याहूमेंहै औ कहूं यहपाठहै जनुराजत कामशृंगार तरे तौ शृंगारहै तरे जाके ऐसो

मानों कामराजतहै भानु औ चन्द्रमा औ शोभा औ दानसम रामचन्द्रहैं तमपुंज औ अंजनगिरि औ मन्मथ औ लोभसमगज है १६ । १७ । १८ । १९ तारकहे उज्ज्वस्वर को साजत हैं ॥ तारो निर्मलमौक्तिके मुक्ता शुद्धावुच्चनादे इतिचाभिधानचिंतामणिः ॥ रसकहे प्रेममेंभीजे जेसब पुरबासी हैं तिनकरिकै भूषण पटदीजै कहे दीजियतहैं अर्थ प्रेमसोंयुक्त सबभूषणपटदानकरत हैं २० । २१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां अष्टमःप्रकाशः ८ ॥

दोहा ॥ यहप्रकाशनवमेंकथारामगवनबनजानि । जनकनंदिनीकोसुकृतबर्णनरूपबखानि १ रामचन्द्रलक्ष्मणसहितघररासेदशरत्थ ॥ बिदाकियोननसारकोसँगशत्रुघ्नभरत्थ २ तोटकछन्द ॥ दशरत्थमहामनमोदरये । तिनबोलिबशिष्ठहिंमंत्रलये ॥ दिनएककहोशुभशोभरयो । हमचाहतरामहिंराजदयो ३ यहबातभरत्थकिमातसुनी ॥ पठउंबनरामहिंबुद्धिगुनी ॥ तेहिमंदिरमेंनृपसोंबिनयो । बरुदेहुहतोहमकोजोदयो ४ नृपबातकहीहँसिहेरिहियो । बरमांगुसुलोचनिमैंजोदियो ॥ केकयी ॥ नृपतासुविशेषि भरत्थलहैं । बरषैबनचौदहरामरहैं ५ ॥

१ । २ शोभरयो राजाको बिशेषणहै ३ । ४ । ५ ॥

पद्धटिकाछंद ॥ यहबातलगीउरबज्रतूल । हियफाट्योज्योंजीरणदुकूल ॥ उठिचले विपिनकहँसुनतराम । तजितातमाततियबंधुधाम ६ हरिलीलाछंद ॥ छूटेसबैस बनिकेसुखक्षुत्पिपास । बिद्याविनोदगुणगीताबिधानवास ॥

ब्रह्मादिअंत्यजनअंतअनंतलोग । भूलेअशेषसबिशेष निरागभोग ७ मौक्तिकदामछंद ॥ गयेतहँरामजहांनिज मात। कहीयहबातकिहौंबनजात॥ कछूजनिजोदुखपावहु माइ।सोदेहुअशीषमिलौंफिरिआइ ८ कौशल्या ॥ रहौचुप ह्वैसुतक्योंबनजाहु । नदेखिसकैंतिनकेउरदाहु ॥ लगी अबबापतुम्हारेहिवाइ । करैंउलटीबिधिक्योंकहिजाइ ९ राम-ब्रह्मरूपकछंद ॥ अन्नदेइसीखदेइराखिलेइप्राणजा त। राजबापमोललैकरैजोदीहपोषिगात ॥ दासहोइपु- त्रहोइशिष्यहोइकोइमाइ । शासनानमानईतौकोटिज न्मनर्कजाइ १० ॥

जीर्णकहे पुरानी तजिचले पदते इहां मानसिक त्यागजानो ६ क्षुत्कहे क्षुधा बिद्वद्विनोदकहे शास्त्रार्थ गुणशास्त्र बिद्यादि गीतबिधान गाइबो बासघर अथवा बस्त्रब्रह्महिआदिदै औअंत्यज जे चांडालहैं तिनपर्यन्त जेअनंतलोगहैं तिनको अशेषराग प्रेम औ भोग सबिशेषगभूले अर्थ अत्यन्त भूले यद्यपि राम बनगमन सों ब्रह्मादिदेवनको रावण बधादिहितकार्य ह्वैहै परंतु अनवसर बिलोकि तिनहूंको दुखभयो ७ । ८ । ९ अन्नदाता औ सिखदाता औ कहूंप्राण जातहोइँ ताभयसों रक्षक औराजा औबाप औजो मोललैकै पोषिकै गातकहे बड़ेकरै अर्थ जोमोललै पालनकरै ईजेछः हैं तिनकेदास औपुत्र औशिष्य औकोहूकहे और कोऊ होइ अर्थ अन्नग्राहक प्राणरक्षित औप्रजाजे छःहैं तेआज्ञाको न मानैं तोकोटिजन्मतक नरकजाइँ या जनायो किएकतो राजाहैं दूसरे पिताहैं तासों बिशेषिकै आज्ञामानि हमको बनजैबो उचितहै१०॥

कौशल्या—हरनीछंद ॥ मोहिंचलौबनसंगलियैं। पुत्र तुम्हैंहमदेखिजियैं॥ अवधपुरीमहँगाजपरै। कैअबराज

भरतथकरै ११ राम-तोमरछंद ॥ तुमक्योंचलोबनआजु। जिनशीशराजतराजु ॥ जियजानियेपतिदेव । करिसबै भांतिनसेव १२ पतिदेइजोअतिदुःख । मनमानिलीजै सुःख ॥ सबजक्तजानिअमित्र । पतिजानिकेवलमित्र १३ अमृतगतिछंद ॥ नितप्रतिपंथहिचलिये । दुखसुखको दलुदलिये ॥ तनमनसेवहुपतिको । तबलहियेशुभगति को १४ स्वागताछंद ॥ योगयागव्रतआदिजोकीजै । न्हानगानगनदानजोदीजै ॥ धर्मकर्मसबनिष्फलदेवा । होंहिंएकफलकैपतिसेवा १५ ॥

११ । तुमक्योंचलौबनइत्यादि दशछंदनमें पातिव्रत धर्मसुनाइ रामचंद्रमाताको बोध करतहैं राजुकहे राजादशरथ अथवा राजस्त्रिनकरिकै केवल पतिहीको देवजानिये कहे जानोचाहिये १२ । १३ पतिही स्त्रिनकरिकै नित्यप्रति पथकहे सुराहशास्त्रोक्त पतिव्रतनकी रीति इति तामें चलिये याप्रकार सुखऔदुःखके दलकहे समूहको दलिये कहे बिताइये औ तन औमनसों केवल पतिहीको सेवहुकहे सेवनकरिये तबशुभगतिको पाइये कछुसुख दुखपरै तामेंस्त्री को पतिहीकी सेवाकरिबो उचितहै औरउपाय करिबो उचितनहींहै इतिभावार्थः १४ देवकहे देवता अर्थदेव पूजा १५ ॥

तातमातजनसोदरजानो । देवरजेठसगेसोबखानो॥ पुत्रपुत्रसुतश्रीछबिछाई । हैबिहीनभरतादुखदाई १६ कुण्डलिया ॥ नारीतजैनआपनोसपनेहूंभरतार । पंगुगुंगु बौराबधिरअंधअनाथअपार ॥ अंधअनाथअपारवृद्ध बावनअतिरोगी । बालकपंडुकुरूपसदाकुबचनजड़योगी ॥ कलहीकोढ़ीभीरुचोरज्वारब्यभिचारी । अधमअ

भागीकुटिलकुपतिपतितजैननारी १७ पंकजबाटिकाछंद। नारितजैनमरेभरतारहि। तासँगसहतिधनंजयभ्झारहि॥ जोकेहूंकरतारजिआवत। तौताकोयहबातसुनावत १८ निशिपालिकाछन्द ॥ गानबिनमानबिनहासबिनजीवहीं। तप्तनहिंखाइजलशीतलनपीवही ॥ तेलतजिखेलतजिखाटतजिसोवही। शीतजलन्हाइनहिंउष्णजलजोवहीं १९ ॥

पुत्रसुत पौत्र १६ पंडु पिंडरोगी योगी बिरक्त भीरु कादर कुपति निर्ल्लज्ज अथवा नपुंसक १७ धनंजयकहे अग्निकीझार सहतिहै अर्थ सतीहोतिहैं जोकाहूप्रकार कर्तारजिआवै अर्थपतिकेसंग नाजरयोजाइ तौ तिनस्त्रिनकेलिये यहबातहै सोहम तुमको सुनावतहैं सोगानबिन इत्यादि द्वैछन्दमों आगेकहतहैं १८ द्वैछंदको अन्वयएकहै जलशीतल नपीवही अर्थ सीरोकरिकेजल नपीवै जैसो होइ तैसो पीवै शीतजलमें न्हाइ या जनायो कि गरम जलकरि स्नान न करै जासमय जैसोपावै तैसे में स्नान करै काय मनबाच सबधर्म करिबो करै अर्थ ये जे सबधर्म हैं तिनको मनसा बाचा कर्मणाकरै अथवा और जेसब धर्मदानादि हैं तिनहुंनको करै कृच्छ्र उपवास कृच्छ्रचान्द्रायणादि सों जबलौं तनको अतीतै कहे छोडै अर्थ मरै तबलौं पुत्रकी सिख में लीनरहै पुत्रकी आज्ञामों रहै यामें त्रिकालदर्शी जेरामचंद्र हैं तिन अपने वियोगसों पिताकोमरण निश्चयकरि पतिव्रतको धर्म सुनाय माताको बोधकरि युक्तिसों विधवास्त्री को उचित धर्म सिखायो १९ ॥

खायँमधुरान्ननहिंपाँयपनहींधरैं। कायमनबाचसबधर्मकरिबोकरैं॥ कृच्छ्रउपवाससबइन्द्रियनिजीतहीं। पुत्रसिखलीनतनजौलगिअतीतहीं २० दोहा ॥ पतिहित

पितुपरतनतज्योसतीसाखिदैदेव ॥ लोकलोकपूजितभई तुलसीपतिकीसेव २१ मनसाबाचाकर्म्मणाहमसोंछांड़ो नेहु॥ राजाकोबिपदापरीतुमतिनकीसुधिलेहु २२ पद्धटिकाछंद ॥ उठिरामचन्द्रलक्ष्मणसमेत। तबगयेजनकतनयानिकेत॥सुनुराजपुत्रिकेएकबात। हमबनपठयेहैंनृपतितात २३ तुमजननिसेवकहँरहहुबास। कैजाहुआजुहीजनकधाम॥ सुनिचन्द्रबदनिगजगमनिऐनि। मनरुचैसोकीजैजलजनैनि २४ सीताजू--नाराचछन्द ॥ नहौंरहौं नजाहुंजूविदेहधामकोअबै। कहीजोबातमातुपैसोआजुमैंसुनीसबै ॥ लगैक्षुधाहिमाभलीबिपत्तिमांझनारियै। पियासत्रासनीरबीरयुद्धमेंसम्हारियै २५ ॥

२० सतीकी औ तुलसी की कथा प्रसिद्धहै २१।२२। २३ जननि कौशल्या ऐनिकहे हे सुन्दरि २४ कि स्त्री को पतिहीकी सेवा उचितहै यहबात जोमातासों तुमकह्योहै सोहम सबसुन्यो है यासों या जनायो कि तुम्हारी सेवाछांड़ि हम कैसे घरमें रहैं क्षुधामें माताभली लगतिहै पोषण करिबो मुख्यधर्म माताकोहै तासों यथा कविप्रियायां माताजिमि पोषतिपिता जिमिप्रतिपालकरै औ बिपत्तिमें नारियै कहे स्त्रीही भली लागति है जो अनेकप्रकारसों शुश्रूषाकरि मनको बहरावतिहै औ पियासकी त्रास समय नीरभलो लागतहै औ युद्धमें बीर जोयोधाहैं तिनको सँभारियै यहै भलोलागतहै अर्थ अनेकबीरनको सँभारिबो एकत्रकरिबो अथवा सावधान करिबोई भलोलागतहै यहकहि याजनायो कि यह तुम्हारो बिपत्तिको समय है तासों तुम्हारेसंग हमको चलिबो विशेषिहै २५॥

लक्ष्मण--सुप्रियाछंद ॥ बनमहँबिकटबिबिधदुखसुनियै। गिरिगह्वरमगअगमकेगुनियै॥ कहुंअहिहरिकहुं

निशिचरचरहीं । कहुंदवदहनदुसहदुखदहहीं २६ सीताजू–दण्डक ॥ केशौदासनींदभूखप्यासउपहासत्रास दुखकोनिवासबिषमुखहूगह्योपरै । बायुकोवहनदिनदावाकोदहनवड़ीबाड़वाअनलज्वालजालमेंरह्योपरै । जीरनजनमजातजोरजुरघोर परिपूरणप्रकटपरितापक्योंकह्योपरै। सहिहौंतपनतापपतिकेप्रतापरघुबीरकोबिरहबीरमोसोंनसह्योपरै २७ ॥

दवदहन कहे दावाग्नि २६ दुःखको निवास जो बिषहै सो मुखमें गह्योपरतहै अर्थ बिषखायोजातहै जीर्ण कहे जर्जर अर्थ थोड़ी है मर्यादाजाकी ऐसो जो जन्महै सोजातुकहे जाउ अर्थ कि मृत्युहोय औ घोर जो ज्वरहै औ परिपूर्णकहे दैहिक दैविक भौतिक तीनोंप्रकारकी जो परितापहै कैसी परिताप कि क्यों कह्योपरै अर्थ जो काहू विधिसों नहीं कह्योजात अतिबड़ो इति ये अप पतिके प्रतापसों सहिहौं जो परकेप्रताप पाठहोय तौ पर जे शत्रु हैं तिनके प्रतापसहिहौं अर्थ शत्रुकृत दुखसहिहौं २७ ॥

रामबिशेषक–छन्द ॥ धामरहौतुमलक्ष्मणराजाकिसेवकरौ । मातनिकेसुनितातसोदीरघदुःखहरौ ॥ आइभरत्थकहाधौंकरैंजियभायगुनौ । जोदुखदेइँतौलैउरगौयहबातसुनौ २८ लक्ष्मण–दोहा ॥ शासनमेटीजायक्यों जीवनमेरेहाथ ॥ ऐसीकैसेबूझियेघरसेवकबननाथ २९ द्रुतबिलंबितछन्द ॥ विपिनमारगरामबिराजहीं । सुखदसुन्दरिसोदरभ्राजहीं ॥ बिबिधश्रीफलसिद्धिमनोफल्यो सकलसाधनसिद्धिहिलैचल्यो ३० दोहा ॥ रामचलतसबपुरचल्योजहँतहँसहितउछाह ॥ मनोंभगीरथपथचल्योभागीरथीप्रवाह ३१ चंचलाछन्द ॥ रामचन्द्रधाते

चलेसुनेजबैंनृपाल । बातकोकहैंसुनैसोह्वैगयेमहाबिहाल ॥ ब्रह्मरंध्रफोरिजीवयोंमिल्योबिलोकिजाइ । गेहचूरिज्योंचकोरचन्द्रमैंमिलैउड़ाइ ३२ ॥

उरगौकहे बितावो अथवा हे भाई जो भरत तुमको दुख देहिं तौ लैकहै अङ्गीकारकरिकै उरमें गुनौ अर्थ समयपाय ताको फल देबेकेलिये समुझिराखौ गौ यहबातसुनौ अर्थ गौकी जो यहबात है सो सुनो २८ यामें या जनायो कि जोमैं इहांरहिबोऊकरौं तौ जीव तुम्हारे संगजै है २९ बिपिनकहे बनभ्राजहीं कहे शोभहीं विविध कहे अनेकप्रकारकी श्रीफलकहे शोभाफलकी जो सिद्धि कहेवृद्धिहै सिद्धि स्त्रीयोग निष्पत्ति पादुकातर्द्धिवृद्धिषु इतिमेदिनी ॥ तासों फल्यो जो सिद्धिहै सिद्धति शेषः सकल साधन कहे ध्यानादि औ सकलसिद्धिहि कहे अणिमादिकनको लैकै चल्यो है तौ जप योगते बड़ीशोभाको प्राप्त सिद्धरूप रामचन्द्र हैं सकल साधनरूप लक्ष्मणहैं अष्टसिद्धिरूप सीताहैं औकहूँ सिद्धिमनो फल्योपाठहै सो अर्थ खुल्यो है ३० उछाह जो आनन्दहै तेहिते सबपुर चल्यो कहे सबपुरबासीचले तौ याजानो पुरी में उछाहहू रामहींके साथ चलोगयो ३१ गेहुकहे पिंजरा ३२ ॥

चित्रपदाछंद ॥ रूपहिदेखतमोहैं । ईशकहौनरको हैं ॥ संभ्रमचित्तअरूझै । रामहियोंसबबूझै ३३ चंचरी छंद ॥ कौनहौकितते चलेकितजातहौकेहिकामजू । कौनकीदुहिताबहूकहिकौनकीयहबामजू ॥ एकगांउरहौकिसाजनामित्रबंधुबखानिये । देशकेपरदेशकेकिधौंपंथकीपहिंचानिये ३४ जगमोहनदण्डक ॥ किधौंयहराजपुत्रीबरहींबयोहैकिधौंउपधिवर्योहैयहिशोभाअभिरतहौ । किधौंरतिरतिनाथयशसाथ केशौदासजाततपोबनशिवबैरसुमिरतहौ । किधौंमुनिशापहतकिधौंब्रह्मदोषरत किधौंसिद्धि

युतासिद्धपरमबिरतहौ । किधौंकोऊठगहौठगोरीलीन्हेकि
धौंतुमहरिहरश्रीहौशिवाचाहतफिरतहौ ३५ ॥

सब मगके प्राणी तिहुँनकी सुंदरता देखिकै मोहतहैं सो मन में कहत हैं कि हे ईश हे भगवान् ये कोहैं या प्रकार संभ्रममें सब के चित्त अरुझतहैं तब रामहींसों या प्रकार सब बूझै कहे पूंछत हैं सो आगे कहतहैं ३३ बहू पुत्रबधू साजन कहे स्वामी ३४ कि यह जो स्त्री है सो राजपुत्री है ताको बरहीं कहे जबरईसों बरयो है कहे बिवाह्यो है अथवा यह जो राजपुत्री है तेहीं माता पिता की आज्ञा मेटिकै अपनी इच्छासों तुमको जबरई बरयो है कि तुम याको उपधिकहे छलसों बरयो है ॥ कपटोस्त्रीव्याजदंभोपधयाः छद्मकैतवे इत्यमरः॥ ऐसी शोभासों अभिरतकहे युक्तहौ काहेते कि जो तुमको तपस्वीजानि राजा अपनी इच्छासों बि-बाहदेतो तौ तुम्हारे आश्रम पर्यंत आपने लोग संगकरि देतो सो नहीं है तासों यह जानि परतहै कि ताही राजाके भयसों ब-नको भागे जातहौ इति भावार्थः यश संसार जीत्यो है ताको यश रूप लक्ष्मणहैं शिवजी नयनकी आगिसों जारयो ता बैरको सु-मिरत शिवके तपोबनको शिवसे लरिबेको जातहौ अथवा शिव के बैरको सुमिरतहौ तासों तपोबनमें तपकरिबेको जातहौ जा-सों बडोतपकरि तपोबलसों शिवको जीतै कि सिद्धि तप सिद्धि अथवा मुक्ति तासों युक्त तुम परमाबिरत सिद्धहौ परमबिरत कहि या जनायो कि संसारसों अतिविरक्तह्वै अति बडो तप करयो है यासों देहधरि सिद्धि तुम्हारे संगसंग फिराति है ॥ सिद्धिस्तुमो क्षेनिष्पत्तियोगयोरित्यभिधानचिन्तामणिः ॥ कि हरि औ हर औ श्रीलक्ष्मीहौ शिवा जो पार्वती हैं तिन्हैं चाहत कहे ढूंढत फिरतहौ ३५ ॥

मत्तमातंगलीलाकरनदण्डक ॥ मेघमंदाकिनीचारु
सौदामिनीरूपरूरेलसैंदेहधारीमनो । भूरिभागीरथीभार

तीहंसजाअंशकेहैंमनोभागभारेभनो। देवराजालियेदेव रातिमनोपुत्रसंयुक्तभूलोकमेंसोहिये । पक्षदूसंधिसंध्या सधीहैमनोलक्षियेस्वच्छप्रत्यक्षहीमोहिये ३६ ॥

मेघ औ मंदाकिनी आकाशगंगा औ सौदामिनी कहे बिजुली ये तीनों देहधारी मानो रूरेकहे सुंदर रूपकहे वेषसों लसत हैं अथवा रूरेकहे बिमल जो रूप सौंदर्य है तेहिकरिकै देहधारी लसै कहे शोभितहैं यासों या जनायो कि मेघादिक तीनों जब सुंदरता सों मिलिकै रूपधरैं तब रामादिकन के रूप समहोइँ कि मानों भागीरथी गंगा औ भारती सरस्वती जो हंसजा यमुना तिनके जेहैं भूरिकहे सम्पूर्ण अंशकहे भाग तिनहिंनके भारेभाग कहे भाग्यभनो कहे कहियतहै अर्थ भागीरथी भारती हंसजाके अंशनके बड़ेभाग हैं जिन ऐसे सुंदररूप पाये हैं भागीरथीके पूर्णां-शावताररूप लक्ष्मणहैं भारतीके पूर्णांशावताररूप सीताहैं यमु-नाके पूर्णांशावताररूप रामचन्द्रहैं देवराजको पुत्र जयंत औ की दूकहे दूनों कृष्णपक्ष तिनकी सन्धिमें स्वच्छ संध्यासधीहै स्थित है जाको प्रत्यक्षही लक्षिये कहे देखियतहै औ शोभासों मोहियत है कृष्णपक्ष रूप रामहैं शुक्लपक्ष रूप लक्ष्मणहैं संध्यारूप सीता हैं अथवा दूनों जे पक्षहैं तिनमें सन्धिकहे मध्यहै तौ शुक्लादि ग-णनासों दुवौपक्षनको मध्य पूर्णिमाहै तौ सन्धिपदते पूर्णिमाजा-नो याहूमें पूर्णिमारूप सीताहैं दुवौ पक्षरूप राम लक्ष्मणहैं औ की तीनों संध्या परस्पर सधी हैं अर्थ कि एकत्रहैं प्रातःसन्ध्या रक्तहै मध्याह्नसंध्या शुक्लहै सायंसन्ध्या श्याम है यथा साम सं-ध्यायां ॥ पूर्वसंध्यातुगायत्री रक्तांगीरक्तबाससा १ मध्याह्नेतुयासं ध्या श्वेतांगीश्वेतबाससा १ अपराह्नेतुयासंध्या कृष्णांगीकृष्ण बाससा ॥ कतहूँ संघसंध्यासधी या पाठहै तौदुवौ पक्षनके संघ कहे साथ सन्ध्यासधी है सो जानो ३६ ॥

अनंगशेखरदंडक ॥ तड़ागनीरहीनतेसनीरहोतके

शौदासपुंडरीकुम्कुंडभौंरमंडलीनमंडहीं । तमालव
समेतिसूखिसूखिकैरहे तेबागफूलिफूलिकैसमूलशूल
हीं ॥ चितैचकोरनीचकोरमोरमोरनीसमेतहंसहंसि
समेतशारिकासबैपढ़ैं । जहींजहींबिरामलेतरामजू
तहींअनेकभांतिकेअनेकभोगभागसोंबढ़ैं ३७ ॥

पुंडरीक कमल भागसों कहे भाग्यसों अथवा द्विगुण च
णादि भाग कहे हींसासों ३७ ॥

सुंदरीछंद ॥ घामकोरामसमीपमहाबल । सी
लागतहैअतिशीतल ॥ ज्योंघनसंयुतदामिनिकेतन
तहैंपूषनकेकरभूषन ३८ मारगकीरजतापितहैअ
केशवसीतहिशीतललागति ॥ ज्योपदपंकजऊपर
नि । दैजोचलैतेहितेसुखदायनि ३९ दोहा ॥ प्रतिपु
प्रतिग्रामकीप्रतिनगरनकीनारि ॥ सीताजूकोदेखिकै
नहैसुखकारि ४० जगमोहनदंडक ॥ वासोंमृगअंक
तोसोंमृगनयनीसबवहसुधाधरतुहूंसुधाधरमानिये
द्विजराजतेरेद्विजराजिराजैंवह कलानिधितुहूंकल
लितबखानिये । रत्नाकरकेहैंदोऊकेशवप्रकाशकरअ
बिलासकुवलयहितमानिये । वाकेअतिशीतकरतु
ताशीतकरचंद्रमासीचंद्रमुखीसबजगजानिये ४१ ॥

घामको जो महाबल कहे अति तेजहै सो राम के समी
सीताको अति शीतल लागतहै जैसे घन जे मेघ हैं तिनते
जो दामिनी बिजुली है ताके तनमें पूषण जे सूर्य हैं तिनके
किरणि भूषण होतहैं सूर्यकी किरणें मेघनमें परती हैं तब
धनुष होतहै सोई दामिनी को भूषणसम है ३८ हेतु यह
पृथ्वीकी सीता पुत्री हैं रामचन्द्र जामातुहैं तासों पृथ्वीकी

तिनको सुख दियोई चहै तामें युक्ति यह कि पंकजपर पांउ धा-रिकैचलै तौ शीतलई लागतहै ३९ । ४० या प्रकार कोऊ स्त्री सीता सों कहत है कि वह जो चन्द्रमा है जाको मृगअंक सब कहत हैं मृगा जो शशाहै सो है अंकमें गोदमें मध्य इतिजाके अ-थवा मृगको अंक कहे चिह्न है जाके औ तोहूँको मृगनयनी कहत हैं औ वह सुधाधर है सुधा अमृतको धरे है औ तुहूँ सुधाधर है सुधासम हैं अधर ओष्ठ जाके औ वह द्विजराज कहावत है तेरे द्विज जे दन्त हैं तिनकी राजिकहे पंगति राजतिहै औ वह षोड़-शकलन को निधिहै औ तुहूं अनेक जे नेत्र विक्षेपादि कलाहैं अथवा चौंसठिकला तिनसों कलित है औ वह रत्नाकर जो स-मुद्रहै ताको प्रकाशकर कहे बढ़ावनहारहै पूर्णमासी के चन्द्रमा के उदय सों समुद्रबाढ़तहै प्रसिद्धहै औ तू भूषणनके रत्नको जो आकर समूहहै ताको प्रकाश शोभाकरती है अर्थ तेरी छबि सों भूषणनकेरत्न शोभापावतहैं औचन्द्रको अम्बर आकाशमें बिलास है सीताको अम्बर बस्त्रमें औ चन्द्रमा कुबलयको हितहै औ सीता कुवलय कहे पृथ्वी मण्डलको हितकरै अतिप्रियलागति है अर्थ सौंदर्यादिक गुण सो तामें ऐसे हैं जासों सबको प्रियहै औ वाके चंद्रमाके अतिशीत हैं कर कहे किरणि औ हे सीता तुहूं शीतकरहै जो तोको देखतहैं ताकेलोचन शीतलहोतहैं तौजोन जौनजिह्व गुण चंद्रमामोंहैं तेतोहूं मेंहैं याते हे चंद्रमुखी सबजगकरिकै तोको चन्द्रमासमजानियतहै अर्थ सबजगतोको चंद्रमासमजानतहै ४१

अन्यच्च ॥ कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतुगातभोगयोगकोअयोगरोगहीकोथलसों । पून्योईकोपूरनपैप्रतिदिन दूनोदूनोक्षणक्षणक्षीणहोतछीलरकीजलसों । चन्द्रसोंजो बरणतरामचन्द्रकीदोहाई सोईमतिमन्दकबिकेशवकुशलसों । सुन्दरसुबासअरुकोमलअमलअतिसीताजूको मुखसखिकेवलकमलसों ४२ ॥

दूसरीस्त्री ताकोमतखण्डकै आपनोमतकहतिहै कलङ्ककी जो केतुकहे पताका है अर्थ पताकासम जाको कलंकप्रसिद्ध है औ केतुको अरि शत्रुहै राहु केतु एकइके खण्ड हैं तासों अक्षर मैत्रीकेलिये केतुकह्यो औ स्त्री आदिके जे भोगहैं तिनको जो योग संयोग रेताकोअयोग असमर्थ है गुरुशापसों क्षयरोग युक्तहै क्षण क्षण क्षीणहोत जो छीलरकहे दोना अथवा अंजलिको जल है तासम प्रतिदिन दूनों क्षीणहोतहैं ४२ ॥

अन्यच्च ॥ एककहैं अमलकमलमुखसीताजूकोएक कहैं चन्द्रसमआनँदकोकन्दरी । होइजोकमलतौरयनिमें नसकुचैरीचन्द्रजोतौबासरनहोइद्युतिमन्दरी । बासरही कमलरजनिहीमेंचन्द्रमुखबासरहूरजनिबिराजैजगबन्द री। देखेमुखभावैअनदेखेईकमलचन्दतातमुखमुखैसखी कमलैनचन्दरी ४३ दोहा ॥ सीतानयनचकोरसखिरविबं शीरघुनाथ ॥ रामचन्द्रसियकमलमुखभलोबन्योहैसा थ ४४ त्रिजयछन्द ॥ बहुबागतड़ागतरंगनितीरतमा लकिछांहबिलोकिभली । घटिकायकबैठतहैंसुखपायबि छायतहांकुशकाशथली ॥ मगकोश्रमश्रीपतिदूरिकरैंसि य कोशुभवाकलअंचलसों । श्रमतेऊहरैंतिनकोकहिकेश वचंचलचारुदृगंचलसों ४५ सोरठा ॥ श्रीरघुबरकेइ ष्ट अश्रुबलितसीतानयन ॥ सांचीकरीअदृष्ट मूठीउपमा मीनकी ४६ ॥

तीसरी स्त्री दुवौको मतखण्ड आपनो कहति है कमलच के देखेहूपर मुख भावत है औकमलचन्द्र मुखके अनदेखेही वतहै जब या मुखको देखो तब कमलचन्द्र के देखिबे की इ नहीं होति जब उत्तमवस्तुदेखो तब अनुत्तमबस्तुदेखे अच्छी

लागति है ४३ सूर्यको औ चकोरको औ चन्द्रको औ कमल को स्वाभाविक बिरोधहै सो इहां श्लोकहे अद्भुत साथ बन्यो है ४४दृगंचल दृगकोर ४५ श्रीरघुबरके इष्टकहे प्रिय अश्रु आनन्दाश्रु करिकै बलितयुक्त जे सीताके नयनहैं तिनमीनकी जो झूठी उपमा अदृष्टरही है ताको सांचीकरी अर्थ मीनजल में रहते हैं नयनजल में नहीं रहत समतामें यह भेदरह्यो है सो आनन्दाश्रु जलमें बूड़िकै सीताके नयनसांचीकरी ४६ ॥

दोहा ॥ मारगयोंरघुनाथजूदुखसुखसबहीदेत॥चित्रकूटपर्बतगयेसोदरसियासमेत४७इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यचित्रकूटगमनंनामनवमःप्रकाशः९॥

दर्शनसों सुखदेत वियोगसों दुखदेत ४७ ॥

इतिश्री मज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांनवमःप्रकाशः९॥

दोहा ॥ यहप्रकाशदशमेंकथाआवनभरतसुनाम ॥ राजमरणअरुतासुकोबासिबोनन्दीग्राम १ दोधकछन्द॥ आनीभरतपुरीअवलोकी। स्थावरजंगमजीवसशोकी॥ भाटनहींबिरदावलिसाजें। कुंजरगाजैंनदुन्दुभिबाजें २ राजसभानविलोकियकोऊ। शोकगहेतबसोदरदोऊ ॥ मन्दिरमातुबिलोकिअकेली॥ज्योंबिनवृक्षबिराजतबेली३ तोटकछंद ॥ तबदीरघदेखिप्रणामकियो। उठिकैउनकंठलगाइलियो ॥ नपियोजलसंभ्रमभूलिरहे। तबमातसोंबातभरत्थकहे ४ ॥

नामकहे प्रसिद्ध १।२ राजसभा में कोऊ न देख्यो तब शोकको गहे औ माताके मन्दिरमें जाइकै माताको अकेली देख्यो तब शोक गहे ३।४॥

बिजयाछंद ॥ मातुकहांनृपतातगयेसुरलोकहिक्यों सुतशोकलये । सुतकौनसुरामकहांहैंअबैबनलक्ष्मणसीयसमेतगये ॥ बनकाजकहाकहिकेवलमोसुखतोकोकहासुखयामेंभये ।तुमकोप्रभुताधिकतोकोकहाअपराधबिनासिगरेईहये ५ दोहा ॥ भर्त्तासुतविद्वेषिनीसबहीकोदुखदाइ ॥ यहकहिदेखेभरततबकौशल्याकेपाइ ६ तोटकछंद॥ तबपांथनजायभरत्थपरे । उनभेंटिउठाइकेअंकभरे ॥ शिरसूंघिबिलोकिबलाइलई । सुततोबिनयाबिपरीतभई ७ भरत-तारकछंद । सुनुमातभईयहबातअनैसी । जुकरीसुतभर्त्तबिनाशिनिजैसी ॥ यहबातभईअबजानतजाके । द्विजदोषपरैसिगरेशिरताके ८ जिनकेरघुनाथबिरोधबसैजू । मठधारिनकेतिनपापग्रसैजू ॥ रसरामरस्योमननाहिंनजाको । रणमेंनितहोइपराजयताको ९ कौशल्या ॥ जानिसौंहकरौतुमपुत्रसयाने । अतिसाधुचरित्रतुम्हैंहमजाने ॥ सबकोसबकालसदासुखदाई । जियजानतिहौंसुतज्योंरघुराई १० चंचरीछंद ॥ हाइहाइजहांतहांसबह्वैरहीसिगरीपुरी । धामधामनिसुन्दरीप्रकटींसबैजेहुतींदुरी ॥ लैगयेनृपनाथकोसबलोगश्रीसरयूतटी ॥ राजपत्निसमेतिपुत्रानिबिप्रलायगढ़ीरटी ११ ॥

५।६ लघुको शिरसूंघिबो बड़ेनकी प्रीति रीतिहै रोगबलाइ लीबोस्त्रिनको प्रसिद्धहै ७।८ शिव आदि देवनके मठकीजेपूजा लेतहैं ते मठधारी कहावतहैं रसकहे प्रेमअंगारादौ बिषे वीर्यद्रवे रागेगुणेरसः इत्यमरः रस्योभीज्यो युक्त इति ९।१० विप्रलाप जे हैं अनर्थ बचन अथवा कैकेयी प्रति बिरोधबचन तिनकी गढ़ी कहे समूह रटीकहतभये कि कैकेयिहीके करत ऐसो विघ्न भयो

तासों याको मुखदेखिबो उचित नहीं है इत्यादि बचन सब कहत हैं विप्रलापो विरोधोक्तावनर्थकवचस्यपि इति अभिधान चिन्तामणिः ११ ॥

सोमराजीछंद ॥ करीअग्निअर्चा । मिटीप्रेतचर्चा ॥ सबैराजधानी । भईदीनबानी १२ कुमारललिताछंद ॥ क्रियाभरतकीनी । बियोगरसभीनी ॥ सजीगतिनवीनी । सुकुन्दपदलीनी १३ तोटकछंद ॥ पहिरेबकलासुजटा धरिकै । निजपांयनिपंथचलेअरिकै ॥ तरिगंगगयेगुह संगलिये । चित्रकूटबिलोकतछांड़िदिये १४ ॥

जब भरत अग्नि सों अर्चा पूजाकरी अर्थ चितामें अग्निदियो तब प्रेतचर्चा मिटी अर्थ सब अयोध्याबासी परस्पर अनेक प्रेतवार्त्ता करतरहे ताको छोंड़िदीन बाणी भये अर्थ करुणास्वर करिकैरोये मरण समयमों औदाह भूमिमें लैजातमों औदाहहोतमों अधिक अधिकतर बियोग मानि रोइबेकी रीति प्रसिद्धहै अथवा अग्निकरी कहे चितामें अग्निदियो तबते अशुद्धिसों अर्चाकहे देवपूजा मिटी औ प्रेतचर्चाभई इतिशेषः १२ क्रिया षोड़शी आदि भरतनीकी करतभये ताके बादि मुकुंद रामचंद्र के वियोगरसमें भीनी नवीनीगतिकहे दशा वल्कल बसनादि साजी औ मुकुंदपदलीनी कहे ज्ञान बुद्धिइति सजी अर्थ पिताकी क्रिया पूरणकरि रामचन्द्रके चरणनमें मनलगायो गतिपदइलेषहै एकपक्ष दशाजानौ एकपक्ष बुद्धि जानौ गति स्त्री मार्ग दशयो र्ज्ञाने यात्राभ्युपाययोरिति मेदिनी १३ अरिकै कहे हठकरिकै गंगा उतरिकै गुहको संगकहे ज्ञाति समूह सूधी मार्गबताइबे के लियेगये जब चित्रकूट देख्यो तब तिन्हैं छोड़िदियो १४ ॥

मदनमोदकछंद ॥ सबसारसहंसभयेखगखेचरबारिदज्योंबहुबारनगाजे । बनकेनरबानरकिन्नरबालकलौम्

गज्योंमृगनायकभाजे ॥ तजिसिद्धसमाधिनकेशवदीरघ दौरिदरीनमेंआसनसाजे । भूतलभूधरहालेअचानक आइभरत्तकेदुन्दुभिबाजे १५ दोहा ॥ रामचंद्रलक्ष्मण सहितशोभितसीतासंग । केशवदाससहासउठिचढेधर णिधरशृंग १६ लक्ष्मण--मोहनछंद ॥ देखहुभरत्तचमू सजिआये । जानिअबलहमकोउठिधाये ॥ हींसतहयब हुवारणगाजे । जहँतहँदीरघदुन्दुभिबाजे १७ ॥ तारक छंद ॥ गजराजनिऊपरपाखरसोहैं । अतिसुंदरशीशशि रोमनमोहैं ॥ मनिघूंघुरघंटनकेरवबाजैं । तडितायुतमा नहुँबारिदगाजैं १८ बिजयछंद ॥ युद्धकोआजुभरत्तचढे धुनिदुन्दुभिकीदशहूंदिशिधाई । प्रातचलीचतुरंगचमू बरणीसोनकेशवकैसेहुजाई ॥ योंसबकेतनआननिमेंझल कीअरुणोदयकीअरुणाई । अन्तरतेजनुरंजनकोरज पूतनकीरजऊपरआई १९ ॥

सारसहंस औ और जेखगपक्षीहैं ते खेचरकहे आकाशगामी भये जैसे मृगनायक सिंह जौनग्रीवादि अंग पकरि पायो सोई अंग गहि मृगको लैभाग्यो ताही प्रकार अतिभयसों आपने आपने बालकनकोलै किन्नरादिभागे १५ किन्नरादिकी या दशा देखि हास्यपूर्वक कारण देखिबेको धरणिधर शृंगमें चढे १६ हींसतबोलत १७पाखरझूल १८रजनको क्षत्र धर्ममें रंजितकरिबेको मानो रजपूतनकी रज रजोगुण रजपूती इति ऊपर कहिआये हैं १९ ॥

तोटकछंद ॥ उठिकैधरधूरिअकाशचली । बहुचंच लबाजिखुरीनदली ॥ भुवहालतिजानिअकाशहिये । जनुथंभितठौरनिठौरकिये २० तारकछंद ॥ रणराजकुमा रअरूझहिंगेजू । अतिसंमुखघायनिजूझहिंगेजू ॥ ज

नुठौरनिठौरनिभूमिनबीने । तिनकेचढ़िबेकहँमारगकी
ने २१ सीताजू--तोटकछंद ॥ रहिपूरिबिमाननिव्योमथ
ली । तिनकोजनुटारनधूरिचली ॥ परिपूरिअकाशहिधू
रिरही । सुगयोमिटिसूरप्रकाशसही २२ दोहा ॥ अपने
कुलकोकलहक्योंदेखहिंरविभगवंत । यहैजानिअंतर
कियोमानोमहीअनंत २३ तोटकछंद ॥ बहुतामहँदीह
पताकलसै । जनुधूमसेंअग्निकीज्वालबसै ॥ रसनाकि
धौंकालकरालघनी । किधौंमीचुनचैचहुंओरबनी २४
दोहा ॥ देखिभरतकीचलध्वजाधूरिनमेंसुखदेत ॥ युद्धजु
रनकोमनहुंप्रतियोधनबोलेलेत २५ लक्ष्मण—दण्डक
छंद ॥ मारिडारौंअनुजसमेतयहिखेतआजुमेटिपरौं दी
रघबचननिजमुरको । सीतानाथसीतासाथबैठेदेखिछत्र
तरयहिसुखशोषों शोकसबहीकेउरको ॥ केशौदाससबि
लासबीसबिस्बेबासहोइ केकयीकेअंगअंगशोकपुत्रज्वर
को । रघुराजजूकोसाजसकलछिड़ाइलेउँभरतहिआजु
राजदेउँयमपुरको २६ ॥

सैन्यके भयसों अथवा बालसों हालतजानिकै थँभित कहे थांभखंभा इति २० सन्मुख घावजूझिकै बीरस्वर्गको जातहैंसो मानों राजकुमारनके स्वर्गजाइबेको भूमिमार्ग कहे राहकीन्हे हैं २१ बिमान आकाशगामी रथ व्योमयान बिमानोऽस्त्रीत्यमरः २२ मही जो पृथ्वी है तेहि अनन्तकहे अनेक अन्तर कियो अनेक धूरिके तुंग उठतहैं तेई अन्तर व्यवधान हैं अथवा अनन्त लक्ष्मणको संबोधनहै २३ रसना जिह्वा २४ । २५ पुत्रज्वरकहे पुत्रमरण चौबीसयें प्रकाशमें कह्यो है किजराजब आवै ज्वराकी सहेली तहां ज्वराशब्द मृत्युको बाची है रघुराजजूकी साज अर्थ

गजरथादि राजसाज राज्य रामचन्द्रको है जाको लै ताके सब साज भरत सजे हैं तिन्हैं छड़ाइ रामचन्द्र में साजिकै राज्य में बैठारिये इत्यर्थः २६ ॥

दोहा ॥ एकराजमेंप्रकटजहँद्वैप्रभुकेशवदास । तहां बसतहैरैनदिनमूरतिवंतबिनास २७कुसुमाबिचित्राछंद॥ तबसबसैनावाहिथलराखी । मुनिजनलीन्हेसँगअभिलाखी ॥ रघुपतिकेचरणनशिरनाये । उनहँसिकैगाहिकंठलगाये २८ भरत—दोधकछंद ॥ मातुसबैमिलिबेकहँआई । ज्योंसुतकीसुरभीसुलवाई ॥ लक्ष्मणसहउठिकैरघुराई । पांयनजायपरेदोउभाई २९ मातनिकण्ठउठायलगाये । प्राणमनोमृतदेहनिपाये ॥ आइमिलींतबसीयसभागी । देवरसासुनकेपगलागी ३० ॥

पिताने भरतको राजा कियो है तासों भरतको राज्यपदभ्रष्ट होइ तौ पिताको बचन निःफलहोइ या हेतु भरतको यमपुरको राज्य देउँ जामें रामचन्द्र सुचित्त ह्वै अयोध्यामें राज्यकरैं इति भावार्थः २७ अभिलाषी जे मुनिजन हैं अथवा मुनिजन सङ्ग लीन्हे औ और रामदर्शनके अभिलाषी हैं तिन्हें लीन्हें रामचंद्र के हँसिबेको हेतु लक्ष्मणके बचन हैं २८ थोरे दिनकी बियानी गायलवाइ कहावति है २९ भरतके बचन सुनिकै भरत शत्रुघ्न को सीताके पास राखि लक्ष्मण मातनके मिलिबेको आये ताके पाछे सीता जो सभागी हैं सोऊ देवर जे भरत शत्रुघ्न हैं तिन सहितसासुनको आइमिलीं प्राप्तभईं औसासुनके पगलागीं ३० ॥

तोमरछंद ॥ तबपूछियोरघुराइ । सुखहैंपितातनमाइ ॥ तबपुत्रकोमुखजोइ । क्रमतेउठींसबरोइ ३१ दोधकछंद ॥ आँशुनसोंसबपर्बतधोये । जंगमकोजड़जीवनरोये ॥ सिद्धबधूसिगरीसुनिआईं । राजबधूसबईसमुझा

ई ३२ मोहनछंद ॥ धरिचित्तधीर । गयेगंगतीर ॥ शुचिह्वैशरीर । पितृतर्पिनीर ३३ भरत--तारकछन्द ॥ घरकोचलियेअबश्रीरघुराई । जनहौंतुमराजसदासुखदाई ॥ यहबातकहीजलसोंगलभीन्यो । उठिसोदरपाइँपरेतबतीन्यो ३४ श्रीराम—दोधकछंद ॥ राजदियोहमकोवनरूरो । राजदियोतुमकोअबपूरो ॥ सोहमहूंतुमहूमिलिकीजै । बापकोबोलुननेकहुछीजे ३५ दोहा ॥ राजाकोअरुबापकोबचननमेटैकोइ । जोनमानियेभरततौमारेकोफलहोइ ३६॥भरत—स्वागताछंद ॥ मद्यपानरतस्त्रीजितहोई । सन्निपातयुतबातुलजोई ॥ देखिदेखितिनकोसबभागे । तासुबातहतिपांयनलागे ३७॥

राम वनगमन दशरथमरण भरतागमनादि कथा क्रम सों कहत सब रोवतभई ३१ सिद्ध तपस्वी अथवा देवयोनि विशेष ३२।३३ भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तीनों पांयनपरे कि घरकोचलिबो उचितहै ३४ रूरोसुंदर ३५।३६ स्त्रीजित कहे जो स्त्री करिकै जीतोगयो है अर्थ स्त्रीकेवशयहै औबातुल जो बहुतबातैं कहैं ३७॥

ईशईशजगदीशबखान्यो । वेदबाक्यबलतेपहिंचान्यो ॥ ताहिमेटिहठिकैरहिहौंतौ । गंगतीरतनकोतजिहौंतौ ३८ दोहा ॥ मौनगहीयहबातकहिछांड़ोसबौबिकल्प । भरतजाइभागीरथीतीरकर्योसंकल्प३९ इन्द्रबज्राछन्द॥ भागीरथीरूपअनूपकारी । चंद्राननीलोचनकंजधारी ॥ बानीबखानीमुखतत्त्वशोध्यो । रामानुजैआनिप्रबोधबोध्यो ४० ॥ उपेंद्रबज्राछन्द ॥ अनेकब्रह्मादिनअंतपायो । अनेकधावेदनगीतगायो ॥ तिन्हैंनरामानुजबंधुजानौ । सुनोसुधीकेवलब्रह्ममानौ ४१ निजेच्छयाभूतलदेहधा

री । अधर्मसंहारकधर्मचारी ॥ चलेदशग्रीवहिमारिबे को । तपीव्रतीकेवलपारिबेको ४२ उठोहठीहोहुनकाज कीजै । कहैंकछूरामसोमानिलीजै ॥ अदोषतेरीसुतमातु सोहै । शोकौनमायाइनकोनमोहै ४३ ॥

ईश जे विष्णुहैं औ ईश जे महादेवहैं औ जगदीश जे ब्रह्माहैं तिन यह बात बखान्यो है कि स्त्री जितादिकन के बचनमेटे सो पातक नहीं होत सो हम वेदवाक्यबल सों पहिंचान्यो है अर्थ वेदमें तीन्योदेवके ऐसे वचन हैं ते हम सुन्यो है अथवा तीनों देवन बखान्यो है औ वेदवाक्य बलहूसों पहिंचान्यो अर्थ वेदहू यहै कहतहैं ३८ विकल्प विचार भागीरथी मंदाकिनी ३९ तत्त्व कहे सारांश शोध्यो कहे ढूंढ्यो तासारांश युक्त मुखसों बाणीबखानी अथवा ऐसी बाणी बखानी जामें तत्त्व जो राम कथा तत्त्वहै ता करिकै अपने मुखको शोध्यो शुद्धकर्‌यो औ रामानुज जे भरत हैं तिनको प्रबोध कहे उत्तमज्ञान आनि कहे ल्याइकै बोध्यो बोधकर्‌यो बोध्योपद कहि या जनायो कि रामचन्द्र प्रति बंधुबुद्धिरूपी निशामें सोवतरहैं तामें जगायो ४०।४१।४२ सुत भरतको संबोधन है यासों या जनायो कि इनकी मायामें मैं मोहिकै तुम्हारी मातैं इनको बनगमन चाह्यो ४३ ॥

दोहा ॥ यहकहिकैभागीरथीकेशवभईअदृष्ट॥ भरत कह्योतबरामसोंदेहुपादुकाइष्ट ४४ उपेन्द्रबज्राछन्द ॥ चलेबलीपावनपादुकालै । प्रदक्षिणारामसियाहुकोदै ॥ गयेतेनंदीपुरबासकीनो । सबंधुश्रीरामहिचित्तदीनो ४५ दोहा ॥ केशवभरतहिआदिदैसकलनगरकेलोग॥बनसमानघरघरबसेसकलविगतसंभोग ४६ इतिसकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां भरतस्याचित्रकूटागमनंनामदशमःप्रकाशः

पादुकारूपी इष्ट कहे स्वामीदेहु आशय यह कि राज्यपर स्वामी चाहिये ४४ । ४५ । ४६ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसा-
दायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्ति
प्रकाशिकायांदशमःप्रकाशः १० ॥

दोहा ॥ एकादशैप्रकाशमेंपंचबटीकोबास ॥ शूर्पण खाकेरूपकोरघुपतिकरिहैंनास १ भरतोद्धताछंद ॥ चित्रकूटतबरामजूतज्यो । जाइयज्ञथलअत्रिकोभज्यो ॥ रामलक्ष्मणसमेतदेखियो । आपनोसफलजन्मलेखियो २

१ भज्योकहे प्राप्तभये २ ॥

चन्द्रवर्त्मछंद ॥ स्नानदानतपजापजोकरियो । शोधिशोधिमनजोउरधरियो ॥ योगयागहमजालगिगहियो । रामचंद्रसबकोफललहियो ३ बंशस्थाछंद ॥ अनेकधापूजनअत्रिजूकरयो । कृपालुकैश्रीरघुनाथजूधरयो ॥ पतिव्रतादेविमहर्षिकीजहां । सुबुद्धिसीतासुखदागईतहां ४ दोहा ॥ पतिव्रतनकीदेवजाअनुसूयाशुभगात । सीताजूअवलोकियोजरासखीकेसाथ ५ चतुष्पदीछंद ॥ शिरश्वेतबिराजैंकीरतिराजैंजनुकेशवतपबलकी । तनवलितपलितजनुसकलबासना निकरिगईथलथलकी ॥ कांपतिशुभग्रीवासबअँगसींवादेखतचित्तभुलाहीं । जनु अपनेमनप्रतियहउपदेशतियाजगमेंकछुनाहीं ६ प्रमिताक्षराछंद ॥ हरबाइजाइसियपायँपरी । ऋषिनारिसूँघिशिरगोदधरी ॥ बहुअंगरागअँगअंगरये । बहुभाँतितांहिउपदेशदये ७ स्रग्विणीछंद ॥ रामआगेचलेमध्यसी

ताचली । बंधुपाछेभयेसामसोमेभली ॥ देखिदेहीसबैक टिधाकेभनो । जीवजीवेशकेबीचमायामनो ८ ॥

मनकोशोधिशोधि शुद्धकरिकरि गुनकी जोउरबिषे धरयो अर्थ तुम्हारो ध्यानकरयोहै अथवा मनहीकोशुद्धकरिकै जोउर धारणकरयो अर्थ मनकी जो चंचलताहै ताहिछोडाइ अपनेबश करयो है सो हेरामचन्द्र ताको सबको फल जोतुम्हारो दर्शन ताको पायो ३ । ४ जराकहे बुढाईरूपी जोसखी है ताके साथ रुयो ५ तनबलित्तकहे युक्त है पलितकहे ढिलाईसों अर्थवृद्धतास त्वचामें सिकुरापरिगयेहैं सोमानों थलथलकी अंगअंगकीबासन बिषयबासना निकलगइहै ताहीते अंगसिकुरिगयेहैं सीवामर्या ६ हरवाइकहे हरबराइकै ७ भनोकहे कह्यो जीवेश ईश्वर ८

मालतीछंद ॥ बिपिनबिराधबलिष्ठदेखियो । नृपत याभयभीतलेखियो ॥ तबरघुनाथबाणकैहयो । निज बाणपंथकोठयो ९ दोहा ॥ रघुनायकशायकधरेसक लोकशिरमोर ॥ गयेकृपाकरिभक्तिबश ऋषिअगस्त्यके ठौर १० बसन्ततिलकछन्द ॥ श्रीरामलक्ष्मणअगस्त सनारिदेख्यो । स्वाहासमेतशुभपावकरूपलेख्यो ॥ स ष्टांगक्षिप्रअभिबन्दनजाइकीन्हो । सानन्दआशिषअ षऋषीशदीन्हो ११ बैठारिआसनसबैअभिलाषपूजे सीतासमेतरघुनाथसबन्धुपूजे ॥ जाकेनिमित्तहमयज्ञ ज्योसोपायो । ब्रह्माण्डमंडनस्वरूपजोवेदगायो १२ ॥

निर्वाणजो मोक्षहै ताकेपंथकहे राहमें ठयोकहे युक्तकरय अर्थ मुक्तिदियो ९ सकललोक शिरमौर जेरघुनाथहैं तेशायक बाणहैं तिनकोधरे अगस्त्यके ठौरमेंगये अथवा रघुनायक भक्ति बश कृपाकरिकै अगस्त्यके ठौरगये तहां सकललोक शिरमौ जेअपने शायकहैं तिन्हैंधरे धारण करयो बिष्णुके धनुर्बा

अगस्त्यके यहांधरेरहेहैं ते रामचंद्रको अगस्त्य दियो है यह कथा वाल्मीकीय रामायणमेंहै अथवा सकललोक शिरमौर जो विष्णु हैं तिनके शायकधरे धारण करयो अथवा रघुनायकके सकल लोक शिरमौर शायक अगस्त्यके ठौर धरे हैं ता लिये औ भक्तिवश कृपाकरि अगस्त्यके ठौरगये १० स्वाहा अग्निकी स्त्री ११ सबै आपने अभिलाष पूजे पूरण करे ब्रह्माण्डको मंडन भूषण जो यह रावरो स्वरूप है ताही के मिलिबेके लिये हम यज्ञ यज्यो होम्यो करयो इति सो यह स्वरूप पायो १२ ॥

पद्धटिकाछंद॥ ब्रह्मादिदेवजवबिनयकीन। तटक्षीरसिन्धुकेपरमदीन ॥ तुमकह्योदेवअवतरहुजाइ। सुतह्वौंदशरथकोहोतुआइ १३ हमतबतेमनआनन्दमानि। मनचितवततवआगमनजानि ॥ ह्यांरहिजैकरिजैदेवकाज। मम फूलिफल्योतपवृक्षआजु १४ श्रीराम--पृथ्वीछंद ॥ अगस्त्यऋषिराजजूबचनएकमेरोसुनौ। प्रशस्तसबभांतिभूतलसुदेशजीमेंगुनौ ॥सनीरतरुखंडमंडितसमृद्धशोभाधरैं। तहांहमनिवासकोबिमलपर्णशालाकरैं १५ अगस्त्य-पद्मावतीछंद ॥ यद्यपिजगकर्त्तापालकहर्त्तापरिपूरणवेदनगाये। अतितदपिकृपाकरिमानुषवपुधरिथलपूंछनहमसोंआये। सुनिसुरबरनायकराक्षसघायकरक्षहुमुनिजनयशलीजै। शुभगोदावरितटविशदपंचबट पर्णकुटीतहँप्रभुकीजै १६ दोहा ॥ केशवकहेअगस्त्यकेपंचबटीकेतीर ॥ पर्णकुटीपावनकरीरामचन्द्ररणधीर १७ त्रिभंगीछंद ॥ फलफूलनपूरेतरुबररूरेकोकिलकुलकलरवबोलैं। अतिमत्तमयूरीपियरसपूरीबनबनप्रतिनाचतिडोलैं ॥ सारीशुकपण्डितगुणगणमण्डितभावनिमेंनिजअरथबखानैं। दे

रहुरघुनायकसीयसहायकमनहुंमदनरतिमधुजानैं१८॥

१३ तब कहे तुम्हारो १४ प्रशस्तनीको सुदेशसम उच्चनीच रहितेति सनीर सजल औ तरु जे वृक्षहैं तिनको जो खण्ड समूहहै तासों मण्डित युक्त औ समृद्ध कहे वर्द्धमान अधिक इति शोभाको धरैं धारण करेहोइँ निवासको कहे बसिबेको १५।१६। १७ रामचन्द्र के आगमनसों दण्डकारण्य में रूरेकहे सुन्दर जे तरु वृक्ष हैं ते फल औ फूलनसों पूरे युक्तभये अथवा रूरे जे फल औ फूल हैं तिनसों तरुवर पूरे औ कोकिलके जे कुलजाति समूह हैं ते कलकहे अव्यक्त मधुररव शब्दको बोलत हैं ॥ काकलीतुकलेसूक्ष्मे ध्वनौतुमधुरास्फुटे ॥ कलोमंद्रस्तुगंभीर तारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु इत्यमरः ॥ औ अतिमत्त जे मयूरी हैं ते पिय जे मयूरहैं तिनके रसमें प्रेममें पूरी बन बन प्रति नाचत डोलतीहैंअर्थ जहां जहां मोरनाचतहैं तहां तहां संग मयूरी डोलतीहैं औ सारो सारिका औशुक जे गुणगणसों मंडित पंडित प्रवीणहैं अर्थ अनेक गुणनमें पंडितहैं ते भावनिमें कहे अनेकभाव अभिप्राययुक्त गानके अर्थको बखानतहैं अथवा नृत्यके जे अनेकभाव चेष्टाहैं तिनमें अर्थको बखानत हैं जब जैसी चेष्टा देखत हैं तब तैसो अर्थके प्रयोजनको बखान करतहैं तामें तर्क करतहैं कि रघुनायक रामचन्द्र औ सीता औ सहायक जे लक्ष्मण हैं तिनको इन वृक्षादिकन देख्यो है सो मानों मदन काम और रति सहित मधुबसन्त जानतहैं तौ बसंतहूके आगमनमें ये कौतुक होतहैं तासों उत्प्रेक्षा कर्यो औ युक्ति यह कि बसंत बनको प्रभु है सो प्रभुकी अवाई में अनेक बितान बिछाबने नृत्यादि रचना सब करत हैं सो रतिसहित मदन जो मित्र है तासों युक्त बसंतको आवत देखि बनकर्यो प्रफुल्लित जे अनेक कुंज हैं तेई वस्त्र भवन औ बितान हैं औ गिरेजे पुष्प हैं तेई पुष्प बिछावने हैं कोकिल गावतहैं मोरनाचतहैं सारो शुकबखान करतहैं वेश्यादि नृत्यकारिनहूंमें बखानकर्त्ता एकरहतहै १८॥

लक्ष्मण-सवैया ॥ सबजातिफटीदुखकीदुपटीकपटी नरहैजहँएकघटी । निघटीरुचिमीचघटीहूघटीजगजीव यतीनकीछूटीतटी । अघओघकीबेरीकटीबिकटीनिकटी प्रगटीगुरुज्ञानगटी । चहुंओरननाचतिमुक्तिनटीगुणधूर जटीबनपंचबटी १९ ॥

दुपटी द्वैपाटके ओढ़िबेको वस्त्र सो जहां जा पंचबटीके निकट सबफाटि जातिहै नेकहूनहीं रहति अर्थ सबदुःख जहां नशिजातहैं औ कपटीजीव जहां एकघड़ी नहींरहत यासों या जनायोकि जहां जातही कपटीको कपट दूरिहोत है औ जाकीशोभा निरखि जगके जे यती तपस्वी जीवहैं तिनकी तटीकहे ध्यान स्थिति सोछुटी औ मीचकीरुचि घटीहू घटीकहे घरीघरीमें निघटी घटत भई अर्थ यती जीवनको मरेते मुक्तिहोतिहै परन्तु जास्थानकी शोभानिरखि मुक्तिहूकी इच्छानहीं करत अघपाप ओघसमूह बेरिबंधन जंजीर सो ऐसी जोपंचबटीहै सो धूर्ज्जटी जो महादेव हैं तिनके गुणन सों जटी कहे युक्त है येई दुःख नाशनादि गुण महादेवहू मोहैं अथवा ये जे दुःख नाशनादि गुण हैं तिनसों औ धूर्ज्जटी जे महादेव हैं तिनसों जटीकहे युक्त है पंचबटी १९ ॥

हाकलिकाछन्द । शोभतिदण्डककीरुचिबनी । भांतिनभांतिनसुन्दरघनी ॥ सेवबड़ेनृपकीजनुलसै । श्रीफलभूरिभावजहँबसै २० बेरभयानकसीअतिलगै । अर्कसमूहजहांजगमगै ॥ नैननकोबहुरूपनग्रसै । श्रीहरिकी जनुमूरतिलसै २१ ॥

दण्डकनाम राजारहे हैं तिनको राज्य शुक्रके शाप सों बनह्वै गयो है तासों दंडकारण्य कहावत है रुचि शोभा श्रीफल बेल औ लक्ष्मीको फलबड़े राजाकी सेवामें बहुत द्रव्य पाइयतहै २० भयानक बेर प्रलयकाल अर्कमदार औ सूर्य प्रलयकालहू मों

बारहौ आदित्य उवतहैं नैननको अनेक रूपकरि ग्रसत हैं यासों या जनायो कि क्षणमें अधिक अधिक नवीन शोभाधरत हैं ऐसी विष्णुकी मूर्त्तिहूहै तासों समताकरयो सुन्दरता को याही प्रकार बर्णनहै यथा माघकाव्ये ॥ दृष्टोपिशैलःसमुहुर्मुरारेरपूर्ववद्विस्मय माततान ॥ क्षणेक्षणेयन्नवतामुपैति तदेवरूपंरमणीयतायाः २१

राम-दोधकछन्द ॥ पांडवकीप्रतिमासमलेखो । अर्जुनभीममहामतिदेखो ॥ हैसुभगासमदीपतिपूरी । सिंदुरकोतिलकावलिरूरी २२ राजतिहैयहज्योंकुलकन्या । धाइविराजतिहैसँगधन्या ॥ केलिथलीजनुश्रीगिरिजाकी । शोभधरेशितकण्ठप्रभाकी २३ मनहरणछंद ॥ अतिनिकटगोदावरीपापसंहारिणी । चलतरंगतुंगावलीचारुसंचारिणी । अलिकमलसौगंधलीलामनोहारिणी । बहुनयनदेवेशशोभामनोधारिणी २४ ॥

प्रतिमा चित्र अर्जुन ककुभवृक्ष औ पांडुपुत्र ॥ अर्जुनः ककुभेपार्थे इति मेदिनी ॥ औ भीम अम्लवेतस बृक्ष औ भीमसेन भीमोबृकोदरेघोरेशंकरेप्यम्लवेतसे इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ जो कहौ रामावतार प्रथम भयोहै अर्जुनादि कृष्णावतार समयमों रहेहैं पूर्वापर बिरोधहै तौ सब कल्पनमें दशौ अवतार होतहैं सो अनेक रामावतार कृष्णावतार भये हैं तासों दोष नहीं है यथा तुलसीकृत रामायणमें ॥ कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतारा । सुभगा सौभाग्यवती स्त्री सधवा इति ताकेसम शोभापूरीहै दंडककी रुचि सिंदुरकजो है वृक्ष विशेष औ तिलक वृक्षकरिकै रूरी सुन्दर है ॥ सिन्दूरस्तरुभेदेस्यादितिमेदिनी ॥ तिलकोद्रुमरोगाश्वभेदेचतिलकालके इति मेदिनी ॥ औ सुभगा सिन्दुरकजो सेंदुरहै ताके तिलककी अवली करिकै रूरी है अथवा सिन्दुरक करिकै औ और जे सुवर्ण मणि आदि के तिलकहैं तिनकी अवली

करिकै रूरीसुन्दरहै २२ कुलकन्यापदते बडेकीकन्या जानो धाइ वृक्षविशेष औ उपमाता जो दूधपियावतिहै गिरिजा पार्वती शित कण्ठ मयूर औमहादेव २३ जापर्णकुटीके अतिनिकट पाप संहारिणी गोदावरी नामनदीहै फेरिकैसीहै गोदावरी चलचंचल जेतरंगहै तिनके जेतुंग समूहहैं तिनकीजे अवलीपांतीहैं तिनकी चारुकहे अच्छीभांति संचारिणी चलावनहारी है अर्थ अनेक तरंगैं उठायोकरतिहै अथवातरंगतुंगावलिनकरिकैचारुसंचारिणी चलनहारी है अलिभ्रमर युक्त जे कमलहैं तिनके सौगंध सुगन्ध करिकै लीलाहै मनोहारिणी जाकी औ अलियुक्त कमलन करिकै बहुनयन जे देवेश इन्द्रहैं तिनकी शोभाकी मानों धारिणी धारण कर्त्रीहै इन्द्रके सहस्र नेत्र हैं इहांनेत्र सदृश अलियुक्तकमलहैं२४

दोधकछन्द ॥ रीतिमनोंअविवेककिथापी । साधुन कीगतिपावतपापी ॥ कञ्जजकीमतिसीबड़भागी । श्री हरिमंदिरसोंअनुरागी २५ अमृतगतिछंद ॥ निपटप तिव्रतधरणी । जगजनकेदुखहरणी ॥ निगमसदागति सुनिये । अगतिमहापतिगुनिये २६ ॥

कञ्जजब्रह्माकी मतिहूको अनुराग हरि मन्दिर वैकुण्ठ में है औ गोदावरीहूको है काहेते जोकोऊ स्नानकरतहैं ताको आपनो जानि वैकुण्ठ पठावतिहै २५ यामें बिरोधाभासहै सदापति जो समुद्रहै तामें लीनरहति है तासों निपट पतिव्रत धरणी कह्यो बिरोधपक्षमें दुःखकामपीडा अवरोधमें पापजनित दुखदरिद्रादि निगम जेवेदहैं तिनमें सदागतिकहे सदाहै गति मुक्ति जासों ऐ- सी सुनियतहै अर्थ जोकोऊ स्नान करतहैं ताको मुक्तिदेति है औ पति जो समुद्र है ताहीको अगति सुनियतहै अर्थ ताको गति मुक्ति नहींदेति यह विरोधार्थ है अबिरोधहूकी अगतिगमनरहित समुद्रको जल बहत नहीं २६ ॥

दोहा ॥ विषमैयहगोदावरीअमृतनकोफलदेति ॥

केशवजीवनहारकोदुखअशेषहरिलेति २७ त्रिभंगीछंद ॥ जबजबधरिबीनाप्रकटप्रबीनाबहुगुणलीनासुखसीता । पियजियहिरिझावैदुखनिभजावैबिबिधबजावैगुणगीता ॥ तजिमतिसंसारीबिपिनबिहारीदुखसुखकारीघिरिआवे । तबतबजगभूषणारिपुकुलदूषणासबकोभूषणपहिरावै २८ तोटकछंद ॥ कवरीकुसुमालिशिखीनदई । गजकुम्भनिहारनिशोभमई ॥ मुकुताशुकसारिकनाकरचे । कटिकेहरिकिंकिणिशोभसचे २९ दुलरीकलकोकिलकण्ठबनी । मृगखञ्जनअञ्जनभाँतिठनी ॥ नृपहंसनिनूपुरशोभभिरी । कलहंसनिकण्ठनिकण्ठसिरी ३०॥

याहूमें विरोधाभास है विषमैकहे जलमय ॥ बिषंतुगरले तोये इतिमेदिनी ॥ औ जैसे अमृत अमरकरतहै तैसे याहू मुक्त कै अमरकरति है बिरोधपक्षमें जीवन जीव अविरोधमें जलदुःख प्यास दुःख अथवा विषमै कहे टेढ़ी है अमृत जे देवताहैं तिनके फलको देतिहै अर्थ शुद्धगतिको देतिहै औ जीवनहारजे यमराज हैं तिनको दुखकहे तिनकृत दुख यमयातना इति ताको अशेष कहे सम्पूर्ण हरिलेतिहै २७ सुख कहे सुखसों गुणगीता रामचन्द्रकी गुणगीता दुखकारी व्याघ्रादि सुखकारी कोकिलादि जे बिपिनबिहारी कहे बनबिहारी हैं ते संसारी मति कहे भेद भय मतिको तजिकै मनुष्यके समीप मैं बन जीवनको आपही सों आइबो आश्चर्य है सो आवत हैं याही संसारी मतिको त्यागजानो २८ तीनिछन्दनमें एक वाक्यता है शिखी मोरकवरी कहे केशपाश २९ नृपहंस राजहंस ३० ॥

मुखबासनिबासितकीनतबै । तृणगुल्मलतातरुशूलसबै ॥ जलहूथलहूयहिरीतिरमैं । बनजीवजहाँतहँसंगभ्रमैं ३१ दोहा ॥ सहजसुगन्धशरीरकीदिशिविदिशनअव

गाहि ॥ दूतीज्यों आईलियेकेशवशूर्पणखाहि ३२ मरह ट्टाछंद ॥ यकदिनरघुनायकसीयसहायकरतिनायकअ नुहारि । शुभगोदावरितटविमलपंचवटिबैठेहुतेमुरारि ॥ छबिदेखतहींमनमदनमथ्योतनशूर्पणखातेहिकाल । अ तिसुंदरतनकरिकछुधीरजधरिबोलीवचनरसाल ३३ ॥

मुख वासन कहे मुखके सुगंधन सों तृण कुशादि गुल्मगुलाब आदि लता लवंगादि तरु आम्रादि औ याही रीतिसों अर्थ जैसे सीताजूके गावतमें रमतहैं तैसेही सौंदर्यादिहू के बशह्वै रामचंद्र के समीपमें जल जीव हंसादि औ थल जीव मयूरादि जे बन जीव कहे दंडकारण्य के जीवहैं ते रमतहैं औ जहां तहां रामचंद्र के संग भ्रमत हैं अर्थ जहां रामचन्द्र जातहैं तहां संगसंग भ्रमत फिरत हैं तीनिहूं छन्दनमें युक्ति यह कि जा जीवको जो अंग वर्ण्यो है ताकेही अपने पहिरायो अथवा जाके जा अंगमें रामचन्द्र जो भूषण पहिरायो ताको तौन अंग सुन्दरताको प्राप्त है वर्ण्य भयो औकाहू काहू जीवके अव पर्यंतताको चिह्न बन्योहै ३१ जैसे दूती ढूंढिकै स्त्री को पुरुषके पासलैजाति है तैसे रामचन्द्रके शरीरकी जो सहज स्वाभाविक सुगंध है सो दिशि बिदिशनमें अवगाहिकै ढूँढिकै शूर्पणखा को रामचन्द्रके पासल्याई रामचन्द्रके अंगनको सहज सुगन्ध जो बनमें वायु योग सों फैलि रह्यो है ताको आघ्राणकै ताके अनुसार शूर्पणखा रामचन्द्र के पास आई इति भावार्थः ३२ । ३३ ॥

शूर्पणखा-सवैया ॥ किन्नरहौनररूपबिचक्षणपच्छ किस्वच्छशरीरनिसोहौ । चित्तचकोरकेचंदकिधौंमृगलो चनचारुबिमाननिरोहौ ॥ अंगधरेकिअनंगहौकेशवअं गीअनेकनकेमनमोहौ ॥ बीरजटानधरेधनुबानलियेब निताबनमेंतुमकोहौ ३४ राम--मनोरमाछंद ॥ हमहैंद

शरत्थमहीपतिकेसुत। शुभरामसुलक्ष्मणनामनसंयुत॥ यहशासनदैपठयेनृपकानन। मुनिपालहुमारहुराक्षसके गन ३५ शूर्पणखा॥ नृपरावणकीभगिनीगनिमोकह। जिनकीठकुराइतितीनहुलोकह॥ सुनियेदुखमोचनपंकजलोचन। अबमोहिंकरौपतनीमनरोचन ३६ तोमरछंद॥ तबयोंकह्योहँसिराम। अबमोहिंजानिसबाम॥ तियजायलक्ष्मणदेखि। समरूपयौवनलेखि ३७ शूर्पणखा--दोधकछंद॥ रामसहोदरमोतनदेखो। रावणकीभगिनीजियलेखो॥ राजकुमाररमोसँगमेरे। होहिंसबैसुखसंपतितेरे ३८ लक्ष्मण॥ वैप्रभुहौंजनजानिसदाई। दासभयेमहँकौनिबड़ाई॥ जोभजियेप्रभुतोप्रभुताई। दासभयेउपहाससदाई ३९॥

विचक्षण प्रवीण चित्तरूपी जो चकोरहैं ताके चन्द्रमाही जैसे चन्द्रमा चकोरको सुखदेतहै तैसे तुम चित्तको सुखदेतहौ चन्द्रमा मृगन के बिमान रथको रोहतहै अर्थ चढ़तहै तुम मृगरूपी जे लोचन हैं तिनहीं के बिमाननको रोहतहौ अर्थ जो तुमको कोऊ देखत है ताके नयनन में ऐसे बसिजातहौ कि उतरत नहीं ३४ शासन आज्ञा ३५ हे मनरोचन अर्थ मेरे मनको तुम अति रुचतहौ ३६ आपनेरूप औ यौबनके संग इन्हें लेखि कहे जानु अर्थ जैसो रूप यौबनतेरो है तैसो इनहूं को है ३७। ३८ सदाईजन हौं कहि या जनायो कि कबहूं प्रभुताहैबेकी आशा नहीं है ३९॥

सल्लिकाछंद॥ हासकेबिलासजानि। दीहामानखंडमानि॥ भक्षिबेकोचित्तचाहि। सामुहेभईसियाहि ४० तोमरछंद॥ तबरामचन्द्रप्रबीन। हँसिबंधुत्योंदृगदीन॥ गुनिदुष्टतासहलीन। श्रुतिनासिकाबिनुकीन ४१ दोहा॥

शोणछिंछिछूटतबदनभीमभईतिहिकाल ॥ मानोकृत्या कुटिलयुतपावकज्वालकराल ४२ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां शूर्पणखाश्रवणनासिकाछेदनंनामैकादशःप्रकाशः ११ ॥

जब जान्यो कि ये मोसों रमिहैं नहीं केवल मोसों हासके विलास उपहास करत हैं तब दीह कहे बड़ो आपनो मानखंड कहे अपमान मानिकै ४०। ४१ कराल पावक ज्वालसों युक्तहै वदन जाको ऐसीमानों कृत्यानामा देवी है ॥ कृत्याक्रियादेवतयोरितिमेदिनी॥ ४२॥इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांएकादशःप्रकाशः ११ ॥

दोहा ॥ याद्वादशेप्रकाशखरदूषणत्रिशिरानास। सीताहरणविलापसुग्रीवमिलनहरित्रास १ ॥

त्रास जो भय है ताको हरिकै सुग्रीवको मिलनहै अर्थ बालिको वधनिश्चयकरि सुग्रीवको त्रासहरि रामचन्द्र मित्रताकरिहैं १॥

तोटकछंद ॥ गइशूर्पणखाखरदूषणपै । सजिल्याइतिन्हैंजगभूषणपै ॥ शरएकअनेकतेदूरिकिये । रविकेकरज्योंतमपुंजपिये २ मनोरमाछंद ॥ वृषकेखरदूषणज्यों खरदूषण । तबदूरिकियेरबिकेकुलपूषण ॥ गदशत्रुत्रिदोषज्योंदूरिकरैबर । त्रिशिराशिरत्योंरघुनंदनकेशर ३ भजिशूर्पणखागइरावणपैतब । त्रिशिराखरदूषणनाशकहेसब ॥ तबशूर्पणखामुखबातसबैसुनि । उठिरावणगोजहँमारिचहोमुनि ४ मनोरमाछंद ॥ रावणबातकहीसि

गरीत्यों । शूर्पणखाहिंबिरूपकरीज्यों ॥ एकसुरामअनेकसँहारे । दूषणस्योंत्रिशिराखरमारे ५ तूअबहोहिसहायकमेरो । हौंबहुतैगुणमानिहौंतेरो ॥ जोहरिसीतहिल्यावनपैहै । वेभ्रमिशोकनहींमरिजैहै ६ मारीच ॥ रामहिंमानुषकैजनिजानो । पूरणचौदहलोकबखानो ॥ जाहुजहांतियलैसुनदेखो । हौंहरिकोजलहूंथललेखो ७ ॥

रामचन्द्रकी आज्ञा सों लक्ष्मण सीताको लैकै गुफामें राख्यो है यह कथा शेषजानो २ वृषराशिके रबिसूर्य खर कहे तृणके दूषणहोत हैं सुखाइडारत हैं तैसेरविके कुलके पूषण जे रामचन्द्र हैं तिन खर औ दूषणनाम राक्षसको दूरिकियो कहे मारयो औ गद शत्रु जो वैद्यहै सो जैसे त्रिदोष कहे कफ पित्त बात तीनों को दोष एकहीबार दूरिकरत है तैसे रघुनन्दन के शर त्रिशिरा शिर को एकहीबार दूरिकरयो ३ । ४ स्यो कहे सहित ५ सीताको ढूंढ़त भूतलमें भ्रमिकहे घूमिकै अथवा संदेहको प्राप्तह्वैकै ६ चौदहों लोकमें पूर्ण कहे व्याप्त ७ ॥

रावण—सुंदरीछंद ॥ तूअबमोहिंसिखावतहैशठ । मैं बशजगलकियोहठहीहठ ॥ बेगिचलैअबदेहिनउत्तर । देवसबैजनएकनहींहर ८ दोहा ॥ याचिचल्योमारीचमनरणमहँदुहुंबिधिआसु ॥ रावणकेकरनरकहैहरिकरहरिपुरबासु ९ राम-सुंदरीछंद ॥ राजसुताइकमंत्रसुनोअब । चाहतहौंभुवभारहरेउसब ॥ पावकमेंनिजदेहहिंराखहु । छायशरीरमृगैअभिलाखहु १० चामरछंद ॥ आइयो कुरंगएकचारुहेमहीरको । जानकीसमेतचित्तमोहेउरामबीरको ॥ राजपुत्रिकासमीपसाधुबंधुराखिकै । हाथचापबाणलैगयेगिरीशनांघिकै ११ दोहा ॥ रघुनायकजबहीं

हन्योशायकशठमारीच ॥ हालक्ष्मणयहकहिगिरेउश्रीपतिकेस्वरनीच १२ निशिपालिकाछंद ॥ राजतनयातबहिंबोलसुनियोंकहेउ । जाहुचलिदेवरनजातहमपैरहेउ ॥ हेमसृगहोहिनहिंरैनिचरजानिये । दीनस्वररामकेहिभांतिमुखआनिये १३ ॥

एक हर महादेव को छोड़िकै और सबदेवता मेरेजन कहे सेवकहैं ८ आशु कहे जल्दी ९ छाया शरीरसों मृगैकहे चलिबेको अभिलाषकरौ अर्थ छाया शरीर आलंब्यरहौ अथवा छाया शरीरसों या सुवर्ण मृगको अभिलाषौ १० हेम सुवर्ण औ हीरनको कुरंग हरिणबनि मारीचआयो ११ जैसो रामचन्द्रको स्वर कहे शब्दहै ताही स्वरसों हालक्ष्मण यह कहिकै गिरयो नीच मारीचको बिशेषण है १२ यह कोऊ राक्षस है हरिणको रूपधरिकै आयो है ताने रामचन्द्रको मार्‍यो तासों हालक्ष्मण ऐसो दीन स्वर रामचन्द्र कह्यो इतिभावार्थः १३ ॥

लक्ष्मण ॥ शोचअतिपोचउरमोचदुखदानिये । मातुयहबातअवदातममानिये ॥ रैनिचरछद्मबहुभांतिअभिलाषहीं । दीनस्वररामकबहूंनमुखभाषहीं १४ चंचलाछन्द ॥ पक्षिराजयक्षराजप्रेतराजयातुधान । देवताअदेवतानृदेवताजितजहान ॥ पर्वतारिअर्बखर्बशर्बसर्बथाबखानि । कोटिकोटिसूरचन्द्ररामचन्द्रदासमानि १५ चामरछन्द ॥ राजपुत्रिकाकह्योसोऔरकोकहैसुनै । कानमूंदिबारबारशीशबीसधाधुनै ॥ चापकीररेखखांचिदेवसाखिदैचले । नांघिहैंतेभस्महोहिंजीवजेबुरेभले १६ ॥

अतिपोच कहे निषिद्ध जो दुखदानि शोच है ताको उरसों मोच कहे त्याग करौ छद्म कपट १४ पक्षिराज गरुड़ यक्षराज

कुवेर प्रेतराज यमराज यातुधान राक्षस देवता औ अदेवता दैत्य नृ देवता राजा औ पर्वतारि इंद्रते ये सब अर्बखर्ब संख्या परिमित औ अर्बखर्ब शर्ब कहे महादेव अर्बखर्बको सम्बंध सर्वपदहूमों है तिन्हैं सर्बथा कहे सब प्रकार बखानि कहे कहौ औ कोटि सूर्य औ चन्द्रमा हैं तिन सब को रामचन्द्रके दास कहे सेवक मानो रामचन्द्रके मारिबेलायक ये कोऊ नहीं हैं इतिभावार्थः १५ लक्ष्मण को राजपुत्रिका ने जे कटुबचन कहे तिन्हैं और कौन कहै औ कौनसुनै अर्थ अति कटुबचन कहे जे काहू के कहिबे सुनिबे लायक नहीं हैं औ जो थोरो सुनिबोहू करै तौ जामें आगे और ना सुनिपरै तालिये कान मूँदिकै बिनसुने बचननके शोक सों बीसधा अर्थ अनेक प्रकार सों शीशधुनै अथवा सीताही कान मूँदिकै शीश धुनत भईं कान मूँदिबेको हेतु यह जामें लक्ष्मणके ये बोध वचन न सुनिपरैं तौ लक्ष्मण बातैं ना कहैं रामचन्द्रके पास जाइँ अथवा जामें कटुवचन ना सुनिपरैं ता लिये लक्ष्मणहीं काननको मूँदिकै बारबार शीश धुनतभये १६ ॥

छिद्रताकिक्षुद्रराज लंकनाथआइयो । भिक्षुजानिजानकी सीभीखकोबोलाइयो ॥ शोचपोचमोचकैसकोचभीमबेखको । अंतरिक्षहीकरीज्योंराहुचंद्ररेखको १७ दण्डक ॥

धूमपुरकेनिकेत मानोंधूमकेतुकी सिखाकीधूमयोनिमध्य रेखासुधाधामकी । चित्रकीसीपुत्रिकाकी रूरेबयरूरेमाहँ शम्बरछोड़ाइलई कामिनिकी कामकी ॥ पाखंडकीश्रद्धाकीमठेशबशएकादशी लीन्ही कैश्वपचराजशाखाशुद्ध सामकी । केशवअदृष्टसाथ जीवजोतिजैसीतैसी लंकनाथहाथपरी छायाजायारामकी १८ ॥

क्षुद्रनको राज जो लङ्कनाथहै सो छिद्रकहे अवसर ताकिभिक्षुक कहे दण्डी रूपधरिकै सीतापै आयो शूर्पणखाकी नासिका

काटेको जो पोचकहे बुरो शोच है सीताहरण निश्चय करिताको मोचकै छोड़िकै अथवा पोचरावणको विशेषणहै औ भीमवेषको जो सङ्कोच सिकोरनो रह्यो ताको मोचिकै अर्थ जो लघुशरीर करयोरहै ताको वढ़ाइकै अंतरिक्ष आकाश १७ धूमपुरके निकेत कहे घरमें अर्थ धूमसमूहमें धूमकेतु जो अग्निहै ताकी शिखा ज्योतिहै कि धूमयोनिजेमेघहैं तिनकेमध्यमें सुधाधामजोचन्द्रमा है ताकी रेखाकहे कलाहै कि रूरकहे बड़े बयरूरे कहेबौंड़र वायु ग्रंथिकरिकै प्रसिद्धहै तामें चित्रपुत्रिका है किशम्बर नामाजो दैत्यहै सो कामकोशत्रुहै तेहिकामकी कामिनी रतिको छँड़ाइ-लीन्हीहै कि पाखण्डके वशमो श्रद्धापरीहै यहकथा विज्ञान गी-तामें प्रसिद्धहै कि मठपतिकेवश एकादशीपरी किश्वपचराज चां-डालनको राजा शुद्धसामवेदकी शाखा लीन्हो है अदृष्ट कर्मके साथमें जैसी जीव ज्योतिपरीहै तैसी छायाकृतजो रामकी जाया सीताहै सोलङ्कनाथके हाथमें परी १८ ॥

सीताजू--हरिलीलाछंद ॥ हारामहारमणहारघुनाथ धीर। लंकाधिनाथ बशजानहुमोहिंबीर ॥ हापुत्रलक्ष्मण छोड़ावहुबेगिमोहिं ।मार्तंडबंशयशकीसबलाजतोहिं १९ पक्षीजटायुयहबात सुनंतधाइ । रोक्योतुरंतबलरावण दुष्टजाइ ॥ कीन्होंप्रचंडरथछत्रध्वजाबिहीन । छोड्यो बिपक्षतबभोजबपक्षहीन २० संयुताछंद ॥ दशकंठ सीतहिंलैचल्यो । अतिवृद्धगीधहियोदल्यो ॥ चितजा नकीअधकीकियो । हरितानिहैंअवलोकियो २१ पदपद्म की शुभघूंघरी। मणिनीलहाटकसोंजरी ॥ जनुउत्तरीय बिचारिकै । शुभडारिदीपगढारिकै २२ दोहा ॥ सीताके पदपद्मकोनूपुरपटजनिजानु ॥ मनहुंकरयोसुग्रीवघरराज श्रीप्रस्थानु २३ यद्यपिश्रीरघुनाथजू समसर्बगसर्वज्ञ ॥

कैसीलीलाकरत जिहिमोहतसबअङ्ग २४ राम- येया ॥ निजदेखौंनहींशुभगीताहिसीतहि कारणकौन हौंअबहीं । अतिमोहितकैबनमांझगई सुरमारगमें गमारयोजहीं ॥ कटुबातकछूतुमसोंकहिआई किधौंते हित्रासडेराइरहीं । अबहैयहपर्णकुटी किधौंऔर किधौं यहलक्ष्मणहोइनहीं २५ ॥

१९ प्रचंडपद जटायु रावण रथतीन्योंको विशेषण है सकतहै विपक्षशत्रु रावण २० तीनि औ द्वैकहे पांच अथवा द्वैतीनि क- हिबेकीरीति स्वभावोक्ति है हरिबानर २१ उत्तरीय ओढ़िबे को वस्त्र २२ जब प्रस्थानभयो तब आप आयोई चाहै २३ समकहे सदा एकरस रहतहैं औ सर्बगकहे सर्बत्र व्याप्तहैं औ सर्वज्ञकहे सब जानतहैं २४ जो हमारे स्वरसों हा लक्ष्मण यहकहिकै मृग मरयोहै सो हमारो शब्दजानि ताहिस्वरके मार्गह्वै हमारे बड़े हितसों बनके मध्यमें गईहै कि हेलक्ष्मण यहपर्णकुटीहै कि कछू औरई बस्तुहै औ कि वहपर्णकुटीनहींहै औरई पर्णकुटीहै २५॥

दोधकछंद ॥ धीरजसोंअपनोमनरोक्यो । गीधजटा युपरयोअवलोक्यो ॥ छत्रध्वजारथदेखिकैबूझेउ । गीध कहौरणकौनसोंजूझेउ २६ जटायु ॥ रावणलैगयोराघ वसीता । हारघुनाथरटैशुभगीता ॥ मैंबिनछत्रध्वजारथ कीन्हो । ह्वैगयोहौंबलपक्षबिहीनो २७ मैंजगमेंसबतेब ड़भागी । देहदशातवकारणलागी ॥ जोबहुभांतिनबेद नगायो । रूपसोमैंअवलोकनपायो २८ राम ॥ साधुजटा युसदाबड़भागी । तोमनसोबपुसोंअनुरागी ॥ छूट्योशरी रसुनीयहबानी । रामहिंमेंतपज्योतिसमानी २९ तोटकछं द॥ दिशिदक्षिणकोकरिदाहुचले । सरितागिरिदेखतवृक्ष

भले ॥ बनअंधकबंधबिलोकतहीं । दोउसोदरखैंचलि येतबहीं ३० जबखैंचेहिकोजियबुद्धिगुनी । दुहुंबाणनिलै दोउबांहहनी ॥ वहछांड़िकैदेहचल्योजबहीं । यहव्योम मेंबातकह्योतबहीं ३१ मोटनकछंद ॥ पीछेमघवामोहिं शापदई । गंधर्बतेराक्षसदेहभई ॥ फिरिकैमघवासहयुद्ध भयो । उनक्रोधकेशीशमेंबज्रहयो ३२ ॥

२६।२७ दशा अवस्था अर्थ यहकि यहदेह गृद्धकी औयह बृद्धावस्था तुम्हारे कछू उपकारके लायक नहींरही तासों तुम्हारो उपकारभयो औ ऐसो जो तुम्हारोरूपहै ताको देख्यो तासों जग में मैं सबसों बड़भागीहौं २८ अर्थ सायुज्य मुक्तिपायो २९ ३०।३१ बाहुदई पर्यन्त तीनि छंदके क्षेपकहैं पीछे कहपूर्वहीं ३२।

दोहा ॥ गयोशीशगड़िपेटमेंपरयोधरणिपरआय ॥ करुकरुणाजियमोंभईदीन्हीबाहुबढ़ाय ३३ बाहुदईद्वैकोशकीआवैतेहिगहिखांउ । रामरूपसीताहरणउजरहुग हनउपाउ ३४ सुरसरितेआगेयहांमिलिहैंकपिसुग्रीव । देहैंसीताकीखबरिबाढ़ैसुखअतिजीव ३५ तोटकछंद ॥ सरिताएककेशवसोभरई । अवलोकितहांचकवाचकई ॥ उरमेंसियप्रीतिसमाइरही । तिनसोंरघुनायकबातकही ३६ अवलोकतहौंजबहींजबहीं । दुखहोततुम्हैंतबहींतबहीं ॥ वहबैरनचित्तकछूधरिये । सियदेहुबतायकृपाकरिये ३७ शशिकेअवलोकनदूरिकिये । जिनकेमुखकीछबिदेखिजिये । कृताचित्तचकोरकछूकधरौ । सियदेहुबतायसहायकरौ ३८ ॥

३३ करुणा करिकै द्वैकोशकी बाहुदई औ यहबरदियो किजो इनबाहुनके मध्यमें आवै ताको खाहु जब सीताहरण ह्वैहै तब

रामचन्द्र या मगहूवै ऐहैं तिनके गहन उपाय सों उद्धरहु कहे तुम्हारो उद्धारहोई अर्थ जब रामचन्द्रको इन बाहुनसों गहिहौ तबतेरो उद्धार ह्वैहै ३४ सुरसरि गोदावरी ३५।३६ जब सीता को तुम अवलोकतरहे कहे देखतरहौ तब अपनासों अधिक सुन्दरसीताके कुचदेखि तुम्हारे दुखहोतरहै अथवा हमको संयोगी देखतरहे तासों तुम्हारे दुखहोतरह्यो ३७ शशि जोअति सुंदर जिनके मुखको देखि शशिकी ओर बिलोकिबो छोड़ि केवल जिनके मुखकी छबि देखिकै जियतरहेहौ अथवा शशिके अवलोकन दर्शनदूरिकिये पर अर्थ जबकृष्णपक्षमें चन्द्रमा आपनो दर्शन दृष्टिसों दूरि कियो ना देखिपरयो तब चन्द्रसम केवल जिनके मुखकी छबिको देखि जियतरहेहौ वह कृतकहे उपकार कछु चित्तमें धरिकै सीताको बताइदेउ ३८ ॥

सवैया ॥ कहिकेशवयाचककेअरिचंपकशोकअशोक लियेहरिकै। लखिकेतककेतकिजातिगुलाबतेतीक्ष्णजा नितजेडरिकै। सुनिसाधुतुम्हेंहमबूझन आयेरहेमनमौन कहाधरिकै । सियकोकछुसोधुकहोकरुणामयसोकरुणा करिनाकारिकै३९ नराचछंद ॥ हिमांशुसूरसोंलगैसोबात बज्रसीवहै । दिशालगैंकृशानुज्योंबिलेपअंगकोदहै ॥ बिशेषिकालरातिसोंकरालरातिमानिये । वियोगसीयकोन काललोकहारजानिये ४० ।

रामचंद्रकरुण वृक्षसों कहतहैं किचम्पक जेहैं ते याचकके अरि शत्रुहैं पुष्पनको याचकजो भ्रमरहै ताको निकटनहीं आवनदेत चम्पकमें भ्रमरनहीं बैठत यहप्रसिद्ध है ताभयसों चम्पकसों सीताको सोधुनहीं जांचे अशोकजे वृक्ष हैं तिनशोकको हरिकै छोड़िकैअशोकयहजोनामहै ताकोलीन्होहै तासों जिनहूंकोतज्यो है किजिनके शोक हैहीनहीं तेहमारो दुःखदेखि दुखी ह्वै कृपाकरि

सीताको सोधुकाहेको बताइहैं केतकिकेवरा औ केतकी औगुलाब इनकीजाति जेऔर कंटकवृक्षहैं कमलादि तिन्हैं तीक्ष्णकहेकंटकित जानिकै डरिकैतज्योहै सो हे करुणाकहे करुण वृक्ष करुणा कहे दीनतामय जेहमहैं तिनसों सीताको कछुसोधुकहौ ३६ रामचंद्रलक्ष्मणसों कहतहैं कि हिमांशुजो चंद्रमा है सोहमको सूर्यसमतप्त लागतहै औवायु वज्रसमबहति है औदशौदिशाअग्नि के समानतप्तलागतीहैं औतुमजो शीतलताकेअर्थ हमारेअंगनमें बिलेपकरतहौ सोअंगनको जारतहै औराति कालराति सम कराल लागतिहै औसीताको बियोग लोकहारकालकहे संहार कालसम लागतहै ४० ॥

प्रज्झटिकाछंद ॥ यहिभांतिबिलोकेसकलठौर ।गयेशबरीपैदोउदेवमौर ॥ लियेपादोदकत्यहिपदपखारि । पुनि अर्घ्यादिकदीन्हेसुधारि ४१ हरदेतमंत्रजिनकोबिशाल । शुभकाशीमेंपुनिमरणकाल ॥ तेआयेमेरेधामआज। सब सफलकरनजपतपसमाज ४२ फलभोजनकोतेहिधरेआनि ।भषेयज्ञपुरुषअतिप्रीतिमानि ॥ तिनरामचन्द्रलक्ष्मणस्वरूप । तबधरेचित्तजगज्योतिरूप ४३ दोहा ॥ शवरीपावकपंथतबहरषिगईहरिलोक ॥ बननबिलोकतहरि गयेपंपातीरसशोक ४४ तोटकछन्द ॥ अतिसुन्दरशीतलशोभबसै । जहँरूपअनेकनिलोभलसै ॥ बहुपंकजपक्षिबिराजतहैं । रघुनाथबिलोकतलाजतहैं ४५ सिगरी ऋतुशोभितसुभ्रजही । लहैग्रीषमपैनप्रवेशसही ॥ नव नीरजनीरतहांसरसैं । सियकेशुभलोचनसेदरसैं ४६ ॥

४१ मंत्र रामतारक तप औ जपसमाजके सुफल करनकहे सफल कर्त्ता अर्थ जोकोऊ जपतप करतहै ताकोफल रामचंद्रही देतहैं ४२।४३ जीवतही अग्निमों जरिकै ४४ कैसोहै पंपासर

अति सुंदरहै औअति शीतलहै जहांशोभाजोहै सोसदाआय बास करतिहै औजहांकहे जोहिस्थानमें जातही प्राणिनके अनेकरूपसों लोभ बसतहै अर्थजहां जातही प्राणिनके रहिबेको लोभ बाढ़त है औ बहुत पंकजकमल औ हंसादि पक्षी बिराजत हैं ते राम-चंद्रको देखिकै लज्जितहोत हैं जाअंगको जो उपमानहै ताअंग को निरखि अपनासों अधिक जानि लजातहैं ४५। ४६ ॥

बिजयछंद ॥ सुन्दरश्वेतसरोरुहमेंकरहाटकहाटककी द्युतिकोहै। तापरभौंरभलेमनरोचनलोकबिलोचनकीरु चिरोहै। देखिदईउपमाजलदेबिनदीरघदेवनकेमनमोहै। केशवकेशवरायमनोकमलासनकेशिरऊपरसोहै ४७ ॥

लक्ष्मण-- सवैया ॥ मिलिचक्रिनचंदनबातबहैअतिमोह तन्यायनहींमतिको। मृगमित्रबिलोकतचित्तजरैलियेच न्दनिशाचरपद्धतिको॥प्रतिकूलशुकादिकहोहिंसबैजिय जानैनहींइनकीगतिको। दुखदेततड़ागतुम्हेंनबनैकम लाकरह्वैकमलापतिको ४८॥

सरोरुह कमल करहाटक शिफाकन्द हाटकसुवर्ण लोक के लोचनकी रुचिकहे इच्छाको रोहैकहे धारण करत है अर्थ जिन को देखि सबके लोचननमें सदा देखिबेकी इच्छा होतिहै अथवा लोकके लोचननकी रुचि शोभा रोहत है अर्थ लोचनसम शो-भतहै केशवराय बिष्णु कमलासन ब्रह्मा श्वेत कमल सोई ब्रह्मा को आसन कमल समहै करहाटक ब्रह्मासम पीतवर्ण है भ्रमर बिष्णुसमहै ४७ पंपासरसों लक्ष्मण कहतहैं कि चन्दन बात जो इनकी मतिको मोहतहै मूर्च्छित करतहै सो न्यायही सों काहेते चंदनबृक्षमें लपटे जे अनेक चक्रीसर्प हैं तिनसों मिलिकै स्पर्श करिकै बहतहै सो सर्पन के संगको फलहै सर्पहू जाको काटत हैं ताको मूर्च्छित करत हैं अति पतिसों मृगकी अंकमें धरे हैं तासों

मृग मित्रपद कह्यो सो संग मित्र जो चंदहै ताको बिलोइन को चित्त जरतहै सोऊ न्यायही है काहेते निशाचरनकी पद्धति परिपाटीको लियेहै निशाचर राक्षसहूहैं चन्दहूहै सो निशाचरनकी राक्षसनकी परिपाटीको लियेहै राक्षसनहूंको देखतही चित्तजरत है औ मृगमित्रकहि या जनायो किपशुनको मित्रहै प्रतिकूलदुःखद जो शुकादिक होतहैं सोऊ न्यायही है काहेते वे पक्षी पशुहैं इनकी गतिको नहीं जानत कि ये ईश्वरहैं कमलाकर पदश्लेषहै कमलनके आकर समूहसों युक्त औ कमला लक्ष्मीके उत्पन्नकर्त्ता युक्ति यह कि ये तुम्हारे जामातुहैं इनको दुःखदेना तुम्हैं न चाहिये ४८

दोहा ॥ ऋष्यमूकपर्बतगये केशवश्रीरघुनाथ ॥ देखे बानरपंचबिभुमानोदक्षिणहाथ ४९ कुसुमबिचित्राछंद ॥ तबकपिराजारघुपतिदेखे । मनुनरनारायणसमलेखे ॥ द्विजबपुधरितहँहनुमतआये । बहुबिधिआशिषदैसनभाये ५० हनुमान् ॥ सबबिधिरूरेबनमहँकोहौ । तनमनशूरेमनमथमोहौ ॥ शिरसिजटाबकुलाबपुधारी । हरिहरमानहुबिपिनबिहारी ५१ परमवियोगीसमरसभीने । तनमनएकैयुगतनकीने ॥ तुमकोहौकालगिबनआये । क्यहिकुलहौकौनेपुनिजाये ५२ राम-- चंचरीछंद ॥ पुत्रश्रीदशरत्थकेबनराजशासनआइयो । सीयसुंदरिसंगहीबिछुरीसोसोधनपाइयो ॥ रामलक्ष्मणनामसंयुतसूरबंशबखानिये । रावरेबनकौनहौक्यहिकाजक्योंपहिंचानिये ५३

सुग्रीव हनुमान् नल नील सुखेन ये पांच जे बानरहैं बिभुकहे प्रतापी तिनसहित ऋष्यमूकको देख्यो मानो सो पृथ्वी को दक्षिण हाथहै पृथ्वी इतिशेषः अथवा मानो अपनो दक्षिण हाथही देख्यो है मित्रको औ भ्राताको दक्षिण बाहु सम कहिबेकी रीति है ४९ नरनारायणके द्वैरूपहैं ५० रूरे सुन्दर ५१ परम वियोगी

हौ अर्थ तुम्हारी चेष्टाते जानि परतहै कि काहू बड़े हितको बि-योग भयो है औ जटा बल्कलादि सों शांतरसमें भीने जानि परत हौ ५२ शासन आज्ञा ५३ ॥

हनुमान् --दोहा ॥ यागिरिधरसुग्रीवनृपतासँगमंत्रीचारि ॥ बानरलईछड़ाइतिय दीन्होबालिनिकारि ५४ दोधकछंद ॥ वाकहंजोअपनोकरिजानो । मारहुबालिबिनैयहमानो ॥ राजदेहुजोवाकितियाको । तोहमदेहिंबताय सियाको ५५ लक्ष्मण ॥ आरतकीप्रभुआरतिटारौ । दीनअनाथनकोप्रतिपारो ॥ थावरजंगमजीवजोकोऊ । सन्मुखहोतकृतारथसोऊ ५६ बानरकैहनुमानसिधारेउ । सूरजकोसुतपांयनिपारेउ ॥ रामकह्योउठिबानरराई । राजसिरीसखिस्योतियपाई ५७ दोहा ॥ उठेराजसुग्रीवतबतनमनअतिसुखपाइ ॥ सीताजूकेपटसहितनूपुरदीन्हेआइ ५८ तारकछंद ॥ रघुनाथजबैपटनूपुरदेखे । कहिकेशवप्राणसमानहिंलेखे ॥ अवलोकतलक्ष्मणकेकरदीन्हे । उनआदरसोंशिरमानिकैलीन्हे ५९ राम-दण्डक ॥ पञ्जरकिखञ्जरीटनैननकोकिधौंमीनमानसकोकेशवदासजलुहैकिजालुहै । अंगकोकिअंगरागगेडुआकिगलसुईकिधौंकटिजेवहीकोउरकोकिहारुहै ॥ बन्धनहमारोकामकेलिको किताड़िबेकोताजनोबिचारको किचमरबिचारुहै । मानकीजमनिकाकिकञ्जमुखमूंदिबेकोसीताजूको उत्तरीयसबसुखसारुहै ६० ॥

बानर बालिको विशेषणहै ५४ । ५५ कृतार्थकहे कृतहै अर्थ प्रयोजन जाको ५६ अर्थ बालिको मारिकै राज्य श्री सहित तु-

म्हारी स्त्री हम तुमको देहैं ऐसो निश्चयबचन रामचन्द्र सुग्रीव को दियो ५७ । ५८ शिर मानिकै कहेशिरपर राखिकै ५९ रामचन्द्रकहतहैं कि हमारे खंजरीट कहे खण्डरिच रूपी जेनयन हैं तिनको पंजर पिंजराहै जामें परि नयनकै कढ़न नहीं पावत औ कि मीनरूपी जो मानसमन है ताको जलहै कि जालु है जैसे मीन जलसों नहीं कढ़ति तैसे मन यासों नहीं कढ़त औ जाल को औ पंजरको हेतु एकई है अंगनको कि अंगरागकहे चन्दनादिको लेपहै कि गेडुआ तकियाहै कि गलसुई छोटी तकियाहै अर्थ स्पर्शते अंगनको अंगरागादि सम सुखदहै औ कि कटिजेवकहे क्षुद्रघण्टिकाहै औ कि हीको जेव कहे धुकधुकी है जेवपदको सम्बन्ध याहूमेंहै औ कि उरकोहार है औ कि कामकेलि समयको हमारो बन्धनफांसहै औ कि कामकेलि समयको हमारे ताड़िबे को ताजनोकशा है कोड़ाइति अर्थ कामकेलि में अति चञ्चल कर्त्ता है औ कि कामकेलिको जो बिचार कहे बिगतचाल चलन है रतान्त इतिताकोरत श्रमहरचमरकहे बाल व्यजनहै यह चमरपदते व्यजनजानो अथवा हमारे बिचारको चमरहै अर्थ विचारको शोभाकर्त्ता है अर्थ प्रकाश कर्त्ता है ऐसो हमारोबिचार अनुमानहै औ कि सीताजूके मानकी जमनिका कनातहै अर्थ याहीकी आड़में सीताजूको मानरहत रह्यो औ कि सीताजूको कञ्जमुख मूँदिबेको सब सुखसार उत्तरीयहै याहीबिधि उत्तरीय कोवर्णन हनुमन्नाटकमें है ॥ द्यूतेपणःप्रणयकेलिषुकण्ठपाशःक्रीडापरिश्रमहरंव्यजनंरतांते । शय्यानिशीथसमयेजनकात्मजायाः प्राप्तंमयाविधिवशादिहचोत्तरीयम् ६० ॥

स्वागताछंद ॥ बानरेन्द्रतबयोंहँसिबोल्यो । भीतभेद जियकोसबखोल्यो ॥ आगिबारिपरतक्षकरीजू । रामचन्द्रहँसिबाँहधरीजू ६१ ॥

जब निश्चय मित्र जान्यो तब आपनो भीतभेद कहे बालि

कृत भयको सबभेद खोल्यो कहे कह्यो मित्रसों अन्तःकरणको सबभेद कह्यो चाहिये ६१ ॥

सूरपुत्रतबजीवनजान्यो । बालिजोरबहुभांतिबखान्यो ॥ नारिछीनिजेहिभांतिलईजू । सोअशेषबिनतीबिनयीजू ६२ एकबारशरएकहनौजो । साततालबलवन्तगनौतो ॥ रामचन्द्रहँसिबाणचलायो । तालबेधिफिरिकैकरआयो ६३ सुग्रीव--तारकछंद ॥ यहअद्भुतकर्मनऔरपैहोई । सुरसिद्धप्रसिद्धनमेंतुमकोई ॥ निकरीमनतेसिगरीदुचिताई । तुमसोंप्रभुपायसदासुखदाई ६४ बिजयछन्द ॥ बावनकोपदलोकनमापिज्योंबावनकेबपुमाहँसिधायो । केशवसूरसुताजलासिंधुहिपूरिकैसूरहिकोपदपायो ॥ कामकेबाणत्वचासबबेधिकैकामपैआवतज्योंजगगायो । रामकोशायकसातहुतालनिबेधिकैरामहिंकेकरआयो ६५ सोरठा ॥ जिनकेनामबिलासअखिललोकबेधतपतित ॥ तिनकोकेशवदाससाततालबेधतकहा ६६ राम-- तारकछन्द ॥ अतिसंगतिबानरकीलघुताई । अपराधबिनाबधकौनिबड़ाई ॥ इतिबालिहिदेउँतुम्हैंनृपशिच्छा । अबहैकछुमोमनऐसियइच्छा ६७ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांसीताहरणरामसुग्रीवमैत्रीबर्णनंनामद्वादशःप्रकाशः १२

६२।६३।६४।६५।६६ बालिके शीघ्र बधमें आवने अंतर निश्चयको प्रकटकरत मित्रताधिक्यको दिखावत रामचन्द्रपरिहासपूर्वकसुग्रीव सोंकहतेहैं कि हेसुग्रीव बानरकी संगति अतिलघुता है काहेते अपराध बिना बधमें कछू बड़ाई नहीं है लघुताइही है

परंतु हमारे मनमें अबयहै इच्छा है कि बालिको मारि तुमको नृपशिक्षा दीजै अर्थात् राजा कीजिये यह केवल बानर संगति को प्रभाव है बिन काज अकाज करिबो सब बानरनको स्वभाव होतहै तिनकी संगतिते तैसो स्वभाव भयो चाहै ६७ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांद्वादशःप्रकाशः १२ ॥

दोहा ॥ यातेरहेंप्रकाशमेंबालिबध्योकपिराज ॥ बर्णनबर्षाशरदकोउदधिउलंघनसाज १ पद्धटिकाछन्द ॥ रविपुत्रबालिसोंहोतयुद्ध । रघुनाथभयेमनमाहँक्रुद्ध ॥ शरएकहन्योउरमित्रकाम । तबभूमिगिर्योकहिरामराम २ कछुचेतभयेतेहिबलनिधान । रघुनाथबिलोकेहाथबान ॥ शुभचीरजटाशिरश्यामगात । बनमालहियेउरबिप्रलात ३ बालि ॥ तुमआदिमध्यअवसानएक । जगमोहतहौबपुधरिअनेक ॥ तुमसदाशुद्धसबकोसमान । केहिहेतहत्योकरुणानिधान ४ राम ॥ सुनिबासवसुतबुधिबलबिधान । मैंशरणागतहितहतेप्रान ॥ यहसांटोलैकृष्णावतार । तबह्वेहौतुमसंसारपार ५ ॥

१ मित्र जे सुग्रीव हैं तिनके कामकहे अर्थ बालिके बधमें केवल सुग्रीवहीको हितहै रामचन्द्रको कछु हितनहीं है २।३ जग को आदि कहे उत्पत्ति मध्यकहे प्रतिपाल अवसान कहे संहार एक तुमहीं हौ अर्थ ब्रह्मारूप ह्वै तुमहीं सृष्टि करतहौ बिष्णुरूप ह्वै प्रतिपाल करतहौ रुद्ररूप ह्वै संहार करतहौ सो अनेक बपु शरीर धरिकै जगको मोहतहौ अर्थ दशरथके पुत्र रामचन्द्र हैं इत्यादि मोह बढ़ावतहौ ४ सांटोकहे बदलो ५ ॥

रघुबीररंकतेराजकीन । युवराजबिरदअंगदहिदीन ॥ तबकिष्किंधातारासमेत । सुग्रीवगयेअपनेनिकेत ६ दोहा ॥ कियोनृपतिसुग्रीवहतिबालिबलीरणधीर ॥ गये प्रवर्षणअद्रिकोलक्ष्मणश्रीरघुबीर ७ त्रिभंगीछंद ॥ देख्योशुभगिरिवरसकलशोभधरफूलबरनबहुफलनफरे । सँगशरभऋक्षजनकेशरिकेगनमनहुंधरणिसुग्रीवधरे ॥ सँगशिवाबिराजैगजमुखगाजैपरभृतबोलैंचित्तहरे । शिर शुभचन्द्रकधरपरमदिगंबरमानोंहरअहिराजधरे ८ ॥

रामचन्द्र सुग्रीवको रंककहे दरिद्रीते राजाकीन्हो सुग्रीव पद को सम्बन्ध रंक राजपदहु सों है बिरदपदवी ६ प्रवर्षणनाम जो अद्रिपर्बतहै तामें जाइ बासकरयो ७ रामचन्द्र कैसो पर्बत देखतभये कि फूल हैं बरन बहुकहे अनेकरंगके औ बहुतफलनसों फरे बहुपदको सम्बन्ध फलनहूं सों है आगे श्लेषो रक्षाकरि बर्णत हैं शरभबानर नाम बिशेषहै औ पशुजाति बिशेष शरभस्तुपशौभिदिकरभेवानरेभिदि इति । मेदिनी ऋक्षपर्बतहूमें है सुग्रीवहूके संग जाम्बवन्तादि हैं केशरीकहे सिंह ताकेगण समूह औ केशरी नाम बानर हनुमान् के पिता तिनकेगण सैन्य समूह शिवापार्वती औ शृगाली गजमुख गणेश औ हस्तीआदि और बनजीव आदिपदते गैंड़ाआदि जानो परकहे बड़े जे भृत सेवकहैं नंदिकेश्वरादि औ कोकिल चन्द्रक चन्द्रमा औ कपूर अर्थ कदली वृक्षनमें कपूरहोतहै ते कदली जामेंबहुतहैं अथवा जल अनेक बाप्यादिकनसों भरयो है अथ चन्द्रकधर मोरचन्द्रः कपूरको कांपिल्य सुवर्णवारिषु इति मेदिनी दिगम्बरनग्न दुवौपक्षमें एकैहै अहिराज वासुकी औ बड़े सर्प ८ ॥

तोमरछंद ॥ शिशुसोलसैसँगधाइ । बनमालज्योंसुरराइ ॥ अहिराजशोषहिकाल । बहुशीशशोभनिसाल ९ ॥

स्वागताछंद ॥ चंद्रमंदद्युतिबासरदेखौ । भूमिहीनभुव
पालबिशेखौ ॥ मित्रदेखियहशोभतहैयों । राजसाजबिनु
सीतहिहोंज्यों १० ॥ दोहा ॥ पतिनीपतिबिनुदीनअतिप
तिपतिनीबिनुमंद ॥ चंद्रबिनाज्योंयामिनीज्योंबिनयामि
निचंद ११ ॥ स्वागताछंद ॥ देखिरामवरषाऋतुआई ।
रोमरोमबहुधादुखदाई ॥ आसपासतमकीछबिछाई । रा
तिदिवसकछुजानिनजाई १२ मंदमंदधुनिसोंघनगाजैं ।
तूरतारजनुआवझबाजैं ॥ ठौरठौरचपलाचमकैयों । इंद्र
लोकतियनाचतिहैंज्यों १३ ॥ मोटनकछंद ॥ सोहैंघन
श्यामलघोरघनें । मोहैंतिनमेंबकपांतिमनें ॥ शंखावलि
पीबहुधाजलसों । मानौतिनकोउगिलैबलसों १४ शोभा
अतिशक्रशरासनमें । नानाद्युतिदीसतिहैघनमें ॥ रत्ना
वलिसीदिविद्वारभनो । वर्षागमबांधियदेवमनो १५ ॥

शिशु बालक धाइ जो माताते अन्य आपनो स्तन दूध पि-
यावति है औ वृक्षविशेष सुरराइकहे बिष्णुते बनमाल पहिरे हैं
पर्वतमें बनकी माला पंगति समूहेतिहै अर्थ बडो बनहै बहुशीश
सहस्र शिर औ बहुतशीशसों सो हैं वृक्ष ९ दिनमें द्युतिहीन च-
न्द्रमाको देखि रामचन्द्र लक्ष्मणसों कहत हैं मित्र सूर्य अथवा
मित्र लक्ष्मणको सम्बोधनहै १० । ११ एकादश छन्दनमों जैसो
वर्णनकरयो है ऐसी वर्षाऋतु आई देखिकै रामचन्द्र कलहंस
कलानिधि खंजन कंज या तेइसयें छन्दमें जे वचन हैं ते कहत
भये इति शेषः १२ तूर नगारे तार उच्चस्वर १३ । १४ दिविद्वार
कहे आकाशके द्वारमें रत्नावलिपद ते रत्नके बन्दनवार जानो
बडेकी अवाईमें बन्दनवार बाँधिबेकी रीति प्रसिद्धहै १५ ॥

तारकछंद ॥ घनघोरघनेदशहूदिशिछाये । मघवा

जनुसूरजपैचढ़िआये ॥ अपराधबिनाक्षितिकेतनताये
तिनपीड़नपीड़ितह्कैउठिधाये १६ ॥

तीनिछन्दको अन्वय एकहै ग्रीष्मऋतुमें अतितेजसों सूर्य क्षिति पृथ्वी के तनताये तप्तकरयो है जो कोऊ काहूको बिन दोष दुखदेइ ताको दण्डकरिबो राजनको उचित है सो इन्द्र देवनके राजाहैं तासों सूर्यको उचित दीर्घदण्ड कियो जासों ऐसो अबना करैं उत्प्रेक्षा करि यह राजनीति प्रकट देखायो अथवा पृथ्वीको अशरण जानिकै अशरण को सहाय करिबो बड़ेन को उचित है तासों अथवा पृथ्वीको स्त्री जानिकै स्त्रीकी रक्षा करिबो बड़ेनको उचित है तासों दुन्दुभि कहे जे गजादि बाहन पर चमू के आगे नगारे बाजतहैं निर्घात कहे जाको बज्र शब्द सबकहतहैं सो नहींहै सबै कहे जेते निर्घातहोतहैं तेते पबि कहे बज्रके पात गिरिबो बखानो कहे कहतहैं अर्थ जैबार निर्घातहोतहै सो निर्घात नहीं है बारबार इन्द्र सूरजको बज्र चलावत हैं ताहीको शब्द होतहै सम कहे बराबरि अर्थ जैसे अत्रिकीस्त्रीके उरमेंदेख्यो तैसे याके उरमें देख्यो है गोरमदाइनि कहे इन्द्रधनुष नहींहै प्रत्यक्ष धनुष है गोरमदाइनि इन्द्रधनुषको नाम पश्चिममें प्रसिद्धहै औ बनैना तुलारहूसों प्रकटहोतहै कहूँ गोरसदायन नाहीं पाठहै तौ गो जे किरणैं हैं ते रसद कहे मेघन के अयन कहे घरमें मध्यमें इति नहीं है प्रत्यक्ष धनुषहै सूर्यकी किरणैं मेघनमें परि इन्द्रधनुष होतहै यह प्रसिद्धहै खड्ग कहे तरवारि द्युतित चन्द्र शुक्रादि तौ एककी चूकसों जातिमात्रको दण्ड बड़े कोपको जनावत हैं चन्द्रबधू बीरबहूटी रसराजमें कह्योहै नवलबधू उरलाजे इन्द्रबधूसी होइ १६ ॥

अतिगाजतबाजतदुंदुभिमानो॥निरघातसबैपबिपात बखानो॥धनुहैयहगोरमदाइनिनाहीं। शरजालबहै जलधारवृथाहीं १७ भटचातकदादुरमोरनबोलै । चपला

चमकैं नफिरैखगखोलै ॥ द्युतिवंतनकोबिपदाबहुकीन्ही । धरनीकहँचंद्रबधूधरिदीन्ही १८ तरुनीयहअत्रिऋषीश्वरकीसी । उरमेंहमचंद्रकलासमदीसी ॥ बरषानसुनैकिलकौकिलकाली । सबजानतहैंमहिमाअहिमाली १९ ॥ घनाक्षरी ॥ भौंहैंसुरचापचारुप्रमुदितपयोधरभूखनजरायज्योतितड़ितरलाईहै । दूरिकरीसुखमुखसुखमाशशीकीनैन अमलकमलदलदलितनिकाईहै ॥ केशवदासप्रबलक रेणुकागमनहर मुकुतसुहंसकशबदसुखदाईहै । अंबरबलितमतिमोहैनीलकंठजूकी कालिकाकिबरषाहरषिहियआईहै २० ॥

१७ । १८ समकहे बराबरि अर्थ जैसे अत्रिकी स्त्री के उरमें देख्योहै तैसे याके उरमें देख्यो है अनसूया को पातिव्रत देखि ब्रह्मा विष्णु महेश पुत्रहोबे की इच्छाकरि गर्भमें आय चन्द्रमा दत्तात्रेय दुर्वासारूप यथाक्रम अवतार लियोहै कथा पुराणन में प्रसिद्धहै अहिमाली महादेव औ सर्पनकी माला बर्षागमन में सर्प अतिप्रसन्न होतहैं १९ कैसीहै बर्षा कि जामें अनेकगृह पतन चौरादिके भौकहे डरहैं औ सुरचापकहे इन्द्रधनुषहै चारु सुन्दर औ प्रमुदितकहे प्रसन्नहैं पयोधर मेघजामें औ भूकहे पृथ्वी औ खकहे आकाशमें नजराइकहे देखिपरतिहै ज्योति जाकी ऐसी तड़ित जो बिजुली है ताकी तरलता है औ दूरि कीन्हों है सुख कहे सहजही मुखकी सुखमा शोभा शशी कहे चन्द्रमाकी अर्थ चन्द्रप्रकाश नहीं होन पावत औ नै जे नदी हैं ते न कहे नहीं हैं अमल निर्मल अर्थ नदिन को जल म्लान ह्वै जात है औ कमलन को दलसमूह दलित होत है औ निकाई कहे काई सों रहित है अथवा कमलदल की दलित है निकाई जामें केशवदास कहतहैं कि रेणुका जो धूरि है ताको गमनहर प्रबलहै

जामें अर्थ ऐसो जल चारोंओरभयो है जासोंधूलि ककहे जल नहीं उड़ति औ मुकुतकहे त्यक्तहै हंसक जेहंसहैं तिनको सुख-दायी शब्द जामें बर्षामें हंस उड़िजातहैं यह प्रसिद्धहै औ अम्बर जो आकाशहै तामें बलितकहे युक्त नीलकण्ठ जेमोरहैं तिनकी मतिको मोहैकहे प्रसन्न करति है कालिका कैसीहै की भौंहहैं सुरचाप इन्द्रधनुषहूते चारुजाकी औप्रमुदितकहे उन्नतहैं पयोधर स्तन जाके भूषणनमें जराइकहे जराऊ जो ज्योतिहै तामें तड़ि जो बिजुलीहै ताकी तरलाई चंचलताहै अथवा भूषणमें जड़ाऊ की जो ज्योतिहै सो जटित समरलाई कहे योजितहै अर्थ भूषण-नमें रत्नकी ज्योति बिजुली सम दमकतिहै रत्नजटित भूषण जड़ाऊ कहावतहैं औदूरि कीनीहै सुखसुख कहे सहज मुखहीसों शशी जो चन्द्रहै ताकी सुखमाशोभा अर्थ सहजमुख ऐसो छबि-वान्है जामें चन्द्रद्युति मंदहोतिहै औ अमलकहे स्वच्छ जेनयनहैं तिनकरिकै कमलदलकी निकाई दलितहै अर्थ जिनके नयनन के आगे कमलनकी छबि दलिजातिहै औ केशवदास कहतहैं कि प्रबल कहे नीको जो करेणुका हस्तिनी को गमनहै ताकी हरण-हारी है औ मुकुत कहे छूट्यो अर्थ उच्चरित जोहंसक कहे बिछुवान को शब्दहै सो है सुखदायी जाको अर्थ जाके चलतमें सुखदायक अनेकनरंगको बिछुवानको शब्दहोतहै औ अम्बर जो वस्त्रहैं तामें बलितयुक्त नीलकण्ठ जे महादेवहैं तिनकी मतिको मोहनहै यहां कालीपदते पार्व्वती जानो २० ॥

तारकछंद ॥ अभिसारिनिसीसमुझैपरनारी । सतमा रगमेटनकोअधिकारी ॥ मतिलोभमहामदमोहछयी है । द्विजराजसुमित्रप्रदोषमयी है २१ ॥ दोहा ॥ बरणतके शवसकलकवि विषमगाढ़तमसृष्टि ॥ कुपुरुषसेवाज्यो भई संततमिथ्यादृष्टि २२ चन्द्रकलाछन्द ॥ कलहंसक लानिधिखंजनकंज कछूदिनकेशवदेखिजिये । गतिआ

ननलोचनपायनकेअनुरूपकसेमनमानिलिये ॥ यहिका लकरालतेशोधिसबै हठिकैवरषामिसदूरि किये । अबधौं बिनप्राणप्रियारहिहैं कहिकौनहितूअवलम्बिहिये २३ ॥

सत कहे उत्तममार्ग यथोचित कुलांगननकी रीति औ राजमार्गादि ग्रामते ग्रामान्तरकी राह इति कि लोभ औ महामद औ मोह सों छयी मति बुद्धिहै वर्षा द्विजराज चन्द्रमा औ सुमित्र सूर्य तिनके दोषमयी है अर्थ चन्द्र सूर्य को उदय नहींहोनपावत औ मति द्विजराज ब्राह्मण औ सुष्टुमित्र इनके दोषमयी है यासों या जानो लोभ मद मोहयुक्त प्राणी मित्रदोष द्विजदोषकरत नहींडरत २१ बिषम कहे भयानक जो गाढ़तम अन्धकारहै ताकी सृष्टि कहे वृद्धिमें मिथ्यादृष्टिभई जैसे कुपुरुष की सेवामें होति है तैसी सकल कबि वर्णतहैं अर्थ जब कुपुरुषसेवा कोऊ करतहै तब वाहि यह देखिपरतहै कि कछू पायहैं जब कछु ना पायो तब पूर्णदृष्टि मिथ्याहोतभई तैसे जा दृष्टि सों सब विषयपदार्थ देखिपरतहैं ताहीदृष्टि सों बर्षांधकार में निकटगत बस्तु नहीं देखियत पूर्णदृष्टि मिथ्याहोति है २२ अनुरूपककहे प्रतिमा जा बस्तु के बियोगसों बिकलता होति है ताकी प्रतिमादेखि कछू बोधहोतहै यह जो हमारो कराल कहे भयानक कालकहे समय है जामें सीयबियोगादि दुःखभये ताही काल बर्षाको ब्याजकरि हमको दुःख देबेको तिनहुन कल हंसादिकनको दूरिकीन्हों २३ ॥

दोहा ॥ बीतेबरषाकालयों आईशरदसुजाति ॥ गये अँध्यारीहोतिज्यों चारुचाँदनीराति २४ मोटनकछन्द ॥ दन्तावलिकुन्दसमानगनो । चंद्राननकुन्तलचौंरघनो ॥ भौंहैंधनुखंजननैनमनो । राजीवनिज्योंपदपानिभनो २५ हारावलिनीरजहीपरसै । हैंलीनपयोधरअम्बरमैं ॥ पाटीरजोन्हाइहिअंगधरे । हंसीगतिकेशवचित्तहरे २६ श्री

नारदकीदरशैमतिसी । लोपैतमतापश्रकीरतिसी ॥मानौ पतिदेवनकीरतिको । सतमारगकीसमुझैगतिको २७ ॥

सुजातिकहे उत्तम २४ द्वैछन्दको अन्वय एकहै शरदको स्त्री रूपकरि कहत हैं कुंदके जे पुष्प हैं तेई दन्तनकी अवली पंगति हैं कुन्द शरत्काल में फूलतहै यह कबि नियमहै औ चन्द्रमा जो है सोई आनन मुखहै चन्द्रमा वर्षाके मेघनमें मूँद्यो रहतहै शरत्कालमें प्रकाशित होतहै औ सबराजा शरत्कालमें पूजन करि धनुष चामरादि धारण करतहैं सो चौंर जे हैं तेई कुंतलकेशपाश हैं घनो कहे अति सघन औ धनुष जे हैं तेई भौंहैं हैं औ शरत्काल में खञ्जन आवतहैं तेई नयनहैं औ राजीव कहे कमल फूलतहैं तेईपद औ पाणि कहे करहैं औ स्वाती नक्षत्रकी वर्षासों नीरज मोती होतहैं तिनकी हारावलि हृदयमें है जाके औ पयोधर जे मेघहैं ते अम्बरकहे आकाशमें लीन हैं मिले हैं स्त्री पक्ष पयोधर कुच अम्बरबस्त्रमें लनिहैं औजोन्हाई जोहै सोई पाटीरकहे चन्दन लेप है शरत्पक्ष हंसीगतिकहे हंसनकी गति स्त्री पक्ष हंसनकी ऐसी गति इन सब करिकै सबके चित्तको हरे है बश्य करेहै २५ । २६ तमताअन्धकार औ तमोगुण नारद सत्त्वगुणी हैं पतिदेव जे पतिब्रताहैं तिनकी रति प्रीतिको मानोकहे जानौ अर्थ शरत्काल नहीं है पतिब्रतन की प्रीति है प्रीति कैसी है पतिसेवा आदि जे सतकहे उत्तममार्ग हैं तिनकी गतिकहे तिनबिषे गमन समुझति कहे जानति है शरत् कैसी है सतकहेउत्तम जे मार्ग राहहैं तिनकी गति कहे प्रभावको समुझै कहे जानति है अर्थ बर्षाकरिकै बिदारित जे सतमार्ग हैं तिनको प्रकट करति है २७ ॥

दोहा ॥ लक्ष्मणदासीवृद्धसी आईशरदवजाति ॥ मनहुँजगावनकोहमाहिं बीतेबर्षाराति २८ कुण्डलिया ॥ तातेन्टपसुग्रीवपै जैयेसत्वरतात । कहियोवचनबुझाइकै कुशलनचाहोगात ॥ कुशलनचाहोगात चहतहौबालि

हिदेखो । करहुनसीताशोध कामबशरामनलेखो ॥ रामनलेखोचित्तचही सुखसम्पतिजाते । मित्रकह्योगहिबांहकानिकीजतहैताते २९ दोहा ॥ लक्ष्मणकिष्किन्धागये वचनकहेकरिक्रोध ॥ तारातबसमुझाइयो कीन्होबहुत प्रबोध ३० दोधकछन्द ॥ बोलिलयेहनुमानतबैजू । ल्यावहुबानरबोलिसबैजू ॥ बारलगैनकहूँबिरमाहीं । एकनकोउरहैघरमाहीं ३१ त्रिभंगीछंद ॥ सुग्रीवसँघाती मुखदुतराती केशवसाथहिशूरनये । आकाशविलासी सूरप्रकासी तबहींबानरआइगये ॥ दिशिदिशिअवगाहनसीतहिचाहनयूथपयूथसबैपठये । नलनीलऋक्षपति अंगदकेसँग दक्षिणदिशिकोबिदाभये ३२ ॥

जैसे वृद्धदासी के शुक्लरोमनकरि सर्वांग शुक्लहोतहैं तैसे याहू शुक्लहै तासों वृद्धदासीसम कह्यो लक्ष्मण संबोधनहै २८ सत्वर कहे शीघ्र चित्तचहीं कहे न मानी २९ । ३० । ३१ साथहि कहे लक्ष्मणके साथहि रामचन्द्रके पास आइगये लक्ष्मण इतिशेषः सूरप्रकाशी कहे सूर्यको ऐसो है प्रकाश जिनको ३२ ॥

दोहा॥बुधिविक्रमव्यवसाययुतसाधुसमुझिरघुनाथ॥ बलअनंतहनुमंतके मुँदरीदीन्हींहाथ ३३ हीरकछन्द ॥ चंडचरणछंडिधरणमंडिगगनधावहीं । तत्क्षणहूयदक्षिणदिशिलक्ष्यनहींपावहीं ॥ धीरधरनवीरबरनसिंधुतटसुभावहीं । नामपरमधामधरमरामकरमगावहीं ३४ ॥

बुद्धिपदसों दान उपाय जानों काहेते बुद्धिमान हठ नाहीं करत समय बिचारि दान उपायसों कार्य्य साधत हैं औ बिक्रम कहे अतिबल बिक्रमस्त्वतिशक्तिता इत्यमरः यासों दण्ड उपायजानो बली अतिबलसों दंडकरि कार्य्य साधतहै व्यवसाय कहे

यत्नसोंभेद उपायजानों यत्नीपुरुष अनेकयत्नकरि मंत्र्यादिकन मों भेदकरिकै कार्य्य साधतहैं औसाधुपदते सामउपाय जानों साधुप्राणी मिलापहीसों कार्य्यसाधत हैं सो यासों समयोचित चारिहू उपायकरि कार्य्यसाधिबेको लायक हनूमान्को समुभिकै बलकहे सैन्यअनंतहै ताकेमध्यमें हनुमंतके हाथमें रामचन्द्र मुंदरीदीन्हीं ३३ तत्क्षणकहे जबरामचन्द्रकी आज्ञापायो ताही क्षण चराडकहे प्रचंडचरणनसों धरणि पृथ्वीकोछंडिकै अर्थ अति जोरसों कूदिकै गगनकहे आकाशको मरिडकै भूषित करिकै अर्थ आकाशमार्गह्वैकै धावतहैं सीताको लक्ष्यकहे खोज नहीं पावत धीरके धरनहार जे बीरबरन बीरस्वरूप सबहैं ते सिंधुके तटमें सुभावहीसों धरमको परमकहे बड़ो धाम जो रामनामहै औ कर्म बालिबधादि तिन्हैं गावतहैं धीरधरनकहि या जनायो कि यद्यपि खोज नहीं सीताकोपायो परन्तु धीर को धरे हैं अधीर नहीं भये तौ जहांताईं खोजपाइहैं तहांताईं ढूंढिहैं औ सुभावही कहि या जनायो कि कछु भयमानिकै रामनामको नहींगावत ३४ ॥

अंगद--अनुकूलछंद ॥ सीयनपाईअवधिबिनासी । होहुसबैसागरतटबासी ॥ जोघरजैयेसकुचअनंता । मोहिंनछोड़ैजनकनिहंता ३५ हनूमान् ॥ अंगदरक्षारघुपतिकीन्हो । शोधनसीताजलथललीन्हो ॥ आलसछांड़ो कृतउरआनो । होहुकृतघ्नीजनिसिखमानो ३६ अंगद--दंडक ॥ जीरणजटायुगीधधन्यएकजिनरोंकि रावणबिरथकीन्होसहिनिजप्राणहानि । हुतेहनुमंतबलवंततहांपांचजनदीनेहुतेभूषणकछूकनररूपजानि ॥ आरतपुकार तहीरामरामबारबारलीन्हो नछँड़ाइतुमसीताअतिभीत मानि । गायद्विजराजतियकाजनपुकारलागैभोगवैनरक घोरचोरकोअभयदानि ३७ दोहा ॥ सुनिसंपातिसपक्ष

कै रामचरितसुखपाय । सीतालंकामांभहैं खगपतिदई बताय ३८ दंडक ॥ हरिकैसोबाहनकीविधिकैसोहैमहंस लीकसीलिखतनभयाहनकेअंकको । तेजकोनिधानराम मुद्रिकाबिमानकैधोंलक्ष्मणकोबाणछूट्योरावणनिशंकको गिरिगजगंडतेउड़ान्योसुबरणअलि सीतापदपंकजस दाकलंकरंकको । हवाईसीछूटीकेशवदासआसमानमेंक मानकैसोगोलाहनुमानचल्योलंकको ३९ ॥

मासदिवस की अवधि दियो है यथा बाल्मीकीये ॥ अधिगम्यतुवैदेही निलयंरावणस्यच । मासेपूर्णेनिवर्तध्वमुदयंप्राप्यपर्वतम् १ ऊर्ध्वमासान्नवस्तव्यं वसन्बध्योभवेन्मम ३५। ३६ जीरणवृद्ध ३७ चन्द्रमा ऋषिको आशीर्बाद रह्योहै कि सीताके खोज को बानर ऐहैं तिन्हैं मिले पक्ष तेरेजामिहैं तुलसीकृत रामायण मों प्रसिद्ध है ३८ सदा कलंकही को रंककहे दरिद्र अर्थ कलंक रहित जो सीतापदपंकज हैं कमान तोप को नाम पश्चिममों प्रसिद्ध है औ गोला के साहचर्य सों अति निश्चित है यथा भूषण कविः । छूटतकमाननकेगोलीतीरबाननके मुशकिलजातमुरचानहूंकेओटमें । ताहीसमयशिवराजदाबकरीपैंड़ापरदैसुरं गहल्लाकोहुकुमकरयोगोटमें । भूषणभनतकहौं किम्मतिकहां लौंदेसीहिम्मतिइहांलौंशरजाकेभटजोटमें । ताउदैदैमोछनकंगूरनमें पांउदैदै घाउदैदै अरिमुख कूदेजायकोटमें ३९ ॥

दोहा ॥ उदधिनाकपतिशत्रुकोउदितजानिबलवंत ॥ अंतरिक्षहीलक्षिपदअच्छछुयोहनुमंत ४० बीचगयेसुर सामिलीऔरसिंहिकानारि ॥ लीलिलियोहनुमंततिहि कढ़ेउदरकहँफारि ४१ ॥

उदधि जो समुद्रहै तामें नाकपति जेइन्द्रहैं तिनको शत्रु मैनाकताको उदितकहे आपने बिश्रामकेलये उठ्यो जानिकै अंत-

रिक्षही कहे आकाशहीसों लक्षिकहे देखिकै बलवन्त जेहनुमन्तहैं तिनतामैनाकके बोधकेलिये अच्छकहे स्वच्छ जोपदहै तासों छुयो स्पर्शमात्र करयो काहे ते बाल्मीकीयरामायणमें लिख्योहै कि हनूमान् मैनाकसों आपनीप्रतिज्ञा कह्योहै कि मध्यमें बिश्राम न करिहैं यथा ॥ त्वरतेकार्यकालोमे अहश्चाप्यनिवर्तते । प्रतिज्ञाचमयादत्ता नस्थातव्यमिहांतरा ॥ अथवा पदके सदृशअच्छ सोंछुयो अर्थजैसेपदसों स्पर्शकरि लघुबिश्राम करनोरहै तैसे केवल दृष्टि सों स्पर्शकरि विश्राम कियो ४० सिंहिकाने हनुमन्त को लीलिलियो ४१ ॥

तारकछंद ॥ कलुरातिगयेकरिदंशदशासी । पुरमांभ चलेबनराजिबिलासी ॥ जबहींहनुमंतचलेतजिशंका । मगरोंकिरहीतियह्वैतबलंका ४२ लंका ॥ कहिमोहिंउलंघ्यचलेतुमकोहौ । अतिसूक्षमरूपधरेमनमोहौ ॥ पठयेक्यहिकारणकौनचलेहौ । सुरहौकिधौंकोउसुरेशभलेहौ ४३ हनुमान् ॥ हमबानरहैंरघुनाथपठाये । तिनकीतरुणीअवलोकनआये ॥ लंका ॥ हतिमोहिंमहामतिभीतर जैये ॥हनुमान्॥ तरुणीहिंहतेकबलौंसुखपैये ४४लंका॥ तुममारेहिपैपुरपैठनपैहौ।हठकोटिकरौघरहीफिरिजैहौ॥ हनुमंतबलीतेहिथापरमारी। तजिदेहभईतबहींबरनारी ४५ लंका--चौपाई ॥ धनदपुरीहौंरावणलीनी । बहुबिधिपापनकेरसभीनी ॥ चतुराननचितचिंतनकीन्हो ॥ बरुकरुणाकरिमोकहँदीन्हो ४६ जबदशकंठसियाहरिलैहैं । हरिहनुमंतबिलोकनऐहैं ॥ जबवहतोहिंहतैतजि शंका । तबप्रभुहोइबिभीषणलंका ४७ चलनलगोंजबहींतबकीजो । मृतकशरीरहिपावकदीजो ॥ यहकहि

जातभईवहनारी । सबनगरीहनुमंतनिहारी ४८ ॥

दंशकहे डांसयामें कोऊकोऊ संदेहकरतहैं कि दंशरूप धरिकै गये मुद्रिका कैसेलैगये तालिये औरअर्थकरि दंशकहेसिंह ॥ करिनंहस्तिनंदशतीतिकरिदंशः॥ताकोरूप करिचले तौ सिंहको औ श्वानकोरूप एकहोतहै ताहीसों श्वानको नाम ग्रामसिंह है श्वानको ग्राममें जैबो साधारण रहतहै तासों श्वानकोरूप धरिकै गये ४२ सूक्षमकहे लघुश्वानके अर्थमें सूक्षमकहे तुच्छ ४३ । ४४ । ४५ धनदकुबेर ४६ हरिबानर ४७ मृतकशरीर कहे पुरी रूप मृतक शरीर लंकाने या प्रकारको बरमांग्यो है ताही लिये हनुमान् लंकापुरी को जारिहैं ४८ ॥

तबहरिरावणसोवतदेख्यो। मणिमयपालिककीछबि लेख्यो ॥ तहँतरुणीबहुभांतिनगावैं। बिचबिचआवभ बीनबजावैं ४९ मृतकचितापरमानहुंसोहै। चहुंदिशिप्रे तबधूमनमोहै ॥ जहँजहँजाइतहांदुखदूनो। सियबिनहै सिगरोपुरसूनो५०॥भुजंगप्रयातछंद॥कहूंकिन्नरीकिन्नरी लैबजावैं। सुरीआसुरी बांसुरीगीतगावैं॥ कहूंयक्षिणी पक्षिणीलै पढ़ावैं। नगीकन्यका पन्नगीको नचावैं ५१ पियेंएकहाला गुहैंएकमाला। बनीएकबाला नचैंचित्र शाला ॥ कहूंकोकिला कोककी कारिकाको। पढ़ावैं सुआलै शुकीसारिकाको ५२ फिर्‍यो देखिकै राजशाला सभाको। रह्योरीझिकै बाटिकाकी प्रभाको॥फिर्‍योबीर चौंहूंचितैशुद्धगीता। बिलोकीभलीसिंसुपामूलसीता५३

४९ । ५० किन्नरी सारंगी बांसुरीमें गीतगावती हैं अथवा बांसुरी समगीत गावतीहैं ५१ हालामदिरा सुष्ठुजेआलयघर हैं तिनमेंशुकी औसारिका मैनाकोकिलाजेहैं तेकोकशास्त्रकी कारिका पढ़ावतीहैं अथवा स्त्री कोकिलासम पढ़ावतीहैं ५२ याप्रकार

सबस्थाननमें फिरयो सोऐसी राजशाला सभा कहे राजभवनमें स्त्रिनकी सभाको देखिकै रीझिरह्यो अथवा याप्रकार राजशाला औ राजसभाको देखिकै रीझिरह्यो जबसीताको तहां न देख्यो तबबाटिकाकी प्रभाको फिरयो अर्थ वाटिका को गमनकरयो शुद्धगीता सीताको विशेषणहै सिंसुपासिसौ अथवा अगुरु पिच्छिला गुरुसिंसुपा इतिविश्वः ५३ ॥

धरेएकबेनी मिलीमैलसारी । मृणाली मनोपंकसों काढ़िडारी ॥ सदाराममनामै ररैदीनबानी । चहूंओरहैंएक सीदुःखदानी ५४ ग्रसीबुद्धिसीचित्तचिंतानमानो । कियो जीभदन्तावलीमेंबखानो ॥ किधौंघेरिकैराहुनारीनलीनी । कलाचन्द्रकीचारुपीयूषभीनी ५५ किधौंजीवकोज्योति मायानलीनी । अविद्यानकेमध्यविद्याप्रबीनी ॥ मनोसम्बरस्त्रीनमेंकामबामा । हनूमानऐसीलखीरामरामा ५६ तहांदेवद्वेषीदशग्रीवआयो । सुन्योदेविसीतामहादुःखपायो ॥ सबैअंगलैअंगहीमेंदुरायो । अधोदृष्टिकैअश्रुधारा बहायो ५७ रावण ॥ सुनोदेविमोपैकछूदृष्टिदीजै । इतो शोचतोरामकाजैनकीजै ॥ बसैंदण्डकारण्यदेखैनकोऊ । जोदेखैमहाबावरोहोयसोऊ ५८ ॥

पंकसदृश मैल सारोहै कहूं पंक शोकाधिकारी पाठहै तौ मानों पंकयुक्त मृणालीहै शोकाधिकारी कहे अति शोकयुक्त दुहुनको विशेषणहै ५४ । ५५ संसारबिषे किनी बुद्धि अविद्या है ईश्वरबिषे किनी बुद्धिविद्या है रामास्त्री ५६ अतिलाज भयसों अंग सिकोरिकै बैठी ५७ चारिछन्दको अन्वय एकहै रावण कहतहै कि हेदेवि ऐसे जे रामचन्द्रहैं तिनको शोचनाकरो हमजे तुम्हारे सदादास हैं तिनपै कृपा काहेनाहीं करियत जासों अदेवी दैत्य स्त्री देवांगना तिनकी रानी होउ औ वाणी सरस्वती औ

मघोनी इन्द्राणी मृड़ानी पार्वती तुम्हारी सेवाकरैं औ किन्नरी सारंगीलिये किन्नरी किन्नर कन्या तुम्हारेसमीप गीतगावैं औ सुकेशी औ उर्वशीनाचैं तुमसों मानकहे आदरपावैं यामें आपनो प्रभावदेखायो कि ये सब इन्द्रादि मेरे आज्ञाकरहैं रामचन्द्रकैसे हैं दण्डकारण्यमें बसतहैं अर्थ बनबासीहैं औ ऐसेछपे रहतहैं जिनको कोऊकबहूं देखतनहीं औ जोदेखतहै सो महा बावरो आपनेतनकी औ भवनादिकी सुधि भूलिजातहै यासों या जनायो कि बावरोहोतहै ताहीको संग्रह कोऊनाहीं करत औ वे ऐसेहैं जिनको देखत औरऊ बावरोहोतहै तासों शोच करिबे लायक नहींहैं अनाथके अनुसारी कहे अनुगामी हैं अर्थ यहकि काहू बड़े के अनुगामी नहीं हैं तुम्हैं देविदूषै हितूताहि मानैं इत्यादि दुवौ वचन भेद उपायके हैं सरस्वती उक्तार्थः हे देवि हे जगदम्ब हमपर कछु कृपादृष्टि दीजे अर्थ तुम्हारी नेक कृपादृष्टि सों हमारो भलो होत है औ रामचन्द्र के काज एतो शोच काहेको करतीहो रामचन्द्र शोचनीय नहींहैं काहेते वे ऐसे प्रतापीहैं कि निर्जन दण्डकारण्यमें बसते हैं आशयकि अतिनिर्भयहैं औ देखैन कोऊ अर्थ अनेक ध्यानादि उपाय योगीजन जिनके देखिबेको करतहैं ताहूपर दर्शन नहींपावत सो छठयें प्रकाशमें कह्योहै कि सिद्धिसमाधि सजैं अजहूं न कहूं जगयोगिन देखनपाई । औ जोदेखतहै अर्थ जाको दर्शनहोतहै सोमहाबावरो होतहै अर्थ बावरेसम संसारसुखको त्यागकरि जीवन्मुक्त ह्वैजातहै अथवा बावरे सम देहकी सुधिनहीं रहति जैसे सुतीक्ष्णको भयो अथवा महाबावरो महादेव होइ अर्थ महादेव सम प्रभावको प्राप्तहोइ ५८ ॥

कृतघ्नीकुदाताकुकन्याहिचाहैं। हितूनग्नमुण्डीनहीं कोसदाहैं ॥ अनाथैसुन्योमैंअनाथानुसारी। बसैंचित्तदण्डीजटीमुण्डधारी ५९ ॥

कृतजो कर्महैं ताके हंता नाशकर्त्ता हैं अर्थ शुभाशुभ कर्म बंधनतोरि दासनको मुक्तकरतहैं औ कु जो पृथ्वीहै ताके दाताहैं अर्थ पूर्णपृथ्वीके दाता हैं बावनरूपह्वै बलिसों लै इन्द्रको दियो औ कु जोपृथ्वीहै ताकी कन्या जेतुमहौ तिन्हैं चाहतहैं औ नग्न औ मुण्डी जे तपस्वीहैं तिनके हितूहैं औ अनाथ कहे जिनको नाथस्वामी कोऊ नहींहै आशयकि आपही सबके नाथहैं औ अ-नाथकहे अशरण जे मानी हैं तिनके अनुसारी अनुगामी हैं जाको रक्षक कोईनहींहै ताकीरक्षाकरिबे को पाछे पाछे आपु फिरतहैं जैसेगज प्रह्लादकी रक्षाकरयो औ दण्डी औ जटी औ मुण्डधारी जे तपस्वीहैं तिनके चित्तमें बसत हैं अर्थ राजाको सदा ध्यान करतहैं अथवा दण्डी औ जटी औ मुण्डधारी ऐसे जे महादेवहैं तिनके चित्तमें बसत हैं औ द्रव्य रूप लक्ष्मीको जे दूषतहैं औ उदासीन रहत हैं ते दास बिष्णु को अतिप्रियहैं औनिर्गुणीकहे प्राकृत गुणनकरि रहितहैं अर्थ अति उत्कृष्टगुणहैं जिनके यथा वायुपुराणे ॥ सत्त्वादि गुणहीनत्वा न्निर्गुणोहरिरीश्वरः ॥ औ ता नामकहे ताको नाम ऐसोहै जा करिकै नहीं लीजियत अर्थ जाके नामको शिव आदि देव सब जपतहैं अथवा महानिर्गुणी कहे रज सत्त्व तमोगुण करि रहित है औ ताको नाम नहीं लीजियत है अर्थ जाके नामका जपनहींहै ऐसीजो ब्रह्म ज्योतिहै सोहै अ-थवा हेदेवि जेतुम्हैं दूषतहैं तिन्हैं कहा हितूमानतहै अर्थ हितू नहीं मानत जो तुम्हारो रंचकऊ बिरोधीहै ताहि रामचन्द्र परम बिरोधी मानत हैं जयन्तादि ते जानों औ तोसों उदासीनहै ता-हूको कहाहितू मानत हैं अर्थ ताहूको आपनो परम हितूहूहोइ पै बिरोधीही जानत हैं सीय खोजको बानरपठाइबे में सुग्रीव उदासीनता करयो प्रेमकरि आपुहीसों बानर न पठायो तबको-पकरिलक्ष्मणसों बिरोधी सम बचनकहि पठावनादि सो जानो औ महानिर्गुणी कहे उत्कृष्ट गुणनकरियुक्त जे रामचन्द्रहैं तिन को नाम कहानालीजै अर्थकीलीजै ताहीकेनामसों मुक्तिप्राप्तिहो-

तिहै मैं तुम्हारो सदादासहौं मोपै कृपाकाहेनाहीं कीजत सेवक पर कृपाकरिबो स्वामीको उचितहै अदेवीनकी रानीहोहु इत्यादि बचन आशीर्बादात्मकहैं कि तुमऐसेसुखको प्राप्तहोहु ५९ ॥

तुम्हैंदेविदूषैंहितूताहिमानैं । उदासीनतोसोंसदाताहिजानैं ॥ महानिर्गुणीनामताकोनलीजै । सदादासमोपै कृपाक्योंनकीजै ६० अदेवीन्देवीनकीहोहुरानी । करैंसेवबानीमघोनीमृड़ानी ॥ लियेकिन्नरीकिन्नरीगीतगावैं । सुकेशीनचैंउर्बशीमानपावैं ६१ मालिनीछंद ॥ तृणबिचदैबोलीसीयगँभीरबानी । दशमुखशठकोतूकौनकीराजधानी॥ दशरथसुतद्वेषीरुद्रब्रह्मानभासै । निशिचरबपुरातूक्योंनड्योमूलनासै ६२ अतितनुधनुरेखानेकनाकीनजाकी । खलशरखरधाराक्योंसहैतिच्छताकी ॥ विडकनघनघूरेभक्षिक्योंबाजजीवै । शिवशिरशशिश्रीकोराहुकैसेसोछीवै ६३ ॥

६० । ६१ पतिव्रतनको परपुरुषसों सम्भाषण अनुचित है तासों तृण कहे खरको अन्तरकरयो यह लोकमर्य्यादाहै अथवा तृण अंतरमें करि या जनायो कि हमप्राणको तृणसमान समुझे हैं जो तू स्पर्शकरिहै तौ प्राण तृणसमान छोडिदेहैं अथवा रावणको जनायो कि तू तृणसमान है काहेते गम्भीरबाणी बोली याते कछू भयनहीं सूचित होत कोऊकोऊ तृण अञ्चलहूको कहत हैं तौ अञ्चलओट सोंबोली या जानौ तेरो तो मूल तबहीं नशिगयोरहै जब हमको हरिल्यायोरहै तामें कछू लग्यो है ताको अयशी बातैं कहि अब नीकी भांतिसों काहे को नाशत है ६२ तनुकहे सूक्ष्मबिट पुरीष तेरो राज्यसुख बिडकन सदृश है हम बाजसदृश हैं औ हम शिवशिर शशि सदृशहैं तू राहुसदृशहै ६३

उठिउठिशठह्यांतेभागुतौलौंअभागे । ममबचनवि

सर्पीसर्पजौलौंनलागे ॥ बिकलसकुलदेखौंआशुहीनाश तेरो । निपटमृतकतोकोरोषमारैनमेरो ६४ दोहा ॥ अवधिदईद्वैमासकीकह्योराकसिनबोलि । ज्योंसमुझैसमुझाइयोयुक्तिछुरीसोंछोलि ६५ चामरछंद ॥ देखिदेखिकैअशोकराजपुत्रिकाकह्यो । देहिमोहिंआगितैंजोअंगआगिकैरह्यो ॥ ठौरपाइपौनपुत्रडारिमुद्रिकादई । आसपासदेखिकैउठायहाथकैलई ६६ तोमरछंद ॥ जबलगीसियरीहाथ । यहआगिकैसीनाथ ॥ यहकह्योलखितबताहि । मणिजटितमुंदरीआहि ६७ जबबांचिदेख्योनाउ । मनपर्ग्योसंभ्रमभाउ ॥ आबालतेरघुनाथ । यहधरीअपनेहाथ ६८ बिछुरीसोकौनउपाउँ । केहिआनियोयहिठाउँ ॥ सुधिलहौंकौनउपाउँ । अबकाहिबूझनजाउँ ६९ चहुंओरचितैसत्रास । अवलोकियोआकास ॥ तहँशाखबैठोनीठि । तबपर्ग्योबानरडीठि ७० ॥

हमारे बचननमें विप्रसरणशील जे सर्पहैं इहां सर्प पद ते सर्पिप शाप जानौ ते जबलौं तेरे अंगनमें नहीं लागे अर्थ जैसे सर्पके काटतही प्राण छूटत हैं तैसे हमारे शापसों तेरो प्राणछूटजैहै अथवा हमारे बचनहीं जे बिसर्पी कहे प्रसरणशील सर्प हैं ते जबलौं तेरे अंगनमें नहीं लागे ६४।६५ अरुणपत्र युक्त अशोक वृक्ष बिरह सों डाहक अग्नि समदेखि परतहैं तासों सीता जू कह्यो कि तिहारो सर्बांग आगि समह्वै रह्यो है सो हमको आगि तू देहिजामें जरिकै दुसह राम बियोग ताप मिटाइये इति भावार्थः ६६ सियरी शीतल ६७ आबाल ते कह्यो लडिका इहीं सों ६८ सुधिकहे खबरि ६९ नीठि कहे मरूमर कै ७० ॥

तबकह्योकोतूआहि । सुरअसुरमोतनचाहि ॥ कैप

क्षपक्षबिरूप । दशकण्ठबानररूप ७१ कहिआपनोतू भेद । नतुचित्तउपजतखेद ॥ कहिबेगबानरपाप । नतु तोहिंदेहौंशाप ॥ तबवृक्षशाखारूमि । कपिउतरिआयो भूमि ७२ पद्धटिकाछन्द ॥ करजोरिकह्योहौंपवनपूत । जियजननिजानुरघुनाथदूत ॥ रघुनाथकौनदशरत्थनंद । दशरत्थकौनअजतनयचंद ७३ केहिकारणपठयेयहिनिकेत । निजदेनलेनसंदेशहेत ॥ गुणरूपशीलशोभासुभाउ । कछुरघुपतिकेलक्षणबताउ ७४ अतियदपिसुमित्रानंदभक्त । अतिसेवकहैंअतिशूरशक्त ॥ अरुयदपिअनुजतीन्योसमान । पैतदपिभरतभावतनिदान ७५ ज्योंनारायणउरश्रीबसंति । त्योंरघुपतिउरकछुद्युतिलसंति ॥ जगतितनेहैंसबभूमिभूप । सुरअसुरनपूजैंरामरूप ७६ सीताजू-निशिपालिकाछंद ॥ मोहिंपरतीतियहिभांतिनहिंआवई । प्रीतिकहिधौंसुनरबानरनिक्योंभई ॥ बातसबबर्णिपरतीतिहरित्योंदई । आंशुअन्हवाइउरलाइसुंदरीलई ७७ दोहा ॥ आंशुबरषिहियरेहरषि सीतासुखदसुभाइ । निरखिनिरखिपियमुद्रिकहिबरणतिहैंबहुभाइ ७८ ॥

पक्ष जो है ज्ञातिबर्ग तासों विरूप कहे अन्यरूप ७१ खेदडर पापछल यह छंदछःचरणको है तासोंगाथा जानो यथा वृत्तरत्नाकरे ॥ शेषंगाथास्त्रिभिःषड्भिश्चरणैश्चोपलक्षिताः ॥ माघको दूसरो छंद छः चरणको है ७२ । ७३ कछुकहे गुणादिकनमों काहू को लक्षणकहौ ७४ शक्तसमर्थ ७५ नपूजैं कहे समता नहींकरत ७६ । ७७ भाइकहे अभिप्राय ७८ ॥

पद्धटिकाछंद ॥ यहसूरकिरणतमदुःखहारि । शशिक

लाकिधौंउरश्रीतकारि ॥ कलकीरतिसीशुभसहितनाम । कैराज्यश्रिरीयहतजीराम ७९ कैनारायणउरसमलसंति । शुभअंकनऊपरश्रीबसंति ॥ बरबिद्यासीआनंददानि । युतअष्टापदमनशिवामानि ८० जनुमायाअक्षरसहित देखि । कैपत्रीनिश्चयदानिलेखि ॥ प्रियप्रतीहारनीसी निहारि । श्रीरामोजयउच्चारकारि ८१ पियपठईमानोस खिसुजान । जगभूषणकोभूषणनिधान ॥ निजआईहम कोसीखदेन । यहिकिधौंहमारोमरमलेन ८२ ॥

हमारो तमअंधकार सदृश जोदुःखहै ताकी हरनहारी है ता-ते कैधौं सूर्यकी किरणहै कलकहे अविघ्न मुद्रिकामें राम नाम लिख्यो है औ कीरतिहू जाप्राणीकी होति है ताके नामके साथ ही रहति है प्रथम ताकोनाम कहि कीरति कही जाति है राज्य श्रीहूको रामचन्द्र छोंड़्यो है औयाहूको छोंड़्यो है ७९ नारायण के उरमें अंक जो गोदहै तापर श्रीबसति है अथवा अंक कहे श्री बत्सादि चिह्नपर श्रीबसति है मुद्रिका में श्रीरामोजयति लि-ख्यो है तहां रामोजयति इनअंकनके ऊपर श्रीअंक लिख्यो है शिवा पार्वती पक्ष अष्टापदकहे पशु पशुपदते सिंह अथवा वृषभ जानौ अष्टापदः ॥ शारिफलेसुवर्णेस्त्रीपशौपुमान् इत्यमरः ॥ मु-द्रिकापद सुवर्ण ८० अक्षर विष्णु औ अंक पिय जे रामचन्द्र हैं तिनकी प्रतिहारिणी चोपदारिनीहै यामें श्रीरामोजयति लिख्यो है प्रतिहारको नामोच्चार करिबो धर्म है ८१ सखी कैसी है जगके जितने भूषण गहनेहैं तिनको जो भूषणकहे भूषिबो है ताको नि-धान भांड़ाहै अर्थ अनेक प्रकारसों भूषणपहिराइबे में चतुर है औ मुद्रिका कैसी है जगभूषण जे रामचन्द्र हैं तिनके भूषणन को निधानकहे भांडाहै अर्थ जब याको रामचन्द्र पहिरत हैं तब अनेकभूषण पहिरे सम अपनाको मानतहैं अथवा जब या मुद्रि

काको धारण करतहैं तब अनेक भूषण पहिरे समान छबि होति है अथवा जगके जे भूषणगहने हैं तिनको जो भूषण है सो माता को निधानकहे भांड़ा है काहेते मोहर है सब राज्यको व्यवहार मोहरके अंकनसों सहीहोतहै ८२ ॥

दोहा ॥ सुखदासिखदाअर्थदायशदारसदातारि ॥ रामचन्द्रकीमुद्रिकाकिधौंपरमगुरुनारि ८३ बहुबरणा सहजप्रियातमगुणहराप्रमान । जगमारगदरशावनीसूरजकिरणसमान ८४ ॥

परमगुरुनारि कैसी है कोमल भाषणादि करिकै सुखदा है औ सिखदाताहै कि कुलांगणनको ऐसो करिबो उचितहै सो करौ औ अर्थजो प्रयोजन है ताकीदाताहै कि स्त्रिनको पतिव्रत सों देवलोक गमनहोतहै यह पतिव्रतमें देवलोक गमनरूपजो प्रयोजनहै ताकोदेतिहै औ पतिव्रत साधव करारयश देतिहै औ अनेक बचन चातुर्य्यादिरस कहे गुणदेतिहै औ मुद्रिका दर्शनसों सुखदाहै औ सिखदाताहै काहेते शिक्षादियो कि धैर्य्यधरो औ अर्थ प्रयोजनकी दाताहै काहेते रामचंद्र को संदेश रूप हमारो प्रयोजनरह्यो ताको दियो अथवा अर्थ जोज्ञानहै ताको दाता है औ अति मूल्याधिक्य सोजाके पासरहै ताको यशदाताहै औ रस कहे प्रेमकी दाताहै अर्थ रामचन्द्र प्रति प्रेम बढ़ावनहारी है ॥ श्रृंगारादौ विषेवीर्ये गुणेरागेद्रवेरसः इत्यमरः ८३ बहुबरणाकहे बहुतहैं बरणरंग अक्षर जिनके औ सहज प्रिया दुवो हैं तम-गुण अंधकार औ अज्ञानसूरज किरण जगके मारग राह देखा-वतहैं औ मुद्रिकाहू जगमारग दरशावनी है काहेते जहां राम-चन्द्र हैं तहां की राह देखायो जा मारग है हमारो मन राम-चन्द्रके निकटगयो दोहा क्षेपकहै ८४॥

श्रीपुरमेंबनमध्यहौंतूमगकरीअनीति । कहिमुंदरी अबतियनकीकोकरिहैपरतीति ८५ पद्धटिकाछंद ॥ क

हिकुशलमुद्रिकेरामगात । पुनिलक्ष्मणसहितसमानताt ॥ यहउत्तरदेतिनबुद्धिवंत । केहिकारणधौंहनुमंतसंत ८६ हनुमान्--दोहा ॥ तुमपूंछतकहिमुद्रिकेमौनहोतियहिनाम ॥ कंकणकीपदवीदईतुमबिनयाकहँराम ८७ दंडक ॥ दीरघदरीनबसैंकेशौदासकेशरीज्योंकेशरीकोदेखिबनकरीज्योंकँपतहैं । बासरकीसंपतिउलूकज्योंनचितवतचकवाज्योंचंदचितैचौगुनोचपतहैं ॥ केकासुनिब्यालज्योंबिलातजातघनश्याम घननकेघोरनजवासोज्योंतपतहैं ॥ भौंरज्योंभवँतबनयोगीज्योंजगतरैनिसाकतज्योंरामनामतेरोइजपतहैं ८८ ॥

श्रीजोराज्यश्रीहै तेहिपुरमें अयोध्यामें रामचन्द्रको छोड़िदियो औ वनकेमध्यमें हमछांड़्यो रामहमैं तूछांड़्यो सो हेसुन्दरी कहौ तियनकी अबको परतीति करिहै अर्थ कोऊना करिहै ८५।८६ तुम्हारे बिरहसों रामचन्द्र ऐसे दुर्बलभयेहैं जासोंयाको कंकणके स्थानमों पहिरतहैं इति भावार्थः ८७ सीताजूसों हनुमान कहतहैं कि हेसीता तुम्हारेबिरहसों रामचन्द्र ऐसी दशाको प्राप्त हैं कि दीरघ दरीनमें केशरी जो सिंहहै ताके समान बसतहैं जैसे सिंह भूमिहीमें सोवतबैठतहै कछू सेनादि सुखकी इच्छानहीं करत तैसे रामचन्द्र हैं औ केशरी पदश्लेष है करी कहे हस्ती पक्ष सिंह जानौ रामपक्ष केशरी केशरिउद्दीपकहे तासों औ बासर जो दिनहै ताकीसंपत्तिकहे लक्ष्मीशोभा इति ताकोउलूक जो घूघूपक्षी विशेषहै ताके समान नहीं देखत घूघूको दिनको देखिनहीं परत औ रामचन्द्रको अनेकबस्तु देखि बिरह उद्दीपन होतहै तासों दिनमें इतउतनहीं निरखत औ चन्द्रमाको देखि चक्रवाक समान चपतहैं चन्द्रमा बिरह उद्दीपनहै तासों औकेका जो मोरबाणीहै ताकोसुनि ब्याल जो सर्पहै ताके समान बिलात

जातहैं सर्प भक्षनके भयसों रामचन्द्र विरह बर्द्धन भयसों केका बाणी मयूरस्य इत्यमरः ॥ औ घनश्यामकहे सजल जे घनमेघहैं तिनको जो घोरशब्दहै तासों जवासे समतपत हैं जवासों जल वृष्टिसों निज जरिबो जानिकै औ रामचन्द्रके विरहाग्नि ज्वलित होतिहै तासों औ बनमें ठौरठौर भौंरसम भवँत रहत हैं औ जैसें योगीध्यान धारणादिकरत राति बितावत हैं तैसे तुम्हारे बियोग सों बिकल जे रामचंद्र हैं तिनको रात्रिहूमें निद्रा नहीं आवति औ जैसे शाक्तकहे देवीको उपासक देवीको नामजपतहै तैसे राम तिहारोई नाम रात्रिदिन जपत हैं ८८ ॥

हनुमान्--बारिधरछंद ॥ राजपुत्रियकबातसुनौपुनि । रामचन्द्रमनमाहँकहीगुनि ॥ रातिदीहयमराजजनीजनु । यातनानितनजानतकैमनु ८९ ॥

दीहकहे बडी जो राति है सो जानो यमराजकी जनी कहे किंकरी है ता राति करिकै कृत जो यातना पीडा है ताको कि हमारोतन जानतहै कि मन जानतहै जापै बीततिहै अर्थ कहिबे लायक नहीं है अति बड़ी है औ यमकिंकरनहू करिकै कृत यातना कहिबे लायक नहीं होति अति कठोर होति है तासों यम किंकरी समकह्यो ८९ ॥

दोहा ॥ दुखदेखेसुखहोहिगोसुःखनदुःखबिहीन । जैसेतपस्वीतपतपैहोतपरमपदलीन ९० बरषावैभवदेखिकैदेखीशरदसकाम । जैसेरणमेंकालभटभेंटिभेंटियतबाम ९१ दुःखदेखिकैदेखिहोंतवसुखआनँदकंद । तपनतापतपियोसनिशिजैसेशीतलचन्द ९२ अपनीदशाकहाकहौंदीपदशासीदेह । जरतजातिबासरनिशाकेशवसाहितसनेह ९३ सुगतिसुकेशिसुनैनिसुनिसुमुखिसुदंतिसुश्रोनि । दरशावेगोबेगिहीतुमकोसरसिजयोनि ९४ हरिगी

तछंद ॥ कछुजननिदेपरतीतिजासोंरामचन्द्रि
शुभशीशकीमणिदईयहकहिसुयशतवजगग
कालकैहौअमरअरुतुमसमरजयपदपाइहौ।
तेरघुनाथकेतुमपरमभक्तकहाइहौ ६५॥

तुमको हमारे बिरहकृत जो दुःखहै ताके अनंतर
सुख ह्वै है इति भावार्थः ९० वैभव ऐश्वर्य जैसे
शरदको भेंट्यो तैसे रावणादिकनको मारि तुमको भे
भावार्थः ९१।९२ और आपनी दशाकहा कहिये तु
प्रेम सहित जो देहहै सो स्नेह तैल सहित दीपदशा
बाती सम बासर निशाकहे रातौ दिन जरतजाति है
हैश्रोणिकहे कटिजाकी ॥ कटिश्रोणिककुद्मतीत्यम
सिज योनि ब्रह्मा तुमको मोहिंदरशावैगा मोहिं इतिशे

करजोरिपगपरितोरिउपबनकोरिकिंकरमारि
जंबुमालीमन्त्रिसुतअरुपञ्चमन्त्रिसँहारियो।
अक्षकुमारबहुबिधिइन्द्रजितसोंयुद्धकै। अति
प्रमाणमानिसोबझ्यभोमनशुद्धकै ६६ इतिश्री
लोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रि
जिद्विरचितायांहनुमद्बंधनंनामत्रयोदशःप्रक

जम्बुमाली प्रहस्तनाम मन्त्रीको पुत्रहै यथा बा
सदृष्टोराक्षसेंद्रेणप्रहस्तस्यसुतोबली ॥ जम्बुमालीम
जेगामधनुर्द्धरः १ पुनः पञ्चमन्त्रिणिउक्ताःबालमी
रूपाक्षयूपाक्षोदुर्द्धर्षश्चैवराक्षसं॥ प्रघसम्भासकर्णश्चपंच
यकान् ९६ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजा
दायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रक
कायांत्रयोदशःप्रकाशः १३ ॥

दोहा ॥ याचौदहेंप्रकाशमेंक्वैहैलंकादाह ॥ सागरती रमिलानपुनिकरिहैंरघुकुलनाह १ रावण–बिजयछंद ॥ रेकपिकौनतुअक्षकोघातकदूतबलीरघुनंदनजीको । को रघुनंदनरेत्रिशिराखरदूषणदूषणभूषणभूको ॥ सागर कैसेतरयोजैसेगोपदकाजकहासियचोरहिदेखो । कैसेबँधायोजोसुंदरितेरीछुईदृगसोवतपातकलेखो २ रावण–चामरछंद ॥ क्रोरिक्रोरियातनानिफोरिफोरिमारिये । काटिकाटिफारिमाँसुबांटिबांटिडारिये ॥ खालखैंचिखैंचिहाड़भूजिभूजिखाहुरे । पौरिटांगिरुंडमुंडलैउमद्रजाहुरे ३ बिभीषण ॥ दूतमारियेनराजराजछोड़िदीजई । मंत्रिमित्रपूंछिकैसोऔरदंडकीजई ॥ एकरंकमारिक्योंबड़ोकलंकलीजई । बुंदसोकिगोकहामहासमुद्रछीजई ४ ॥

मिलानकहे बिश्राम १ हम तेरीस्त्री को सोवतमें दृगसों छुयो अर्थ देख्यो ता पातकसों बांधेगये तू रामचन्द्रकी स्त्री को हरि ल्यायो है तेरी अति दुर्गति ह्वैहै इतिभावार्थः २ हनुमान्के कठोर बचनसुनि कोपकरि रावण राक्षसनसों कहत है क्रोरि क्रोरिकहे करोरिकरोरि जे यातना बाधाहैं नखदन्त ता जनदण्डघातादिसों फोरि २ कहे जामें चर्मफोरि रुधिर कढ़िआवै या प्रकारसों मारिडारो कहूं ताजनानि पाठ है तो ताजनकहे चाबुक औ खाल खैंचै रोमांचिके कुठारादिसों हाडनके स्थानमें काटिकै औ छुरिकादिसों फारिकै ताको मांसु बांटि २ डारियेकहे आपनो आपनो हींसाकरिलीजिये औहाड़ खैंचिकै कहे निकारिकै भूजि भूजिकै खाइडारो रुण्डपदते रुण्डकी खालजानो अर्थ यह कि रुण्ड की खालमें तृणादि भरिकै सबके देखिबे के लिये पौरि में कहे पुरद्वारमें टांगिदेहु औ मुण्ड कोलैकै उड़ाइकहे उड़िकै राम पास जाउ रामपास इतिशेषः जासों मुण्ड चीह्नि राम

चन्द्र दूतको मारयो जानि दुखपावैं इति भावार्थः ३ । ४ ॥

तूलतेलबोरिबोरिजोरिजोरिबासंसी । लैअपारराररऊ नदूनसूतसोंकसी ॥ पूंछपौनपूतकीसवाँरिबारिदीजहीं । अंगकोघटाइकैंउड़ाइजातभीतहीं ५ चंचरीछन्द ॥ धामधामनिआगिकीबहुज्वालमालबिराजहीं । पवनकेझकझोरतेंझँझरीझरोखनभ्राजहीं ॥ बाजिबारणशारिकाशुकमोरजोरणभाजहीं । क्षुद्रज्योंबिपदाहिआवतछोड़िजातनलाजहीं ६ भुजंगप्रयातछन्द ॥ जटीअग्निज्वालाअटाश्वेतहैंयों । शरत्कालकेमेघसंध्यासमैज्यों॥ लगीज्वालधूमावलीनीलराजें । मनोस्वर्णकीकिंकिणीनागसाजें ७ लसैंपीतक्षत्रीमठीज्वालमानो । ढकेओढ़नीलंकबक्षोजजानो ॥ जरेजूहनारीचढ़ीचित्रसारी । मनोचेटकामें सतीसत्यधारी ८ कहूंरैनिचारीगहेज्योतिगाढ़े । मनोईशरोषाग्निमेंकामडाढ़े ॥ कहूंकामिनीज्वालमालानिभोरें । तजैंलालसारीअलंकारतोरें ९ ॥

तूलरुई बाससी बस्त्र ५ झँझरी के जे झरोखाकहे छिद्रहैं तिनमें भ्राजहीं कहे शोभित हैं जैसे क्षुद्रप्राणी जाके पासरहतहैं ताको कछू बिपत्तिपरै तो सहायनहीं करत ताको छोड़िकै भागतेह लजातनहीं हैं तैसे अग्निदाहकी जो बिपत्तिहै तामें बारणादि सब भागत भये ६ नागकहे हाथी ७ वक्षोज कुचसमपीत क्षत्री हैं ओढ़नी सम अग्निज्वाल है ८ भोरे कहे भ्रमसों अलंकार स्वर्ण भूषण ९ ॥

कहूंभौनरातेरचेधूमछाहीं । शशीसूरमानोलसैंमेघमाहीं ॥ जरेशस्त्रशालामिलीगंधमाला । मिलैअद्रिमानो लगीदावज्वाला १० चलीभागिचौहूंदिशाराजधानी ।

मिलिज्वालमालाफिरैंदुःखदानी ॥ मनोईशबाणावली लाललोलैं । सबैदैत्यजायानकेसंगडोलैं ११ सवैया ॥ लंकलगाइदईहनुमंतविमानबचेअतिउच्चरुखीके । पाचिफटैंउचटैंबहुधामणिरानीरटैंपानीपानीदुखीके । कंचनकोपबिल्योपुरपूरपयोनिधिमेंपसरेतिसुखीके ॥ गंगहजारमुखीगुनिकेशोंगिरामिलीमानोअपारमुखीके १२ ॥

शशीकहे श्रीजोप्रताप है त्यहिसहित प्रतापरहित सूर्य्यको रंगश्वेतहै प्रतापसहित अरुणहै तासों शशीकह्यो अथवाकि शशिकहे चन्द्रमा सहित मानो सूर्य्यलसतहैं अर्थ चन्द्रयुक्त सूर्य्य होतेहैं तब सूर्य्यग्रहण होतहै सो मानो ग्रहण समयमें सूर्य्य शोभितहैं इत्यर्थः औकि मानोसूर्य मेघनमें शोभितहैं यथा सिद्धांतरहस्ये ॥ छादयन्यर्कमिन्दुरिति ॥ सर्प सम शस्त्रहैं चंदन गंधसम गंधहै १० महादेव त्रिपुरके भस्मकरिबे को बाणचलायो हैते बाणदैत्यजाया जेदैत्य स्त्री हैं तिनके भागतमें तनमें लागे भस्म करयो है मानोतेई हैं बाणावलीसम ज्वालामाला हैं दैत्य जायासम राक्षसी हैं ११ पाचिकहे पन्नामणि अथवा पाचिकहे पाकिकैफटैंकहे फूटती हैं तेमाणि बहुधा उचटती हैं कहे उछरती हैं गंगको सहस्रमुखी कहे सहस्र धाराह्वै समुद्रको मिलीं गुणिके गिरा जोसरस्वतीहैं सोमानो अतिसुखीह्हैके अपारकहेअगन्यमुखीह्वैकै समुद्रको मिलीहैं सुवर्ण द्रवसरस्वतीके जलसमहै १२॥

दोहा ॥ हनुमतलाईलंकसबबच्योविभीषणधाम ॥ ज्योंअरुणोदयबेरमेंपङ्कजपूरबयाम १३ संयुताछंद ॥ हनुमन्तलंकलगाइकै । पुनिपूंछसिंधुबुझाइकै ॥ शुभदेखिसीतहिपाँपरे । मणिपायआनंदजीभरे १४ रघुनाथपैजबहीगये । उठिअंकलावनकोभये ॥ प्रभुमैंकहाकरणीकरी । शिरपायकीधरणीधरी १५ दोहा ॥ चिन्ताम

णिसीमणिदईरघुपतिकरहनुमन्त ॥ सीताजीकोमनरँग्योजनुअनुरागअनंत १६ ॥

हनुमान् करिकै लाईकहे जारी जो जरति सबलंकाहै तामें बच्यो जो बिभीषणको धामहै सो ज्वालमध्य कैसो शोभितहै जैसे पूर्बयाम कहे प्रथमपहर अरुण जे सूर्य हैं तिनके उदयके बेरमें कही समयमें पंकज कमल शोभितहैं जैसे कमलरात्रिको मुकुलित रहतहै प्रातही सूर्योदयहोत अति प्रफुल्लितह्वै प्रकाशको प्राप्तहोतहै तैसे रावणको प्रभावरूपी जोरात्रिहै तामें विभीषणको धाम उदासीनरह्यो सो लंकमें रामप्रतापरूपी सूर्योदयसों घामसम जो अग्नितेजहै तामें शोभितभयो पूर्बयाम कहियाजनायो किज्योंज्यों सूरजसम प्रताप अधिक उदयको प्राप्तह्वैहै त्यों त्यों कमलसम बिभीषणको घर अधिक प्रकाशको प्राप्तह्वैहै इति भावार्थः पूर्बयाम यासों कह्योकि मेघादि करिकै आच्छादितह्वै मेघनसोंकहि तृतीयादि पहरहूमें उदित कहावतहै १ ३बाल्मीकीयरामायणमें कह्यो है किलंकदाहिकै हनुमान् पश्चात्तापकरयो है कि यामें सीताहू जरिगई ह्वैहैं तासोंफेरि सीताके पासजाइसीताकोशुभकहे सकुशल देखिकै मणिसमपाइकै आनन्दजामें भरत भये जैसेकछू मणिरत्नपाये आनंदहोतहै तैसेभयो१४।१५।१६॥

दोधकछन्द ॥ श्रीरघुनाथजबैमणिदेखी । जीमहँभागदशासमलेखी ॥ फूलिउठ्योमनुज्योंनिधिपाई । मानहुंअन्धसोदीठिसुहाई १७ तारकछंद ॥ मणिहोहिनहींमनुआहिसियाको । उरमेंप्रगट्योतनप्रेमदियाको ॥ सबभागिगयोजोहुतोतमछायो । अबमैंअपनेमनकोमतपायो १८ दरशैहमकोबिनहीदरशाये । उरलागतिआइबस्याइलगाये ॥ कछुउत्तरदेतिनहींचुपसाधी । जियजानतिहैहमकोअपराधी १६ हनुमान् ॥ कछुसीयदशाकहि

मोहिंनआवै । चरकाजड़बातसुनेदुखपावै ॥ शरसोंप्रति बासरबासरलागै । तनघावनहींमनप्राणनखागै २० ॥

भाग्यकी दशाकहे अवस्था १७ प्रिया प्रियके मनसों मन मिले अतिप्रेम प्रगट होतहै यह प्रसिद्ध है सो रामचन्द्र कहतहैं कि ता मणिको देखि प्रेमरूपी जो दियाकहे दीपक है ताको तनु कहे स्वरूप ज्योति इति हमारे उरमें प्रगटभयो तासों यह सीता को मन है जा दीप के प्रगटभयेसों हमारे मनमें जो तम अन्धकार छायोरहै सो सब भागिगयो तो इहां तमपदते अज्ञान अथवा बियोग दुःखजानो तातमसे हमारे मनको रावण बच रूप अथवा कर्त्तव्य वस्तु बिचाररूप जो मत हिरानोरहै ताकोपायो १८ अब यह दरशायेहू कहे हमारी ओर निहारो यह कहेहू पर हमको नहीं दरशैकहे देखति अर्थ हमारी ओर नहीं निहारति औ जब बरयाइकहे जबरई आपने हाथनसों उरमें लगाइयत है तब लागति है आपनी ओर सों नहीं लागति १९ चरकहे जंगम मनुष्यादि जड़ वृक्षादि प्रतिबासर कहे रोजरोज अर्थनिरन्तर बासर जो दिनहैं अथवा रागभेद जोरावणके मन्दिरनमें नित्य रागहोतहै सो सीताके शरकहे बाणसम लागतहै सो शरके लागे तन में घावहोत है वा शरकेलागे तनमें घाव नहीं होत औ मन औ प्राणनमें खागैकहे लपटात है अर्थ मन औ प्राणनको छेदत है बासर रागभेदेह्लीत्यभिधानचिन्तामणिः २० ॥

प्रतिअंगनकेसँगहीदिननासै । निशिसोंमिलिबाढ़तिदीहउसासै ॥ निशिनेकहुनींदनआवतिजानो । रबिकीछबिज्योंअधरातबखानो २१ घनाक्षरी ॥ भौंरनीज्योंभ्रमतरहतिबनबीथिकानिहंसिनीज्योंमृदुलमृणालिकाचहतिहै । हरिणीज्यों हेरतिनकेशरीकेकाननहिंकेकासुनिब्यालीज्यों बिलानहींचहतिहै ॥ पीउपीउरटतरहतिचितचातकीज्यों

चन्दचितैचकईज्योंचुपकैरहतिहै । सुनहुनृपतिरामबि रहतिहारेऐसीसूरतिनसीताजूकीमूरतिगहतिहै २२ ॥

शरदऋतु सों शिशिर पर्यंत दिनमान घटतहै रात्रिमान बाढ़तहै सो हनुमान् शरदऋतुमें गये सो लंकाजारिकै शरदमों अथवा हेमन्तमों रामचन्द्र के पास आयेहैं सो रामचन्द्र सों कहतहैं कि जैसे या समयके दिन मर्यादकरिकै नाशेकहे घटतहैं तैसे सीताके सबअंग घटतहैं दूबरे होतहैं औज्योंज्यों निशाबाढ़ति है त्योंत्यों दीहउसास बाढ़तिहै दूसरो अर्थ खुलोहै अधरातिमों जैसे रबिकी छबि नेकनहीं रहति तैसे सीताको रातिकै नींदनहीं आवति अधरात कहे अति बिनिद्रता जनायो जैसे तुलसीकृतमों करयो है कि॥ सिरस कुसुम कहुं बेधतहीरा २.१ भौंरनी सम बन अशोक बाटिकाकी बीथिकानिमें कहे गलीनमें भ्रमत रहति है अथवा मनकरिकै बन बीथिकानिमें भ्रमत रहतिहै तुम्हारो वियोग बनहीमों भयोहै तासों सीताको मन बनबन भ्रम्यो करत है हंसिनी सुखभाव से सीता शीतलताके लिये केशरी सिंह औ कुंकुम हरिणी बधभय सों सीता बिरहोद्दीपन भयसों २२ ॥

सीताजूसंदेश–दोहा ॥ श्रीनृसिंहप्रह्लादकीवेदजो गावतगाथ ॥ गयेमासदिनआशुहीझूंठीह्वैहैनाथ २३ आगमकनककुरंगकेकहीबातसुखपाइ ॥ कोपानलजरि जायजनिशोकसमुद्रबुड़ाइ २४ ॥

नृसिंहरूप ह्वै खंभको फारि निकसि प्रह्लादकी रक्षाकरयो यह जो गाथा वेदगावत हैं सो हमप्रति रावणकृत जे अवधि मासके दिनहैं तिनके गयेकहे बीते आशुहीकहे थोरेही दिनमों झूंठीह्वैहै अवधि दिनबीते रावणहमको मारिडारि है तबसबकहि हैं कि साक्षात् स्त्री सीताकीरक्षा रावणसों न करयो तो असंबंधी प्रह्लादकी रक्षा कहाकरयोह्वैहै इति भावार्थः जे बनकृत अवधि दिन तेरहेंप्रकाशमें कह्योहै अवधिदई द्वैमासकी सोजानो

अथवा मास दिनकहे एकमहीना गयेकहेबीते अर्थ एकमहीनाके बाद हम प्राणछोड़िदेहैं बाल्मीकीयमें कह्योहै । इदंब्रूयाश्चमेनाथंशूरंरामंपुनःपुनः । जीवितंधारयिष्यामिमासंदशरथात्मजं । ऊर्ध्वंमासान्नजीवेयंसत्येनाहंब्रवीमिते २३ राजसुता यकमंत्र सुनौ । अब चाहतहौं भुवभारहनौ ॥ सबपावक में निजदेहहिं राखहु । छायाशरीर मृगै अभिलाखहु ॥ या प्रकार राक्षसनको मारि भुवभार हरिबो कह्योरहै सो बातको या नलमें जरन न पावै औ शोकरूपी समुद्रमें डूबन न पावै ताबातकी रक्षातुमको नीके प्रकारसों करिबेहै २४ ॥

राम—दंडक ॥ सांचोएकनामहरिलीन्हेसबदुखहरि औरनामपरिहरिनरहरिठायेहौ । बानरनहींहौतुममेरेबाणरोषसमबलीमुखशूरबलीमुखनिजगायेहौ ॥ शाखामृगनाहींबुद्धिबलनकेशाखमृग कैधौंवेदशाखामृगकेशवकोभायेहौ । साधुहनुमन्तबलवन्तयशवन्ततुमगयेएककाजकोअनेककरिआयेहौ २५ हनूमान्—तोमरछंद ॥ गयेमुद्रिकालैपार । मणिमोहिंल्याईवार ॥ कहकस्योमैंबलरंक । अतिमृतकजारीलंक २६ ॥

सीताको संदेशदैकै हमारो सबदुःख तुमहरिलीन्हौं तातें हरि यह जो तुम्हारोनामहै सो सांचोहै हरतिदुःखमितिहरिः । अर्थ जो दुःखकोहरै सो हरिकहावै सो तुम नरहरिकहे नृसिंहहौ और नाम जो नरहै ताको परिहरिकहे छोड़िकै हरि एतेनाम सोंठाये कहे युक्तहौ यासों या जनायो कि प्रह्लाद के समान तुमहमारो दुःख हरयोहै अथवा और जेनामहैं इंद्रादिक तिनको परिहरि कहे छोड़िकै नरहरिकहे नृसिंह यह जो नामहै ताके समठायेहौ अर्थ इन्द्रादिकनकी समता करिबेलायक तुमनहींहौ विक्रमादि करिकै तुम नृसिंहके समानहौ मेरे बाणको जो रोषक्रोधहै ताके

समहौ अर्थ जैसे हमारे बाणको क्रोध निष्फल नहीं होत तैसे तुम निष्फल नहीं होत जो काज करिबो चाहौ सो करिही आवो अथवा मेरे बाणके समहौ औ मेरेरोषके समहौ कहूं बाणरस सम पाठहै तौ बाणको जो रसकहे बलहै ताके समहौ अर्थ जैसे हमारे बाणमें बलहै तैसे तुम्हारे बलहै शृंगारादौबिषेबीर्येद्रवेरागे गुणोरसः इत्यमरः । हे बलीमुख शूर अर्थ बलीमुख जे बानर हैं तिनमें शूरकहे बीरबली जे बलवानहैं तिनके मुखन करिकै निज कहे निश्चय करिकै गायेहौ अर्थ बडेबडे बलवान् तुम्हारो बखान करतहैं औ शाखा जे वृक्षशाखाहैं तिनके मृगकहे गामी तुमनहीं हौ बुद्धि बलनकेजे शाखाहैं तिनके गामीहौ अर्थ अनेक बुद्धिबल करि कारज साधतहौ औ कि वेदकी जे कला आदि शाखा हैं तिनके मृगकहे गामीहौ अर्थ वेदाध्ययनमों प्रबीणहौ एककार्य्य सीयखोज अनेक कार्य्य लंका दाहादि २५।२६ ॥

अतिहत्योबालकअक्ष । लैगयोबांधिबिपक्ष ॥ जड़ वृक्षतोरेदीन । मैंकहाबिक्रमकीन २७ तिथिबिजयदश मीपाइ । उठिचलेश्रीरघुराइ ॥ हरियूथयूथपसंग । बिन पक्षकेतिपतंग २८

बिपक्षकहे शत्रु जो मेघनाद है सो म्वहिं बांधिलैगयो २७ शरत्कालमें सीता के ढूंढिबेके लिये बानरनको रामचन्द्र पठायेहै औ मास दिवसकी अवधि दई है सो समुद्र तटमें अंगद कह्योहै कि । सीय न पाई अवधि बिताई तौ शीतकालके मास सों अधिक दिनबीते औ अमरकोषमें कह्यो है कि द्वौद्वौमाघादि मासौस्यादृतुः । या मतसोंक्वार औ कार्त्तिक द्वै मास शरत्काल जानो औ क्वार शुक्लदशमी बिजयदशमी कहावतिहै ताको रामचन्द्रचले यह बिरोधहै तहां और अर्थदशमी तिथिमों बिजयनामा मुहूर्त्तको पाइकै श्रीरामचन्द्रचले यथा । बाल्मीकीये । अस्मिन्मुहूर्त्तेसुग्रीव प्रयाणमभिरोचय । युक्तोमुहूर्त्तोविजयः प्राप्तोम-

ध्यंदिवाकरः । कैसे हैं हरियूथ बिनापक्षके पतंगकहे पक्षीहैं अर्थ बिनपक्ष पक्षीसम उड़त हैं २८ ॥

समुझैंनसूरप्रकाश । आकाशबलितबिलाश । पुनि ऋक्षलक्ष्मणसंग । जनुजलधिगंगतरंग २९ सुग्रीव— दण्डक ॥ केशवदासराजचन्द्रसुनौराजारामचन्द्ररावरी जबहिंसैनउचकिचलतिहै । पूरतिहैभूरिधूरिरोदसिहि आसपास दिशिदिशिबरषाज्यों बलनिबलतिहै॥ पन्नग पतङ्गतरु गिरिगिरिराजगजराजमृगमृगराजराजनिद लतिहै। जहांतहांऊपरपतालपयआइजात पुरइनिकैसे पातपुहुमीहलति ३० ॥

बानरन के संगमें लक्षन ऋक्षहैं सो बानर औ ऋक्ष कैसे शोभितहैं जानो जलधि औ गंगके तरंगहैं जलधि तरंगसमऋक्ष हैं गंग तरंगसम बानरहैं २९ रोदसीकहेभू आकाश द्यावा भूमी चरोदसी इत्यमरः ॥ बलनिकहे बानर यूथनि औ मेघ समूहनि करि दिशिदिशिकहे दशौदिशनिको बलितकहे आच्छादित करतिहै पन्नग सर्प पतंग पक्षी ३० ॥

लक्ष्मण ॥ भारकेउतारिबेकोऔतरेहौरामचन्द्र कि धौंकेशवदासभूरिभारतप्रबलदल । टूटतहैंतरुवर गिरे गणगिरिवर सूखेसबसरवर सरितासकलजल ॥ उचकि चलतहरिदचकनिदचकतमंचऐसेमचकतभूतलकेथल थल । लचकिलचकिजातशेषकेअशेषफण भागिगई भोगावतीअतलबितलतल ३१ गीतिकाछन्द ॥ रघु नाथजूहनुमन्तऊपरशोभियेतिहिकालजू । उदयाद्रिशो भनशृङ्गमानहुं शुभ्रसूरबिशालजू ॥ शुभअङ्गअङ्गदसङ्ग लक्ष्मण लक्षियेबहुभांतिजू । जनुमेरुमन्दरसङ्गअद्भुत

चन्द्रराजतरातिजू ३२ दोहा ॥ बलसागरलक्ष्मणस हितकपिसागररणधीर ॥ यशसागररघुनाथजू मेलसा गरतीर ३३ ॥

भोगवती कहे नागपुरी ३१ अंगदके ऊपर शुभ अंग जेलक्षणहैं तिन्हैं रामचन्द्रके संग बहुभांतिसों लक्षियेकहे देखियतहै मेरुकहे सुमेरुके शृंगमें कै मंदरकहे मंदराचलके शृंगमें रातिको चंद्रराजतहै ३२ कपिसागर कहे कपिनकी सागर सदृशसैन्य३३॥

बिजयाछन्द ॥ भूतिविभूतिपियूषहुकी बिषईशशरीरकिपायबियोहै। हैकिधौंकेशवकश्यपकोघरदेवअदेवन केमनमोहै ॥ सन्तहियोकिबसैहरिसंततशोभअनन्तकहै कबिकोहै। चन्दननीरतरङ्गतरङ्गित नागरकोउकिसागर सोहै ३४ गीतिकाछन्द ॥ जलजालकालकरालमाल तिमिंगिलादिकसोंबसै । उरलोभक्षोभबिमोहकोहसकामज्योंखलकोलसै ॥बहुसम्पदायुतजानिये अतिपातकी सम्लेखिये । कोउमांगनोअरुपाहुनो नहिंनीरपीवतदेखिये३५ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां समुद्रतटरामसैन्यनिवेशनन्नामचतुर्दशःप्रकाशः १४ ॥

ईशकहे महादेव केशरी पक्ष भूतिकहे अधिकहै बिभूतिकहे भस्मकी औ पियूषकहे अमृतकी अमृतयुक्त चन्द्रमा धारणकरेहैं तासों औ बिषको सागरपक्ष भूतिकहेउत्पत्ति है बिभूतिकहे रत्नादि द्रव्य औ पियूषकहे अमृत औ बिषकी जासों देव अदेव कश्यप के पुत्रहैं तासों पिताको घर पुत्रनको लाग्योई चाहै औ समुद्की दीर्घतादेखि देव अदेव मोहितकहे मूर्च्छितहोतहैं नागरकहे बगर श्रेष्ठसों चन्दनको जो नीरकहे उद्धरहै ताके जे तरंग हैं तासों

तरंगित चित्रित है अर्थ अंगनमों नीकी विधि चन्दन लेपकरे हैं सागर पक्ष चन्दन वृक्षकरिकै नीरके तरंग तरंगित हैं जाके अर्थ जाके तरंगमें चन्दनवृक्ष बहतहै जो कहौ अमृतोत्पत्ति औ हरि शयन क्षीरसागरमों है तौ इहांसमुद्र की जातिमात्रको वर्णन है लवण क्षीरभेदसों नहीं है सोजानो ३४ जा समुद्रको जलको जाल कहे समूह जो है सोकालहूते कराल जे तिमिंगिल मत्स्य भेदहैं तिन्हैं आदि जे जलजीव हैं तिनसों कहे तिनसहित बसत हैं अर्थ जाजलमें तिमिंगिलादि रहत हैं आदि पदते ग्राहादि जानो सो कैसो शोभित है जैसे लोभ औ क्षोभकहे डर औ बिमोह औ कोह कहे क्रोध औकाम सहित खलको दुष्टको उर लसत है औ बहुत सम्पत्ति रत्नादि सों युक्तहै ताहूपर कोऊ मांगनो कहे याचक अर्थ जे रत्नादि लेने के लिये जातहैं पाहुनो कहे नातो विष्णु आदि तिनको नीर जल पीवत नहीं देखियत ताते बड़े पातकी सम लेखियतहै गोबधादि पाप युक्त बड़ेपातकीहू को जल अति सम्पत्तिहूके लोभसों कोऊ नहीं पीवतइति भावार्थः ३५ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांचतुर्दशःप्रकाशः १४ ॥

दोहा ॥ यहप्रकाशदशपंचमें दशशिरकरैबिचार ॥ मिलनबिभीषणसेतुरचिरघुपतिजैहैंपार १ ॥

सब महोदरादि जे राक्षसहैं तिनसों रावण कहत है कि तुम सब सुरपाल जे इन्द्रहैं तिनको जो भूतलस्वर्ग है ताकेपालनहार हौ अर्थ इन्द्रलोकमें राज्यकरयो है आशय यह कि मन्त्रनहीं के जोरसों इन्द्रको जीति इन्द्रलोक अमलयो अथवा सुरपाल इन्द्र सम भूतलपालहौ इंद्रको ऐसोराज्य करतहौ सो मूलमन्त्रकहे सिद्धान्तमन्त्र अर्थ जिनसों शत्रुकी पराजय आपनो जयहोय ऐसे मन्त्रजानिये कहे जानतहौ वेद पुराणनमें बहुत जे मन्त्रहैं

तिन्हैं उत्तम औ मध्यम औ अधम तीनिप्रकारके वेदपुराणनकं-रिकै गाइयतहै अर्थ वेदपुराणकहतहैं यथा शास्त्रकी दृष्टिसों अर्थ जैसोशास्त्र कहतहै ताही विधिसों एकमतह्वैकै मन्त्रठहरावै सो मन्त्रउत्तमहै औजहां मन्त्रीजन आपने मतकोमन्त्र भिन्नभिन्न कहैं फिरि राजभयादि कारणसों उदासीनतासों एकमतठहरावैं सो मन्त्रमध्यमहै औ जो मन्त्री अपनेहीं अपनेमनको मत भिन्न भिन्नकहैं एकमत कैसेहू नाहोइ सो मन्त्र अधमहै यथाबाल्मीकीये ॥ एकमत्यमुपागम्य शास्त्रदृष्टेनचक्षुषा । मन्त्रिणोयत्रनिरतास्तमाहुर्मंत्रमुत्तमम् १ ॥

रावण--गीतिकाछंद ॥ सुरपालभूतलपालहौसबमूलमंत्रतेजानिये । बहुमंत्रवेदपुराणउत्तममध्यमाधमगानिये ॥ करियेजोकारजआदिउत्तममध्यमाधमभानिये । उरमध्यआनिअनुत्तमैजेगयेतेकाजबखानिये २ स्वागताछन्द ॥ आजुमोहिंकरनेसोकहोजू । आपुमांहजनिरोषगहोजू ॥ राजधर्मकहियेछबिछाये । रामचन्द्रनाहिंजौलगिआये ३ ॥

बह्वीरपिमतीर्गत्वामंत्रिणामर्थनिर्णयः ॥ पुनर्यत्रैकताम्प्राप्तः समंत्रोमध्यमःस्मृतः २ अन्योन्यंमतिमास्थाय यत्रसंप्रतिभाष्यते । नचैकमत्यश्रेयोस्तिमंत्रः सोधमउच्यते ३ तिन तीनहू प्रकारके मन्त्रनमें आदि उत्तम जो कारज है ताको करिये अर्थ एकमतह्वै कारज करिये औ मध्यम औ अधमको भानिये कहे दूरिकरो ऐसे समयमें जे अनुत्तमकाज व्यतीत ह्वै गये अर्थ आपनेहीं आपने मनकी सब मिलि कह्यो तिन बातनको उरमें आनिकै बखानिये कहे कहतहौ अर्थ ऐसे समयमों ऐसी बात कहिबो उचित नहीं है तासों एकमत ह्वै मन्त्रकरौ २।३ ॥

प्रहस्त ॥ बामदेवतुमकोबरदीन्हो । लोकलोकसि

गरेवशकीन्हो ॥ इन्द्रजीतसुतसोजगमोहै । रामदेवनर बानरकोहै ४ मृत्युपासभुजजोरनितोरे । कालदण्डतुम सोंकरजोरे ॥ कुंभकरणसमसोदरजाके । औरकौनमन आवतताके ५ कुंभकर्ण–चतुष्पदी ॥ आपुनसबजानत कह्योनमानतकीजैजोमनभावै । सीतातुमआनीमीचु नजानीआनंकिमंत्रबतावै ॥ जेहिबरजगजीत्योसर्बअ तीत्योतासोंकहाबसाई । अतिभूलिगईतबशोचकरत अबजबशिरऊपरआई ६ मंदोदरी–बिजयछन्द ॥ रा मकिबामजोआनीचोराइसोलङ्कमेंमीचुकिबेलिबईजू । क्योंरणजीतहुगेतिनसोंजिनकीधनुरेखननांघिगईजू ॥ बीसबिसेबलवन्तहुतेजोहुतीदृगकेशवरूपरईजू । तोरि शरासनशंकरकोपियसीयस्वयंबरक्योंनलईजू ७ ॥

बामदेव महादेव सरस्वती उक्तार्थः ॥ रामचन्द्र देवहैं नर औ बानरको हैं इहां देवपदते ईश्वर जानो अर्थ रामचन्द्र ईश्वर हैं औ सुग्रीवादि बानर सबदेव सैन्य हैं ४ । ५ बरकहे बल अर्थ तपोबल अथवा शिवादिके बरसों सब अतीत्यो कहेबीतो तासों कहा बसाइ कहे जोरचलै अर्थ अविनाशको समय आयो सोई तुम सों ऐसे सीयहरणादि कार्य करायो है अथवा जेहि शिव औ ब्रह्माके बरसों जगको जीत्यो सो बरदान सबबीतो काहेते कि यह बरदीन रह्यो कि नर बानरको छोडिकै और सों तुमको भय न ह्वैहै सो नर औ बानरही लरिबेको आवत हैं सो बानर को प्रभाव तौ कछू यामें चलिहै नहीं सो तुमको तब कहे सीय हरणादि समयमों यह सुधि भूलिगई कि हमको नर बानरसों भय है जब शिर ऊपर आई है तब शोच करतहौ तौ तासों कहा बसाइ कहे जोरचलै अर्थ अब मृत्युते रक्षाको कछू उपाय नहीं

है ६ जो तुम्हारे दृगनमों सीतारूप जो सौंदर्य है ता करिकैरई कहे बसिरहे ७ ॥

बालिबलीनबच्योबरखोरिहिक्योंबचिहौतुमआपनी खोरहि । जालगिक्षीरसमुद्रमथ्योकहिकैसेनबांधिहैवा रिधिथोरहि ॥ श्रीरघुनाथगनौअसमर्थनदेखिबिनारथ हाथिनघोरहि । तोरयोशरासनशंकरकोजेहिसोवकहा तुवलंकनतोरहि ८ मेघनाद-दोहा ॥ मोकोआयसुहोइ जोत्रिभुवनपालप्रवीन । रामसहितसबजगकरौंनरबान रकरिहीन ९ बिभीषण-मोटनकछन्द ॥ कोहैअतिकाय जोदेखिसकै । कोकुंभनिकुंभवृथाजोबकै ॥ कोहैइन्द्रजी तजोभीरसहै । कोकुंभकर्णहथ्यारुगहै १० ॥

जालगि कहे जालक्ष्मीरूप जे सीताहैं तिनके लिये ८ सरस्वती उक्तार्थः मेघनाद कहतहै कि जो मंत्र कहिबेको हमको आज्ञाहोइ तौ हम कहियत हैं कि त्रिभुवनपाल कहे तीनों लोककेरक्षा करणहार औ प्रवीण कहे विवेकी यासों या जनायो कि केवल सम दृष्टिही सों नहीं प्रतिपाल करत भक्तनपर अति कृपा शरणागतरक्षण शत्रुनाशादि कर्म यथोचित करत हैं ऐसे जेरामचन्द्रहैं तिनहीं करिकै सहित सबजगहै अर्थ रामचन्द्रही सर्वत्र व्याप्तहैं अर्थ कि विष्णुहैं यथावृत्तरत्नाकरे ॥ म्यरस्त जभ्नगैर्लांतैरेभिर्दशभिरक्षरैः ॥ समस्तं वाङ्मयंव्याप्तं त्रैलोक्यमिवविष्णुना ॥ इनको नर औ बानर करिकै हीनकरौ कहे करि मानतहौं अर्थ रामचन्द्र विष्णु हैं बानरसब देवताहैं अंगदहू सोरहें प्रकाशमें कह्योहै कि कौनइहां नरबानरकोरे ९।१० ॥

देखेरघुनायकधीररहै । जैसेतरुपल्लवबातबहै ॥ जौलौंहरिसिन्धुतरैइतरै । तौलौंसियलैकिनपाइँपरै ११ जौलौंनलनीलनसिन्धुतरै । जौलौंहनुमन्तनदृष्टिपरै ॥

जौलौंनहिंअंगदलंकढही। तौलौंप्रभुमानहुबातकही १२
जौलौंनहिंलक्ष्मणबाणधरै । जौलौंसुग्रीवनक्रोधकरै ॥
जौलौंरघुनाथनशीशहरैं । तौलौंप्रभुमानहुपाइँपरैं १३
रावण—कलहंसछंद ॥ अरिकाजलाजतजिकैउठिधायो।
धिकतोहिंमोहिंसमुझावनआयो ॥ तजिरामनामयहबो
लउचारयो । शिरमांझलातपगलागतमारयो १४ ॥

अर्थ रघुनाथको देखि अतिकायादिकनके काहूके धीरनरहिहै ११।१२।१३ रामनामको तजिकहे छोडु यहबोलु रावणउचारयो कहे कह्यो सरस्वती उक्तार्थः अरिकहे शत्रुके काजसोंलाज तजिकै उठिधायोहै अर्थ रामचन्द्रके हाथ मृत्यु सोहमारी मुक्ति ह्वैहै तामें चाहियेकि तूभाई है सहायकरै सोतू शत्रुता करतहै जामें याकी मुक्तिनाहोइ यामें तोको लाजनहीं है भाई ह्वैकै शत्रुको काम करतहै तोको धिक्है जो मोहिं समुझावत है कि रामचन्द्रसों नलरौ अथवा मोहिकहे मोहबशह्वैकै रामको नाम जो जपतरह्यो ताको तजिकै यहबोल उचारयो कहे येतीकथा करयोयहकहिकै पांयनमेंपरत विभीषणके शिरमेंलातमारयो १४

करिहायहायउठिदेहसँभारेउ । लियअंगसंगसबमं
त्रियचारेउ ॥ तजिअंधबंधुदशकंधउड़ान्यो । उररामचं
द्रजगतीपतिआन्यो १५ दोहा ॥ मंत्रिनसहितविभीष
ण बाढ़ीशोभअकास । जनुअलिआवतभावतो प्रभुपद
पद्मनिवास १६ चौपाई ॥ निकटविभीषणआवतजाने।
कपिपतिसोंतबहींगुदराने॥रघुपतिसोंतिनजाइसुनायो।
दशमुखसोदरसेवहिआयो १७ श्रीराम ॥ बुधिबलवंत
सबैतुमनीके। मतसुनिलीजैमंत्रिनहीके ॥ तबजोविचार
परैसोइकीजै । सहसाशत्रुनआवनदीजै १८॥ अंगद—

सुंदरीछंद ॥ रावणकोयहसांचहुसोदरु । आपुबलीबल वंतलियेअरु ॥ राकसबंशहमैंहतनेसब । काजकहातिनसोंहमसोंअब १९ बध्यविरोधहमैंइनसोंअति । क्यों मिलिहैहमसोंतिनसोंमति ॥ रावणक्योंनतजोतबहींइन । सीयहरीजबहींविहनिर्घृन २० नल ॥ चारपठैइनकोम तलीजिय । ऐसेहिकैसेबिदाकरिदीजिय ॥ राखियजोअ तिजानियउत्तम । नाहिंतौमारियछोड़िसबैभ्रम २१ ॥

१५।१६ कपिजे बानरहैं तिनके पतिजे सुग्रीवहैं तिनसों गुदराने कहे कहतभये १७।१८।१९ बध्यकहे बध करिबेलायक निर्घृनकहे निर्दय ॥ कारुण्यं करुणाघृणा इत्यमरः २० चारकहे दूत २१ ॥

नील॥सांचेहुजोयहहैशरणागत।राखियराजिवलोचन मोमत ॥ भीतनराखियतौअतिपातक। होइजोमातुपिता कुलघातक २२ हनूमान्--हरिलीलाछंद ॥ जानोंबिभीष णनराकसरासराज । प्रहलादनारदबिशारदबुद्धिसाज ॥ सुग्रीवनीलनलअंगदजामवंत । राजाधिराजबलिराज समानसंत २३ दोहा ॥ कहननपाईबातसबहनूमंतगुण धाम ॥ कह्योबिभीषणआपुहीसबनसुनाइप्रणाम २४ सवैया ॥ दीनदयालकहावतकेशवहौंअतिदीनदशाग ह्योगाढ़ो । रावणकेअघओघमेंकेशवबूड़तहौंवरहींगहि काढ़ो ॥ ज्योंगजकीप्रहलादकिकीरतित्योंहींबिभीषणको यशबाढ़ो । आरतबन्धुपुकारसुनोकिनआरतहौंतौपुकार तठाढ़ो २५ ॥

जो माता औ पिता औ कुलको घात कहूंहोय औ भीतह्वैकै आवै ताको न राखौ तौ बड़ोपातकहै अथवा जो माता पिता औ

कुलघातकको पातकहोत है सोई पातक जो भीतको ना राखै ताको होत है २२ प्रह्लाद औ नारद के समानहैं बिशारद कहे धृष्ट परिपक्व इति बुद्धिकी साज जिनकी अर्थ प्रह्लाद नारदसम तुम्हारो भक्तहै ॥ विशारदः पण्डिते च धृष्ट इति मेदिनी २३।२४ बाढ़ो कहे बाढो २५ ॥

केशवआपुसदासह्योदुःखपै दासनदेखिसकेनदुखारे। जाकोभयोजेहिभांतिजहांदुखत्योंहींतहां तिहिभांतिपधारे॥ मेरियबारअबारकहांकहूंनाहिंनहूंकेदोषबिचारे। बूड़तहौंमहामोहसमुद्रमेंराखतकाहेनराखनहारे २६ हरिलीलाछन्द ॥ श्रीरामचन्द्रअतिआरतवन्तजानि । लीन्हो बोलायशरणागतसुःखदानि ॥ लंकेशआउचिरजीवहि लंकधाम । राजाकहाउजगजौलगिरामनाम २७ त्रोटक छन्द ॥ जबहींरघुनायकबाणलियो । सविशेषविशोषित सिंधुहियो ॥ तबहींद्विजरूपसोआइगयो । नलसेतुरचै यहमन्त्रदयो २८दोहा॥ जहँतहँबानरसिंधुमेंगिरिगिणडारतआनि॥शब्दरह्योभरिपूरिमहिरावणकोदुखदानि२९॥ त्रोटकछंद॥उछलैजलउच्चअकाशचढ़ै। जलजोरदिशाबिदिशानमढ़ै ॥ जनुसिंधुअकाशनदीअरिकै। बहुभांतिमनावतपांपरिकै ३० ॥

त्योंहीं कहे तत्कालही मोह कहे दुःख २६ । २७ समुद्रतटमें रामचन्द्र तीनदिन डेराकियेरहे जब समुद्र राह नहीं दियो तब समुद्र के शोषिबे के लिये कोपकरि रामचन्द्र बाण लियो इति कथा शेषः २८।२९ समुद्रको जलउछरि आकाशको चढ़त है सो मानहुं समुद्र पांयन परिकै आकाशगङ्गाको मनावत है ३० ॥

बहुब्योमबिमानतेभीजिगये । जलजोरभयेअँगराग

मये ॥ सुरसागरमानहुंयुद्धजये । सिगरेपटभूषणलूटिलि
ये ३१ अतिउच्छलिछिंछित्रिकूटछयो । पुररावणकेज
लजोरभयो ॥ तबलंकहनूमतलाइदई । नलमानहुंआइ
बुझाइलई ३२ लगिसेतजहांतहँशोभगहे । सरितान
केफेरिप्रवाहबहे ॥ पतिदेवनदीरतिदेखिभली । पितुके
घरकोजनुरूसिचली ३३ सबसागरनागरसेतुरची । ब
रणैबहुधायुतशक्रशची॥तिलकावलिसीशुभशीशलसै॥
मणिमालकिधौंउरमेंबिलसै ३४ तारकछंद ॥ उरतेशिव
मूरतिश्रीपतिलीन्ही । शुभसेतुकेमूलअधिष्ठितकीन्ही ॥
इनकेदरशैपरसैपगजोई।भवसागरकेतरिपारसोहोई ३५

जलजोर भये सो वहुत व्यौम आकाश में देवतनके बिमान भीजिगये ग कहे जो अंगन में लग्यो कुंकुमादि लेप है तासों रयेकहे युक्त पट औ भूषण बहिआये हैं सो मानों सुर जे देवता हैं तिनको सागर युद्धमें जीत्यो है सो मानों लूटिलीन्हों है इहां पट भूषणनको बहि आइबो बिषयकहे उपमेय है सो अनुक्त है तासों अनुक्त बिषय वस्तूत्प्रेक्षा है ३१।३२ सेतुमें लगिकै जहां तहां शोभगहे जे सरितन के प्रबाहहैं ते फेरि कहे उलटिकै बहन लगे सो पांयपरिपरि मनावतहैं ऐसी भली कहे बड़ीराति प्रीति पतिकी समुद्रकी देवनदी आकाशगंगामें देखिकै मानों आपने पिताके घरको रूसिचली हैं ३३ नागरश्रेष्ठ ३४ उरतेअर्थ बिचारते जो बस्तु करिबो होत है ताको बिचार प्रथममनहीं मों आवतहै ३५ ॥

दोहा ॥ सेतुमूलशिवशोभिजैकेशवपरमप्रकास॥साग
रजगतजहाजकोकरियाकेशवदास ३६ तारकछन्द ॥
शुकसारणरावणदूतपठायो । कपिराजसोंएकसँदेशसुना

यो ॥ अपनेघरजैयहुरेतुमभाई । यमहूंपहँलंकलईनहिं जाई ३७ सुग्रीव ॥ भाजिजैहौंकहांनकहूंथलदेखो । जल हूंथलहूंरघुनायकपेखो ॥ तुमबालिसमानसहोदरमेरे । हतिहौंकुलस्यौंतिनप्राणनतेरे ३८ सबरामचमूतरिसिंधुहिआई । छबिऋक्षनकीधरअंबरछाई ॥ बहुधाशुकसारणकोजोबताई । फिरिलंकमनोंबर्षाऋतुआई ३९॥

संसार सागरको जो जहाज़ रामनाम है ताके करिया कहे केवट जे शिव हैं जैसे केवट जहाजमें चढ़ाइ समुद्रपार करत है तैसे शिव मरणकाल काशीमें रामरूपी तारकमन्त्र जहाजपर चढ़ाइ संसारपार करत हैं ते सेतुके मूलमें परमप्रकाश कहे प्रसन्नता सों शोभितहैं जो जहाज़पर चढ़ाइ पार करतहै सो आपने प्रभुसों सेतुपर चढ़ाइपार करिबेको अधिकार पाइ प्रसन्नभयोई चाहै इति भावार्थः ३६।३७ ता बनके सन्देशमें सुग्रीवको भाई कह्यो ताको जवाब सुग्रीव दियो कि रावणसों कहियो कि तुम बालिके समान हमारे भाईहौ तासों तुम्हारो बध उचितहै ३८ जा रामचमूको काहूनीके प्रकारसों सुग्रीवादि बीरनको शुकसारण दूत सों बहुधा बहुत प्रकारसों बताई कहे बतायो रहै अर्थ वर्णन करयो है सो तुलसीकृत रामायणमें रावणसों शुकसारण कह्यो है कि ॥ असमैंश्रवणसुनादशकन्धर। पदुमअठारहयूथपबन्दर ॥ अथवा जा प्रकार शुकसारणको बतायोहै सो आगे कवित्त में वर्णन है सो रामचमू सिंधुको तरिकहे उतारिकै लंकामें आई है सो भू आकाशमें ऋक्षमेघसम श्यामशोभित हैं सो मानों फेरि हेमंतऋतुमें वर्षाऋतु लंकामें आई है ३९ ॥

दण्डक ॥ कुंतललालितनीलभृकुटीधनुषनैनकुमुदकटाक्षबाणसबलसदाईहै । सुग्रीवसहिततारअंगदादिभूषणनमध्यदेशकेशरीसुगजगतिभाईहै॥ विग्रहानुकूल

सबलक्षलक्षऋक्षबलऋक्षराजमुखी मुखकेशवदासगाई है। रामचन्द्रजूकीचमूराजश्रीबिभीषणकीरावणकीमीचु दरकूचचलिआईहै ४० ॥

रामचन्द्रकी चमू कैसी है कि कुन्तल औललित औनील औ भृकुटी औ धनुष औ नयन औ कुमुद औ कटाक्ष औ बाण औ सबलयी जे बानर हैं ते सदाहैं जामें अथवा बाणपर्यंत इन नामन करिकै युक्त औ सदासबलकहे बलवान् ऐसे जे बानरऋक्ष हैं तेहैं जामें औ सुग्रीव सहितहै औ तारनामा जे बानरहैं तिन सहितहै औ अंगदादिक जे भूषणकहे सेनानायकहैं तिनसों युक्त है औ मध्यदेशनामा औ केशरी नामा औ सुगजनामा जे बानर हैं तिनकी गति भाई कहे नीकी है जामें औ विग्रहनामा औ अनुकूलनामा औ ऋक्षराज मुखी कहे ऋक्षराज जे जाम्बवन्त हैं ते हैं मुखकहे मुखिया जामें ऐसो लक्षलक्ष कहे अनेक लक्षऋक्षन ऋक्षनको है बलसैन्यजामें बिभीषणकी राज्य श्रीकैसी है कि कुंतलजे केशहैं तेहैं ललित कहेसुन्दर औनील कहे श्याम जाके औ भृकुटी धनुषसम जाकी औ नयन हैं कुमुदकहे कमल- सम जाके औ कटाक्ष हैं बाणसम जाके औ सबलकहे सुंदर- ता सहित सदा हैं अर्थ जाकी छबि काहू समयमों ग्लानि नहीं होति ॥ बलंगंधरसे रूपे इतिमेदिनी औ सुष्ठुजो ग्रीवाहै सो स- हितहै तारकहे विमल मुक्तनसों अर्थ मोतिनकी मालापहिरेहैं॥ तारोनिर्मलमौक्तिकेमुक्ता सुद्धावुच्चनादे इत्यभिधानचिंतामणिः॥ औ अंगद जोविजायठहै तेहि आदि दै जे भूषण हैं तिनसों युक्त है औ मध्यदेश जो कटि है सोहै केशरीकहे सिंहको ऐसो जाको औ सुष्ठु जो गजहै अर्थ जो अतिललित चालचलतहै ताकी ऐसी गति है भाईकहे नीकी जाकी औ विग्रहकहे शरीरहै अनुकूलकहे यथोचित सबकहे पूर्ण अर्थ जैसो जौनअंग चाहिये तौनअंग तै- सोई है अथवा अनुकूलकहे हितहै सबको अर्थ जे देखतहैं ताको

मनवश है जातहै अथवा अनुकूलकहे व्याधि रहित गात्रंवपुःसं-
हननंशरीरंवर्ष्मविग्रहः इत्यमरः ॥ औ लक्षलक्ष जे ऋक्ष नक्षत्र
हैं गनकहे जोबलसौंदर्य है तेहिसहित जो ऋक्षराज चन्द्रमा है
ताके सदृशहै मुख जाको अर्थ जब अनेकलक्ष नक्षत्रनकी शोभा
लैकै चन्द्रमा आपु धारणकरै तब जाके मुखके समहोय॥ ऋक्ष
स्तुस्यान्नक्षत्राक्षभल्लयोः इति अभिधानचिंतामणिः ॥ रावण की
मीच कैसी है कि कुन्त जो बरछी है सोहै ललितकहे लचकति
जाकी अर्थ बरछी हाथमें लियेहैं अथवा कुन्तल जो भालाहै सो
है ललित कहे अतितीक्ष्ण जाको अर्थ हथियार को धरे हैं कु-
न्तलोभल्लकेशयोरिति अभिधान चिंतामणिः॥औ नीलकहे श्याम
वर्ण है औ भृकुटीभौंहहैं धनुषसम विकराल जाकी इहां कवि क्रूर
स्त्रीकरिवर्णतहैं तासों भौंहनकीधनुषकीक्रूरता धर्मकरि साम्यजा-
नो औ नयनहैं कुमुदकहे कुत्सितहै मुदआनन्द जिनमेंऐसेहैंजाके
अर्थ रावणके बधको आनन्दहै विभीषणके राज्यलाभादि उत्सव
को आनन्द नहीं है अथवा नयनहैं कुमुदकहे मुदजो आनन्द है
प्रसन्नता इति तासोंरहित अर्थ अतिकोपसों अरुणअतिविकराल
हैं प्रशस्त नहीं हैं औ कटाक्षहैं बाणसम कराल जाके औ सबल
कहे बुद्धिबल सहित सदाहैं इहां बलपदते बुद्धिबल जानौ अर्थ
बुद्धिबलसों सीता हरणादि कार्यकराइ रामचन्द्रसों विरोधकराइ
दियो तारकहे उच्चस्वर करिकै सहितहै सुष्ठुग्रीवा जाकी सुष्ठुपद
को अर्थ यह कि ऐसो उच्चस्वर करिबेकी शक्ति और काहूकी ग्री-
वामें नहीं है औ अंगद जो बिजायठहैं तेहि आदि भूषणकहे नहीं
हैं अर्थ मुण्डमालादि क्रूर भूषण पहिरे हैं औ मध्यकहे अधम
अनुत्तमेति है देशकहे जाके अंग मध्यंविलग्नेनस्त्रीस्यान्न्याय्येऽ
तरेधमेपिचेतिमेदिनी औकेशरी जो सिंहहै ताको गजपर ऐसी
गतिभाई है जाको अर्थ जैसे गजके मारिबेको सिंहचलतहै तैसे
रावणके मारिबेको चली आवतिहै औ रामचन्द्रको जो विग्रह
विरोधहै सोई है अनुकूल हितजाको अर्थ रामचन्द्रके विरोधही

सों है कार्य सिद्धिजाकी औ सबकहे पूर्ण अनेकलक्ष जे ऋक्ष भालहैं तिनको है बलजाके औ ऋक्षराज जे जामवन्तहैं तिनको ऐसो है मुखजाको ४० ॥

हीरकछंद॥ रावणशुभश्यामलतनमंदिरपरसोहियो। मानहुंदशशृंगयुतकलिंदगिरिबिमोहियो॥ राघवशरला घवगतिछत्रमुकुटयोंहयो । हंससबलअंशसहितमानहुं उड़िकैगयो ४१ लज्जितखलतज्जिसुथलभज्जिभवनमें गयो । लक्षणप्रभुतक्षणगिरिदक्षिणपरसोभयो ॥ लंक निरखिअंकहरषिमर्मसकलजोलह्यो। जाहुसुमतिरावण बहअंगदसनयोंकह्यो ४२ चंचलाछंद ॥ रामचन्द्रजूक हंतस्वर्णलंकदेखिदेखि। ऋक्षबानरालिघोरओरचारिहू बिशेखि ॥ मंजुकंजगंधलुब्धभौंरभीरसीविशाल। केश वदासआसपासशोभिजैमनोमराल ४३ ॥

सबल कहे अनेकरंग मिश्रित हैं अंशु कहे किरण जाके ऐसे जे सूर्य हैं तिन सहित मानों कलिंदगिरि शृंगते हंस कहेहंससमूह उड़िगयो है यहां जाति बिषे एकबचन है हंसनके सदृश श्वेत छत्रहै औ सूर्य के सदृश अनेक रंग नगजटित मुकुटहैं ४१ दक्षिण गिरि कहेसमुद्रके दक्षिण कूलको गिरिसमुद्रपारकोगिरि इतिमर्मभेद ४२ भौंरभीरसमऋक्षहैं मरालहंससमबानरहैं ४३॥

ताम्रकोटलोहकोटस्वर्णकोटआसपास। देवकीपुरी घिरी किपर्बतारिकेबिलास ॥ बीचबीचहैंकपीश बीचबी चऋक्षजाल। लंककन्यकागरेकिपीतनीलकंठमाल४४

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीराम चंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां रामसैन्यसमुद्रतरणं नामपंचदशःप्रकाशः १५ ॥

अथइंद्रकी शत्रुतासों मानों पर्वतन देवपुरी को घेरिलियो है देवपुरी सदृश स्वर्णकोटहै जाके मध्यमों पुरी है औ ताके आस पास ताम्रादिके कोटहैं ते पर्वत समान हैं यासों या जनायो कि लंका देवपुरी समहै ४४ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां पंचदशः प्रकाशः १५ ॥

दोहा ॥ यहवरणनहैषोड़शे केशवदासप्रकाश । रावणअंगदसोंविविध शोभितवचनविलाश १ अंगदकूदिगयेजहां आसनगतलंकेश । मनुमधुकरकरहाटपर शोभितश्यामलवेश २ प्रतीहार--नराचछंद ॥ पढ़ोविरंचिमौनवेद जीवशोरछंडिरे । कुबेरबेरकैकहीनयक्षभीरमंडिरे ॥ दिनेशजाइदूरिबैठि नारदादिसंगहीं । नबोलचंदमंदबुद्धइंद्रकीसभानहीं ३ चित्रपदाछंद ॥ अंगदयोंसुनिबानी । चित्तमहारिसआनी ॥ ठेलिकैलोगअनैसे । जाइसभामहँवैसे ४ चित्रपदाछंद ॥ कौनहौपठयेसोकौनेह्यांतुम्हेंकहकामहै । अंगद ॥ जातिबानरलंकनायकदूतअंगदनामहै ॥रावण॥ कौनहैवहबांधिकैहमदेहपूछसवैदही । लंकाजारिसँहारिअक्षगयोसोबातवृथाकही ५ ॥

१ आसनमें गत कहे बैठौ २ रावणके सभा भवनमें जाइ अंगद ऐसे कौतुक देखत भये प्रतीहार या प्रकारके अनादर पूर्वक बचन ब्रह्मादिसों कहत हैं हे कुबेर तुम सों कैयोबार कह्यो कि तुम यक्षनकी भीरको न मंडौ अर्थ यक्षनकी भीरको संगलै इहां न आयोकरो सो तुम आइबो करतहौ ३ । ४ लङ्कनायक विभीषण ५ ॥

महोदर ॥ कौनभांतिरहौतहांतुम राजप्रेषकजानि
ये । लंकलाइगयोजोबानर कौननामबखानिये ॥ मेघना
दजोबांधियो वहिमारियोबहुघातबै । लोकलाजदुरयो
रहैअतिजानिजैनकहांअबै ६ रावण ॥ कौनकेसुतबालि
के वहकौनबालिनजानिये । कांखचापितुम्हैंजोसागरसा
तन्हातबखानिये ॥ हैकहांवहबीरअंगद देवलोकबताइ
यो । क्योंगयोरघुनाथबाणबिमानबैठिसिधाइयो ७ लंक
नायककोबिभीषणदेवदूषणकोदहै । मोहिंजीवतहोहि
क्यों जगतोहिंजीवतकोकहै ॥ मोहिंकोजगमारिहै दुर्बु
द्धितेरियजानिये । कौनबातपठाइयोकहिबीरबेगिबखानि
ये ८ अंगदसवैया ॥ श्रीरघुनाथकोबानरकेशवआयो
होएकुनकाहूहयोजू । सागरकोमदझारिचिकारित्रिकूट
कोदेहबिहारछयोजू ॥ सीयनिहारिसँहारिकैराक्षसशोक
अशोकबनीहिदयोजू । अक्षकुमारहिमारिकैलंकहिजा
रिकैनीकेहिजातभयोजू ९ ॥

महोदर पूँछोकि तुम तहां कौनभांतिसों रहतहौ अर्थ कौने
कामके अधिकारीहौ तब अंगद कह्योहै हम राजाके इहां प्रेषक
कहे यथोचित स्थानमें दूतनके पठावनहारहैं अर्थ दूतनके ना-
यकहैं लोकलाज दुरयोरहै यहकहि अंगद या जनायो कि हमारे
सैन्यमें ऐसो कोऊ नहीं है जाकोकोहूँ बांध्यो मारयो होइ ६।७
पाछे अंगदकह्योहै कि हमलङ्कनायकके दूतहैं सो रावण पूछ्यो
कि लंकनायक कोहै जाके तुम दूतहौ तब अंगद कह्योहै कि वि-
भीषण लंकनायकहै कैसोहै विभीषण जेदेवतनके दूषणकहे पी-
ड़ाकरनहार हैं तिनकोद है कहे जारतहै यामोंया जनायो कि
तुमहूँदेवदूषणहौ तुमहूंको दहिहै ८ सागरके मदरह्यो कि हम

को कोऊन नांघिसकिहै सो नांघिकै ता मदको झारि डारयो अर्थ दूरिकरयो औ चिकारिकै गर्जिकै त्रिकूटनाम जो लंकापुरी को पर्वतहै ताके देहमें अर्थ सब पर्वतभरेमें बिहारकहे नीके प्रकार सों पुरीकेश्री भवनादि देखिकै छयेकहे रहतभयो ९ ॥

गंगोदकछन्द ॥ रामराजानकेराजआयेइहांधामतेरे महाभागजागेअबै। देबिमंदोदरीकुंभकर्णादिदैमित्रमंत्री जितेपूंछिदेखोसबै । राखिजैजातिकोभांतिकोबंशकोसाधिजैलोकमेंलोकपर्लोकको । आनिकैपांपरोदेसुलैकोशलैआशुहीईशसीताहिलैओकको १०रावण ॥ लोकलोकेशसोंशोचिब्रह्मारचैंआपनीआपनीसींवसोसोरहै। चारिबाहैंधरेबिष्णुरक्षाकरैंबातसांचीयहैवेदबाणीकहै ॥ ताहिभ्रूभंगहीदेवदेवेशसोंबिष्णुब्रह्मादिदैरुद्रजूसंहरै । ताहिहौंछोड़िकैपांयकाकेपरौं आजुसंसारतोपांयमेरेपरै ११ मदिराछन्द ॥ रामकोकामकहारिपुजीतहिं कौनकबैरिपुजीत्योकहा । बालिबलीछलसोंभृगुनन्दनगर्वसहोद्विजदीनमहा ॥ दीनसोक्योंक्षितिछत्रहत्यो बिनप्राणनिहैहयराजकियो । हैहयकौनवहैबिसरह्योजिनखेलतहीतुम्हैंबांधिलियो १२ ॥

जास्त्रीकेसंग राज्याभिषेक होइ सोदेवी कहावै देवीकृताभिषेकायां इत्यभिधानचिंतामणिः १० कल्पांत के अंतमें ब्रह्मासृष्टि रचतहैं विष्णुरक्षा करतहैं सो ताहि कहे लोक सृष्टिको औ देवेश इंद्र औ विष्णु औ ब्रह्मादिदै जेदेवहैं तिन्हैं रुद्रजे महादेवहैं तेभ्रू जो भौंहहै ताके भंगही टेढ़ी करनेही सों संहार कालमों संहार करिडारतहैं ११ छत्रकहे छत्रवर्णः १२ ॥

अंगद-बिजयछन्द ॥ सिंधुतर्योउनकोबनरातुमपैध

नुरेखगईनतरी । बांध्योइबांधतसोनबँध्योउनबारिधिबांधिकैबाटकरी ॥ अजहूंरघुनाथप्रतापकिबाततुम्हैंदशकंठनजानिपरी । तेलानितूलानिपूंछजरीनजरीजरीलंकजराइजरी १३ मेघनाद॥छांड़िदियोहमहींबनरावहपूंछकिआगनलंकजरी । भीरमेंअक्षमरयोचपिबालकबादिहिंजाइप्रशस्तिकरी ॥ तालबिधेअरुसिंधुबँधेयहचेटकाबिक्रमकौनकियो । बानरकोनरकोबपुरा पलमेंसुरनायकबांधिलियो १४ ॥

बांध्योइ कहे हनुमानको बंधन तुम काहू विधिसों करिबेहू करयो ताहूपर बांधत न बन्यो तेल औतूल कहे रुईयुक्त जो बस्तु होतिहै सो विशेष जरतिहै सो याप्रकार की पूंछ तुमकरी सो न जरी औ केवल सुवर्ण औ रत्ननमें अग्नि ज्वलितनहीं होति परंतु तुम्हारी लंका तृणादि रहित केवल रत्नादिके जरायसों जरीजरत भई रामकेप्रभावसोंऐसीअनहोनी बातें होतीहैं ताहूपरतुम्हैं नहीं जानिपरतो इतिभावार्थः १३ बादिकहे बृथा प्रशस्ति कहे स्तुति सप्ततालं बेध्यो औ सिंधुबांध्यो यह चेटककहे भगरविद्याहै सरस्वती उक्तार्थः ॥ जो रामचन्द्र ताल बेधन सिंधुबन्धन करयो सो तो चेटककहे भगर विद्यासमहै अर्थ खेलसमहै यामें कौन विक्रमकहे अतिबल कियोहै विक्रमस्त्वाति शक्तिताइत्यमरः अर्थ- वै चाहैं तौ त्रैलोक्यको संहारकरिडारैं सिंधु बन्धादि सदृश कर्मनमें उनको कौनश्रम है ऐसे प्रबलवैनहोते तौ जिनहम पलमें सुरनायकको बांधिलियो ते बानर औ नरको बपुराहैजाते अर्थ हम इन्द्रलोकादि में जाइकै इन्द्रादिको जीत्यो औ वै हम पर चढ़िआये हैं हम बपुरासम कछू करि नहीं सकत अथवा बपुरा समुझि हमपर चढ़िआये हैं १४ ॥

अंगद ॥ चेटकसोंधनुभंगकियोप्रभुरावरेकोअतिजी

रनहो । बाणसमेतरहेपचिकैतुमजासहँपैनतज्योथलुहो ॥ बाणसुकौनबलीबलिकेसुत वैबलिबावनबांधिलियो । ओईसोतौजिनकी चिरचेरिन नाचनचाइकै छांड़िदियो १५ रावण ॥ नीलसुखेनहनूउनकेनलऔरसबैकपिपुंज तिहारे । आठहुआठदिशाबलिदैअपनोपदुलैपितुजाल गिमारे ॥ तोसेसपूतहिजाइकैबालिअपूतनकीपदवीपगु धारे । अंगदसंगलैमेरोसबैदलआजुहिक्योंनहनैबपुमा रे १६ दोहा ॥ जोसुतअपनेबापकोबैरनलेइप्रकास ॥ तासोंजीवतहीमरयोलोगकहैंतजित्रास १७ ॥

कवित्वमें उक्ति मेघनादकी है औ जवाबरावणको अंगददियो ता जवाबहीसों या जानो कि रामचन्द्र सिंधुबन्धनादिसम शंभु धनुषभंग चेटकहीसों कियो है यहबात रावण कह्योहै अंगदकहत हैं कि प्रभु जे रामचन्द्रहैं तिन चेटकसों धनुषभंगकीन्हो औ तुम कहतहो कि जीरणकहे पुरानोरहै परन्तु तुमको पुरानो तौ रहै पै बाणसमेत तुम पराक्रमकरि पचिकै कह थकिकै रहिगये ताहू परथलहून छोंड्यो अर्थ रंच न उठ्यो १५ नील सुखेन हनुमान् औ नल औ सुग्रीव औ राम लक्ष्मण औ विभीषण येजे आठ हैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ नीलसुखेनादि चारिबानर उनके सुग्रीवके हैं ते वालिके भयसों भागेरहैं तब तिनहीं के संगरहे यासों या जनायो कि जो रामचन्द्र आज्ञाहूकरैं औ मोहसों वैतिहारो रा- ज्य न दियो चाहैं तौ सबबानर तेरेई साथी ह्वैहैं तासोंतू आठहू आठदिशा बलिद जे रामचन्द्रहैं आठदिशनके आठौ जे इन्द्रादि दिग्पालहैं ते हैं बलिदकहे भेंटके दाता जिनको अर्थइन्द्रादि दि- ग्पाल जिनको भेंटदेतहैं तिनहींसों आपनोपद जो राज्यहै ताको ले जाके लिये सुग्रीव तिहारेपितुको मारिडारयो है काहेते राज्य तिहारे पिताको है रामचन्द्र मर्यादा पुरुषोत्तम हैं जो तू कहिहै

तौ तोको विशेषदे हैं । बलिर्दैत्योपहारयोरित्यभिधानचिन्तामणिः ॥ बपमारे कहे जे तेरेबापको मारचो है १६ । १७ ॥

अंगद ॥ इनकोबिलगुनमानियेकहिकेशवपलश्राधु ॥ पानीपावकपवनप्रभुज्योंश्रसाधुत्योंसाधु १८ रावण ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ उरसिश्रंगदलाजकछूगहौ । जनकघातकबातवृथाकहौ ॥ सहितलक्ष्मणरामहिंसंहरौं । सकलबानरराजतुम्हैंकरौं १९ ॥

बिलगुकहे द्वेष साधु कहे भलो असाधुकहे बुरो १८ जनक पितासरस्वती उक्तार्थः ॥ हे अंगद तुम रामचन्द्रसों मिलिबे को हमको कहतहौ यामें तुमको कछू लाजनहीं होति ऐसी बातकहि कछू लाज तौ उरमें गहौ काहेते कि तुम्हारे जनक बालि तिनके जे घातक रामचन्द्र हैं तिनकीबात बृथा है यह तुम कहौ अर्थ रामचन्द्रकी बात वृथा नहीं होति जो मनमें संकल्प करतहैं सो करिबोई करतहैं यासों या जनायो कि अति बली बालिके बध करिबे को संकल्पकियो सो बध करिबोई कियो तैसे वे तो हमारे मारिबेको संकल्पकरै हैं यह संकल्प वृथा काहू उपायसों न ह्वै है तासों मैं लक्ष्मण सहित रामहिंसों संहरौं कहे संहार नाशको प्राप्तहोतहौं अर्थ लक्ष्मण सहित राम मोहिं मारतही हैं नाहीं तो ऐसो हित सीख तुमको दियो है जासों सब बानरनको राजा तुमको करौं अर्थ सुग्रीवसों छोरि तुम्हारो राज्य तुम्हैं देउँ अथवा जनक घातक जे सुग्रीव हैं तिनकी बात वृथा कहतहौ अर्थ जो तुम्हारे पिताको मारचो ताकी तुम बड़ाई वृथा करतहौ मैं लक्ष्मण सहित राम करिकै संहरौं कहे नाशको प्राप्त होतहौं नाहीं तो सुग्रीवको मारि सब बानरनको राजा तुमको करौं १९ ॥

अंगद—निशिपालिकाछन्द ॥ शत्रुसबमित्रहमचित्तपहिंचानहीं । दूतबिधिनूतकबहूंनउरश्रानहीं ॥ आपुमुख

देखिअभिलाषअभिलाखहू । राखिभुजशीशतबऔरक हँराखहू २० रावण—इन्द्रबज्राछन्द ॥ मेरीबड़ीभूलसो का कहौंरे । तेरोकह्योदूतसबैसहौंरे ॥ वैजोसबैचाहततो हिंमारयो । मारोंकहातोहिंजोदैवमास्यो २१ अंगद--उपे न्द्रबज्राछन्द ॥ नराचश्रीरामजहींधरैंगे । अशेषमाथेक टि भूपरैंगे ॥ शिखाशिवाश्वानगहेतिहारी । फिरैंचहूंओ रनिरैविहारी २२ ॥

तुम्हारी जो यह नूतकहे नवीनदूत विधि कहे दूतता तोर फोरहै ताको कबहूं न उरमें आनिहै पाइहै २० । २१ नराच बाननिरै बिहारी रावणको सम्बोधनहै अथवा शिवा औ श्वान औ और जे निरैविहारी काकादि हैं ते तिहारी शिखा गहे तिहारे शिरको लिये फिरैंगे २२ ॥

रावण—भुजंगप्रयातछन्द ॥ महामीचुदासीसदापाइँ धोवै । प्रतीहारह्वैकेकृपाशूरसोवै ॥ क्षपानाथलीन्हेरहै छत्रजाको । करैगोकहाशत्रुसुग्रीवताको २३ शकामेघमा लाशिखीपाककारी । करैकोतवालीमहादंडधारी । पढ़ैबे दब्रह्मासदाद्वारजाके । कहाबापुरोशत्रुसुग्रीवताके २४॥

अंगद कह्यो कि श्रीराम बाण धरिकै तुमको मारिहैं ताको उत्तर रावणदियो कि महामीचु जो है सो मेरी सदा पाइँधोइबे के अर्थ दासीहै याते अति न्यूनदासी जनायो एकशत एक मीचु हैं तामें शत अकाल मीचुहैं एक महा मीचुहै शत मीचु उपायसों दूरि होती हैं एक महामीचु काहू उपायसों नहीं मिटति । यथा भावप्रकाशे॥एकोत्तरंमृत्युशतमथर्वाणःप्रचच्छते । तत्रैकःकालसं-युक्तःशेषास्त्वागंतवःस्मृताः ॥ यामों या जनायो कि युद्धादि में मरिबो तो अकाल मृत्युहै सो मेरे समीप कैसे आइहै २३ शका कहे शक्तापाककारी रसोईदार २४ ॥

अंगद–विजयछन्द॥ पेटचढ्योपलनापलिकाचढ़िपालकिहूचढ़िमोहमढ्योरे। चौकचढ्योचित्रसारीचढ्योगजबाजिचढ्योगढ़गर्बचढ्योरे ॥ व्योमबिमानचढ्योईरह्योकहिकेशवसोकबहूंनपढ्योरे । चेततनाहिंरह्योचढ़िचित्तसोचाहतमूढ़चिताहूचढ्योरे २५ ॥

प्रथमहिं पेटमें चढ्यो कहे गर्भमें आयो जब जन्मभयो तब पलनामें चढ़िकै झूल्यो कछू और बडो भयो तबपालिका जो खट्वा है तामें चढ़िकै सोवनलाग्यो औ जब व्याहभयो तब पालकीमें चढ़ि व्याहन चल्यो तब मोह जो मायाहै तामें मढ्योकहे युक्त भयो फेरि पाणिग्रहणमें चौकमें चढ्यो फेरि स्त्रीके संग चित्रसारीमें चढ्यो फेरि राजाह्वैकै गजबाजिमें चढ्यो औ गढ़पर चढ्यो औ गर्वपर चढ्यो अर्थ राज्याभिमान भयो औ जेहिकहे जाते अर्थ जाकी कृपासों व्योममें विमाननपर चढ्योई रह्यो अर्थ पुष्पकादि विमाननपर चढ्यो आकाश आकाश फिरत रह्यो केशव कहत हैं कि सोजो वे प्रभु रामचन्द्र हैं ताको कबहूं न पढ्यो अर्थ रामनाम कबहूं न जप्यो सोहेमूढ़ अब चिताहू पर चढ्यो चाहतहै ताहूपर तेरो चित्त चढ़ि रह्योहै कहे मत्तह्वै रह्यो है तामें तू चेतत नहीं अर्थ चेतनहीं करतो चिताहूमें चढ्यो चाहत है यह कहि या जनायो कि रामचन्द्र तोहिं शीघ्रही मारि हैं तासों उनके शरणमों जाइकै आपनो भलो करु २५ ॥

रावण--भुजंगप्रयातछंद ॥ निकारयोजोभैयालियोराजजाको । दियोकाढ़िकैजूकहात्रासताको ॥ लियेबानरालीकहौंबाततोसों । सोकैसेलरैरामसंग्राममोसों २६

अंगद--विजयछंद ॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगाउंनठाउंकोठाउँबिलैहै । ताततमातनपुत्रनमित्रनवित्तनतीयकहींसंगरैहै ॥ केशवकामकोरामबिसारतऔरनिकामन

कामहिंएहै । चेतिरेचेतिअजौंचितअन्तरअंतकलोक अकेलोइजैहै २७ ॥

रामचन्द्र के राज्याभिषेकको एतो बड़ो उत्सव तामें भरत घरमें नहीं रहे सो सुनिकै रावण याहीसमुझ्यो कि परक्षरस्वाभाविक बन्धु विरोध समुझि भरतकृत अभिषेकोत्सव भंग भय सों भरतको दशरथ निकारि दियो ह्वै है सो कहतहैं कि निकारो जो भैया भरतहै ताने पिताकरिकै दियो राजजाको काढ़िकै कहे देशसों निकारिकै लैलीन्हो ताको कहात्रास कहे रहै आशय यह कि जा भयसों दशरथ भरतको निकारिकै रामचन्द्रको राज्य दियो सोई आपने बलसों भरत रामचन्द्रसों छोरि लीन्हो औ देशसों निकारि दीन्हो तो जिनसों पिताको दियो राज्य न राखत बन्यो ते हमको मारिकै कहा हमारो राज्यछोरि हैं औ ताहू पर सैन्य बानरको लिये हैं औ वेष यतीको धरे हैं यतिनको औ बानरनको काम लरिबेको नहीं है सरस्वती उक्तार्थःसङ्कल्प करिकै जो रामचन्द्र हमारो राज्यलियो औ हम करिकै निकारो जो भाई विभीषणहै ताकोदियोहै ता बातकोकहा हमारे अत्रास है अर्थ बड़ो त्रासहै यह हम निश्चय जानत हैं कि रामचन्द्रको संकल्प निष्फल न ह्वैहै हमसों राज्यछोरि विभीषणकोदे हैं और कहे अग्निताकी आली कहे समूह अर्थ जिनमों अति अग्नि है ऐसे बाण लिये हैं अथवा रकहे तीक्षण जे बाणहैं तिनकी आली कहे पंक्तिसमूह इति तिनको लिये हैं सो रामचन्द्रके संग्राममों मोसों कहे हमऐसो प्राणी कैसे जुरै अर्थ हम उनके युद्धकरिबे लायक नहीं हैं रःतीक्ष्णे दहन इत्यभिधानचिंतामणिः॥पुंस्याालि र्विशदाशये त्रिषुस्त्रियांपस्यायांसेतौ पङ्क्तौचकीर्त्तिता इत्यभिधान चिंतामणिः २६ वित्तधन २७ ॥

रावण--भुजंगप्रयातछंद ॥ डरैंगाइविप्रैअनाथैजो भाजैं । परद्रव्यछोड़ैंपरस्त्रीहिलाजैं ॥ परद्रोहजासोंनहो

घैरतीको । सुकैसेलरैंबेषकीन्हेयतीको २८ दोहा ॥ गेंद करेउमैंखेलकोहरगिरिकेशवदास । शीशचढ़ायेआपने कमलसमानसहास २९ ॥

जे रामचन्द्र गाइ औ विप्रको डरातहैं अर्थ अतिदीन गाइ औ विप्रतिनहूंको डरात हैं तासों अतिकादर हैं औ अनाथ जे प्राणी हैं जिनको नाथ कोऊनहीं है ताही को भजें कहे सेवन करत हैं अर्थ ताही सों संगकरत हैं यासों या जनायो कि भयसों रंच कहू परद्रव्य नहीं लैसकत हमारो राज्य कैसेलेहैं औ परस्त्रीको लजातहैं यासों या जनायो कि जे स्त्रीको लजातहैं ते बीरनसों कहा धृष्टताकरिहैं औ जिनसों परद्रोह कबहूं रतीहूभरि नाहीं ह्वै सकत आशय कि शत्रुता करते डरात हैं औ ताहूपर बेषयती तपस्वीको धरे हैं अर्थ बेषहूबीरको नहीं है सो मोसों कैसेलरिहैं सरस्वती उक्तार्थः मर्यादा पुरुषोत्तमहैं तासों ब्रह्मशाप गोशापको डरात हैं भृगुलातहू मारयो ताहूपर कछू ना करयो अनाथ जे प्रह्लाद गजादि हैं तिनके निकटहीरहे जाभांति कष्टभयो ताहीविधि निकटवर्ती सम रक्षाकियो औ परद्रव्य परस्त्री हरनमों पापहोत है तासों त्याग करत हैं औ परद्रोह जासों रतीहूभरि नाहीं होत यासों समदरशी जानौ सबको समान जानत हैं तिनसों हम कैसे लरैं अर्थ वै ईश्वर हैं बेष कहे रूपमात्र यतीको कीन्हे हैं २८ । २९ ॥

अंगद--दंडक ॥ जैसोतुमकहतउठायोएकगिरिवर ऐसेकोटिकपिनकेबालकउठावहीं । काटेजोकहतशीशकाटतघनेरेघाघमग्गारकेखेलेकहाभटपदपावहीं ॥ जीत्यो जोसुरेशरणशापऋषिनारिहीको समुझहुहमद्विजनातें समुझावहीं । गहौरामपायँसुखपायकरैंतपीतपसीताजूकोदेहुदेवदुन्दुभीबजावहीं ३० रावण--बंशस्थछंद ॥

तपीजपीबिप्रनिक्षिप्रहीहरौं । अदेवद्वेषीसबदेवसंहरौं ॥ सियानदेहौंयहनेमजीधरौं । अमानुषीभूमिअबानरी करौं ३१ अंगद-बिजयछंद ॥ पाहनतेपतिनीकरि पावनटूककियोहरकोधनुकोरे । छत्रबिहीनकरेउक्षणमें क्षितिगर्बहत्योतिनकेबलकोरे ॥ पर्बतपुंजपुरैनिकेपातस मानतरेअजहूंधरकोरे । होइँनरायणहूपैनयेगुणकौनइहां नरबानरकोरे ३२ रावण--चंचरीछन्द ॥ देहिंअंगदराज तोकहँमारिबानरराजको । बांधिदेहिंबिभीषणैअरुफोरि सेतुसमाजको ॥ पूंछजारहिंअक्षरिपुकीपाइँलागहिंरुद्र के । सीयकोतबदेहुंरामहिपारजाइँसमुद्रके ३३ ॥

घाघ कहे नटादि इन्द्रजालिक ३० सरस्वती उक्तार्थः हे अंगदहौं केशवहौं कि तपी औ जपी जे बिप्रहैं अथवा तपी औ जपी औबिप्रनको क्षिप्रही हरौंकहौं कि तपी औ जपी जेबिप्रहैं अथवा तामें कछू बिचार नहीं करत औ अदेव जे दैत्य जे राक्षस हैं तिनके द्वेषी शत्रुदेवता हैं तिन्हैं क्षिप्रही संहरतहौं कहे मारतहौं यासों हौं बड़ो पापीहौं सो सियाको न देहौं यहनेम जो जीमें धरतहौं सो अब कहे या समयमों अमानुषी कहे नाहीं हैं मनुष्य जहां औ अनरी कहे नाहीं है कोऊ काहूको अरिशत्रु जहां ऐसी जो भूमि कहे स्थान है बिष्णुलोक ताको करौंकहे साधतहौं भूमिःक्षितौ स्थानमात्रे इति अभिधानचिंतामणिः ब्रह्मदोष देवदोषादि बड़े पातकनसों छूटिबेको उपाय और नहीं है तासों सीताको नहीं देतो कि सीताके लिये आइकै रामचन्द्र मोहिंमारि हैं तौ सब पातकनसों छूटिकै बिष्णुलोक जैहौं इति भावार्थः ३१ अजहूं कहे अबहूं अर्थ एतेहूपर तौ धरको कहरकरौ ३२ सरस्वती उक्तार्थः यामें प्रहस्तादि मंत्रिनप्रति काकोक्ति है रावण कहत है कि हे अंगद तुम तौ नीकीसिख देतहौ परन्तु प्रहस्तआदि मंत्रिन करिदी

कर्मवश मेरी ऐसीदुर्मति है कि जब रामचन्द्र एती बातैंकरैं तब सीताको देहुं सो ऐसो काहेको करिहैं तासों दुर्मतिकृत हमारी मृत्यु विशेपसों ह्वैचुकी यह निश्चयजान्यो ३३ ॥

अंगद--लंकलाइगयोबलीहनुमंतसंतनगाइयो । सिंधुबांधतशोधिकैनलक्षीरछीटबहाइयो ॥ ताहितोहिंसमेत अंधउखारिहौंउलटीकरौं ॥ आजुराजकहांबिभीषणबैठिहैंतेहितेडरौं३४दोहा॥अंगदरावणकोमुकुटलैकरिउड़चो सुजान॥मनोचल्योयमलोककोदशशिरकोप्रस्थान ३५ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीराम चन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांअंगदरावण संवादवर्णनंनामषोड़शःप्रकाशः १६ ॥

क्षीरकहे जल ३४ । ३५ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां अंगदसम्वादबर्णनंनामषोड़शःप्रकाशः १६ ॥

दोहा ॥ यासत्रहेंप्रकाशमेंलंकाकोअवरोध ॥ शत्रुचमूवर्णनसमरलक्ष्मणकोपरबोध १ अंगदलैवामुकुटकोपरे रामकेपाइ॥ रामबिभीषणकेशिरासिभूषितकियोबनाइ २॥

पद्धटिकाछंद ॥ दिशिदक्षिणअंगदपूर्वनील । पुनि हनूमंतपश्चिमसुशील ॥ दिशिउत्तरलक्ष्मणसहितराम। सुग्रीवमध्यकीन्हेंबिराम ३ सँगयूथपयूथपबलबिलास। पुरफिरतबिभीषणआसपास। निशिबासरसबकोलेतशोध। यहिभांतिभयोलंकानिरोध ४ तबरावणसुनिलंकानिरोध। गणउपजोतनमनपरमक्रोध ॥ रारुयोप्रहस्तह

ठिपूर्बपौंरि । दक्षिणहिमहोदरगयोदौरि ५ भयोइंद्रजीत पश्चिमदुवार । हैउत्तररावणबलउदार ॥ कियोबिरूपा क्षथितिमध्यदेश । करैनारान्तकचहुंधाप्रवेश ६ प्रमिता क्षराछंद ॥ अतिद्वारद्वारमहँयुद्धभये । बहुऋक्षकँगूरन लागिगये ॥ तबस्वर्णलंकमहँशोभभई । जनुअग्निज्वा लमहँधूममई ७ ॥

अवरोध घेरनो औ बिभीषणकरि शत्रु जो रावणहै ताके च- मूको बर्णनहै परमोधु मूर्च्छा १।२ रामचन्द्रके औ लंकाके मध्य में सुग्रीव बिश्रामकीन्हेहैं ३।४।५।६ छंद उपजातिहै ७ ॥

दोहा ॥ मरकतमणिकेशोभिजैसबैकँगूराचारु ॥ आ इगयोजनुघातकोपातककोपरिवारु ८कुसुमबिचित्राछंद॥ तबनिकसोरावणसुतशूरो । जेहिनरजीत्योहरिबलपूरो ॥ तपबलमायातमउपजायो । कपिदलकेमनसंभ्रमछायो ९ दोधकछंद ॥ काहुनदेखिपरैवहयोधा । यद्यपिहैंसिगरेबु धिबोधा ॥ शायकसोअहिनायकसाध्यो । सोदरस्योरघु नायकबांध्यो १० रामहिबांधिगयोजबलंका । रावणकी सिगरीगइशंका ॥ देखिबँधेतबसोदरदोऊ । यूथपयूथत्र सेसबकोऊ ११ स्वागताछन्द ॥ इंद्रजीततेहिलैउरला यो । आजुकाजसबमोमनभायो ॥ कैबिमानअधिरूढ़ तिधाये । जानकीहिरघुनाथदेखाये १२ राजपुत्रयुतना गनिदेख्यो । भूमियुक्ततरुचन्दनलेख्यो ॥ पन्नगारिप्रभु पन्नगसाई । कालचालकछुजानिनजाई १३ दोहा ॥ काल सर्पकेकवलतेछोरतजिनकोनाम ॥ बँधेतेब्राह्मणबचनब शमायासर्पहिराम १४ ॥

कँगूरनम ऋक्ष लपटेहैं तासों मानो मरकत मणिही के कंगूरा शोभितहैं पातक देवदोष ब्रह्मदोषादि ८ हरि इन्द्र ९ बुद्धिबोधाकहे बुद्धियुक्त १० । ११ तेहि रावण इन्द्रजीतके उरमें लगायो १२ भूमिमें युक्त कहे गिरे चंदनवृक्षहू नागयुक्त रहत हैं दुःख युक्त सीता यह कहत भई कि हे पन्नगारि प्रभु हे पन्नगसाई पन्नगज सर्प हैं तिनके अरिकहे भक्षक जे गरुड़हैं तिनके तुम स्वामी हौ यासों या जनायो कि तुम्हारे बाहन जे गरुड़ हैं ते अनेक सर्प भक्षण करत हैं औ पन्नगसाई कहि या जनायो कि तुम सदा सर्पही पर सोयो करतहौ ते तुम नागपाशमें बांधे हौ तौ काल जो समय है ताकी चाल कछू जानि नहीं परति बलाबल समयही नत उन्नतको उन्नत नत करत है इति भावार्थः १३ । १४ ॥

राम-स्वागताछंद ॥ पन्नगारितबहींतहँआये । ब्यालजालसबमारिभगाये ॥ लंकमांझतबहींगइसीता । शुभ्रदेहअवलोकिसुगीता १५ गरुड़-इंद्रबज्राछंद ॥ श्रीरामनारायणैलोककर्त्ता । ब्रह्मादिरुद्रादिकेदुःखहर्त्ता ॥ सीतेशमोकोकछूदेहुशिच्छा॥नान्हीबड़ीईशजोहोइइच्छा १६ ॥ राम ॥ कीबेहुतोकाजसबैसोकीन्हो । आयेइहांमोकहँसुक्खदीन्हो ॥ पांलागिबैकुण्ठप्रभाबिहारी । स्वलोकगोतत्क्षणविष्णुधारी १७ इन्द्रबज्राछन्द ॥ धूम्राक्ष आयोजनुदण्डधारी । ताकोहनूमन्तभयेप्रहारी ॥ जितेअकम्पादिबलिष्ठमारे । संग्राममेंअंगदबीरमारे १८ उपेन्द्रबज्राछन्द ॥ अकम्पधूम्राक्षहिजानिजूझ्यो । महोदरैरावणमंत्रबूझ्यो ॥ सदाहमारेतुममंत्रबादी । रहेकहौ कैअतिहीविषादी १९ ॥

१५ । १६ । १७ छन्द उपजाति है १८ विषादी कहे दुखी उदासीन इति १९ ॥

महोदर ॥ कहैजोकोऊहितवन्तबानी । कहौसोतासों अतिदुःखदानी ॥ गुनोनदांवैबहुधाकुदांवै । सुधीतबैसाधतमौनभावै २० कहोशुकाचार्य्यसुहौंकहौंजू । सदातुम्हारोहितसंग्रहौंजू ॥ नृपालभूमैंबिधिचारिजानों । सुनो महाराजसबैबखानों २१ भुजंगप्रयातछन्द ॥ यहैलोक एकैसदासाधिजानै । बलीबेनुज्योंआपुहीईशमानै । करै साधनाएकपरलोकहीको । हरिश्चन्द्रजैसेगयेदैमहीको २२ दुहूंलोककोएकसाधैसयाने । बिदेहीनज्योंवेदबानीबखाने ॥ नठैलोकदोऊहठीएकऐसे । त्रिशंकैहँसैज्योंभले ऊअनैसे २३ दोहा ॥ चहूंराजकेमैंकहेतुमसोंराजचरित्र ॥ रुचैसोकीजैचित्तमें चिंतहुमित्रअमित्र २४ चारि भाँतिमंत्रीकहे चारिभाँतिकेमंत्र ॥ मोहिंसुनायोशुक्रजूशोधिशोधिसबतंत्र २५ ॥

जो कोऊ तुम्हारे हितकी बात कहतहै तासों कहे ता प्राणीको तुम दुखदा कहे दुखदायक कहतहौ अथवा दुखदानी कहे कटुबाद कहतहौ औ दांव कुदांव कहे समय कुसमयको गुनतनहीं हौ अर्थ जा समयमों जो करिबो उचित है ताको बिचार नहीं करतहौ आपने मनहींकी करतहौ तासों अथवा दांवको नहीं गुनतहौ बहुधा कुदांवही को गुनतहौ तासों सुधि जे सुबुद्धि हैं मन्त्रीजन ते मौनभावको साधत हैं कहे चुप ह्वै रहत हैं२०।२१। २२।२३ मित्र कहे हित अमित्र कहे अहितकी चिंता करो कि कौन चरित्र हमको हित है कौन अहितहै अथवा सब मंत्रिन मन्त्र कह्यो है तामें मित्र अमित्रकी चिंताकरौ कि कौन हितकी

कहत है औ कौन अहितकी कहत है २४ चारि भांतिके मन्त्री हैं औ चारि भांतिके मन्त्र होत हैं तन्त्र कहे सिद्धान्त अथवा तन्त्र शास्त्र २५ ॥

छप्पै ॥ एकराजकेकाजहतैंनिजकारजकाजे । जैसेसुरथनिकारिसबैमंत्रीसुखसाजे ॥ एकराजकेकाजआपनेकाजबिगारत । जैसेलोचनहानिसहीकविबलिहिनिवारत॥यकप्रभुसमेतअपनोभलोकरतदाशरथिदूतज्यों । यकअपनोप्रभुकोबुरोकरतरावरोपूतज्यों २६ दोहा ॥ मंत्र जोचारिप्रकारके मंत्रिनकेजेप्रमान ॥ बिषसेदाड़िमबीजसे गुड़सेनींबसमान २७ चंद्रवर्त्मछंद ॥ राजनीतिमततत्त्वसमुझिये । देशकालगुणियुद्धअरुझिये ॥ मंत्रिमित्रअरिकोगुणगहिये । लोकलोकअपलोकनबहिये२८॥

दाशरथिदूत अंगद औ हनुमान् सीताको देहु तुमसों इत्यादि सन्धिकी बातैं कहि आपने प्रभुको काज साधत हैं औ युद्धमें आपनो मरण घातादि बचाइ आपनो हित करतहैं औ रावरो पूत युद्धकराइ आपनो औ तुम्हारिउ मृत्यु कियो चाहतहैं २६ बिषसे खातहूमें कटु औ गुण जिनको मृत्युदायकहै औ दाड़िम बीजसे खातहूमें मधुर औ गुण जिनको पुष्टिकर्त्ता है औ गुड़से खातमें मधुर गुण दुखदहै औ नींबसे खातमें कटु गुण सुखदहै २७ कहूं यहपाठहै कि और बिचार तत्त्व सब लहिये तौउपजाति चन्द्रवर्त्म छन्दजानो २८ ॥

रावण ॥ चारिभांतिनृपतातुमकहियो । चारिमंत्रिमतमैंमनगहियो ॥ राममारिसुरएकनबाचिहैं । इन्द्रलोकबसोवासहिरचिहैं २६ प्रमिताक्षराछंद ॥ उठिकैप्रहस्तसजिसेनचले । बहुभांतिजाइकपिपुंजदले ॥ तबदौरि

नीलउठिमुष्टिहन्यो । असुहीनगिरयोभुवमुंडसन्यो ३० बंशस्थछंद॥ महाबलीजूझतहीप्रहस्तको।चल्योतहींरा वणमीडिहस्तको ॥ अनेकभेरीबहुदुन्दुभीबजैं । गयंद क्रोधांधजहांतहांगजैं ३१ सनीरजीमूतनिकासशोभहीं । बिलोकिजाकोसुरसिद्धक्षोभहीं ॥ प्रचंडनैऋत्यसमेतिदे खिये । सप्रेतमानोमहकाललेखिये ३२ ॥ बिभीषण--ब संततिलकछंद ॥ कोदंडमंडितमहारथवंतजोहै । सिंहध्व जासमरपंडितवृन्दमोहै ॥ महाबलीप्रबलकालकरालने ता । समेघनादसुरनायकयुद्धजेता ३३ ॥

रामचन्द्रको मारिकै औ सुर देवता एकौ न मोसों बचि हैं अर्थ सबदेवनहूको मारिकै इन्द्रलोक में बसोबासरचि हैं सरस्वती उक्तार्थः रामचन्द्र जे हैं ते हमैं मारिकै एकोदेवता न बचिहैं कहे बाकी रहिहैं सब देवतनको बसोबास इन्द्रलोकमें रचि हैं अर्थ हमारे भयसों इन्द्रलोकसों भागिकै देवता कंदरादिकन मों जाइ बसेहैं तिन्हैं निर्भय करिकै इन्द्रलोकमें बसाइ हैं २९ छंद उपजाति है ३० । ३१ सनीरकहे सजल जीमूत कहे मेघनके निकास सदृश शोभित क्षोभहीं कहे डरातहैं नैऋत्य राक्षस ३२ रामचन्द्र पूँछयो है इति कथा शेषः नेताकहे दण्डकर्त्ता ३३ ॥

जोव्याघ्रवेषरथव्याघ्रनिकेतधारी । संरक्तलोचनकु बेरविपत्तिकारी ॥ लीन्हेत्रिशूलसुरशूलसमूलमानो । श्री राघवेंद्रअतिकायवहैसोजानो ३४ जोकांचनीयरथशृंग मयूरमाली । जाकीउदारउरषट्मुखशक्तिशाली ॥ स्वर्धा मधामहरकीरतिकैनजानी । सोईमहोदरकोदरबंधुमा नी ३५ जाकेरथाग्रपरसर्पध्वजाबिराजै । श्रीसूर्यमंडल बिडंबनज्योतिसाजै ॥ आखंडलीयवपुजोतनत्राणधारी ।

देवांतकैसोसुरलोकविपत्तिकारी ३६ जोहंसकेतुभुजदंड विषङ्गधारी । संग्रामसिंधुबहुधाअवगाहकारी ॥ लीन्हीं छँड़ाइजेहिदेवअदेवबामा । सोईखरात्मजबलीमकराक्ष नामा ३७ ॥

त्रिशूल कैसोहै सुर जे देवताहैं तिनको मानो समूलकहे पूर्ण शूल कहे मृत्युहै । शूलोस्त्रीरोग आयुधे मृत्युके तनयोगेषु इति मेदिनी ३४ कांचनीय रथकहे सुवर्णको रथ ताके शृंगमें अग्रभागमें मयूरनकी माला पंगति लगी है अर्थ मयूरध्वजीहै जाकी शक्ति बरछी षणमुख जे स्वामिकार्त्तिक हैं तिनके उदारकहे बड़े उरमें शाली कहे लगी है स्वः जो स्वर्ग है ताके धाम धाम कहे घर घरको हर कहे हरणहार है अर्थ लूटनहारहै ३५ श्री सूर्यमण्डल को विडंबन कहे निन्दक ज्योति कहे तेजको साजत है रथ अथवा आप अथवा तन त्राण अखण्डलीय कहे इंद्रको ३६ । ३७ ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ लगेस्यंदनैंबाजिराजीविराजैं । जिन्हैंबेगकोपौनकोबेगलाजैं ॥ भलेस्वर्णकीकिंकिणीयूथ बाजैं । मिलेदामिनीसोंमनोमेघगाजैं ३८ पताकाबन्यो शुभ्रशार्दूलशोभै । सुरेंद्रादिरुद्रादिकोचित्तक्षोभै ॥ लसै छत्रमालाहँसैसोमभाको । रमानाथजानोंदशग्रीवताको ३९ पुरद्वारछांड्योलडैआपुआयो । मनोद्वादशादित्यको राहुधायो ॥ गिरिग्रामलैलैहरिग्राममारै । मनोपद्मिनी पत्रदंतीबिहारै ४० ॥

दामिनी सम स्वर्ण किंकिणी के यूथ कहे समूह हैं मेघ सम रावणके श्यामघोड़े हैं यथा बाल्मीकीये । रथंराक्षसराजस्यनररा जोददर्शह ॥ कृष्णबाजिसमायुक्तंयुक्तंरौद्रेणवर्चसा ३८ शार्दूल कहे व्याघ्र ३९ पुर रक्षाकेलिये मेघनादादिको पुर द्वारमें छांड़ि कै आप लरिबे को आयो है यथा बाल्मीकीये रावणोक्तिः ॥ तत

स्सरक्षोधिपतिर्महात्मारक्षांसितान्याहमहाबलानि । द्वारेषुचार्या गृहगोपुरेषुसुनिर्वृतास्तिष्ठतुनिर्विशंकाः ॥ इहागतंमासहितंभवद्भिर्वनौकसःछिद्रमिदंविदित्वा । शून्यांपुरींदुःप्रसहांप्रमथ्यप्रधर्षयेयुःसहसासमेताः । विसर्जयित्वासचिवांस्ततस्तान्गतेषुरक्षस्स यथानियोगे ॥ सोगिरिजे पर्वतहैं तिनके ग्रामकहे समूह लैलैकै हरिजे बानरहैं तिनको समूह मारतहै तिन गिरि समूहनमें रावण पद्मिनी कमलिनी पत्रमें दंतीसम बिहार कौतुक करत है अर्थागिरि ग्राम रावणकी देहमें दंतीकी देह में पद्मिनीपत्र सम लागतहै ४० ॥

सवैया ॥ देखिबिभीषणकोरणरावणशक्तिगहीकररोषरईहै । छूटतहीहनुमंतसोबीचाहिपूंछलपेटिकैडारिदईहै ॥ दूसरिब्रह्मकिशक्तिअमोघचलावतहीहाइहाइभईहै। राख्योभलेशरणागतलक्ष्मण फूलिकैफूलसिओढ़िलईहै ४१ ॥ सृग्विणीछन्द ॥ जोरहींलक्ष्मणैलैनलाग्योजहीं। मुष्टिछातीहनूमंतमार्‍योतहीं ॥ आशुहीप्राणकोनाशसोंह्वैगयो। दंडद्वैतीनिमेंचेतताकोभयो ४२ मरहट्टाछन्द ॥ आयोडरिप्राणनिलैधनुबाणनिकपिदलादियोभगाइ । चढ़िहनूमंतपररामचन्द्रतबरावणरोंक्योजाइ ॥ धरिएकबाणतबसूतछत्रध्वजकाटेमुकुटबनाइ।लागेदूजोशरछूटिगयोवरुलंकगयोअकुलाइ ४३ दोधकछन्द ॥ यद्यपिहैअतिनिर्गुणताई । मानुषदेहधरेरघुराई ॥ लक्ष्मणरामजहींअवलोक्यो ॥ नैननतेनरह्योजलरोक्यो ४४ राम–वारकलक्ष्मणमोहिंबिलोको । मोकहँप्राणचलेतजिरोंको ॥ हौंसुमिरौंगुणकेतिकतेरे । सोदरपुत्रसहायकमेरे ४५ ॥

फूलिकै प्रसन्नह्वैकै ४१। ४२ हनुमान्सों प्राणनको डरिकै कपिदलको भगायो जाय तहां हनुमान् क्यों नगये तौ जबरावण वा ठौरसों भागो तब लक्ष्मणकोलैकै हनुमान् रामचंद्रके पास गयेइतिकथाशेषः ४३॥ ४४ ॥ ४५ ॥

लोचनबाहुतुहींधनुमेरो । तूबलबिक्रमवारकहेरो ॥ तूबिनहौंपलप्राणनराखों। सत्यकहौंकछुभूठनभाखों४६ मोहिंरहीइतनीमनशंका। देननपाइबिभीषणलंका ॥ बोलिउठौप्रभुकोप्रणपारो। नातरुहोतहैमोमुखकारो४७ बिभीषण–सुंदरीछंद ॥ मैंबिनऊंरघुनाथकरौअब। देवतजोपरिदेवनकोसब ॥ औषधिलैनिशिमेंफिरिआवहि । केशवसोसबसाथजिआवहि ४८ सोदरसूरकोदेखतहीमुख। रावणकेपुरवैंसिगरेसुख ॥ बोलसुनेहनुमंतकरयोप्रन। कूदिगयोजहँऔषधिकोबन ४९ ॥

बलकहे सैन बिक्रम पराक्रम ४६ प्रभु जो मैं हौं ताको बिभीषणको लंकदान रूपी जो प्रण है ताको पारो कहे पूर्ण करौ ४७ हे रघुनाथ जो मैं बिनऊं कहे बिनती करतहौं सो तुमकरो हे देव सब मिलिकै परिदेवन जो बिलापहै ताको छोंड़िदेहु ॥ बिलापः परिदेवनमित्यमरः ४८ प्रथम कह्यो है कि औषधलैकै निशिही में फिरि आवै ताकोहेतु कहतहैं सोदर जे लक्ष्मण हैं सूर जे सूर्य हैं तिनको मुख देखतही रावण के सिगरे सुख पुरवैंकहे पूरित करिहैं अर्थ सूर्योदयभये लक्ष्मण न जीहैं या प्रकारको बिभीषण को बोलसुनिकै निशिही में हम औषधि ल्याइ हैं हनुमन्त यह प्रणकरयो ४९ ॥

रागषट्पद ॥ करिआदित्यअदृष्टनष्टयमकरौंअष्टवसु। रुद्रनबोरिसमुद्रकरौंगंधर्वसर्वपसु ॥ बलितअबेरकुबेरबलिहिगहिदेउइन्द्रअब। बिद्याधरनिअविद्यकरौबिनसिद्ध

सिद्धसब ॥ निजह्वोहिदासिदितिकीअदितिअनिलअनलमिटिजाइजल । सुनिसूरजसूरजउवतहीकरौंअसुरसंसारबल ५० भुजंगप्रयातछंद ॥ हन्योबिघ्नकारीबलीबीरवामें । गयोशीघ्रगामीगयेएकयामें ॥ चल्योलैसबैपर्बतैकैप्रणामैं । नजान्योविशल्यौषधीकौनतामैं ५१ ॥

रामचन्द्र सुग्रीव सों कहतहैं कि जो सूर्य उदय को प्राप्तहोइँ तौ जेते देवता हैं तिनकी सबकी आयुर्दशा करों औ देवतन के शत्रु जे असुर दैत्य हैं तिनको बल संसार भरेमें करिदेउँ अर्थ तीनों लोकमें दैत्यनको राज्य करिदेउँ दिति दैत्यनकी माता अदिति देवतनकी माता ५० वामकहे कुटिल ऐसा जो हनुमान् के सूर्योदय पर्यंत बिलँबाइबेके लिये कपट तपस्वी को रूपधरे मगमें बैठो कार्यको विघ्नकारी कालनेमि राक्षसहै ताको मारिकै एक यामें पहरैगये कहे बीते औषधि पासगयो बिशल्यौषधी कहे विशल्य करनी औषधी ५१ ॥

लसैंऔषधीचारुभोव्योमचारी । कहैंदेखियोंदेवदेवाधिकारी ॥ पुरीभौमकीसीलियेशीशराजै । महामंगलर्थीहनूमंतगाजै ५२ लगीशक्तिरामानुजैरामसाथी । जड़ैकैगयेज्योंगिरैहैमहाथी ॥ तिन्हैंज्याइबेकोसुनोप्रेमपाली । चल्योज्वालमालीहिलैकीर्तिमाली ५३ किधौंप्रातहीकालजीमेंविचाऱ्यो । चल्योअंशुलैअंशुमालीसँहाऱ्यो ॥ किधौंजातज्वालामुखीजोरलीन्हे । महामृत्युजामेंमिटैहोमकीन्हे ५४

वा पर्वतमें ज्वलित औषधि सोहती हैं ताको लै हनुमान् व्योमचारी आकाश मगगामी भयो देव औ देवाधिकारी गंधर्वादि अथवा देवदेव जे इंद्रहैं तिनके अधिकारी जे देवता हैं अर्थ औष-

धिनकी रक्षामें जिन देवतनको इंद्र अधिकार दियो है अथवा देवदेव इंद्र औ मंत्रादि में अधिकारी जे देवता हैं ते कहतहैं कि महामंगल कल्याणके अर्थी जे हनुमान् हैं ते भौम जे मंगल हैं तिनकी पुरीहीको लिये जात हैं अनेक मंगलसम ज्वलित औषधी वृंद हैं मंगल पद श्लेष है कल्याण औ भौमको नाम है ५२ तिन्हैं कहे तिन लक्ष्मण के ज्याइबेको औषधिन के ज्वालाकी माली कहे समूह हैं जामें सो ज्वाल माली कहावै ऐसा जो पर्वतहै ताहीको लैकै चल्यो है अर्थ ज्वलित हैं औषधिवृंद जामें ऐसो जो औषधि पर्वत द्रोणा चल है ताही को लियेजातहैं अथवा ज्वालकीहै माली समूह जामें ऐसीजो विशल्य करनी औषधिहै ताहीको लैचल्योहै अथवा ज्वालमाली जे अग्निहैं तिनको लैचल्योहै कीर्तिमाली हनुमान्को विशेषणहै ५३ औ कि प्रातहि कहे सूर्योदय होतही लक्ष्मणको कालकहे मृत्यु जीमें विचारयोहै सो अंशुमालीजे सूर्यहैं तिनको सँहारि कहे मारिकै सूर्यके अंशुकहे किरण अथवा प्रभाव लिखे जातहैं जामें सूर्योदय नहोइ अंशुःप्रभा किरणयोरिति मेदिनी ५४॥

विनापत्रहैंयत्रपालाशफूले । रमैंकोकिलालीभ्रमैंभौंरभूले ॥ सदानंदरामैंमहानंदकोलै । हनूमंतआयेबसंतैमनोलै ५५ मोटकछंद ॥ ठाढ़ेभयेलक्ष्मणमूरिछिये । दूनीशुभशोभशरीरलिये ॥ कोदण्डलियेयहबातररै । लंकेशनजीवतजाइघरै ५६ श्रीरामतहींउरलाइलियो । सूंघ्योशिरआशिषकोरिदियो ॥ कोलाहलयूथपयूथकियो । लंकाहहलीदशकंठहियो ५७ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्राजिद्विरचितायांलक्ष्मणमूर्छामोचनंनामसप्तदशःप्रकाशः १७॥

यत्रजा पर्वतमें औषधी वृन्दनहीं हैं विना पत्रफूले पलाशके

वृक्षहैं याप्रकारभूले कोकिलनकी आली पंगती रमतीहैं औ भवँर जामें भ्रमैंकहे घूमत हैं बसंत कैसोहै कि यत्रकहे जामें विनापत्र पलाशफूलिरहे हैं औ जामेंकोकिलाली रमतीहैं औ भूलेकहेउन्म त्ततासों देहकी सुधि बिसराये भवँर भ्रमतहैं यामें श्लेषोत्प्रेक्षा है सो सदानन्दजे रामहैं तिनके महानन्दके लिये हनुमान् मानो बसंतही ल्याये हैं बसंतको देखि सबके आनन्द होत है तासों अथवा जैसे राजन के यहां आनन्दार्थमाली बसंत बनाइकै लैजात है तैसे मानो रामचन्द्रके महा आनंदको हनुमान् बसंतको रूपही बनाइ ल्याये हैं ५५ मूरिजो औषधिहै ताको छियें कहे छुयेसों ५६ । ५७ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांसप्तदशःप्रकाशः १७ ॥

दोहा ॥ अष्टादशेप्रकाशमेंकेशवदासकराल । कुम्भकर्णकोबर्णिबोमेघनादकोकाल १ दोधकछंद ॥ रावणलक्ष्मणकोसुनिनीके । छूटिगयेसबसाधनजीके ॥ ऐसुतमंत्रिबिलंबनलावो । कुम्भकरण्णहिंजाइजगावो २ राक्षसलक्ष्मणसाधनकीने । दुन्दुभिदीन्हबजाइनवीने ॥ मत्त अमत्तबड़ेअरुबारे । कुञ्जरपुञ्जजगावतहारे ३ आइ जहींसुरनारिसभागीं । गावनबीणबजावनलागीं ॥ जागिउठोतबहींसुरदोषी । क्षुद्रक्षुधाबहुभक्षणपोषी ४ ॥

कुम्भकर्णको औ मेघनादको कालकहे मृत्युबर्णिबो १ साधन कहे जय सिद्धके उपाय २ साधन कहे जगाइबेको यत्न ३ यह महादेवको बररह्योहै कि देवांगणनको गान सुनि कुंभकर्ण अकालहूमें जागिहै तासों जब देवांगणा आइ गावनलागीं तबजाग्यो यथाहनुमन्नाटके । निद्रां तथापिनजहौ यदिकुंभकर्णः श्रीकंठल-

द्धवर किन्नरकामिनीनाम् । गंधर्वयक्ष सुरसिद्धवरांगणानामा कर्णयगतिममृतंपरमंविनिद्रः ४ ॥

नाराचछंद ॥ अमत्तमत्तदंतिपंक्तिएककौरकोकरै । भुजापसारिआसपासमेयवोपसंहरै ॥ बिमानआसमान केजहांतहांभगाइयो । अमानमानसोदिवानकुम्भकर्ण आइयो ५ रावण ॥ समुद्रसेतुबांधिकैमनुष्यदोइआइ यो । लियेकुचालिबानरालिलंकअंकलाइयो ॥ मिल्यो बिभीषणौनमोहिंतोहिंनकहूडरेउ । प्रहस्तआदिदैअनेक मंत्रिमित्रसंहरेउ ६ करोसोकाजआशुआजाचित्तमेंजोभा वई । असुख्यहोइँजीवजीवशुक्रसुख्यपावई ॥ समेतिरा मलक्ष्मणैसोबानरालिभक्षिये । सकोशमंत्रिमित्रपुत्रधाम ग्रामरक्षिये ७ ॥

मानगर्व दीवानसभा ५ बानरालिको लंकके अंक कहे गोद में लायो है अर्थ लंकके मध्यमें प्राप्तकियो है अथवा जो पुरी काहू कबहूं नहीं घेरयो ताको घेरिकै अंक कहे कलंकलायो है यामें रामचन्द्रके बलको वर्णनहै निंदानहींहै तासों सरस्वती उक्तार्थ नहीं कियो ६ ऐसो कार्य्यकरो जासों देवतनको बिघ्नहो जीव जे वृहस्पति हैं ते असुख्यहोइँ औ हमारो जयहोइ शुक्र सुख पावैं सरस्वती उक्तार्थः राम लक्ष्मण समेत या बानरालि को भक्षिये कहे भक्षण करि सकियतहै अर्थ नहीं भक्षणकरि स-कियत काहेते अनेक नर बानर हम भक्षणकरे हैं इनको सेतु बंधनादि कर्म देखिकै हमारो जीव अतिडरो है ताते कोश कहे खजाना सहित मंत्र्यादिकनको रक्षिये कहे रक्षण करि सकित है अर्थ नहीं रक्षणकरि सकियत अर्थ ये हमको सबको मारिग्रा-मादि लेन चाहत हैं ७

कुम्भकर्ण—मनोरमाछन्द ॥ सुनियेकुलभूषणदेवबि

दूषण । बहुआजिबिराजिनकेतुमपूषण ॥ भवभूपजेचारिपदारथसाधत । तिनकोकबहूंनहिंबाधकबाधत ८ पंकजबाटिकाछन्द ॥ धर्मकरतअतिअर्थबढ़ावत । सन्ततहितरतिकोविदगावत ॥ संततिउपजतहीनिशिबासर। साधतनमनमुक्तिमहीधर ९ ॥

बहुतै जेहैं आकहे समरन के बिराजी कहे शोभनहार अर्थ अनेक समरकर्त्ता तिनके मध्यमें तुम पूषण कहे सूर्यसमहौ कहूं तमपूषणपाठ है तहां अर्थ कि बहुत जे आजि बिराजी संग्राम कर्त्ता हैं तिनके तमपूषण कहे तमको पूषण समहौ अर्थ जैसे सूर्य तमको नाश करत हैं तैसे तुम संग्रामकर्त्ता जे शत्रुभट हैं तिन्हैं नाश करतहौ चारिपदार्थ अर्थ धर्म काम मोक्ष ८ चारों पदार्थनके साधिबेको समय कहतहैं कि महीधर जे राजाहैं ते सन्तत कहे निरंतरधर्महू करतहैं औ सन्तत अति अर्थ द्रव्यहूको बढ़ावतहैं अथवा धर्मको करत अर्थ बढ़ावतहैं अर्थ सतरीतिसों अर्थ बढ़ावत हैं औ सन्तत हितहैं रतिस्त्री भोग अर्थ काम साधन जिनको ऐसे कोबिद गावतहैं अर्थ ये तीनों एकही समयमों साध्यहैं औ जब सन्तति कहे पुत्र उत्पन्न भयो तब निशि औ बासर तन औ मन करिकै मुक्तिको साधन करत हैं आज तक तुम अर्थ धर्म कामको साधन कीन्हो अब तुम्हारो पुत्र समर्थ है ताको सब राज्यभार सौंपि सीताको रामचन्द्रको दैकै हेतुकरि मुक्ति साधन करो इति भावार्थः ९ ॥

दोहा ॥ राजाअरुयुवराजगजप्रोहितमंत्रीमित्र । कामीकुटिलनसेइयेकृपणकृतघ्नअमित्र १० घनाक्षरी ॥ कामीबामीझूठक्रोधीकोढ़ीकुलद्वेषीखलुकातरकृतघ्नीमित्रदोषीद्विजद्रोहिये । कुपुरुषकिंपुरुषकाहलीकलहिक्रूरकुटिलकुमन्त्रीकलहीनकेशौठोहिये ॥ पापीलोभीझूठअ

धन्नावरोवधिरगूंगाबौनाअविवेकीहठीछलीनिरमोहिये । सूमसर्वभक्षीदैवबादीजो कुबादीजड़अपयशी ऐसोभूमि भूपतिनसोहिये ११ ॥

ये पांचों राजादि इन दूषण सहितहोहिं तौ सेवनके योग्य नहीं होत अथवा यथाक्रमसों जानो राजाकामी काहे ते उचितानुचित बिचार बिना सुन्दरी देखि प्रजाजनकी स्त्रिनकोगहि मँगावतहैं तासों देश उजारिहोत है औ युवराज कुटिल कहेते मन्त्र्यादिकनसों बिरोध राज्य विध्वंस करतहैं औ पुरोहित कृपणकहे दरिद्र काहेते विवाहादि समयमों द्रव्यलोभबश वेदविहित घटयादि बिताइ अमंगल करत हैं अथवा शत्रुनों कछु द्रव्य पाइ मारणादि के लिये राशिनाम बनावत हैं औ मन्त्री कृतघ्नी कहेते स्वामीको कृत बिसारि शत्रुसों मिलि राज्य छोड़ावैं औ मित्र अमित्र कहे हृदयमों भलो न चाहै काहेते कछु गूढ़मन्त्र कहौ सो शत्रुपास पहुंचावै ये पांचो इन पांचहुन दोष सहित सेवन योग्य नहीं होत यासों या जनायो कि तुम राजाहौ तुम्हैं ऐसो काम साधन न चाहिये जासों ईश्वर जे रामचन्द्रहैं तिनकी स्त्रीको हरिल्यायेहौ १० वामी बाममार्गी कुपुरुषकहे पुरुषार्थ रहित किं पुरुष कहे कुछहै पुरुषकी आकृति जिनकी काहली रोगी दैववादी कहे जे भाग्य भरोसे रहतहैं याहूमें या जनायो कि तुम को ऐसो काम साधन न चाहिये ११ ॥

निशिपालिकाछन्द ॥ बानरनजानुसुरजानुशुभगाथहैं। मानुषनजानुरघुनाथजगनाथहैं ॥ जानकिहिदेहुकरिनेहुकुलदेहुसो । आजुरणसाजुपुनिगाजुहँसिमेहुसो १२ रावण--दोहा ॥ कुंभकरणकरियुद्धकैसोइरहौघरजाइ ॥ वेगिबिभीषणज्योंमिल्योगहौशत्रुकेपाइ १३ मंदोदरी ॥ इन्द्रजीतअतिकायसुनिनारांतकसुखदाय ॥ भैयनसोंप्र

भुभुकतहैंक्योंनकहौसमुझाय १४ मंदोदरी--चंचलाछंद ॥ देवकुंभकर्णकेसमानजानियेन आन। इन्द्रचन्द्रविष्णुरुद्रब्रह्मकोहरेउगुमान ॥ राजकाजकोकहैजोमानियेसोप्रेमपालि।कैचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि १५॥

कुल औदेहसों नेह करिकै जानकीको देहु यह कहि या जनायो कि न देहौ तौ रामचन्द्र तुम्हारे कुलके सहित तुम्हारो नाश करिहैं १२ कारिकहे करौ १३ भुकत कहे रिस करतहै भैयनसों बहुबचनकहि या जनायो कि एक भाई बिभीषण समुझावन लाग्यो ताको लातमारयो अब वैतेही कुम्भकर्ण सों रिस करतहैं १४ देवरावणको सम्बोधनहै जो बात कुम्भकर्ण कहतहै सो राजके काजको हितको कहतहै ताहि प्रेमको पालिकै कहे हितकरिकै मानिये अर्थ सीताको दैकै रामचन्द्रसों हित करौ काहेते काल जो समयहै ताकी जो कुचालिकहे प्रतिकूलता है तामें चालि कहे चाल युद्धादि उत्कट कर्मरहित विचारयुक्त निजहित साधक कार्य्य कृत्यकै पूर्व नाहींचल्यो को अब नाहीं चलत अर्थ जे पूर्वभये हैं तिन चल्यो है अब जे होतजातहैं ते चलतहैं जब आपनो समय टेढ़ो होतहै तब शत्रु मिलनादि कार्य करि गौंसाधिबो अनुचित नहीं है इतिभावार्थः ॥ अथवा कालकी जो कुचालिहै ताकी जो चालिकहे चालु है अर्थ जब आपनो काल प्रतिकूल भयो ता समयमों जो कार्य साधक उचित चाल है १५ ॥

बिष्णुभाजिभाजिजातछोड़िदेवताअशेष । जामदग्निदेखिदेखिकैंनकीननारिवेष ॥ ईशरामतेबचेबचेकबानरेशबालि । कैंचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि १६ बिजया ॥ रामहिंचोरिनदीन्हींसियाजितकेदुखतोतपलीलिलियोहै। रामहिंमारनदीन्होंसहोदररामहिं आवनजानदियोहै॥ देहधस्योतुमहींलगिआजुलौंरामहिंके

पियज्यायेजियोहै । दूरिकरयोद्विजताद्विजदेवहरेहीहरे आततायीकियोहै १७ ॥

कालकी कुचालिमें चालुकैं चलीहै सो कहत हैं देवदानवनके युद्धमें देवतनके सहायको विष्णु जातहैं परंतु जब जानतहैं कि दैत्यनको समय सहायकहै हमको कुटिलहै हम इनसों न जीतिहैं तब यशकी सुद्धिभुलाइ आपने प्राणनकी रक्षाकेलिये भागि जातहैं या प्रकारकैयो बारकी कथा पुराणनमें प्रसिद्धहै यासों या जनायो कि विष्णु सों बली कोऊ नहींहै तेऊसमय बिचारिगौं साधि जातहैं औ जामदग्नि जे परशुरामहैं तिनको देखिकै कैं क्षत्रीनारिको बेष नहीं धरयो यासोंया जनायो कि जब परशुराम को समयरह्यो तब बड़े२ क्षत्री समय बिचारि नारिको बेष धरि जीव बचायो औ तेई परशुराम ताही क्षत्री वंशमें उत्पन्न जे राम चंद्रहैं तिनको समय बली विचारि आपनो धनुषबाणदै हतुकरयो तासों हेईश रामचन्द्रको समय बलीहै सो सीताको दैकै हतुरूपी जो बचिबेको उपायहैतासोंरचो काहेते बालिबलीरहे तिनबचिबेको उपाय न कियोते न बचे मारेहीगये चौथोतुमको अर्थ पाछेके छन्दमें कह्योहै १६ आवनजान दियो अर्थ युद्धमण्डलमें आवन दियो फेरि युद्धमण्डलसों फिरि जानदियो स्त्रीहर्त्तादिक छःआततायी कहावतहैं यथाभागवते ॥ अग्निदोगरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः। क्षेत्रदारापहश्चैव षडेते आततायिनः ॥ आततायीब्राह्मणहूँहोइ ताके बधसों ब्रह्मदोष नहीं है तासों १७ ॥

दोहा ॥संधिकरोबिग्रहकरोसीताकोतोदेह ॥ गनौनपियदेहीनमें पतिव्रताकीदेह १८ रावण— त्रिजया ॥ हौंस तुछाड़िमिलौंमृगलोचनिक्योंक्षमिहैंअपराधनये । नारि हरीसुतबांध्योतिहारेहौंकालिहिसोदरसौंगहिये ॥ वामन मांग्योत्रिपैगधरादक्षिणाबलिचौदहलोकदये।रंचकबैरहु

तोहरिबश्चकबांधिपतालतऊपठये १९ दोहा ॥ देवरकुम्भकरणसोहरिअरिसोंसुतजाइ ॥ रावणसोंप्रभुकौनकोमंदोदरीज्यराइ २० ॥

पतिव्रता जे स्त्री हैं तिनकी देह स्वरूप देहिनमें न गनौ १८ अपराधन ये कह्यो तासों बलिको प्राचीन बैर जानो अर्थ हिरण्यकशिपुकेरंचक बैरसों बलिको बांधिपताल पठायो १९।२० ॥

चामरछन्द ॥ कुम्भकर्णरावणैंप्रदक्षिणाहिदैचल्यो । हाइहाइकैरह्योअकाशआशुहीहल्यो॥मध्यक्षुद्रघंटिकाकिरीटसंगशोभनो । लक्षपक्षसोंकलिन्द्र इन्द्रकोचह्योमनो २१ नाराच ॥ उडेंदिशादिशाकपीश कोरिकोरिश्वासहीं । चपैंचपेटपेटबाहुजानुजंघसोंतहीं ॥ लियेहैंओरऐंचिऐंचिबीरबाहुबातहीं । भखेतेअन्तरिक्षरिक्षलक्षलक्षजातहीं २२ कुम्भकर्ण—भुजंगप्रयातछंद ॥ नहौंताडुकाहौंसुबाहैनमानो। नहौंशंभुकोदंडसांचोबखानो ॥ नहौंतालमालीखरैजाहिमारो । नहौंदूषणैंसिंधुसूधोनिहारो २३ सुरीआसुरीसुन्दरीभोगकर्णै।महाकालकोकालहौंकुम्भकर्णै॥ सुनौरामसंग्रामकोतोहिबोलों । बढ्योगर्वलंकाहिआयेसोखोलों २४ ॥

लक्ष बिधिको जो पक्ष कहे बिरोधहै तासों अर्थ बडे बिरोधसों अथवा लक्षबिधिको जो पक्ष कहे बलहै तासों अर्थ बडे बलसों इहां लक्ष शब्द अधिकार्थमों है ॥ पक्षोमासार्द्धके पार्श्वगृहे साध्यविरोधयोः । केशादेःपरतोवृंदेबले सखिसहाययोः इतिमेदिनी २१ जे लक्षन ऋक्ष भयसों अन्तरिक्षको जातहैं तिन्हैं बांहके बात बायुसों खैंचिकै भखे खाइडारयो २२ द्वैछन्दको अन्वय एकहै खरै कहे खर राक्षसै सूधो निहारो अर्थ कपिनकोसूधो

समुझिकै मारन बेधनकरयो सरस्वती उक्तार्थः ॥ मेरीओर इन सम शत्रु दृष्टिसों न निहारो सूधोकहे कृपादृष्टिसों निहारो अथवा मोको सूधोकहे शत्रुभाव रहित आपनो दासनिहारो सरस्वती उक्तार्थः ॥ लङ्कामें आयेते जो तुम्हारे गर्व बढ्यो है ताहि खोलौं कहे प्रसिद्धकरों आशय कि जब मोको मारिहौ तब तुम्हारोबलादिको जोगर्व है सो सब प्राणिनमों प्रसिद्धै है २३ । २४ ॥

उठ्योकेशरीकेशरीजोरछायो । बलीबालिकोपूतलै नीलधायो ॥ हनूमन्तसुग्रीवशोभैंसभागे । डसैंडाससे अंगमातंगलागे २५ दशग्रीवकेबंधुसुग्रीवपायो । चल्यो लंकमेंलैभलेअंकलायो ॥ हनूमन्तलातैहत्योदेहभूल्यो । छुट्योकर्णनासाहिलैइन्द्रफूल्यो २६ सँभारयोघरीएकदू मैमरूकै । फिरयोरामहीसामुहेंसोगदालै ॥ हनूमंतजूपूंछ सोंलाइलीन्हो । नजान्योंकबैसिंधुमेंडारिदीन्हो २७ ॥

केशरनाम बानर केशरीकहे सिंहके जोरसों छायो उठ्यो अर्थ सिंहसम गर्जिकै शीघ्र चल्यो २५ इन्द्रसम सुग्रीव फूल्यो सुखीभयो २६ । २७ ॥

जहींकालकेकेतुसोंताललीनो । करयोरामजूहस्तपादादिदीनो ॥ चल्योलोटतैघाइबक्कैकुचाली । उड्योमुंड लैवाणज्योंशुंडमाली २८ तहींस्वर्गकेदुन्दुभीदीहबाजें । करयोपुष्पकीवृष्टिजैदेवगाजें ॥ दशग्रीवशोकग्रस्योलोकहारी । भयोलंकहीमध्यआतंकभारी २९ दोहा ॥ तबहींगयोनिकुंभिलाहोमहेतइन्द्रजीत ॥ कह्योतहांरघुनाथ सोंमतोविभीषणमीत ३० चंचरी ॥ जोरिअंजुलिकोविभीषणरामसोंविनतीकरी । इंद्रजीतनिकुंभिलागयोहोमकोरिसजीभरी ॥ सिद्धहोमनहोइजौलगिईशतौलगिमा

रिये। सिद्धहोहिप्रसिद्धहैयहसर्वथाहमहारिये ३१ दोहा॥ सोईवाहिहतैकिनरबानरऋक्षजोकोइ ॥ बारहवर्षक्षुधा तृषानिद्राजीतेहोइ ३२ चंचरीछंद॥ रामचन्द्रबिदाकरो तबबेगिलक्ष्मणबीरको । त्योंबिभीषणजामवंतहिसंग अंगदधीरको ॥ नीललैनलकेशरीहनुमंतअंतकज्योंच ले। बेगिजाइनिकुंभिलाथलयज्ञकेसिगरेदले ३३ ॥

तालवृक्षआदिपदते आयुधजानो बज्के कहे मुखै मुण्डमाली महादेव २८ । २९ दोहाक्षेपकहै निकुंभिला राक्षस के देवतन को स्थान बट वृक्षसों युक्तहै तामें यज्ञकरि इन्द्रजीत अजयहोत रह्यो है ३० । ३१ । ३२ । ३३ ॥

जामवंतहिमारिद्वैशरतीनिअंगदकोदियो । चारिमा रिबिभीषणैहनुमंतपंचसुबेधियो ॥ एकएकअनेकबानर जाइलक्ष्मणसोंभिरचो । अंधअंधकयुद्धज्योंभवसोंजु रच्योभवहीहरच्यो ३४ गीतिकाछंद ॥ रणइंद्रजीतअजी तलक्ष्मणअस्त्रशस्त्रनिसंहरै । शरएकएकअनेकमारतबुं दमंदरज्योंपरै ॥ तबकोपिराघवशत्रुकोशिरबाणतत्क्षण करधरचो । दशकंधसंध्यहिकोकियोशिरजाइअंजलिमें पस्यो ३५ रणमारिलक्ष्मणमेघनादहिस्वच्छशंखबजाइ यो । कहिसाधुसाधुसमेतइंद्रहिदेवतासबआइयो॥ कछु मांगियेबरबीरसत्वरभक्तिश्रीरघुनाथकी। पहिराइमालबि शालअर्चहिकैगयेसबसाथकी ३६ कलहंसछंद ॥ हतिइ न्द्रजीतकहँलक्ष्मणआये । हँसिरामचंद्रबहुधाउरलाये॥ सुनिमित्रपुत्रशुभसोदरमेरे । कहिकौनकौनसुमिरौंगुणते रे ३७ दोहा ॥ नींदभूखअरुप्यासकोजोनसाधतेबीर ॥

सीतहिक्योंहमपावतेसुनिलक्ष्मणरणधीर ३८ इतिश्री मत्सकललोकलोचनचकोर चिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायामिंद्रजिद्वधवर्णनोनामाष्टादशः प्रकाशः १८ ॥

लक्ष्मणसों कैसे जायभिरयो भय जो डरहै सोही कहे हृदय सों हरयो कहे दूरिभयो है जाके ऐसो जो गर्वादि करिके अंध कहे आंधरो अंधक नाम दैत्य है सो जैसे भवजे महादेव हैं तिनसों युद्धमें जुरयो है अर्थ जैसे महादेवसों निर्भय अंधकलरयो तैसे लक्ष्मणसों इन्द्रजीत लरतभयो ३४ एक एक कहे एकको परस्पर अनेक शरमारतहैं अर्थ लक्ष्मण मेघनादको अनेक शरमारत हैं मेघनाद लक्ष्मणको मारत हैं तेशर दुहुनके अंगनमें मंदर में जलबुंद सम परतहैं अर्थ अति बलीन तासों कछू पीड़ा नहीं करत उद्धरयो काढ्यो ३५ साथकी कहे जो अर्चाकीबिधि संग मों लैआयेरहैं कहूं शुभगाथकी पाठ है तौ शुभगाथ कहे लक्ष्मण ३६ । ३७ । ३८ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकाया मष्टादशःप्रकाशः १८ ॥

दोहा ॥ उनईसयेंप्रकाशमेंरावणदुःखनिधान ॥ जूझैगोमकराक्षपुनिक्कैहैदूतबिधान १ रावणजैहैगूढ़थल रावरलुटैबिशाल ॥ मंदोदरीकढ़ोरिबोअरुरावणकोकाल २ मोटनकछंद ॥ देख्योशिरअंजलिमेंजबहीं । हाहा करिभूमिपरयोतबहीं ॥ आयेसुतसोदरमंत्रितबै । मंदोदरित्योंतियआईसबै ३ कोलाहलमंदिरमांझभयो । मानोप्रभुकोउड़िप्राणगयो ॥ रोवैदशकण्ठविलापकरै । कोऊनकहूंतनधीरधरै ४ रावण–दण्डक ॥ आजुआदित्य

जलपवनपावकसबलचन्दआनंदमयतापजगकोहरौं । गानकिन्नरकरहुनृत्यगंधर्वकुल यक्षविधिलक्षउरयक्षकर्द मधरौं ॥ ब्रह्मरुद्रादिदैदेवत्रैलोककेराजकोजायअभिषेकइन्द्रहिकरौं । आजुसियरामदैलंककुलदूषणहिंयज्ञको जायसर्वज्ञविप्रनबरौं ५ महोदर-तोटक ॥ प्रभुशोकतजौ तनधीरधरो॥सकशत्रुबधोसो॥बिचारकरो ॥ कुलमेंअबजीवतजोरहिहै । सबशोकसमुद्रहिसोबहिहै ६ ॥

दुःखको निधान कहे बड़ो दुःख १ रावरे स्त्रिनके रहिबे को घर कढ़ोरिबो कहे केशादि पकरि निर्दय खैंचिबो २ । ३ । ४ इन्द्रजीतके मरे रावण बड़े दुःखसों संयुक्तह्वै ऐसे बिलाप बचन कहत भयो कि जो इन्द्रजीत मरयो तो मोहूं मरतहीहौं तासों मेरे डरसों जे बातें जेजन नाहीं करतरहे ते सब भयको छोड़ि कै आपने आपने भाये काजकरौ कपूर औ अगुरु औ कस्तूरी औ कंकोल मिलाइ यक्षकर्दम होतहै सो यक्षनको अतिप्रिय है अंगनमें लेपकरतहैं ॥ कर्पूरा गुरुकस्तूरी कंकोलैर्यक्षकर्दमः ॥ औ सीताराम मिलिकै कुलदूषण बिभीषणको लंकादैकै सर्वज्ञ ब्राह्मणनको यज्ञको निवरो कहे अवकाश देहिं ५ अति दुःखमें धीर्य्यके बचन कहिबो उचित है तासों महोदर मन्दोदरी धीर धराइबेके बचन कहत हैं जा उपायसों शत्रु बधोसक कहे सकै अर्थ शत्रु मारयो जाय सो बिचारकरौ सबके मरेको जो शोक है ताके समुद्रमें बह्यो करिहै ६ ॥

मंदोदरी-चौपाई ॥ सोदरजूभयोसुतहितकारी। कोगहिहैलंकागढ़भारी ॥ सीतहिदैकैरिपुहिसँहारो। मोहतिहै विक्रमबलभारो७रावण॥तुमअबसीतहिदहुनदेहू । बिनसुतबंधुधरौंनहिंदेहू ॥ यहितनजोतजिलाजहिरैहौं । बनबसिजाइसबैदुखसैहौं ८ मकराक्ष-भुजंगप्रयातछन्द ॥

कहाकुम्भकर्णोकहाइन्द्रजीतै । करैसोइबोबैकरैयुद्धभी तै ॥ सुजौलौंजिऔहौसदादासतेरो । सियाकोसकैदैसु नोमन्त्रमेरो ९ ॥

यह जो तुम्हारो भारी लङ्कागढ़है ताहि कौन गहिहै कहे लै सकिहै अर्थ लङ्कागढ़ शत्रुके लीबे लायक नहीं है बिक्रम कहे यत्न बलकहे शक्तिको मोहति है कहे मूर्च्छित करति है अर्थ तुम्हारो यत्न औ बल निष्फलहोतहै सो याहीके दुःखप्रभावसों ७ । ८ भीत युद्ध कहि या जनायो कि बाण वेधनादि भयसों अन्तर्द्धान ह्वै युद्धकरि हैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ वैआपने बलसों सबको मारि सीताको लैहैं इति व्यंग्यार्थः ९ ॥

महाराजलंकासदाराजकीजै । करौंयुद्धमेरीबिदावेगि कीजै ॥ हतौंरामस्योबंधुसुग्रीवमारौं । अयोध्याहिलैराज धानीसुधारौं १० बिभीषण–वसंततिलकछंद ॥ कोदंड हाथरघुनाथसँभारिलीजै । भागेसबैसमरयूथपदृष्टिदीजै ॥ बेटाबलिष्ठखरकोमकराक्षआयो । संहारकालजनुकालक रालधायो ११ सुग्रीवअंगदबलीहनुमन्तरोक्यो । रोक्यो रह्योनरघुबीरजहींबिलोक्यो ॥ मार्योबिभीषणगदाउर जोरठेली । कालीसमानभुजलक्ष्मणकण्ठमेली १२ गा ढ़ेगहेप्रबलअंगनिअंगभारे । काटेकटैनबहुभांतिनका टिहारे ॥ ब्रह्मादियोवरहिअस्त्रनशस्त्रलागै । लैहीचल्यो समरसिंहहिजोरजागै १३ गाढ़ांधकारदिविभूतललीलि लीन्हो । ग्रस्तास्तसानहुंशशीकहँराहुकीन्हो ॥ हाहा दिशब्दसबलोगजहींपुकारे । बाढ़ेअशेषअंगराक्षसके बिदारे ॥ श्रीरामचन्द्रपगलागतचित्तहर्षै । देवाधिदेव मिलिसिद्धनपुष्पवर्षै १४ ॥

सरस्वती उक्तार्थः ॥ काकोक्तिसों कहत है कि हे महाराज अब लङ्कामें तुम सदा राज कियाकरौ महाराज पद कहि या जनायो कि मन्त्रको त्यागकरि प्रभुतासों अपने मनहीकी बात करचो औ जैसे कुम्भकर्णादिकनको सबको बिदाकियोहै तैसे मेरी हू बिदाकरौहौं युद्धकरौं जाइ औ तुम्हारी आज्ञा के सदृश जैसे कुम्भकर्णादिकन बन्धु सहित राम औ सुग्रीवको मारि राजधानी अयोध्यामें सुधारचो है तैसेहौंहू बन्धुसहित राम औ सुग्रीव को मारिकै राजधानी अयोध्यामें सुधारौं जैसे सबमरिगये हैं तैसे हौंहू मरौंजाइ इति व्यंग्यार्थः १०।११ विभीषण गदामारचो ताको उरके जोरसों ठेलिकै लक्ष्मण के कण्ठमें काले सर्पके समान भुजा मेलतभयो १२ । १३ । १४ ॥

दोहा ॥ जूझतहीमकराक्षकेरावणअतिदुखपाइ ॥ सत्वरश्रीरघुनाथपैदियोबसीठपठाइ १५ सुन्दरीछंद ॥ दूतहिदेखतहीरघुनायक । तापहँबोलिउठेसुखदायक ॥ रावणकेकुशलासुतसोदर । कारजकौनकरैंअपनेघर १६ दूत--विजयछंद ॥ पूजिउठेजबहींशिवकोतबहींबिधिशुक्रवृहस्पतिआये । कैविनतीमिसकश्यपकेतिनदेवअदेव सबैबकसाये ॥ होमकिरीतिनईसिखईकछुमन्त्रदियोश्रुतिलागिसिखाये । हौंइतकोपठयोउनकोउतलैप्रभुमंदिर मांझसिधाये १७॥

कि शशीको दिवि आकाशते भूतलमें पाइकै अर्थ स्थान च्युत अबल जानिकै स्वाभाविक शत्रुतासों गाढ़ो कहे बहुत जो अंधकार है ताने लीलिलियो है औ कि राहुने ग्रस्तास्तकीन्हो है शशीसम लक्ष्मण हैं अंधकार औ राहुसम मकराक्षहै जब मकराक्षको शस्त्रास्त्रसों मरण ना जान्यो तब हाथनसों कसिकै गाढ़े जो गहेरहै ताही समय शीघ्रतासों लक्ष्मणजी बाढ़कहे स्थूल

कायह्वैके राक्षसके अशेष संपूर्ण अंगबिदारे कहे बिदीर्ण कीन्हे अर्थ फारिडारे ऐसी शीघ्रतासों लक्ष्मणजू आपने अंगस्थूल किये कि मकराक्ष जो हस्तग्रहण करेरहै सो हस्तग्रहण ना छूटन पायो तासों वक्षस्स्थल फाटिगयो अधिदेव गंधर्बादि औ आदिदेव पाठ होइ तौ ब्रह्मादिजानौ यह छंद छः चरणको है १५।१६ सरवर कहे शीघ्रबसीठ दूत पूंछौ कि रावण कौन कारज करत है ताको जवाब रावणके प्रभावको देखावत चतुरतासों दियो जब रावण देव औ अदेव सबके नाश करिबेके लिये शिव जे महादेव हैं तिनको पूजन करिकै उठे हैं कि ताहीक्षण अतिडर मानिकै बिधि ब्रह्मा औ शुक्र औ वृहस्पति ये तीनों आइकै कश्यप के ब्याजसों विनती करिकै देव औ अदेव सब बकसाये कहे मांगिलीन्हें अर्थ ब्रह्मादिकन आइ यह कह्यो कि कश्यप यह बिनती करयोहै कि देव औ अदेवनको हमको बकसिदेव अर्थ इनको नाश ना करौ इहां अदेवपदते जे देवतनते अतिरिक्त प्राणी हैं दैत्य मनुष्यादिते सब जानौ यासों या जनायो कि जब रावण शिवकी पूजाकरत है तब संहार करिबेकी शक्ति प्राप्ति होति है औ देव अदेवनको बकसाइकै कछूनई होमकी रीति सिखायो औ श्रुतिकानमें लागिकै कछूमन्त्र दीन्हों याके आगे मोहिं या ओर पठायो औ ब्रह्मादिकनको लैकै प्रभु जे रावणहैं ते मंदिरको गये कहिबेको हेतु या जामें रामचन्द्र जानैं किहम प्रतिकोपसों रावण सबदेव औ अदेवको नाशकरिवेको चाह्यो तिनको बकसाइ ब्रह्मादिकन कछु हमारिही हानिहेत होम औ मंत्र सिखायो ह्वैहै १७॥

दूत-- सन्देश ॥ शूर्पणखाजोबिरूपाकरीतुमतातेकियोहमहूंदुखभारो । बारिधिबन्धनकीन्होंहुतोतुममोसुत बन्धनकीन्होंतिहारो ॥ होइजोहोनीसोहोईरहैनमिटैजिय कोटिबिचारबिचारो । दैभृगुनंदनकोपरशारघुनन्दनसी तहिलैपगुधारो १८ दोहा ॥ प्रतिउत्तरदूतहिदियोयह

कहिश्रीरघुनाथ ॥ कहियोरावणहो द्विजबमंदोदरिकेसाथ १९ रावण–संयुताछंद ॥ कहिधौंविलम्बकहाभयो । रघुनाथपैजबतूगयो ॥ केहिभांतितूअवलोकियो । कहु तोहिउत्तरकादियो २० ॥

सीताको हरिकै तुमको दुखदीन्हों अथवा सीताही को भारी दुख दीन्हों परशुराम तौ धनुषबाण दियो है इहां रावण परशा मांग्यो तहां या जान्यो कि रावण सुन्यो है कि रामचन्द्र परशुरामको हथियार छोरि लीन्हों है औ परशुरामको मुख्यहथियार परशाहीहै तासों परशा जान्यो १८ रामचन्द्र मन्दोदरीकी बुद्धि की स्तुति बिभीषण सों सुन्योहै तालिये मन्दोदरीके साथकह्यो है अर्थ जो मंदोदरी इन बचननको सुनि है तौ समय बिचारि ग्लानिदै रावणको लरिबेको पठाइहै अथवा जा मंदोदरी सहित रावण दुखपावै अथवा कुंभकर्णादि के मरेसों रावण भीत है संधिके लिये दूतपठायो है ऐसा न होइ कि आपही शरणमों चलिआवै जो हमकोशरणागत रक्षकत्वधर्म प्रतिपालन करि रावणको रक्षतही बनै ता लिये जो मंदोदरी इनबचननको सुनि है तौ समय बिचारि ग्लानिदै लरिबेहीके लिये पठाइहै संधिके लियेना पठाइ है १९।२० ॥

दूत-दण्डक ॥ भूतलकेइन्द्रभूमिबैठेहुतेरामचन्द्रमारिचकनकमृगछालहिबिछायेजू । कुम्भहरकुम्भकर्णनासाहरगोदशीशचरणअकंपअक्षअरिउरलायेजू ॥ देवांतकनारांतकत्योंहीमुसक्यातबीर बिभीषणबैनतनकानरुखबायेजू ।मेघनादमकराक्षमहोदरप्राणहरबाणत्योंबिलोकतपरमसुखपायेजू २१ रामसंदेश-बिजयछंद॥ भूमिदईभुवदेवनकोभृगुनंदनभूपनसोंबरलैकै । बामनस्वर्गदियोमघवैसोबलीबलिबांधिपतालपठैकै ।संधिकिबातनकोप्रति

उत्तरआपुनहींकहियेहितकैकै । दीन्हींहैलंकबिभीषणको अबदेहिंकहातुमकोयहदैकै २२मंदोदरी--मालिनीछंद ॥ तबसबकहिहारेरामकोदूतआयो । अबसमुझिपरीजोपुत्रभैयाजुझायो ॥ दशमुखसुखजीजैरामसोंहौंलरौंयों ॥ हरिहरसबहारेदेविदुर्गालरीज्यों २३ ॥

रावण पूछेउ कि केहिभांति तू रामचन्द्रको देख्यो है ताको उत्तर यामें दियो है कुम्भहर औ कुम्भकर्ण नासाहर सुग्रीव अकंप औ अक्षको अरि हनुमान् शत्रुहैं सत्रहें प्रकाशमें कह्यो है कि ॥ जिते अकंपादि बलिष्ठभारे । संग्राममें अंगद बीरमारे ॥ यामें बिरोधहोतहै तासों या जनायो दूसरो अकंपरह्यो ताको हनुमान् मारयोहै यथावाल्मीकीये ॥ सचतुर्दशभिर्बाणैर्निशितैर्देहदारणैः । निर्बिभेदमहाबीरोहनुमन्तमकंपनः १ ततोवृक्षंसमुत्पाटयकृत्वा वेगमनुत्तमम् । शिरस्यभिजघानाशुराक्षसेन्द्रमकम्पनम् २ यथापद्मपुराणे ॥ जघानहनुमान्भूयोचतुर्थेह्न्यकम्पनम् । औदेवांतक औ नारांतकके अन्तक अंगद औ मेघनाद औ मकराक्ष औ महोदरके प्राणहर लक्ष्मण यह अति निर्भय समय स्वरूप जानौ २१ वरकहे वलसोंलैकै याप्रकार अवतार धरिधरि हम तीन्यो लोक बांटिदियो अब तुमको यह जो परशाहै ताको दैकै कहा कौन स्थानदेहिं जामें तुमरहौ परशुरामकी कथाकहि याजनायो कि जिन सहस्त्रार्जुन तुम्हैं बांधिराख्यो तिनको हम क्षणमेंमारयो बामनकथाकहि या जनायो कि जिनबलिकी दासिनपाताललों तुम्हैं गहिकै निकारि दीन्हों तिनको बांधिकैहम पाताल पठायो तैसे तुमहूंको मारि बिभीषणको लंकादेहैं २२ शुम्भ निशुम्भादिके युद्धमें हरिहरादिसबहारिगयेहैं तबदुर्गालरिकैमारयोहै यहकथा मार्कण्डेय पुराणमें प्रसिद्धहै २३ ॥

रावण ॥ छलकरिपठयोतोपावतोजोकुठारै । रघुपति

बपुराकोधावतोसिंधुपारे ॥ हतिसुरपतिभर्ताबिष्णुमाया बिलासी । सुनहिंसुमुखितोकोल्याबतोलक्षिदासी २४ ॥ चामरछंद ॥ प्रौढ़रूढ़िकोसमूढ़गूढ़गेहमेंगयो । शुक्रमंत्रशोधिशोधिहोमकोजहींभयो ॥ वायुपुत्रबालिपुत्रजामवंतधाइयो । लंकमेंनिशंकअंकलंकनाथपाइयो २५ मत्तदंतिपंक्तिबाजिराजिछोरिकैदई । भांतिभांतिपक्षिरानिभाजिभाजिकैगई ॥ आसनेबिछावनेबितानतानतूरियो ॥ यत्रतत्रछत्रचारुचौंरचारुचूरियो २६ भुजंगप्रयातछंद । भगीदेखिकैशंकिलंकेशबाला । दुरीदौरिमंदोदरीचित्रशाला ॥ तहांदौरिगोबालिकोपूतफूल्यो । सबैचित्रकीपुत्रिकादेखि भूल्यो २७ ॥

सिंधुके पारै धावतो कहे भागि जातो सुरपति इन्द्र तिनके भर्त्ता रक्षक औ मायाके विलासी जे बिष्णुहैं तिनको हतिकहे मारिकै तोको लक्षि जो लक्ष्मीहैं ताको दासील्यावतो यासों या जनायो कि रामचन्द्र जो करतहैं सो सब परशाहीके बलसों करतहैं यामें रामचन्द्रकी शक्ति कछु नहीं है २४ प्रौढ़ जोधृष्टता है ताकीरूढ़िकहे परिपक्वता ताकोसमूढ़ कहे समूहअर्थअतिधृष्टऐसा जो रावणहै सो यज्ञकरिबेको गूढ़ गेहमों जातभयो मन्दोदरी की ऐसी कटुबातैं सुनि कछू लाज न कियो तासों अतिधृष्टकह्यो ॥ समूढःपुंजितेभुग्न इतिमेदिनी ॥ सो शुक्रके मन्त्रको शोधिकहे शुद्धोच्चार करिकै होमकेअर्थ जब उद्यतभयो तब निशंक कहे शंकाते रहितहै अंक हृदय जिनको ऐसे जेबायु पुत्रादि हैं ते धावत भये तब लंकनाथके जे अंककहे राजचिह्न हैं छत्र चामरादि तिन्हैंपायो कहे देख्यो तब जान्यो कि याही मन्दिरमें रावण है है तालिये या प्रकारको उपद्रव करयो सो आगे कहत हैं २५ तान डोरी २६ । २७ ॥

गहैंदौरिजाकोतजैंताकिताको । तजैंजादिशाकोभजैंबामताको ॥ भलीकैनिहारीसबैचित्रसारी । लहैसुंदरीक्योंदरीकोबिहारी २८ तजैदृष्टिकोचित्रकीसृष्टिधन्या । हँसीएकताकोतहींदेवकन्या ॥ तहींहाँसहीदेवकन्यादिखाई । गहीशंकिकैलंकरानीबताई २९ ॥

फूल्यो कहे आनन्दितजा पुतरीको अंगद दौरिकै गहत हैं ताको पुतरी जानितज्जतहैं औ अंगद जा दिशाको तजतहैं ता दिशाको बाममंदोदरीभजतिहै अथवा जादिशाको अर्थ जादिशाकी पुतरिनको अंगद गहतहैं ता दिशामें अंगदको ताकिकै देखिकै ता दिशाको तजैकहे छोडतिहै अर्थ तादिशाकी पुतरिन को छोड़ति है औ जा दिशाको अंगद तजतहैं ता दिशाको मन्दोदरी भजै कहे प्राप्तहोतिहै अथवा भागतिहै दरी कन्दरा २८ धन्याकहे अतिनिपुण जो चित्रकी सृष्टि है सो अंगदकी दृष्टि को तजैकहे त्याग करतिहै अर्थ मन्दोदरी पास दृष्टि नहींजान देति मन्दोदरीको नहीं देखनदेति इति अथवा धन्या जोचित्रकी सृष्टि है तामें मन्दोदरीकी दृष्टिको तजै कहे त्याग करतिहै अर्थ आपनेपास नहीं आवन देति यह मन्दोदरी है येतो ज्ञान दृष्टिमें नहीं होत इति भावार्थः ॥ या प्रकार कौतुक देखिकै अंगदको एक देवकन्या हँसतभई सो हांसीसों देवकन्या अंगदको देखाइ कहे देखिपरी तब ताहीको मन्दोदरी जानि अंगद गहीं तब शंकिकै ताने लंकरानी जो मन्दोदरीहै ताको बतायो कहूँ तहीं शंकिकै पाठहै २९ ॥

सुआनीगहेकेशलंकेशरानी । तमश्रीमनोसूरशोभानिशानी ॥ गहेबांहऐंचैंचहूंओरताको । मनोंहंसलीन्हेमृणालीलताको ३० छुटीकंठमालालरैंहारटूटे । खसैंफूलफूलेलसैंकेशछूटे ॥ फटीकंचुकीकिंकिणीचारुछूटी । पुरीकामकीसीमनोंरुद्रलूटी ३१ बिनाकंचुकीस्वच्छबक्षोजराजैं ।

किधौंसांचहूश्रीफलैशोभसाजैं ॥ किधौंस्वर्णकेकुंभलाव
ण्यपूरे। बशीकर्णकेचूर्णसंपूर्णपूरे३२मनोंइष्टदेवैंसदाइष्ट
हीके। किधौंगुच्छहैकामसंजीवनीके॥ किधौंचित्तचौगान
केमूलसोंहैं । हियेहेमकेहालगोलाबिमोहैं ३३ सुनीलंक
रानीनकीदीनबानी । तहींछांड़िदीन्हींमहामौनमानी ॥
उठ्योसोगदालैयदालंकबासी। गयेभागिकैसर्बशाखाबि
लासी ३४ मंदोदरी--दोहा ॥ सीतहिदीन्होदुखवृथासां
चोदेख्योआजु॥ करैजोजैसीत्योंलहैकहारंककहराजु३५॥

सूर्यकी शोभानसों सानी मानों तम श्रीअन्धकारकी श्रीशोभा है तमश्री समबारहैं सूरशोभासम सिंदूरहै इहां सिंदूरनहीं कह्यो सो उपमानते उपमेयको ग्रहणकियो अथवा सूरशोभा सम अंगदहैं मृणाललितासमबाहु हैं हंससम अंगदादि बानरहैं ३० लावण्यसुन्दरता ३१ सदादुष्ट जो स्वामी रावण है ताके इष्टदेवैहैं अर्थ जैसे सबप्राणी इष्टदेवको हृदयमों बसाये रहतहैं तैसे रावण के मनमों सदाबसत हैं गुच्छपुष्प गुच्छकाम संजीवनी लतासम मन्दोदरीहै औकि चित्तजे मनहैं तिनको जो चौगानखेलहै ताको मूलकहे जर अर्थ कारण जो मन्दोदरी को हियोकहे बक्षस्स्थलहै तामेंसोहतहैं कहे सुवर्णके हालगोला कहे गेंदाहैं अर्थ जैसे हाल गोलानको खेलनहार आपनी आपनीओर खैंचतहैं तैसे देखन हारनके चित्त इनकुचनको आपनी आपनी ओर खैंचतहैं मूल-कहि या जनायो कि मनुष्य चौगान खेलखेलत हैं चित्तनहीं खेलत सो याहीते चित्तनको चौगानखेल नयोउत्पन्नभयो है सो जानो अथवा चित्त चौगान के मूल हालगोला नहींको विशेषण है चौगान खेल प्रसिद्धहै ३२ मौनहै मन्त्रको जो जपतहै ताको छोड़िदीन्हों मानी कहे गर्बी यदा कहे जब ३३। ३४। ३५॥

रावण—त्रिजयछन्द ॥ कोबपुराजोमिल्योहैबिभीषण

हैकुलदूषणजीवैगोकोलौं । कुम्भकरणमर्यो मघवारि पुतौरीकहानडरौंयमसोलौं । श्रीरघुनाथकेगातनिसुंदरि जानैनतूकुशलीतनुतोलौं । शालैसबैदिगपालनकेकररा वणकेकरबालहैजोलौं ३६ चामरछन्द ॥ रावणैचलेचले तेधामधामतेसबै । साजिसाजिसाजशूरगाजिगाजिकैत बै॥दीहदुन्दुभीअपारभांतिभांतिबाजहीं । युद्धभूमिमध्य क्रुद्धमत्तदंतिराजहीं ३७चंचरीछन्द ॥इन्द्रश्रीरघुनाथको रथहीनभूतलदेखिकै । बेगिसारथिसोंकहेउरथजाहिलै सुविशेखिकै ॥ तूणअक्षयबाणस्वच्छअभेदलैतनत्राण को । आइयोरणभूमिमेंकरिअप्रमेयप्रमाणको ३८ को टिभांतिनपौनतेमनतेमहालघुतालसै । बैठिकैध्वजअग्र श्रीहनुमन्तअंतकज्योंहँसै ॥ रामचन्द्रप्रदक्षिणाकरिदक्ष कैजबहींचढ़े।पुष्पबर्षिबजायदुंदुभिदेवताबहुधाबढ़े ३९

तनु कहे रंचकहू कुशली न जानै सरस्वती उक्तार्थः हे सुन्द रिश्रीरघुनाथके गातनि करिकै मेरे तनको तू कुशली न जानै अर्थ मोको रामचन्द्र मारिहैं ३६ । ३७ तूण कहे तर्कस अक्षय कहे जाते बाण न चुकैं ३८ लघुता शीघ्रता हनुमान् ध्वज अग्र में यासों चढ़ै कि यहरथ कछू राक्षसन माया न कियो होइबढ़े फूले अर्थ आनन्दितभये ३९ ॥

रामकोरथमध्यदेखतक्रोधरावणकेबढ़्यो । बीसबाहुन कीशरावलिब्योमभूतलसोंमढ़्यो ॥ शैलङ्कसिकतागये सबदृष्टिकेबलसंहरे । ऋक्षबानरभेदितक्षणलक्षधाक्षत नाकरे ४० सुन्दरीछन्द ॥ बाणनसाथबिधेसबबानर । जायपरेमलयाचलकीधर ॥ सूरजमण्डलमेंयकरोवत । एकअकाशनदीमुखधोवत ४१ एकगयेयमलोकसहेदुख

एककहैंभवभूतनसोंरुख ॥ एकतिसागरमांझपरेमरि ।
एकगयेबड़वानलमेंजरि ४२ मोटनकछन्द ॥ श्रील
क्ष्मणकोपकरयोजबहीं । छोड़योशरपावककोतबहीं ॥
जारयोशरपञ्जरछारकरयो । नैऋत्यनकोअतिचित्तड
रयो ४३ दौरेहनुमंतबलीबलसों । लैअंगदसंगसबैदल
सों॥मानोंगिरिराजतजेडरको॥घेरेचहुंओरपुरंदरको४४॥

सिकताबारू दृष्टिके बल कहे पराक्रम अर्थ अति बाणांधकारमों काहूको कछु देखि नहीं परत छतना कहे मधुमक्षिकादिकनके छाता जामें मधु रहत है ४० । ४१ । ४२ नैऋत्यराक्षस ४३पुरंदर इन्द्रसम रावणहै गिरि राजनके सदृश अंगदादि हैं ४४॥

हीरकछंद ॥ अंगदरणअंगनसबअंगनमुरझाइकै ।
ऋक्षपतिहिअक्षरिपुहिलक्षगतिबुझाइकै ॥ बानरगण
बाणनसनकेशवजबहींमुरयो । रावणदुखदावनजगपाव
नसमुहेजुरयो ४५ ब्रह्मरूपकछन्द ॥ इन्द्रजीतजीतआ
निरोकियोसुबाणतानि । छोड़दीनबीरबानिकानकेप्रमाण
आनि ॥ शिवप्रतापकाढ़िचापचर्मबर्ममर्मछेदि । जातभो
रसातलैअशेषकण्ठमालभेदि ४६ दण्डकछन्द ॥ सूरज
मुसलनीलपट्टिशपरिघनलजामवन्तआसिहनूतोमरप्रहा
रेहैं । परसासुखेनकुंतकेशरीगवायशूलबिभीषणगदाग
जभिंदिपालतारेहैं ॥ मोगराद्विबिदतीरकटराकुमुदनेजा
अंगदशिलागवाक्षविटपबिदारेहैं । अंकुशशरभचक्रद
धिमुखशेषशक्तिबाणतिनरावणश्रीरामचन्द्रमारेहैं ४७
दोहा ॥ द्वैभुजश्रीरघुनाथसोंबिरचेयुद्धविलास ॥ बाहुअ
ठारहयूथपनिमारैकेशवदास ४८ ॥

रण अंगनकहे रणभूमि मध्यमें अंगदको सब अंगनसों मुरझाइकै कहे मूर्च्छित करिकै अर्थ सबांग शिथिल करिकै लक्षकहे निशानाकी गतिसों वुझाइकै कहेसमुझाइकै अर्थनिशाना सम बेधिकै भौ और जो बानर गणनसों जबमुरे तौ नरामचन्द्रके समुहें जुरयो अर्थ लरन लग्यो ४५ बीरबानि कहे बीरस्वभावसों चर्म ढाल बर्म बख्तर मर्म मर्मस्थल ४६ सूरज सुग्रीव शेष लक्ष्मण ४७ श्रीरामचन्द्र सों धनुबाणसों लरत है तासों एक हाथ वाणमें एकधनुषमें लग्योहै तासों द्वैभुज जानो ४८ ॥

गंगोदकछंद ॥ युद्धजोईजहांभांतिजैसीकरैताहिताहीदिशारोकिराखैतहीं । आपनेअस्त्रलैशस्त्रकाढ़ैसवैताहिकेहूकहूंघावलागैनहीं ॥ दौरिसौमित्रलैबाणकोदण्डज्योंखण्डखण्डीध्वजाधीरछत्रावली । शैलशृंगावलीछोड़िमानोउड़ीएकहीबेरकैहंसबंशावली ४९ त्रिभंगीछंद ॥ लक्ष्मणशुभलक्षणबुद्धिबिचक्षणरावणसोंरिसछोड़िदई । बहुबाणनिछंडैजेशिरखंडैतेफिरखंडैशोभनई ॥ यद्यपिनरपंडितगुणगणमंडितरिपुबलखंडितभूलिरहे । तजिमनबचकायकसूरसहायकरघुनायकसोंबचनकहे ५० ठाढ़ोरणगाजतकेहुनभाजततनमनलाजतसबलायक। सुनिश्रीरघुनंदनमुनिजनबंदनदुष्टनिकंदनसुखदायक । अबटरैनटारयोमरैनमारयोहौंहठिहारयोधरिशायक। रावणनहिंमारतदेवपुकारतहवैअतिआरतजगनायक ५१ ॥

ज्यों धनुषगुण शैलशृंग सदृश रावण शिरहैं हंस बंशावली सदृश श्वेत छत्रहे ४९ रिपुबल करिकै खंडितहैं रण पांडित्यादि जाके ऐसे जे लक्ष्मणहैं ते भूलिरहे कहे आश्चर्य युक्त ह्वै रहे हैं तासों मनसा वाचा कर्मणा रावणसों लरिबो तजिकै ५० मैंतन भौ मनसों लज्जित होतहौं ५१ ॥

राम--छप्पै ॥ जेहिशरमधुमंडमरदिमहासुरमर्दनकीन्हे उ । मारेहुकर्कशनर्कशंखरुतिशंखजोलीन्हेउ ॥ निष्कंटकसुरकटककरयोकैटभबपुखंड्यो । खरदूषणत्रिशिराकबंधतरुखंडविहंडयो ॥ कुंभकर्णज्यहिसंहरयोपलनप्रतिज्ञातेटरौं । तेहिबाणप्राणदशकंठकेकंठदशौखंडितकरौं ५२ दोहा ॥ रघुपतिपठयोआशुहीअसुहरबुद्धिनिधान ॥ दशशिरदशहूदिशनकोबलिदैआयोबान ५३ मदनमनोरमाछन्द ॥ भुवभारहिसंयुतराकसकोगणजाइरसातलमेंअनुराग्यो । जगमेंजयशब्दसमैतिहिकेशवराजाविभीषणकेशिरजाग्यो । मयदानवनंदिनिकेसुखसोंमिलिकैसियकेहियकोदुखभाग्यो । सुरदुंदुभिसीसँगजाशररामकोरावणकेशिरसाथहिलाग्यो ५४ मंदोदरी--बिजयछन्द ॥ जीतिलियेदिगपालशचीकेउसासनदेवनदीसबसूकी । बासरहूनिशिदेवनकीनरदेवनकीरहैसंपतिठूकी । तीनिहुंलोकनकीतरुणीनकीबारीबँधीहुतोदंडदुहूकी । सेवतश्वानशृगालसोरावणसोवतसेजपरेअबभूकी ५५ ।

कर्कश कठोरतरु खण्डसप्तताल ५२ असुहर प्राणहर ५३ मयदानवनन्दिनि मन्दोदरी सहोक्ति अलंकारहै ५४ सदारावण के भयसों स्वर्गसों भागे जे इन्द्रहैं तिनके बिरहसोंशची इन्द्राणी के जे उष्ण उसास हैं तिनसों देवनदी आकाश गंगा सबसूकी कहे सूखिगई ५५ ॥

राम-- तारकछंद ॥ अबजाहुबिभीषणरावणलैकै । सकलत्रसबंधुक्रियासबकैकै ॥ जनसेवकसम्पतिकोशसँभारो । मयनंदिनिकेसिगरेदुखटारो ५६ इतिश्रीमत्सकललो

कलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरावणबधवर्णननामैकोनविंशःप्रकाशः ॥

जन सेवककहे सेवक जन अथवा जन बंधुजन सेवकचाकर सम्पत्ति अश्व गज वस्त्रादि कोश खजानो ५६ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांएकोनविंशःप्रकाशः १९ ॥

दोहा ॥ याबीसयेंप्रकाशमें सीतामिलनबिशेखि॥ब्रह्मादिककीअस्तुतीगमनअवधपुरिलेखि १ प्रागबरणिअरुवाटिकाभरद्वाजकीजानि ॥ ऋषिरघुनाथमिलापकहिपूजाकरिसुखमानि २ श्रीराम--तारकछंद॥जयजायकहोहनुमंतहमारो।सुखदेवहुदीरघदुःखबिदारो॥सबभूषणभूषितकैशुभगीता।हमकोतुमबेगिदिखावहुसीता ३ हनुमंतगयेतहँहींजहँसीता । तबजायकहीजयकीसबगीता ॥ पगलागिकह्योजननीपगुधारो । मग चाहतहैंरघुनाथतिहारो ४ सिगरेतनभूषणभूषितकीने । धरिकैकुसुमावलिअंगनवीने ॥ द्विजदेवनिबंदिपढ़ीशुभगीता । तबपावकअंकचलीचढ़िसीता५ भुजंगप्रयातछन्द ॥ सबस्नासबैअंगशृंगारसोहैं।बिलोकैरमादेवदेवीबिमोहैं॥पिताअंकज्यों कन्यकाशुभ्रगीता। लसैअग्निकेअंकत्योंशुद्धसीता ६ ॥

१ । २ । ३ । ४ सीताको बंदिकहे बंदना करिकै देवतन द्विजब्राह्मण समान शुभगीताकहे मंगल पाठपढ़यो अर्थ जैसे गमनसमयमों ब्राह्मण मंगलपाठ पढ़त हैं तैसे सीताजू के रामचन्द्र पास गमनमें देव पढ़तभये अथवा द्विज औ देव औ बंदीजन शु-

भगीता पढ़तभये औ जो अग्नि के अंकमें बैठिकै सीता आईं सो लोकके देखाइबेको तौ शुद्धताकी साक्षीदियो औ जो सीता को देह कनक कुरंग के आगमन में रामचन्द्र अग्निको सौंप्यो रहै ता देहकी थातीसम रामचन्द्र के दीबेको अग्नि ल्याये हैं सो जानो ५ । ६ ॥

महादेवकेनेत्रकीपुत्रिकासी । किसंग्रामकीभूमिमेंचंडिकासी ॥ मनोरत्नसिंहासनस्थाशचीहै । किधौंरागिनी रागपूरेरचीहै ७ गिरापूरमेंहैपयोदेवतासी । किधौंकञ्ज कीमञ्जुशोभाप्रकासी ॥ किधौंपद्महीमेंसिफाकन्दसोहै । किधौंपद्मकेकोशपद्माबिमोहै ८ किसिंदूरशैलाग्रमेंसिद्ध कन्या । किधौंपद्मिनीसूरसंयुक्तधन्या ॥ सरोजासनाहैम नोचारुबानी । जपापुष्पकेबीचबैठीभवानी ९ मनोऔ षधीवृन्दमेंरोहिणीसी । किदिग्दाहमेंदेखियेयोगिनीसी॥ धरापुत्रज्योंस्वर्णमालाप्रकासै । मनोज्योतिसीतक्षका भोगभासै १० सुरेन्द्रबज्राछन्द ॥ आसावरीमाणिककु म्भशोभैअशोकलग्नाबनदेवतासी । पालाशमालाकुसु मालिमध्येवसन्तलक्ष्मीशुभलक्षणासी ॥ आरक्तपत्राशु भचित्रपुत्रीमनोबिराजैअतिचारुवेखा । संपूर्णसिन्दूर प्रभासकैधौंगणेशभालस्थलचंद्ररेखा ११ ॥

जहांकेवल रत्नपद पाइये तहांअरुणही रत्नको बोधहोतहै यहकविनियमहै रागदीपकादि अथवाअनुराग प्रेमइति ७ गिरा सरस्वती के पूरकहे जलसमूहमें किपयोदेवताकहे जलदेवताहै औ किगिरापूरमें कंजकीशोभाहै अर्थ किकमलहै सरस्वतीको जलअरुणप्रसिद्ध है ॥ पूरोजलसमूहेस्यादितिमेदिनी ८ सूरजे सूर्यहैं तिनसों संयुक्तमिली पद्मिनी कमलिनीहै सूरसमअग्नि

है कमलिनीसम सीता हैं यहांअरुणसरोज जानो ९ चन्द्रमा ओषधीशहै औरोहिणी चन्द्रमाकी स्त्रीहै तासम्बन्धसों जानो ओषधिनको अग्निसम ज्वलन प्रसिद्धहै धरापुत्रमंगलके जैसे स्वर्णमाला प्रकाशै कहेशोभै धरापुत्रसम अग्निहै स्वर्णमालासम सीताहैं भोगिफणतक्षकको अरुणबर्ण प्रसिद्धहै १० आसावरी रागिनी अशोकवृक्षमें लग्नाकहे संलग्नास्थित इतिजोबनदेवताहैं ताकेसमहैं अशोकवृक्षको अरुणबर्णहै ११ ॥

विजयछन्द ॥ हैमणिदर्पणमेंप्रतिबिंबकिप्रीतिहियेअनुरक्तअभीता । पुंजप्रतापमेंकीरतिसीतपतेजनमेंमनोसिद्धबिनीता । ज्योंरघुनाथतिहारियेभक्तिलसैउरकेशवकेशुभगीता । त्योंअवलोकियेआनँदकन्दहुताशनमध्यसवासनसीता १२ दोहा ॥ इन्द्रवरुणयमासिद्धसबधर्मसहितधनपाल ॥ ब्रह्मरुद्रलैदशरथहिआयगयेतेहिकाल १३ अग्नि—बसंततिलकछन्द ॥ श्रीरामचन्द्रयहसंततशुद्धसीता। ब्रह्मादिदेवसबगावतशुभ्रगीता ॥ ह्वैजैकृपालगहिजैजनकात्मजाया । योगीशईशतुमहौयहयोगमाया १४ श्रीरामचन्द्रहँसिअंकलगाइलीन्हो । संसारसाक्षिशुभपावकआनिदीन्हो ॥ देवानदुन्दुभिबजायसुगीतगाये। त्रैलोक्यलोचनचकोरनिचित्रभाये १५ ॥

किअनुरक्तकहे अनुरागी हृदयमों अभीता निश्चलाप्रीतिहै विनीता उत्तमा १२ । १३ योगीश जेमहादेवहैं तिनकेईशकहे स्वामीतुमहौ अर्थविष्णुहौ औयहजोसीताहैसोयोगमाया लक्ष्मी है पुनरुक्ति नित्यंवक्षसियोगं प्राप्नोतीतियोगमायालक्ष्मीः अर्थ विष्णुके वक्षस्स्थल में सदा युक्तरहतिहै तासों योगमायानामहै योगमाया कहियाजनायो कियहतौसदा तुम्हारे बक्षस्स्थलमेंप्राप्त रहतिहै कहूँरंचहू भिन्न नहींहोतितासों अदोषहै १४ श्रीरामचन्द्र

कह्यो है तासों त्रैलोक्य लोचनचकोर कह्यो १५ ॥

ब्रह्मा—दोधकछन्द ॥ रामसदातुमअन्तरयामी । लोकचतुर्दशकेअभिरामी ॥ निर्ग्गुणएकतुम्हैंजगजानै । एकसदागुणवन्तबखानै १६ ज्योतिजगैजगमध्यतिहारी। जाइकहीनसुनीननिहारी ॥ कोउकहैपरिणामनताको । आदिनअन्तनरूपनजाको १७ तारकछन्द ॥ तुमहौगुणरूपगुणीतुमठाये । तुमएकतेरूपअनेकबनाये ॥ यकहैजोरजोगुणरूपतिहारी । त्यहिसृष्टिरचीबिधिनामबिहारी १८ गुणसत्त्वधरेतुमरक्षतजाको । अबविष्णुकहैंसिगरेजगताको ॥ तुमहींजगरुद्रस्वरूपसँहारो । कहियेतिनमध्यतमोगुणभारो १९ ॥

अन्तर्य्यामी कहे सबके अन्तरमें व्याप्त रहतहौ अभिरामी कहे रमंता अर्थ चौदहौलोकमें रमतहौ याजगकेएकै प्राणी वेदांती तुमको निर्गुण कहे रजसत्त्वतमोगुण तीनों करिकै रहित ज्योतिरूप जानत हैं औ एकै सदा रज सत्त्व तमोगुणयुक्त ब्रह्मादि रूप बखानत हैं १६ यामें निर्गुण रूप कहत हैं कहीनहिं जाइ इत्यादि सों या जनायो जहां इन्द्रिनको गमन नहीं १७ अब सगुण कहतहैं सत्त्वादि तीनों गुण रूप तुमहींहौ औ गुणी ब्रह्मादि रूप तुमहींहौ रजोगुण रूप कहे रजोगुण युक्त रूप १८ जाको कहे जा सृष्टि को १९ ॥

तुमहींजगहौजगहैतुमहींमें । तुमहींबिरचीमर्य्याददुनीमें ॥ मर्य्यादहिछोड़तजानतजाको । तबहींअवतारधरोतुमताको २० तुमहींधरकच्छपवेषधरेजू । तुममीनह्वैवेदनकोउधरेजू ॥ तुमहींजगयज्ञबराहभयेजू । क्षितिछीनिलईहिरण्याक्षहयेजू २१ तुमहींनरसिंहकोरूपसँ

वारयो।प्रह्लादकोदीरघदु:खबिदारयो ॥ तुमहींबलिबा
वनवेषछल्योजू । भृगुनन्दनह्वैक्षितिक्षत्रदल्योजू २२ तु
महींयहरावणदुष्टसँहारयो । धरणीमहँबूड़तधर्म्मउबा
रयो ॥ तुमहींपुनिकृष्णकोरूपधरौगे । हतिदुष्टनकोभुव
भारहरौगे २३ तुमबौद्धस्वरूपदयाहिधरौगे । पुनिक
लिकह्वैम्लेच्छसमूहहरौगे ॥ यहिभांतिअनेकस्वरूपति
हारे । अपनीमर्य्यादकेकार्य्यसँवारे २४ महादेव–पङ्कज
वाटिकाछन्द ॥ श्रीरघुवरतुमहौजगनायक। देखहुदशर
थकोसुखदायक ॥ सोदरसहितपितापदपावन । बन्दन
कियतबहींमनभावन २५ ॥

विराटरूप सों जग तुमहींहौ औ यह जग तुमहींमें बसत है यथा कविप्रियायां ॥ शेषधरेधरणीधरणीविधि केशवजीवरचेजग जेते । चौदहलोकसमेततिन्हैंहरिकेप्रतिरोमनमेंचितयेते ॥ ताको कहे ताके बधको २० धर कहे पर्वत अर्थ समुद्र मथन समय मन्दराचलको कच्छपरूप ह्वै पृष्ठमें धारण कियो २१ । २२ । २३ अनेक और स्वरूप व्यासादि जानो २४ । २५ ॥

दशरथ–निशिपालिकाछन्द ॥ रामसुतधर्म्मयुतसी
यमनमानिये । बन्धुजनमातुगनप्राणसमजानिये ॥ ईश
सुरईशजगदीशसमदेखिये । रामकहँलक्ष्मणबिशेषप्रभु
लेखिये २६ रामचंद्र–चंचलाछन्द ॥ जूझिजूझिकैगये
जेबानरालिऋक्षराजि । कुम्भकरणलोकहरणभक्षियोजे
गाजिगाजि ॥ रूपरेखस्योबिशेषिजीउठैंकरौसोआज ।
आनिपांइलागियोतिन्हैंसमेतदेवराज २७ दोहा ॥ बा
नरराक्षसऋक्षसबमित्रकलत्रसमेत ॥ पुष्पकचढ़िरघुना
थजूचलेअवधिकेहेत २८ ॥

हेराम सुत सीताको धर्म्मयुत मनमें मानों अर्थ सीता निदोंषहैं जोसन्देह करो कि हम ग्रहणकरैं हमारे बन्धुआदि गृहजन कैसे ग्रहण करि हैं तौ बन्धुजन भरतादि औ मातुगण कौशल्यादिकन सम जानो जैसे कोऊ प्राणनको त्याग आपुसों नहींकरत तैसे सीताको त्याग वे ना करिहैं या प्रकार रामचन्द्रको शिक्षा दै लक्ष्मणसों कहतहैं कि हे लक्ष्मण रामचन्द्रको ईश महादेव सुर ईश विष्णु जगदीश ब्रह्माके सम देखौ कहे जानौ इनको विशेषिकै प्रभुकहे स्वामी लेखौ अर्थ स्वामी सम इनकी सेवा करौ बंधुसम न जानो इति भावार्थः २६ रूपस्वरूप रेख चिह्न तिनसों स्यो कहे सहित जी उठें सो उपाय करौ या प्रकार रामचन्द्र देवराज जे इन्द्र हैं तिनसों कह्यो सो रामचन्द्रकी आज्ञा सों संजीवनी आदि उपाय सों सबको जियाइकै रामचन्द्र के आइ पांइलगे २७ भरत की प्रतिज्ञाहै कि जो चौदह वर्ष में रामचन्द्र न ऐहैं तौ हम नहीं जीहैं ता अवधि कहे मर्यादाके लिये पुष्पकमें चढ़ि अति शीघ्र चले अथवा अवधि अयोध्या २८ ॥

चंचरीछंद॥ सेतुसीतहिशोभनादरशाइपंचबटीगये। पांइलागिअगस्त्यकेपुनिअत्रियैतेबिदाभये ॥ चित्रकूट बिलोकिकैतबहींप्रयागबिलोकियो । भरद्वाजबसैंजहां जिनतेनपावनहैबियो २९ राम—तारकछंद ॥ चमकैद्युतिसूक्षमशोभतिबारू । तनुकैजनुसेवतहैंसुरचारू ॥ प्रतिबिम्बितदीपदियजलमाहीं । जनुज्वालमुखीनकेजाल नहाहीं ३० जलकीद्युतिपीतसितासितसोहै । बहुपातकघातकरैयककोहै ॥ मदएणमलैघसिकुंकुमनीको । नृप भारतखंडदियोजनुटीको ३१ ॥

वियोग कहे दूसरो २९ तनु कहे सूक्ष्म ३० यक कहे केवल जो बहुत पातकहैं ताके घात कहे नाशकरै को कहे करिबे के

अर्थ एणमद जो कस्तूरी है औ मलयचन्दन औ कुंकुम केसरि को घसिकै भारतखण्डरूपी जो नृप राजाहै ताने मानों मारण तिलक दियो है जाको देखतही पातकनको नाश होतहै औरौ राजा शत्रुके नाश करिबे को मारण तिलक शिरमें देते हैं जाके देखतही शत्रु मरतहै मारण मोहनोच्चाटनादि षट्कर्म की तिलकादि क्रिया मन्त्रशास्त्र मों प्रसिद्धहै भारतखण्ड वासिन को पातक दरिद्रादि पीड़ा करतहैं सोई शत्रुता जानो ३१ ॥

लक्ष्मण--दंडक ॥ चतुरबदनपंचबदनषटबदनसहसबदनहूसहसगतिगाईहै । सातलोकसातद्वीपसातहूरसातलनिगंगाजीकीशोभासबहीकोसुखदाईहै ॥ यमुनाकोजलरह्यो फैलिकैप्रबाहपरकेशौदासबीचबीचगिराकीगोराईहै । शोभनशरीरपरकुंकुमबिलेपनकोश्यामलदुकूलझीनझलकतिझाईहै ३२ सुग्रीव--चंद्रकला ॥ भवसागरकीजनुसेतुउजागरसुंदरतासिगरीबसकी । तिहुँदेवनकीद्युतिसीदरशैगतिशोषैत्रिदोषनकेरसकी ॥ कहिकेशवबेदत्रयीमतिसीपरितापत्रयीतलकोमसकी । सबबेंदैत्रिकालात्रिलोकत्रिबेणिहिकेतुत्रिबिक्रमकेयसकी ३३॥

चतुरवदन ब्रह्मा पंचबदन शिव षट्बदन स्वामिकार्त्तिक सहसवदन शेष तिन करिकै सहसगति कहे सहसप्रकार सों गाई है अथवा सहस्रगति कहे सहस्रधारा सातलोक भूअंतरिक्षादि सातद्वीप जम्बूद्वीपादि सात रसातल अतल बितलादि ३२ सेतु सम जाके मग प्राणी भवसागर पारहोत हैं तीनोंदेव ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदोष वात पित्त कफको जो रसकहे बलहै ताकी गतिको शोषति है अर्थ कफ पित्त बात दुःखद दोषकृत जो मृत्युहै तासों बचावतिहै ऐसी त्रिदेवनकी द्युतिहूहै वेणीहू है वेदत्रयी ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद त्रयी परिताप अध्यात्मिक अधि-

भौतिक अधिदैविक को तलको अधोभागको मसकी कहे दबायो है अर्थ पठायो है ऐसी वेदमातिहू है बेणहिूहै त्रिविक्रम कहे बामनजू तीनिपैग सों तीनोंलोक नाप्योहै तिन तीनिपाद विक्षेप को त्रिरूप पताकाहै ३३ ॥

बिभीषण--दंडक ॥ भूतलकीबेणीसीत्रिवेणीशुभशोभिजतिएककहैंसुरपुरमारगविभातहै । एककहैंपूरणअनादिजोअनंतकोऊताकोयहकेशौदासद्रव्यरूपगातहै ॥ सबसुखकरसबशोभाकरमेरेजानकोनोयहअद्भुत सुगंध अवदातहै । दरशपरशहूतेथिरचरजीवनकोकोटिकोटि जन्मकीकुगंधमिटिजातहै ३४ भुजंगप्रयातछंद ॥ भरद्वाजकीबाटिकारामदेखी । महादेवकीसीबनीचित्तलेखी ॥ सबैवृक्षमंदारहूतेभलेहैं । छहूकालकेफूलफूलेफलेहैं ३५ कहूंहंसिनीहंससोंचित्तचोरैं । चुनैंओसकेबुंदमुक्तानिभोरैं ॥ शुकाली कहूंसारिकालीविराजैं । पढ़ैवेदमंत्रावली भेदसाजैं ३६ ॥

कुगन्धपदतेपातकजानौ ३४ महादेवकी बाटिकासीबनी चित्तमें लेख्यो मंदारकल्पवृक्ष बिशेषछहूकाल छहऋतु ३५ कहूं हंससों कहे हंससहित हंसिनी मुक्तानिके भोरैंकहे भ्रमसों ओसके बुंद चुनतीहैं सोसबके चित्तको चोरावतीहैं यासोंहंसनकी मदमत्तता जनायो वेदमन्त्रावलीके जेभेदसाजैंहैं तिन्हैंपढ़तीहैं अर्थ अनेक प्रकार के मन्त्रऋषिनके पढ़तसुनत हैं तिन्हैं शिष्यताही बिधि आप पढ़त हैं ३६ ॥

कहूंवृक्षमूलस्थलीतोयपीवैं । महामत्तमातंगसीमा नछीवैं ॥ कहूंबिप्रपूजाकहूंदेवअर्चा । कहूंयोगशिक्षाकहूं वेदचर्चा ३७ कहूंसाधुपौराणकीगाथगावैं । कहूंयज्ञकी

शुभ्रशालाबनावैं ॥ कहूंहोममंत्रादिकेधर्मधारैं । कहूंबैठि कैब्रह्मविद्याबिचारैं ३८ सुआइजहांदेखियेवक्ररागी । चलैपिप्यलैतिक्षबुध्यैसभागी ॥ कँपैंश्रीफलैपत्रहैंयत्र नीके । सुरामानुरागीसबैरामहीके ३९ ॥

कहूं महामत्त मातंग वृक्षनकी मूलस्थलीकहे थाल्हामेंतोय जलपीवत हैं परन्तुवृक्षनकी औ थाल्हनकी सीमा मर्यादा नहीं छुवत अर्थ वृक्ष औ थाल्हनको तोरत बिदारत नहीं हैं ३७ पौराणकी कहे अष्टादश पुराण सम्बन्धिनी ब्रह्मविद्या वेदांत ३८ वक्रकहे मुखहैं रागीकहेअरुण जिनके ऐसेशुकहीहैं औरकाहूऋषि को मुखतांबूलरागयुक्त नहीं है यतीको ताम्बूलभक्षणनिषिद्धहै तासों ॥ बिधवानांयतीनांचताम्बूलंब्रह्मचारिणाम् । एकैकंमांसतुल्यंस्यान्मिलितंमदिरासमम् ॥ सभागीकहे भाग्यवान्अर्थ अति वृद्धयुक्त अतिबडे इति श्रीफलकहे कदलीके जे पत्रहैं तेई जहां कांपतहैं यासों याजनायो कि सभागी तौसबहैं येऔरकोऊ काहू भयसों कंपतनहींहैं औसबै रामानुरागीहैं परन्तुरामाजो स्त्रीहैं ताकेअनुरागीनहींहै रामचन्द्रके अनुरागीहैं ३९ ॥

जहांवारिदेवृन्दबाजानिसाजैं । मयूरैजहांनृत्यकारी बिराजैं ॥ भरद्वाजबैठेतहांविप्रमोहैं । मनोएकहीवक्रलोके शसोहैं ४० लक्ष्मण--दंडक ॥ केशौदासमृगजबछेरूचूसैंबाघिनीनचाटतसुरभिबाघबालकबदनहै । सिंहनकी सटाऐंचैं कलभकरनिकरिसिंहनकोआसनगयंदकोरदन है ॥ फणीकेफणनपरनाचतमुदितमोरक्रोधनबिरोधजहां मदनमदनहै । बानरफिरतडोरेडोरेअंधतापसनिशिव कोसमाजकैधौंऋषिकोसदनहै ४१ ॥

तहांताआश्रममों विप्रनकेबीचमोंबैठे अनेकइतिहासादिकहि विप्रनकेमनको मोहतहैं इत्यर्थः लोकेश ब्रह्मा ४० मृगजबछेरू

मृगबालक सटा ग्रीवाके बार डोरेडोरेकहे डोलडोल अंधतापस कहे बडेतपस्वी यासों बानरनको ऋषिनके ताडनसों अतिनिर्भयताजनायो अथवाअंधकहे आंधरे जो तापसकहे तपस्वी हैं तिनकोडोरेकहे हाथकोगहे अर्थजहां जाइवेकीइच्छाकरतहैं तहां बानरपठाइआवतहैं औशिवके समाजमें मृगजबछेरूपदतेचन्द्रमाके रथके हरिणजानो अथवाऔर अनेकगणनकेमृगबाहन हैं यथा तुलसीकृतरामायणे ॥ नानाबाहननानाबेखा । हरषेशिवसमाज निजदेखा ॥ औ सुरभिपदते महादेवको बाहन वृषभजानौ औ बाघ बालकपदते काहूगणको बाहन बाघजानौ औ सिंहपदते देवीको बाहन सिंहजानौ अथवा दूनों पदते सिंहहीजानौ औ गयन्दपदते गणेशजानौ औ फणी महादेव धारणकरेहैं मोर स्वामिकार्तिकको बाहनहै औ अन्ध तापस कहे तापस वेषधारी जे आंधरेगणहैं यथा तुलसीकृतरामायणे ॥ बिपुलनयनकोउनयन बिहिना । औ बानर पद ते बानर मुख गणजानौ ॥ यथातुलसी कृतरामायणे॥ खरश्वानशुकरशृगालमुखगणवेषअगणितकोगनै । जैसे शिवके समाजमें स्वाभाविक विरोधी जीव अविरुद्ध रहतहैं तैसे आश्रमहूमें रहत हैं इति भावार्थः ४१ ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ जहांकोमलैबल्कलैबस्त्रसोहैं । जिन्हैंअल्पधीकल्पसाखीबिमोहैं । धरेशृंखलादुःखदाहैदुरंतै । मनोंशम्भुजीसंगलीनेअनंतै ४२ ॥

यामें आश्रमके ऋषिजननको वर्णनहै जहां जा आश्रममें ऋषिन के कोमल बल्कलहीके बस्त्र सोहतहैं परन्तु जिनकोदेखि अल्पधी लघुबुद्धि अर्थ कि स्पर्द्धायुक्तहै बुद्धि जिनकी ऐसे जेकल्प साखी कल्पवृक्ष हैं ते बिमोहैं कहे मोहित होतहैं अथवा अल्प की धी कहे बुद्धिसों अर्थ हम इनसोंलघुहैं या बुद्धिसों मोहतहैं केवल बचनही सों येतोदेतहैं जे तो कल्पवृक्षनहू को मोह होतहै कि हमहूं इनसम न भये अथवा कल्पसाक्षी पाठहोइ तौ जिनको

देखि अल्पकी धी करिकै अर्थ कि हम इनसों लघु हैं या बुद्धि सों कल्पपाक्षी जे कल्पान्तयोनी मार्कंडेय आदि हैं ते मोहत हैं औ केवल शृंखला जो कठिन बंधनहै ताको धारणकरे हैं परंतु दुरंतै कहे बड़े जे औरन के दुःख हैं तिनको दाहै कहे नाशकरत हैं अर्थ ऐसे ऐसे आचार्य कृत्यनसों युक्तहैं । शृंखलापुंस्कटी वस्त्र बंधेच निगडेत्रिषु इति मेदिनी ॥ महादेव अनंतजे शेषहैं तिनको संगमें लीन्हे हैं धारणकरे हैं औ ऋषिजन अनन्त जे भगवान् हैं तिनके ध्यानसों अथवा कथनसों संगमें लीनरहते हैं ४३ ॥

मालिनीछन्द ॥ प्रशमितरजराजैहर्षवर्षासमैसे । बिरलजटनसाखीस्वर्नदीकूलकैसे । जगमगदरशायीसूरके अंशुऐसे । स्वरगनरकहंतानामश्रीरामकैसे४३ भुजंगप्रयातछन्द॥ गहेकेशपाशैप्रियासीबखानों।कँपैंशापकेत्रासतेगातमानों॥ मनोंचन्द्रमाचन्द्रिकाचारुसाजैं।जरासोंमिलेयोंभरद्वाजराजैं ४४ ॥

फेरि कैसेहैं ऋषिजन सो कहत हैं वर्षासमय में रजजोधूरिहै सो प्रशमित कहे नष्ट राजतिहै ऋषिनके रजोगुण सब ऋषिसत्त्वगुणी हैं इति भावार्थः स्वर्नदी गंगाके कूलको साखी वृक्ष विरल कहे प्रकट जटा जे जरै हैं तिन सहितहैं इहां स्वर्नदी कूलको साखी कहि अति पावनताहू जनायो अथवा स्वर्नदी उपलक्षणमात्र है नदीमात्र के कूलको जानौ नदीके प्रवाहके वेगसोंजरैं खुलि जाती हैं प्रसिद्धहै औ ऋषिजन जटा जे लग्नभये कच हैं तिन सहित हैं जटालग्नकचेमूले इति मेदिनी ॥ सूरके अंशुकिरण जगके जे मगराहहैं तिनके दरशाई देखावनहारहैं औ ऋषि यमलोक के जे ब्रह्मदोषादि स्वर्गलोक के यज्ञादि इत्यादि सब लोकनके मग दरशाई हैं रामनामके जपसों स्वर्ग नरकको भोग मिटत है मुक्ति होतिहै ऋषिजन ज्ञानोपदेश करि स्वर्ग नरकको भोग दूरि करि मोक्षको प्राप्त करतहैं औ जो सब चरणनके अंत

में सो पाठ होइ तौ केवल भरद्वाजही को बर्णन है ४३ जरा जो वृद्धताहै सो भरद्वाजके केशपाशगहे है तासों प्रिया कहे अतिप्रिया स्त्री सम बखानियत है प्रियाहू अति प्यारसों धृष्टताकरि पतिके केशगहतिहै सो केशगहिबो अनुचित समुझि ऋषिशाप न देहिं याही त्राससों मानों ताके गात कांपतहैं जोकहौ अंग तौ भरद्वाजके कांपतहैं वृद्धताके कैसे कह्यो तौ भरद्वाजके अंगनमें मिले वृद्धताके अंग कांपत हैं ताहीसों भरद्वाजहू के अंग कांपत हैं काहेते भरद्वाजके अंगनमें प्रथम कंप नहीं रह्यो तासों जानौ चन्द्रसमऋषि हैं चन्द्रिका सम शुक्लजरा है अर्थ जरायुक्त शुक्लबारहैं ४४ ॥

दोहा ॥ भस्मत्रिपुंड्रकशोभिजै बरणतबुद्धिउदार ॥ मनोंत्रिस्रोतासोतद्युतिबंदतलगीलिलार ४५ भुजंगप्रयातछन्द ॥ मनोंअंकुरालीलसैसत्यकीसी । किधौंवेद बिद्याप्रभाईभ्रमीसी ॥ रमैगंगकीज्योतिज्योंजह्नुनीकी । बिराजैसदाशोभदंतावलीकी ४६ ॥

त्रिस्रोता गंगा कहँ बंदति पाठहै तहां या अर्थ कि त्रिस्रोता के सोतनकी द्युतिलिलारमें लगी भरद्वाजको बंदतिहै अर्थ सेवतिहै ४५ सत्यको रंग श्वेतहै प्रभा शोभा भ्रमी कहे भरद्वाज को सुखरूपी शुभस्थान पाइके आश्चर्य युक्तह्वै रहीहै अर्थ प्रसन्न ह्वै रहीहै ज्योंकहे जानो जह्नुऋषिके मुखमें नीकी गंगाकीज्योति रमतिहै जह्नुऋषि गंगाको पानकियोहै सोकथा प्रसिद्धहै ४६ ॥

गीतिकाछन्द ॥ भृकुटीबिराजतिश्वेतमानहुंमंत्रअद्भुतसामके । जिनकेबिलोकतहीबिलातअशेषकर्मजकामके ॥ मुखबासआसप्रकासकेशवभौंरभीरनसाजहीं । जनुसामकेशुभस्वक्षअक्षरह्वैसपक्षबिराजहीं ४७ तनुकम्बुकण्ठत्रिरेखराजतिरज्जुसीउनमानिये । अविनीतइं

द्रियनिग्रहीतिनकेनिबंधनजानिये ॥ उपवीतउज्ज्वलशोभिजैउरदेखियोंवरणैंसबै । सुरआपगातपसिंधुमेजसइवेतश्रीदरशैअबै ४८ ॥

सामवेद काम जो कंदर्प है ताके जे कर्महैं परस्त्री गमनादि तिनते ज कहे उत्पन्न जे बस्तुहैं अघ पातक ते अशेषकहे संपूर्ण विलातहैं अथवा कामजोहैं शुभ अशुभ अभिलाष तिनके जेकर्म हैं तिनते ज कहे उत्पन्नबस्तुहैं अर्थ स्वर्ग नरक भोग शुभ अभिलाषके कर्मनसों स्वर्गभोग उत्पन्नहोतहै अशुभ अभिलाषके कर्मनसों नरकभोग उत्पन्नहोत है ते दुवौविलात हैं अर्थ जिनको देखि प्राणी स्वर्ग नरकभोगसों भिन्नहोतहैं अंतमें मुक्ति पावत हैं प्रथमकह्योहै कि । स्वर्गनरक हंतानाम श्रीरामकैसो । औ सोम के मंत्रके पुरश्चरणसों काके कर्मज विलात हैं इनके देखतही तासों अद्भुत करयो बास सुगन्ध ४७ कंबुसदृश कंठमें तनुसूक्ष्म त्रिरेखराजतिहै ताहि रज्जुकहे जेवरी सम अनुमानियतहै सो जेवरी काहेके लिये है अविनीतकहे अशिक्षित अर्थ आज्ञाटारि अभिलषित बातकर्त्ता जे इंद्रिय नेत्रादि हैं तिनके निग्रहीकहे ताड़नकर्त्ता अर्थ दुःखद निबंधनकहे बंधन है तपसिंधु भरद्वाज हैं सुरआपगा गंगाके तीनों सोतसम उपवीतके तीनोंसूत्रहैं सिंधुमें मिलिबो नदीको धर्महै ४८ ॥

दोहा ॥ फटिकमालशुभशोभिजैउरऋषिराजउदार॥ अमलसकलश्रुतिबरणमयमनोगिराकोहार ४९ सुन्दरी छन्द ॥ यद्यपिहैरसरूपरस्योतनु । दंडहिसोंअवलंबित हैमनु ॥ धूमशिखानकेब्याजमनोगुनि । देवपुरीकहंपंथ रच्योमुनि ५० रूपधरेबड़वानलकोजनु । पोषतहैंपय पानहिंसोतनु ॥ क्रोधभुजंगममंत्रबखानहुं । मोहमहातमकेरविमानहुं ५१ ॥

श्रुतिवर्ण वेदाक्षरसम फटिक गुरियाहैं औ भरद्वाजकीबाणी सरस्वती डोरासम है अर्थ सरस्वती में गुहिकै मानों वेदाक्षर-नहीकी माला पहिरेहैं ४९ वृद्धतासों चलिबेके लिये दंडलिये हैं तामें तर्क करत हैं कि ऋषिको तनुरूप रसपदते रूप रस गन्ध शब्द स्पर्श पांचौ इंद्रिन के पांचौ बिषयजानो तिनकरिकै कहे तिनकी बासना करिकै रस्योकहे ब्वैगयोहै रहितभयोहै इतिअर्थ वृद्धतासों नेत्रादि इंद्रिनसों रूपादि बिषयकी बासना टरिगईहै ताहूपर मानों दंडसों अवलंबितकहे युक्त है दण्डपद श्लेष है दंड कहे निग्रह औ लकुट औ अग्निहोत्राग्नि को आहुतिसों नित्यही प्रज्वलित कियोकरतहैं तामेंतर्कहै किधूमशिखा जो अग्निहै ताकेब्याज मानोंदेवपुरीकी पंथराह बनायाहै५० पय दुग्ध औ जल ५१ ॥

सत्यसखाअसखाकलिकेजनु । पर्बतओषधिसिद्धिनके मनु ॥ पापकलापनकेदिनदूषण । देखिप्रणामकियोजगभूषण ५२ पद्धटिकाछंद ॥ सीतासमेतशेषावतार । दंडवतकियेऋषिकेअपार ॥ नरबेषबिभीषणजामवंत । सुग्रीवबालिसुतहनूमंत ५३ ऋषिराजकरीपूजाअपार । पुनि कुशलप्रश्नपूंछीउदार ॥ शत्रुघ्नभरतकुशलीनिकेत । सब मित्रमन्त्रिमातनसमेत ५४ भरद्वाज ॥ कहकुशलकहौं तुमआदिदेव । सबजानतहौसंसारभेव ॥बिधिविष्णुशंभुर बिशशिउदार । सबपावकादिअंशावतार ५५ ब्रह्मादिस कलपरमाणुअंत । तुमहींहौरघुपतिअतिअनंत ॥ अब सकलदानदेपूजिबिप्र । पुनिकहहुबिजयबैकुंठक्षिप्र ५६

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यभरद्वाजाश्रमगमनंनामाविंशःप्रकाशः २० ॥

सत्यकहे सत्ययुग ओषधिसमजे आठौ सिद्धि हैं तिनकेपर्वत हैं जैसे पर्वतमें ओषधीरहती हैं तैसेऋषिमें आठौसिद्धीरहतीहैं कलापसमूह जगभूषणरामचन्द्र ५२ प्रथमदूरसों करनसों प्रणाम कियो यामेंनिकटजाइ दंडप्रणामकरयो ५३ पुनिकहे ऋषिकी पूजाकिये पर रामचन्द्र कुशल प्रश्न पूंछतभये ५४ अंशावतार कहे तुम्हारे अंशावतारहैं ५५ जालांतरगतेभानौयत्सूक्ष्मंदृश्यते रजः । तस्यषष्टितमोभागःपरिमाणुःसउच्यते ॥ बिजयकहे हमारे इहां भोजनकरौ वैकुण्ठनाथ रामचन्द्रको सम्बोधनहै ॥ बिष्णु र्नारायणःकृष्णोवैकुण्ठोविष्टरश्रवाइत्यमरः ५६ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां बिंशतितमःप्रकाशः २० ॥

दोहा ॥ इकईसयेंप्रकाशमेंकह ऋषिदानबिधान ॥ भरतमिलनकपिगुणनको श्रीमुखआपबखान १ श्रीराम-सोमराजीछंद ॥ कहादानदीजै । सुकैभांतिकीजै ॥ जहांहोहिजैसो । कहौबिप्रतैसो २ भरद्वाज-- दोहा ॥ सात्विकतामसराजसी दानतीनिबिधिजानि ॥ उत्तममध्यमअधमपुनिकेशवदासबखानि ३ चंचरीछन्द ॥ पूजियेद्विजआपनेकरनारिसंयुतजानिये । देवदेवहिथापिकैपुनिवेदमंत्रबखानिये । हाथलैकुशगोतउच्चरिस्वर्णयुक्तप्रमानिये । दानदैकछुऔरदीजहि दानसात्विकजानिये ४ ॥

१ कहाकहे कौनवस्तु कैभांतिकहे कैप्रकारसों दानकीजै दान पदको सम्बन्धयाहूमों है २ । ३ देवदेवजे बिष्णुहैं तिनहिंथापिकै कहे तिनकेअर्थ फल समर्पण करिकै अथवा ब्राह्मणको देवहि विष्णुहि थापिकै कहेमानिकै अथवा देवदेवकी स्थापना करिकै सु-

वर्णसोंयुक्त कुशहाथमें लैकैगोतको उच्चरिकै वेदके मन्त्रसों दानदै फेरिकछूऔरदीजै अर्थ सांगतादान दीजै दानकेबाद जोदान दियोजातहै सोसांगता दान कहावतहै ४ ॥

दोधकछन्द ॥ देहिंनहींअपनेकरदानैं । औरकेहाथजो मंगलजानैं॥ दानहिंदेतजोआरसुआवै । सोवहराजसदानकहावै ५ बिप्रनदीजतहीनबिधानैं । जानहुताकहँताम सदानैं ॥ बिप्रनजानहुजैजगरूपै । जानहुयेसबविष्णु स्वरूपै ६ श्लोक ॥ साचारोवानिराचारोसाधुर्वासाधुरेवच।अविद्योवासविद्योवाब्राह्मणोमामकीतनुः ७ तोमर छन्द ॥ द्विजधामदेहिंजोजाइ । बहुभांतिपूजिसुराइ ॥ कछुनाहिंनैपरिमान । कहियेसोउत्तमदान ८ द्विजकोजो देतबुलाइ । कहियेसोमध्यमराइ ॥ गुनियाचनामिसदानु । अतिहीनताकहँजानु ९ ॥

५ विप्रनको जगरूपै कहे जगत्के सदृशै जैकहेजानि जानहु ६ पाछेकह्यो किबिप्रनको बिष्णुस्वरूपै जानौ ताको बिष्णुबाक्यसों पुष्टकरतहैं बिष्णुकह्योहै किब्राह्मण साचारकहे आचारसहित होइ औरअर्थ सुगमहै मामकीकहे हमारो तनु कहाहै ७ ताकी उत्तमताको कछूप्रमाण नहींहै ८ अतिहीनकहे अधम ९ ॥

श्लोक ॥ अभिगभ्योत्तमंदानमाहूतंचैवमध्यमम् ॥ अधमंयाच्यमानंस्यात्सेवादानंतुनिष्फलम् १० दोहा ॥ प्रतिदिनदीजतनेमसोंताकहँनित्यबखान ॥ कालहिपाइ जोदीजियेसोनैमित्तिकदान ११ श्लोक ॥ आश्रितंसाधु कर्माणंब्राह्मणंयोऽत्यतिक्रमेत् । तस्यपुण्यचयोप्याशुक्षयं यातिनसंशयः १२ तोटकछंद ॥ पहिलेनिजबर्तिनदेहु अबै । पुनिपावहिंनागरलोगसबै ॥ पुनिदेहुसबैनिजद

शिनको । उबरयोधनदेहुबिदेशिनको १३ दोधकछंद ॥
दानसकामअकामकहेहैं । पूरिसबैजगमांझरहेहैं ॥ इच्छि
तहीफलहोतसकामैं । रामनिमित्ततेजानिअकामैं १४ ॥
अभिगम्यकहे ब्राह्मणकेघरमें जाइकै जोदानहै सोउत्तमहै औ
आहूतकहे ब्राह्मणको बोलाइकै जोदानहै सोमध्यमहै औयाच्य
मानकहे जबब्राह्मण मांगैआइ तबजोदानहै सोअधमहै औ सेवा
दान कहे जबब्राह्मणसेवाकरै तबजोदानहै सोनिष्फलहै अर्थवामें
कछूपुण्यनहींहै १० कालपाइ अर्थ चन्द्रसूर्य ग्रहणादि समयमों
११ आपनो आश्रित जोसाधुकर्मा ब्राह्मणहै ताकोजो व्यतिक्रमेत्
कहे व्यतिक्रम करतहै अर्थ तिन्हैंछोडि औरको दानदेतहै ताको
पुण्यचयकहे पुण्यसमूह आशुकहे शीघ्रही क्षयंयाति कहे क्षयको
प्राप्तहोतहै यामें संशयनहीं अपिशब्दते याजनायो किथोरी पुण्य
तौक्षयको प्राप्तहोतिहीहै १२ आश्रितको व्यतिक्रमनाकियो चाहिये
तासों पहिले निजकहे आपने वर्त्तीकहे आश्रितनकोदेहु औनिज
वृत्तिन पाठहोइ तौनिजकहे आपने इहां है दानहीसों वृत्तिकहे
जीविका जिनकी नागरकहे नगरवासी १३ । १४ ॥

दानतेदक्षिणबामबखानो । धर्मनिमित्ततेदक्षिणजा
नो ॥ धर्मबिरुद्धतेबामगुनौजू । दानकुदानसबैतेसुनौजू १५
देहुसुदानतेउत्तमलेखो । देहुकुदानतिन्हैंजनिदेखो ॥ छांड़ि
सबैदिनदानहिंदीजै । दानहिंतेसबकेमतलीजै १६ दोहा ॥
केशवदानअनंतहैंबनैंनकाहूदेत ॥ यहैजानिभुवभूपसब
भूमिदानहीदेत १७ श्लोक ॥ यत्किंचित्कुरुतेपापंज्ञानतो
ऽज्ञानतोपिवा । अपिगोचर्ममात्रेणभूमिदानेनशुद्ध्य
ति १८ सप्तहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडैर्निवर्त्तनम् । दशतान्ये
वगोचर्मदत्त्वास्वर्गेमहीयते १९ अन्यायेनहृताभूमिर्यैर्न
रैरपहारिता । हरन्तोहारयन्तश्चहन्यतेसप्तमंकुलम् २०

राम--दोहा ॥ कौनहिदीजैदानभुवहैंऋषिराजअनेक ॥ देहुसनाढ्यनआदिदैआयेसहितविवेक २१ श्रीराम–उपेंद्रबज्राछंद ॥ कहौभरद्वाजसनाढ्यकोहैं । भयेकहांतेसब मध्यसोहैं ॥ द्विजेसबैबिप्रप्रभावभीने । तजेतक्योंयेअति पूज्यकीने २२ ॥

मारणोच्चाटनादि के लिये जो दान है सो धर्म बिरुद्धजानो अथवा वेश्यादिके अर्थ दान १५ सबके मीमांसकादिकनके मत कहे सम्मत अर्थ सम्मत फलको लीजै कहे पाइयतहै अर्थ मीमांसकादिकन को मतहै कि यज्ञादिसों ऐहिक पारलौकिक फल होतहै सो सब फल दाननही सों पाइयतहै तासों सबको यज्ञादिकनको छोड़िकै दिन प्रति दानहीको दीजै १६ । १७ यत्कहे जो ज्ञानतः कहे जानिकै अज्ञानतः कहे बिनजाने कोऊ प्राणी किंचित्कहे कछुपापं कहे पाप जोहै ताहि कुरुते कहे करतहै सो प्राणी गोचर्म मात्रेण भूमिदानेन कहे गोचर्ममात्र भूमिदान करतसंते शुद्धहोतहै अपिशब्दको अर्थ यह कि अधिक भूमिदानकरै तासों तौ शुद्धयामें गोचर्मको लक्षण कहतहैं १८ सप्तहस्तेनदंडेन कहे सातहाथके दंडकरिकै त्रिंशद्दंडैःकहे तीसदण्डकरतसंतेनिवर्तनसंज्ञक भूमिक्षेत्रहोतहै हस्तप्रमाण दुइसैदश औ दशतान्येव कहे तेईनिवर्त्तनहीं एकगोचर्मसंज्ञक क्षेत्रहोतहै हस्तप्रमाण इक्कीससै २१००सोगोचर्म प्रमाणहू भूमिको दत्त्वाकहे दैकै स्वर्गे कहे स्वर्गको महीयते कहे जातहै १९ यैर्नरैःकहे जिननरनकरिकै अन्यायेनकहे न्यायबिनाही भूमिहृताकहे हरीगई औजिननरन करिकै अपहारिता कहे हराई गई ताभूमि करिकै हरंतः कहे हरनहार औ हारयंतः हरावनहार ते हन्यतेकहे पीडाकोप्राप्तहोत हैं अर्थ सोभूमि तिनको पीडाकरती है औ तेषांसप्तमं कुलमपि हन्यते अर्थ ताही भूमिकरिकै तिनकेसातपुस्ति पर्यंतपितर पीडाको प्राप्तहोतहैं अर्थ जेदानकी भूमिको निर्दोष छोरतहैं औवृथा-

पवाद कहि छोरावतहैं सो भूमि तिनको औ तिनदुहुंन के सप्त पुस्ति पर्यंत पितरनको पितृलोकमें पीड़ाकराति है २० ऋषि कह्यो कि सनाढयनको दानदेहु काहेते इनसनाढयनको आदि-हीसों अर्थ जबसों इनकी उत्पत्तिहै तबही सों तुम विवेकसहित दैआयेहौ २१ । २२ ॥

भरद्वाज ॥ गिरीशनारायणपैसुनीयों । गिरीशमोसों जोकहीकहौंत्यों ॥ सुनोसोसीतापतिसाधुचर्चा । करीसो जातेतुमब्रह्मअर्चा २३ नारायण—मोटनकछंद ॥ मोतेज लनाभिसरोजबढ्यो । ऊंचोअतिउग्रअकाशचढ्यो ॥ तातेचतुराननरूपरयो । ब्रह्मायहनामप्रकट्टभयो २४ ताके मनतेसुतचारिभये । सोहैंअतिपावनवेदमये ॥ चौहूंजन केमनतेउपजे । भुवदेवसनाढ्यतेमोहिंभजे ॥ दीन्होतुम हींतिनजोहितजू । ह्वैहौतुमब्रह्मपुरोहितजू २५ ॥

गिरीश महादेव जाते कहे जाकारणते तुम ब्रह्म अर्चाकहे सनाढय ब्राह्मणनकी पूजाकरीहै अथवा ब्रह्म जे तुमहौ तेसना-ढयनकी अर्चा आदिहीसों करीहै २३ । २४ यह छन्द छः चरण को है चारिसुत सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार वेदमये कहे वेद स्वरूप ये नारायणके बचन शिवप्रतिहैं तिन्हैं कहिकै द्वै चरणमों भरद्वाज रामचन्द्रसों कहत हैं कि हेरामचन्द्र नारायण रूप जे तुमहौ तिनहीं तिनको हितसों यह बचन दियोहै बचन इतिशेषः ॥ कि तुम ब्रह्मकहे परब्रह्मके पुरोहितह्वैहौ २५ ॥

गौरीछन्द ॥ तातेऋषिराजसबैतुमछांड़ो । भूदेवस नाढ्यनकेपदमाड़ो ॥ दीन्होतुमहींतिनकोबररूरे । चौहूंयु गहोहुतपोवलपूरे २६ उपेन्द्रबज्रछन्द ॥ सनाढ्यपूजाअ घओघहारी । अखण्डआखण्डललोकधारी । अशेषलो कावधिभूमिचारी । समूलनाशैंनृपदोषकारी २७ श्रीराम

तोटकछंद ॥ हनुमन्तबलीतुमजाहुतहां । मुनिबेषभरत्थ बसंतजहां ॥ ऋषिकेहमभोजनआजुकरैं । पुनिप्रातभरत्थहिअंकभरैं २८ चतुष्पदीछंद ॥ हनुमंतबिलोकेभरतसशोकेअंगसकलमलधारी । बकलापहिरेतनशीशजटागनहैंफलमूलअहारी ॥ बहुमंत्रिनगणमेंराजकाजमें सबसुखसोंहिततोरे । रघुनाथपादुकातनमनप्रभुकरिसेवतअंजलिजोरे २९ ॥

ब्रह्म पुरोहितहूबे को इन्हें तुम्हारोई बरहै औ तुम ब्रह्महौ ताते कहे ताहेतु ते २६ अखण्ड कहे पूर्ण आखण्डल लोकधारी कहे इंद्रलोककी धरणहारी है जो कोऊ सनाढ्यनकी पूजाकरत है ताको पूर्ण इंद्रलोक देति है इति भावार्थः अशेष लोकावधि कहे चौदहों लोकपर्यंत जो भूमि कहे स्थानहै तिनमें चारी कहे गमन कारी है अर्थ चौदहों लोकमें सनाढ्यनकी पूजा सबकरत हैं अथवा चौदहों लोकन में नयन मार्ग श्रवण मार्ग ह्वै गमन करति है अर्थ चौदहों लोकमें बिदित है २७ बीसयें प्रकाश में भरद्वाज कह्यो है कि अब करहु बिजय बैकुण्ठ बिप्र या प्रकार निमंत्रण दियो है तासों रामचन्द्र हनुमान् सों कहतहैं कि आज ऋषिको निमन्त्रण है तासों ऋषिके इहां भोजनकरि प्रातभरत पास नन्दीग्राममें आइ हैं २८।२९ ॥

हनुमान् ॥ सबशोकनिछांड़ोभूषणमाड़ोकीजैबिबिधबधाये । सुरकाजसँवारेरावणमारेरघुनंदनघरआये ॥ सुग्रीवसुयोधनसहितबिभीषनसुनहुभरतशुभगीता । जयकीरतिज्योंसँगअमलसकलअँग सोहतलक्ष्मणसीता ३० पद्धटिकाछंद ॥ सुनिपरमभावतीभरतबात । भये सुखसमुद्रमेंमगनगात ॥ यहसत्यकिधौंकछुस्वप्नईश ।

अबकह्योकह्योमोसनकपीश ३१ जैसेचकोरलीलैअँगा
र । त्यहिभूलिजातिसिगरीसँभार ॥ जीउठतउवतज्यों
उदधिनन्द । त्योंभरतभयेसुनिरामचन्द ३२ ज्योंसोइर
हतसबसूरहीन । अतिकैअचेतयद्यपिप्रवीन ॥ ज्योंउव
तउड़तहँसिकरतभोग । त्योंरामचंद्रसुनिअवधलोग ३३
मालिनीछंद ॥ जहँतहँगजगाजैंदुंदुभीदीहबाजैं । बहुब
रणपताकास्यंदनाश्वादिराजैं ॥ भरतसकलसेनामध्ययों
वेषकीने । सुरपतिजनुआयेमेघमालानिलीने ३४ सक
लनगरबासीभिन्नसेनानिसाजैं । रथसुगजपताकाझुंडझुं
डानिराजैं ॥ थलथलसबशोभैंशुभ्रशोभानिछाई । रघुप
तिसुनिमानोंऔधसीआजआई ३५ चामरछंद ॥ यत्रत
त्रदासईशब्योमतेविलोकहीं । बानरालिरीछराजिदृष्टि
सृष्टिरोकहीं॥ ज्योंचकोरमेघओघमध्यचंद्रलेखहीं । भानु
केसमानयानत्योंबिमानदेखहीं ३६ मदनमनोहरदंडक॥
आवतबिलोकिरघुबीरलघुबीरतजि ब्योमगतिभूतलवि
मानतबआइयो । रामपदपद्मसुखसद्मकहँबंधुयुगदौरि
तबषट्पदसमानसुखपाइयो। चूमिमुखसूंघिशिरअंकरघु
नाथधरिअश्रुजललोचननपेखिउरलाइयो। देवमुनिवृद्ध
परसिद्धसब सिद्धजनहर्षितनपुष्पबरषानिबरषाइयो ३७

माडो कहे पहिरो ३० । ३१ उदधिनन्द चन्द्रमा ३२ । ३३ स्यन्दन रथ अश्व घोड़े आदि पदते पालकी आदि और जानो ३४ थल थलमें सकल नगरबासी कैसे शोभितहैं कि अनेक प्रकार के भूषण बस्त्रादिकी शोभानसों छायो रघुपतिको आगमन इति शेषः सुनिकै मानों अवधपुरीही सी आई है ३५ बानरनकी आलि कहे पंक्ति औ ऋक्षनकी राजि पंक्ति है सो पुर-

बासिनकी दृष्टिकी जो सृष्टिहै ताको रोंकति हैं अर्थ आगेबानर ऋक्ष उड़त आवतहैं तासों रामचन्द्र नहीं देखिपरत भानुकहे सूर्यरूपी जो यानकहे बाहे बाहन है तामें चढ़्यो चन्द्रमा को जैसे मेघ ओघ कहे मेघ समूहमें चकोर लेखैं ताही विधि भानु सूर्य सम यान पुष्पकमें रामचन्द्र को ऋक्ष बानरनके मध्यमें पुरबासी देखतहैं यामें अभूतोत्प्रेक्षा है दूसरो अर्थ सुगमहै ३६ अंक कहे गोदमें धरि लियो कहे बैठारि लियो फेरि लोचनन में अश्रु देखि अति प्रीतिसों उरमेंलाइ लियो ३७ ॥

दोहा ॥ भरतचरणलक्ष्मणपरेलक्ष्मणकेशत्रुघ्न ॥ सीतापगलागतदियोआशिषशुभशत्रुघ्न ३८ मिलेभरतअरुशत्रुहनसुग्रीवहिअकुलाइ ॥ बहुरिबिभीषणकोमिले अंगदकोसुखपाइ ३९ आभीरछन्द ॥ जामवंतनलनील । मिलेभरतशुभशील ॥ गवयगवाक्षगयंद । कपिकुलसबसुखकंद४०ऋषिबशिष्ठकोदेखि । जन्मसफलकरिलेखि ॥ रामपरेउठिपांय । लक्ष्मणसहितसुभाय ४१ दोहा ॥ लैसुग्रीवबिभीषणहिंकरिकरिबिनयअनंत ॥ पांयनपरेबशिष्ठकेकबिकुलबुधिबलवंत ४२ श्रीराम-पद्धटिकाछन्द ॥ मुनिजैबशिष्ठकुलइष्टदेव । इनकपिनायककेसकलसेव ॥ हमबूड़तहैंबिपदासमुद्र। इनराखिलियो संग्रामरुद्र ४३ ॥

जबभरत शत्रुघ्न सीताके पदलागे तबसीताजू आशिषदियो कि शत्रुघ्नकहे शत्रुनको मारो ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ४२ कपिनायक सुग्रीव संग्राममें रुद्रकहे भयंकर ४३ ॥

सबआसमुद्रकीभूसुधाइ । तबदईजनकतनयाबताइ ॥ निजभाइभरतज्योंदुःखहर्ण। अतिसमरअमरहत्यो

कुम्भकर्ण ४४ इनहरेबिभीषणसकलशूल । मनमानत
हौंशत्रुअतूल ॥ दशकंठहनतसबदेवसाखि । इनलियेए
कहनुमंतराखि ४५ तजितियसुतसोदरबंधुईश । मिले
हमहिंकायमनबचऋषीश ॥ दइमीचुइंद्रजितकीबताय ।
अरुमंत्रजपतरावणदिखाय ४६ ॥ तोटकछंद ॥ इनअं
गदशत्रुअनेकहने । हमहेतुसहेदिनदुःखघने ॥ बहुराव
णकोसिखदैदुखलै । पुनिआयेभलेसियभूषणलै ४७ ॥

सुधाइकहे ढुंढाइकै कुंभकर्णको तौ रामचन्द्रही मारचो है परन्तु कुम्भकर्णको नासा श्रवण प्रथम सुग्रीव काटिलियो है ताही समयमें रामचन्द्र मारचोहै तासों ताको मारिबो सुग्रीवहीपर स्थापित करत हैं अमरकहे काहूके मारिबे लायक नहीं ४४ जब मेघनाद ब्रह्मपाशमें हनुमान्को बांधिलैगयो है तब रावण हनुमान्के बधकरिबेकी आज्ञा राक्षसनको दियो है तब बिभीषण दूत मारिये न राज छोंड़िदीजई ऐसे बचनकहि हनुमान्को बचायो है सोकथा चौदहें प्रकाशमों है ४५ सोदर कुम्भकर्ण बंधु-ज्ञाति समूह ईशरावणके मंत्रजपतसमय अंगदादि गयेहैं तासमय विभीषणके कछूबचननहीं हैं तौ इहां रामचन्द्र की उक्तिसों जानो कि विभीषणहीके बताये सों अंगदादि गये हैं ४६ हमहेतु कहे हमारे हेतु ४७ ॥

दशकंधकेजायजोगूढ़थली । तिनकेतनसोंबहुभांति
दली ॥ महिमेंमयकीतनयाकर्षी । मतिमारिअकंपनकोह
र्षी ४८ दोहा ॥ मार्योमैंअपराधबिनइनकोपितुगुणग्राम ।
मनसाबाचाकर्मणाकीन्हेमेरेकाम ४९ गीतिकाछन्द ॥
इनजामवंतअनेकराक्षसलक्षलक्षनहीहने । मृगराजज्यों
वनराजमेंगजराजमारतनीगने ॥ बलभावनाबलवानको

टिकरावणादिकहारहीं । चढ़िब्योमदीहबिमानदेवादिवा
नआनिनिहारहीं ५० दोहा ॥ करैनकरिहैकरतअबको
ऊऐसोकर्म ॥ जैसेबांध्योजलउपलजलनिधिसेतुसधर्म
५१ गीतिकाछंद ॥ हनुमन्तयेजिनमित्रतारबिपुत्रसोंह
मसोंकरी । जलजालकालकरालमालउफालपारधराध
री ॥ निश्शंकलंकनिहारिरावणधामधामनिधाइयो । यक
बाटिकातरुमूलसीतहिदेखिकैदुखपाइयो ५२ ॥

गूढ़स्थली जय स्थान तिनके अंगदके तनसों कर्षी कहे खैंची कठोरी इति औ अकंपनको मारिकै इनकी मति हर्षी प्रसन्नभई ४८ । ४९ लक्ष लक्षनही अर्थ एक एक बारमें लाखलाख मारयोहै बनराज कहे बड़ो बन बलभावना कहे बलक्रिया हारहीं कहे हारतभये यहां भूतार्थ मों बर्त्तमान प्रत्ययको अर्थ है ५० उपल पाषाण सधर्म कहे यथोचित ५१ कालहुते कराल जे नक्रादि जन्तु हैं तिनको है माल कहे समूह जामें ऐसो जो जलजाल कहे समुद्रको जल समूह है ताके पारकी धरा पृथ्वीको उफाल कहे कूदिबो ताहीसों धरी कहे प्राप्तभये अर्थ एतो बड़ो समुद्रताके पार कूदिहीकै गये काहू पोतादि में नहीं गये इति भावार्थः ५२ ॥

तरुतोरिडारिप्रहारिकिंकरमंत्रिपुत्रसँहारियो । रण
मारिअक्षकुमाररावणगर्बसोंपुरजारियो ॥ पुनिसौंपिसी
तहिमुद्रिकामणिशीशकीजबपाइयो । बलवन्तनांघिअनं
तसागरतैसहीफिरिआइयो ५३ दशकण्ठदेखिबिभीष
णैरणब्रह्मशक्तिचलाइयो । करिपीठिल्योंशरणागतैतब
आयबक्षसिलाइयो ॥ यकयामयामिनिमेंगयोहतिदुष्टप
र्बतआनिकै । त्यहिकाललक्ष्मणकोजियाइजियाइयोहम
जानिकै ५४ दोहा ॥ अपनेप्रभुकोआपनोकियेहमारो

काज ॥ ऋषिजुकह्योहनुमन्तसोंभक्तनकोशिरताज ५५ चामरछन्द ॥ बीरधीरसाहसीबलीजेबिक्रमीक्षमी । साधु सर्वदासुखीतपीजपीजेसंयमी ॥ भोगभागयोगयागबेग वन्तहैंजिते । बायुपुत्ररामकाजवारिडारियेतिते ५६ दोहा ॥ सीतापाईरिपुहत्योदेख्योतुमअरुगेहु ॥ रामायण जपसिद्धिकोकपिशिरटीकादेहु ५७ यहिविधिकपिकुलगुणनकोकहतहुतेश्रीराम ॥ देख्योआश्रमभरतकोकेशव नन्दीग्राम ५८ ॥

अनन्त कहे बड़ो ५३ दुष्टपदते कालनेमि जानो लक्ष्मणको जियाइ हम कहे हमैं जियायो लक्ष्मणके मरेराम न जी हैं यह जानिकै ५४ सब भक्तनके शिरताजएई हैं इति भावार्थः ५५ बिक्रमी उपायी भागकहे भाग्यवतु प्रत्ययांत भोगादि पांचौशब्दजानौ रामकाजमें वायुपुत्र पर इत्यादिन बीरादिकन सबनको वारिडारियत है अर्थ जो रामकाज वायुपुत्र सँवारयो है सो इन वीरादिकनको काहूको सँवारयो न सँवरतो ५६ रामायण कहे रामकथा ५७। ५८॥

सुंदरीछंद ॥ पुष्पकतेउतरेरघुनायक । यक्षपुरीपठये सुखदायक ॥ सोदरकोअवलोकितयोंथल । भूलिरह्योकपिराक्षसकोदल ५९ कंचनकोअतिशुद्धसिंहासन । रामरच्योत्यहिऊपरआसन ॥ कोपरहीरनकोअतिकोमल । तामहँकुंकुमचन्दनकोजल ६० दोहा ॥ चरणकमल श्रीरामकेभरतपखारेआप ॥ जातेगंगादिकनकोमिटत सकलसंताप ६१ पंकजबाटिकाछन्द ॥ सूरजचरणबिभीषणकेअति । आपुहिभरतपखारिमहामति ॥ दुन्दुभि धुनिकरिकैबहुभेवन । पुष्पबरषिहरषेदिविदेवन ६२

दोहा ॥ पीछेदुरिशत्रुघ्नसन लक्ष्मणध्वायेपाइ ॥ पग सौमित्रिपखारियोअंगदादिकेआइ ६३ तोमरछन्द ॥ शिरतेजटानिउतारि । अँगअंगरागनिधारि ॥ तनभूषि भूषणबस्त्र । कटिसोंकसेसबशस्त्र ६४ दोहा ॥ शिरतेपावनपादुका लैकरिभरतबिचित्र ॥ चरणकमलतरहरिधरी हँसिपहिरीजगमित्र ६५ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्बिरचितायांरामस्यनन्दिग्रामप्रवेशोनामैकविंशतितमःप्रकाशः २१ ॥

यक्षपुरी कुबेरपुरी ५९ कोमलकहे चिक्कण ६० । ६१ । ६२ सौमित्रि शत्रुघ्न ६३ । ६४ तरहरिकहे तरे ६५ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां एकविंशतितमःप्रकाशः २१ ॥

दोहा ॥ याबाइसेंप्रकाशमेंअवधपुरीहिप्रवेश ॥ पुरबासिनमातानिसों मिलिबोरामनरेश १ सुन्दरीछन्द ॥ अवधपुरीकहँरामचलेजब । ठौरहिठौरबिराजतहैंसब ॥ भरतभयेशुभसारथिशोभन । चमरधेररबिपुत्रबिभीषन २ तोमरछन्द ॥ लीनीछरीदुहुंबीर । शत्रुघ्नलक्ष्मणधीर ॥ टारैंजहांतहँभीर । आनन्दयुक्तशरीर ३ दोधकछन्द ॥ भूतलहूदिविभीरबिराजें । दीहदुहूंदिशिदुन्दुभिबाजें ॥ भाटभलेबिरदावलिगावें । मोदमनोप्रतिबिम्बबढ़ावें ४ भूतलकीरजदेवनशावें । फूलनकीबरषाबरषावें ॥ हीननिमेषसबैअवलोकें । होड़परीबहुधादुहुंलोकें ५ ॥

१।२।३ देवतनके प्रतिबिंब सम अवधबासी अवधबासिन के प्रतिबिंब सम देवता मोदबढ़ावत हैं अर्थ जो आनन्द क्रिया हास्यादि अवधबासी करत हैं सोई देवता करत हैं ४ होड़कहे बहसमानों अवधबासी बहसकरि देवता लोकको धूरि उड़ावत हैं औ देवता ताधूरिको फूलनकी अति वृष्टिकरि नशाइ देते हैं अर्थ दबाइ लेते हैं औ देवता तौ अनिमेषही हैं औ रामचन्द्र के दर्शनमें अवधबासिनहूंकी पलकनहीं लागत सो मानों परस्पर होड़किये हैं कि देखिये धौं काकी पलक लागति है यामें असिद्ध बिषय हेतूत्प्रेक्षा है ५ ॥

तारकछन्द ॥ सिगरेदलऔधपुरीतबदेखी । अमरावतितेअतिसुन्दरलेखी ॥ चहुंओरबिराजतिदीरघखाई। शुभदेवतरंगिनिसीफिरिआई ६ अतिदीरघकंचनकोट बिराजै । मणिलालकँगूरनकीरुचिराजै ॥ पुरसुंदरमध्य लसैछबिछायो। परिवेषमनोंरबिकोफिरिआयो ७ दोहा॥ बिबिधपताकाशोभिजैंऊंचेकेशवदास ॥ दिविदेवनकेशोभिजैंमानहुंव्यजनबिलास ८ बिजयछन्द ॥ चढ़ींप्रतिमंदिरशोभबढ़ीतरुणीअवलोकनकोरघुनन्दनु । मनोगृहदीपतिदेहधरेसुकिधौंगृहदेविबिमोहतिहैंमनु । किधौंकुलदेविदियेअतिकेशवकैपुरदेविनकोहुलस्योगनु।जहींसोतहींयहिभांतिलसैंदिविदेविनकोमदघालतिहैंमनु ९ ॥

देवतरंगिनि गंगासम कह्यो तासों बिमल जलयुक्त जानो ६ रविसम अयोध्यापुरी है परिवेष सम कंचनकोट है ७ व्यजन पंखा ८ अपनी सुन्दरतादि देखाइ देविनकी सुन्दरतादिको मदढूरि करती हैं अवधपुरीकी स्त्री देविनहूंसों अधिक सुन्दरी हैं इतिभावार्थः ९ ॥

दोहा ॥ अतिऊंचेमंदिरनपरचढ़ींसुन्दरीसाधु ॥ दि

विदेवनकोकरतिहैंमनुआतिथ्यअगाधु १० तोटकछन्द ॥ नरनारिमलीसुरनारिसबै । तिनकोउपरैंपहिंचानि अबै ॥ मिलिफूलनकीबरषैंबरषा । अरुगावतिहैंजयके करषा ११ पद्मावतीछन्द ॥ रघुनन्दनआयेसुनिसबधाये पुरजनजैसेतैसे । दर्शनरसभूलेतनमनफूलेबरणेजाहिं नजैसे ॥ पतिकेसँगनारीसबसुखकारीरामहिंयोंदृगजोरी। जहँतहँचहुंओरनिमिलीझकोरनि चाहतिचन्दचकोरी १२ पद्धटिकाछन्द ॥ बहुभांतिरामप्रतिद्वारद्वार । अति पूजतलोगसबैउदार ॥ यहिभांतिगयेनृपनाथगेह । युत सुन्दरिसोदरस्योसनेह १३ दोहा ॥ मिलेजायजननीन को जबहींश्रीरघुराइ ॥ करुणारसअद्भुतभयो मोपैकह्यो नजाइ १४ सीतासीतानाथजू लक्ष्मणसहितउदार ॥ सबनमिलेसबकेकिये भोजनएकहिबार १५ ॥

अति सुन्दररूप आतिथ्यसम है १० यासों या जनायो कि जेतीदूरि देविनको बिमान है तेतेई ऊंचे अवधबासिन के गृह हैं ११ । १२ नृपनाथ दशरथ १३ । १४ । १५ ॥

सोरठा ॥ पुरजनलोगअपार यहइसबजानतभये ॥ हमहींमिलेअगार आयेप्रथमहमारेही १६ मदनहराछन्द ॥ सँगसीतालक्ष्मणश्रीरघुनन्दनमातनकेशुभपांइपरे सबदुःखहरे । आंशुनअन्हवायेभागनिआयेजीवनपाये अंकभरेअरुअंकधरे ॥ तेबदननिहारैंसरबसुवारैंदेहिंस बै सबहीनघनोअरुलेहिंघनो । तनमननसँभारैंयहैबिचारैंभागबड़ोयहहैअपनोकिधौंहैसपनो १७स्वागताछन्द ॥ धामधामप्रतिहोतिबधाई । लोकलोकतिनकीधुनिछाई ॥

देखिदेखिकपिअद्भुतलेखैं । जाहिंयत्रतितरामहिंदेखैं १८ दौरिदौरिकपिरावरआवैं । बारबारप्रतिधामनिधावैं ॥ देखिदेखितिनकोदैतारी । भांतिभांतिबिहँसैंपुरनारी १९॥

१६ रामचन्द्र जू भागनसों आये तासों मात जीवनसम पाये सो अंकमें भरेकहे अतिप्रेमसों छाती में लगाये फेरि अंक जो गोद है तामें धरेकहे बैठारे तब आनन्दाश्रुनसों सीता राम लक्ष्मण को अन्हवाये औ ते सबै कौशल्यादि माता रामादिके बदन निहारती हैं औ तिनपर सर्बस्व वारिवारि सबको अर्थ याचक नेगिनको देती हैं औ तिन याचकनसों आशीर्बाद करिघनो लेतीहैं पावतीहैं अर्थ याचक आशीर्बाद देते हैं कि जो हमको तुमदियो ताको कोटिगुणित तुम्हारेहो अथवा रामादिके बदन दर्शनही सों घनोलेती हैं पावती हैं अर्थ मुख दर्शनकरि घनोपायो सम मानती हैं १७।१८ रावर स्त्रीभवन १९ ॥

श्रीराम-दोहा ॥ इनसुग्रीवबिभीषणै अंगदअरुहनुमान॥सदाभरतशत्रुघ्नसममाताजीमैंजान २०सुमित्रा-सोरठा ॥ प्राणनाथरघुनाथ जियकीजीवनमूरिहौ ॥ लक्ष्मणहेतुमसाथ क्षमियहुचूकपरीजोकछु २१राम-दंडक॥ पौरियाकहौंकिप्रतीहारकहौं किधौंप्रभुपुत्रकहौंमित्रकिधौं मन्त्रीसुखदानिये । सुभटकहौंकिशिष्यदासकहौंकिधौंदूतकेशौंदासहाथकोहथ्यारउरआनिये। नैनकहौंकिधौंतन मनकिधौंतनत्राणबुद्धिकहौंकिधौंबलबिक्रमबखानिये। देखिवेकोएकहैंअनेकभांतिकीन्हीसेवा लक्ष्मणकेमातकौन कौनगुणगानिये २२ ॥

२०।२१ पौरिया जोमुख्यद्वारकी रक्षामें रहतहै प्रतीहारजोराजसभाके द्वारमें सुवर्णादिको दंडलैठाढ़ो रहतहै बलजोर विक्रमयत्न येसव एकएक आपनो आपनो कार्यकरि सुखदेतहैं सोलक्ष्मणने

जहां जाको काजलाग्यो है तहां ताही बिधि तौन काजकरि हम को परम सुखदीन्होहै २२ ॥

मोटनकछन्द ॥ शत्रुघ्नबिलोकतरामकहैं । डेरानिसजौ जहँसुःखलहैं ॥ मेरेघरसम्पतियुक्तसबै । सुग्रीवहिंदेहु निवासअबै २३ साजेजोभरत्थसबैधनको । राखौतहँ जाइबिभीषनको ॥ नैऋत्यनकोकपिलोगनको । राखौ निजधामनिभोगनको २४ दोहा ॥ एकएकनैऋत्यको जितनेबानरलोग ॥ आगेहीठाढ़ेरहत अमितइन्द्रकेभोग २५ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां रामस्यायोध्यापुरप्रवेशोनामद्वाविंशःप्रकाशः २२ ॥

संपति अनेकभोगवस्तु २३ । २४ अमितकहे अप्रमाण २५ ॥
इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांद्वाविंशःप्रकाशः २२ ॥

दोहा ॥ यातेइसेंप्रकाशमेंऋषिजनआगमलेखि ॥ राज्यश्रीनिंदाकहीश्रीमुखरामबिशेखि १ मल्लिकाछन्द ॥ एककालरामदेव । शोधुबंधुकरतसेव ॥ शोभिजैंसबैसोऔर । मंत्रिमित्रठौरठौर २ बानरेशयूथनाथ । लंकनाथ बंधुसाथ ॥ शोभिजैंसबैसमीप । देशदेशकेमहीप ३ दोहा ॥ सरसस्वरूपबिलोकिकैउपजीमदनहिंलाज ॥ आइगयेताहीसमयकेशवऋषिऋषिराज ४ असितअत्रि भृगुअंगिराकश्यपकेशवब्यास । बिश्वामित्रअगस्त्ययुतबालमीकिदुर्वास ५ ॥

१।२ बानरेश सुग्रीव यूथनाथ अंगदादि लंकनाथ जेबन्धु बि-भीषण अथवा बंधु जे ज्ञातिबर्गहैं राक्षसगण इति तेहैं साथ जिन के ऐसे लंकनाथ जे बिभीषणहैंते ३ सरसकहे अपनासों अधिक सुन्दर ४।५ ॥

बामदेवमुनिकण्वयुतभरद्वाजमतिनिष्ठ । पर्बतादिदै सकलमुनिआयेसहितबशिष्ठ ६ नगस्वरूपिणीछंद ॥ सबन्धुरामचन्द्रजूउठेबिलोकिकैतबै । सभासमेतिपाँपरे बिशेषिपूजियोसबै ॥ बिवेकसोंअनेकधादशाअनूपआसने । अनर्घअर्घआदिदैविनैकियेघनेघने ७ राम—रूपमालाछन्द ॥ रावरेमुखकेविलोकतहीभयेदुखदूरि । सुप्रलापनहींरहेउरमध्यआनँदपूरि ॥देहपावनकैगयोपदपद्मकोपयपाइ । पूजतैभयोबंशपूजितआशुहीमुनिराइ ८ संनिधानभरेतपोधनधामधीधनधर्म । अद्यसद्यसबैभये निरवद्यबासरकर्म ॥ ईशयद्यपिदृष्टिहीभइभूरिमंगलसृष्टि । पूंछिबेकहँहोतिहैसोतथापिबाकविसृष्टि ९ ॥

निष्ठ कहे उत्कर्ष है मति जिनकी ॥ निष्ठोत्कर्षव्यवस्थयोरित्यभिधानचिंतामणिः ६ विवेक सों बिचार सों अर्थ यथोचित अनर्घकहे अमोल अर्घ पाद्यादि पूजाबिधि प्रसिद्ध है ॥ अर्घःपूजाविधौमूल्ये ॥ इत्यभिधानचिंतामणिः ७ हैछन्दको अन्वय एक है तपोधन ऋषिनको संबोधन है सुप्रलाप कहे सुबचन सुप्र-लापः सुवचनमित्यमरः ॥ पदपद्मको पयकहे चरणोदक रावरे पदको सम्बन्ध सुप्रलापादिकमों सर्वत्र है संनिधान कहे समीप सों अर्थ रावरे निकट प्राप्तभये सों हमारे धाम घर औ धी बुद्धि धन औ धर्मसोंभरे अर्थ धाम धनसों भरे बुद्धि धर्मसोंभरी अद्य कहे आज सद्यकहे शीघ्रही सबै जे बासर कर्मकहे रोजरोज के दान कर्महैं निरवद्य कहे अनिंद्यभये औ हे ईश यद्यपि तुम्हारी

दृष्टिहीसों अवलोकनहीं सों हमपर भूरि कहे बहुत मंगलकहे कल्यानकी दृष्टिभई अर्थ हमारो बड़ो कल्याण भयो परन्तु कल्याणमें तो काहूकी तृप्तिहोति नहीं तासों अधिक कल्याण के लिये तुमसों कछू पूंछिबेको हमारे वाक जे बचन हैं तिनकी बिसृष्टिकहे उत्पत्ति होति है ८।९ ॥

दोहा ॥ गंगासागरसोंबड़ोसाधुनकोसतसंग॥पावनकरिउपदेशअतिअद्भुतकरतअभंग १० ॥

साधुनको जो सत्संग है सो गंगासागरहूसों बड़ो है काहेते कि अति अद्भुत जो उपदेश शिक्षा है तासों पावनकहे पवित्र करिकै अभंगकहे नाशरहितकै अर्थ मुक्तकरतहै अथवा उपदेश सों अति पावनकरि अद्भुत अभंगकहे मुक्तकरत है अर्थ जीवन्मुक्त करतहै उपदेशकरि अभंग करिबेकी शक्ति गंगासागरमों नहीं है तासों बड़ो कह्यो एतो रामचन्द्रके कहतही बिरक्तबचन समुझि अगस्त्य बीचहीमें बोलिउठे तासों जो पूंछिबोरहै सो नहीं पूंछन पाये सो चौबीसयें प्रकाशमें कह्योहै कि ॥ जो कछु जीव उधारनको मत जानतहो तौ कहौ मनुहैरतु ॥ कहिबेकोहेतु यह कि हमको कछू ऐसो उपदेशकरौ जासों संसार छूटै मुक्तिहोइ १० ॥

अगस्त्य—नाराचछंद ॥ कियेबिशेषसोंअशेषकाजदेवरायके । सदात्रिलोकलोकनाथधर्मबिप्रगायके ॥ अनादिसिद्धिराजसिद्धिराजआजलीजई । नृदेवतानिदेवतानिदीहसुक्खदीजई ११ ॥

हे त्रिलोक लोकनाथ अर्थ तीनोंलोकके जे लोककहे जन हैं तिनके नाथकहे स्वामी हौ अर्थ ईश्वरहौ यासों या जनायो कि तुम्हारो बंधन कौनहै जासों छूटिबेकी इच्छा करतहौ रावणको मारि देवराय जे इन्द्र हैं औ धर्म औ बिप्र औ गाय इनके अशेष कहे पूर्ण काजकरयो अब अपनी अनादि सिद्धि अर्थ तुम्हारी

परम्पराकी सिद्धि है औ राजसिद्धि कहे राजनकी सिद्धि जो राजति है ताहि लीजै नृदेवताराजा ११ ॥

दोहा ॥ मारेअरिपारेहितूकौनहेतुरघुनन्द ॥ निरानंदसेदेखियतयद्यपिपरमानन्द १२ श्रीराम–तोमरछंद । सुनिज्ञानमानसहंस । जपयोगयागप्रशंस ॥ जगमांझहैदुखजाल। सुखहैकहायहिकाल १३ तहँराजहैदुखमूल। सबपापकोअनुकूल ॥ अबताहिलैऋषिराय । कहिकौन नरकहिजाय १४ चौपाई ॥ सोदरमंत्रिनकेजेचरित्र । इनकेहमपैसुनिमखमित्र॥ इनहींलगेराजकेकाज । इनहीं तेसबहोतअकाज १५ ॥

एक तौ तुम परमानन्द रूपहीहौ ताहूपर अरि रावणादि को मारे औ हितू इन्द्रादिको पालतभये ऐसे आनन्दबर्द्धक काजऊ करे तहूपर तुम्हें निरानन्दसे काहे देखियत है इत्यर्थः ज्ञानरूपी जो मानस मानसरहै ताके हंसहौ औ जगमें योग औ यागकीहै प्रशंसास्तुति जिनकी दूनोंपद सम्बोधन हैं १२।१३।१४।१५॥

राजभारनलभैयनिदयो । छलबलछीनिसबैतिनलयो ॥ जबलीन्होंसबराजबिचारि । नलदमयंतीदियोनिकारि १६ राजासुरथराजकीगाथ । सौंपीसबमंत्रिनकेहाथ ॥ संततमृगयालीनाबिचारि । मंत्रिनराजादियोनिकारि १७ राजश्रीअतिचंचलतात । ताहूकीसुनिलीजैबात ॥ यौबनअरुअविवेकीरंग । विनश्योकोनराजश्रीसंग १८ शास्त्रसुजलहुंनधोवततात । मलिनहोतअतिताकेगात ॥ यद्यपिहैअतिउज्ज्वलदृष्टि । तदपिसृजतिरागनकीसृष्टि १९ ॥

नलकी कथा पुराणमों प्रसिद्धहै १६ मृगया शिकार सुरथहू

की कथा मार्कण्डेय पुराणमों प्रसिद्धहै १७ अति चञ्चल जो राजश्री है ताहूमें ऐसो दोषहै सो सुनौ कहियतहै यौवन औ अविवेकी रंग औ राजश्री के संगमें को नहीं बिनश्यो ये तीनोंसम हैं अथवा यौवन औ अविवेकी रंगयुक्त जो राजश्री है अर्थ सदा यौबन औ अबिबेकसों युक्त रहतिहै ताके संग कोनहीं बिनश्यो अथवा हितोपदेशमें कह्योहै कि । यौवनंधनसम्पत्तिःप्रभुत्वमविवेकता । एकैकमप्यनर्थायकिमुयत्रचतुष्टयं ॥ यामें चारि कह्योहै तामतसों यह अर्थ कि यौवन अविवेकी रंग औ राज औ श्री कहे सम्पत्ति इन चारिके संगमें को नहीं विनश्यो १८ शास्त्रका उपदेश सुनिकै शास्त्रकी आज्ञा माफिक नहीं करत और तासों मलिन उदास होत हैं अथवा अनेक शास्त्र सुनावो ताहूपर पातकनकरि ताके गात मलिन होतहैं शास्त्रहू सुनिकै अनेक पातक करतही हैं इत्यर्थः औ यद्यपि याकी उज्ज्वल बिमल दृष्टिहै अर्थ उत्तम पदार्थनपर दृष्टिहै तौ अति उत्तम जो पदार्थ ईश्वरपदहै तामें प्रीतिवारे सों नहीं करति रागजो स्रक चन्दन बनितादि बिषे अभिलाषहै ताको सृजति कहे उत्पन्नकरतिहै अभिमत विषयाभिलाषो रागः १९ ॥

महापुरुषसोंजाकीप्रीति । हरतिसोमंझामारुतरीति ॥ बिषयमरीचिकानिकीज्योति । इन्द्रीहरिणहारिणी होति २० गुरुकेबचनअमलअनुकूल । सुनतहोतश्रवणनकोशूल ॥ मैनबलितनवबसनसुदेश । भिदतनहींजल्ज्योंउपदेश २१ ॥

जा पुरुष की प्रीति महापुरुष जे भगवान्हैं तिनसोंहै ताके पास आइ मंझामारुत कहे अति जोर वायुकी रीतिसों हरति कहे तोरति है अर्थ जैसे मंझामारुत वृक्षलतानि को तोरति है तैसे यह प्रीतिको तोरति है आशय यह कि आपु विष्णुकी स्त्री हैं तासों प्रीति रूपी स्त्रीको विष्णुके पास जात देखि सौतिधर्म

सों तोरतिहै अर्थ राजनकी प्रीति ईश्वरपर नहीं होति रूप रस गंध स्पर्श शब्द ये जेपांचौ विषयरूपी मरीचिका कहे मृगतृष्णा हैं तिनकी ज्योतिमें इंद्रीरूपी जे हरिण हैं तिनकी हारिणी कहे लैजानहारी होतिहै अर्थ मृगतृष्णा सम मिथ्या जो पञ्चधा विषयहैतामें राजनकी इंद्रिनको भ्रमावतिहै २० मैनकहेमोम २१ ॥

मित्रनहूकोमतोनलेति । प्रतिशब्दकज्योंउत्तरदेति ॥ पहिलेसुनैनशोरसुनंति । मातीकरिनीज्योंनगनंति २२ दोहा ॥ धर्मधीरताबिनयतासत्यशीलआचार । राजश्री नगनकछूवेदपुराणबिचार २३ चौपाई ॥ सागरमेंबहुकालजोरही । शीतबक्रताशशितेलही ॥ सुरतुरंगचरणनितेतात । सीखीचंचलताकीबात २४ कालकूटतेमोहनरीति । मणिगणतेअतिनिष्ठुरप्रीति ॥ मदिरातेमादकतालई । मंदरउदरभईभ्रममई २५ ॥

प्रतिशब्दककहे भाई शब्द अर्थ जैसेशब्द के साथही प्रतिशब्दकहोतहै तैसे राजा मित्रके बाक्यमें शुभाशुभको बिचार नहीं करत साथही उत्तरकहे जवाव देत है औ पहिले तौ हितबाक्यको सुनतिनहीं जो शोरकरि कहै सो सुनिबो करत है तौ मातीकरिनीसम गनतिनहीं अर्थ जैसे मातीकरिनी महावतके हितके हित वचन नहीं गनति तैसे राजश्री मित्रादि के हितबचन नहीं गनति २२ । २३ क्षीरसागरमें बहुतकाल रही है तहां इनको संगरह्यो तिनसों येकर्म सीखे हैं शीतताकहे प्रसन्नह्वै सेवकादिको धनादिदीबो वक्रता क्रुद्धह्वै बधादि करिबो सुर तुरंग उच्चैःश्रवा चंचलताकी बातकहे क्षणमें और क्षणमें और कहिबो करिबो २४ जैसे कालकूट भक्षण सों मोहित मूर्च्छित भये प्राणीको कछु सुधिनहीं रहति है तैसे राज्यश्री में मोहित राजनको ईश्वरादिकी सुधि भूलिजातिहै इत्यर्थः निष्ठुरताबश राजनको जीव बधादिमें

कछू दयानहीं आवति इत्यर्थः राज्य श्रीकेबश मत्त ह्वै राजा हित बस्तुको बिचार नहींकरत इत्यर्थः औ विष्णुकरिकै भ्रमायो जो मंदरहै ताके संगसों राजश्री के उदरमें भ्रमभई कहे भ्रमाधिक्य भई अर्थ मंदरको भ्रमतदेखिकै भ्रमसिख्यो राजनके उरमें सदा बंधु आदिकनहू को प्रतिकूलताको भ्रमरहत है इत्यर्थः २५ ॥

दोहा ॥ शेषदईबहुजिह्वता बहुलोचनताचारु ॥ अप्सरानितेसीखियोअपरपुरुषसंचारु २६ चौपाई ॥दृढ़ गुनबांधेहूबहुभांति । कोजानैकेहिभांतिबिलाति॥ गजघोटकभटकोटिनअरैं । खड्गलतापंजरहूपरैं २७ अपनाइतिकीन्हेबहुभांति । कोजानैकितह्वैभजिजाति ॥ धर्मकोषमंडितशुभदेश । तजतिभ्रमरिज्योंकमलनरेश २८ ॥

बहुजिह्वताकहे एकजिह्वासों अनेक जिह्वासम बातकहि बहुलोचनताकहे द्वैलोचनसों अनेक लोचनसम देखिबो अर्थ राजा अतिबतकहा होतहैं औ चारुदृष्टिसों सर्वत्र देखतहैं अपरकहे अन्यपुरुष प्रतिसंचार अर्थ एकपुरुष राजाको छांड़ि एकपास जाइबो २६ द्वैछन्दको अन्वय एकहै गुनपद श्लेष है शूरतादि औ हौरीगज औ घोटकघोड़े औ भट कोटिन रक्षाके अर्थ अरैंकहे हठकरैं औ तिनकी खड्ग तरवारिरूपी जोलता है ताके पंजरहू मेंपरैं अर्थ तरवारि हाथमोंलैकै अनेक गजादि चौकीदै रक्षाकरैं ताहूपर और अनेकबिधि अपनाइति कीन्हेहूं अर्थ प्रीतिकीन्हेहू धर्मराजधर्म औ कोमलताकोष खजाना औ सिफ़ाकन्द तासों मंडितयुक्त औ शुभदेशकहे सुन्दर है राज्यभूमि जाकी औ सुष्ठुहै देश उत्पत्ति स्थान जाको औ कमलरूपी जो नरेशराजाहै ताको तजतिहै औ कोजानै कहांह्वै भागिजातिहै सुन्दरतादिहूके बशनहींहोति इति भावार्थः २७ । २८ ॥

यद्यपिहोइशुद्धमतिसत्तु । फिरैपिशाचीज्योंउनमत्तु॥

गुणवंतनिआलिंगतिनहीं । अपवित्रनिज्योंछांड़तितहीं २९ शूरनिनाशतिज्योंअहिदेखि । कंटकज्योंबहुसाधन लेखि ॥ सुधासोदरायद्यपिआप । सबहीतेअतिकटकप्र ताप ३० यद्यपिपुरुषोत्तमकीनारि । तदपिसकलखल जनअनुहारि ॥ हितकारिनकीअतिद्वेषिणी । अहितलो गकीअन्वेषिणी ३१ मनमृगकोसुबधिककीगीति । बिषै बेलिकोबारिदरीति ॥ मदपिशाचिकाकीसीअली । मोह नींदकीशय्याभली ३२ ॥

सत्तुकहे प्राणी अर्थ राजासों राज्यश्री युक्तहै पिशाचाक्रांत पुरुषसम उनमत्त फिरतहै गुणवन्तनि कहे विद्यादि अनेक गुण को अपवित्रसम त्याग कराति है इत्यर्थः पंडितेनिर्द्धनत्वमित्युक्तं माधवानलनाटके २९ नाशति कहे छोंड़ति है शूर औसाधुनको राज्य श्री नहीं प्राप्तहोति अथवा शूर औ साधुन को संग्रह राजा नहीं करत इत्यर्थः सुधाजो अमृत है ताकीसोदरा ब- हिन ३० पुरुषोत्तम विष्णुद्वेषिणी कहे शत्रु है अन्वेषिणी कहे ढूंढनहारी है ३१ बधिकसम मनरूपी मृगको बांधिलेति है कहे काबू करिलेतिहै इत्यर्थः औबारिदकहे मेघसम विषयरूपी बेलि को हरित करतिहै इत्यर्थः मदरूपी जो पिशाचिका प्रेतिनि है ताकीअलीकहे सखी है अर्थ सहायकहे पठावनहारी इतिमोहकहे अज्ञानरूपी जो नींदहै ताकीशय्याहै जैसे शय्यामें नींदबढ़ति है तैसे राज्यमें मोहबढ़तहै इत्यर्थः ३२ ॥

आशीविषदोषनकीदरी । गुणसतपुरुषनकारणछ री ॥ कलहंसनकोमेघावली। कपटनृत्यकारीकीथली ३३ दोहा ॥ बामकामकरिकीकिधौंकोमलकदलिसुबेख । धीर धर्मद्विजराजकोमनोराहुकीरेख ३४ चौपाई ॥ मुखरोगी

ज्योंमौनैरहै । बातबुलायएकदैकहै ॥ बंधुबर्गपहिंचानैन ही । मानोंसन्निपातहैगही ३५ ॥

दरी कंदरामें आशीविष सर्पसम अनेक प्रजापीड़नादिदोष जामें बासकरतहैं इत्यर्थः औअनेक जेविद्यादि गणरूपी सत्पुरुष हैं तिनके कारणकहे अर्थ छरी कहे ताड़नदंडहै जैसे राजद्वारमें ताड़नदंड देखि सत्पुरुषनहीं आवत तैसे राज्यश्रीयुक्त पुरुष के पास विद्यादि गुणनहीं आवत कुपुरुष लोभबश दंडपात सहि भूपद्वारादि स्थलमें जातही हैं तासों सत्पुरुषकह्यो राज्य सुखा लस्यसों राजागुणों को अभ्यास नहीं करत इतिभावार्थः कलकहे अविघ्नताणैचित्य इति हंसनको मेघावली समराजनके कलको राज्यश्रीदूरि करतिहै इत्यर्थः अनेकशत्रु भयादि युक्त राजनको चित्तसदारहतहै इति भावार्थः शत्रु सैन्यभेदादि अनेक कपटयुक्त राजाहोत हैं इतिभावार्थः ३३ बामकहे कुटिल जो कामकंदर्प-रूपी करिहार्थीहै ताकोसुबेष कहे हरित कोमल कदलीकेराहैअर्थ गजको कदली सम कामकी बलकर्त्ता है अथवा सुखदहै राजा-अतिकामी होतहैं इतिभावार्थः कदली भक्षणसों गजको बलऔ सुखहोतहै यह प्रसिद्धहै औधीर औधर्मरूपी द्विजराज चन्द्रमा को राहुरेख सम पीड़ाकर्त्ताहै इत्यर्थः राजाबन्धु मन्त्र्यादिमें भेद भयमानिसदा अधीररहत हैं औआलस्य बशदानादि धर्म बिधि पूर्वकनहीं करत इतिभावार्थः ३४ । ३५ ॥

महामंत्रहूहोतनबोध । डसीकालअहिकरिजनुक्रोध ॥ पानबिलासउदितआतुरी । परदारागमनैचातुरी ३६ मृगयायहैशूरताबढ़ी । बंदीमुखनिचापसोंपढ़ी ॥ जोकेहू चितवैयहदया । बातकहैतौबड़ाऐमया ३७ दरशनदी बोईअतिदान । हँसिबोलैतौबड़सनमान ॥ जोकेहूसों अपनोकहै । सपनेकीसीपदवीलहै ३८ दोहा ॥ जोईअ

तिहितकीकहैसोईपरमअमित्र । सुखबक्ताईजानियेसंत तमंत्रीमित्र ३६ ॥

मंत्रिनकरि दीन्हे जे महामंत्र कहे बड़ेबड़े मंत्र हैं तिनहूंसों जाको बोधज्ञान नहींहोत सो मानोंकाल अहिकहेकालसर्पकरिकै क्रोधकरिकै डसीकहे काटीगईहै अर्थमानों क्रोधकरि कालसर्प काट्योहै जाप्राणीको कालसर्प काटतहै ताहूके झारिबेके जे महा मन्त्रहैं तिनसों बोधज्ञान नहींहोत अर्थ मूर्च्छा नहीं जागति पान कहे मद्यपानको जो बिलासहै ताहीमें उदितकहे प्रगटहै आतुरी शीघ्रता जाकी ३६ मृगया यहै शूरताबड़ी इत्यादिमों या जनायो कि याहीविधि राजाथोरो करतहैं ताको बहुत मानिलेतहैं ३७ पदवी राज्य ३८।३९ ॥

चौपाई ॥ कहौंकहांलगिताकेसाज । तुमसबजानत हौऋषिराज ॥ जैसीशिवमूरतिमानिये । तैसीराजश्री जानिये ४० सावधानह्वैसेवैजाहि । सांचोदेतपरमपद ताहि ॥ जितनेनृपयाकेबशभये । पेलिस्वर्गमगनर्कहि गये ४१ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां राज्यश्रीदूष णवर्णनंनामत्रयोविंशःप्रकाशः २३ ॥

४० शिवमूरतिहू को सावधानह्वै बिधि पूर्वक सेवनबनिपरैतौ स्वर्गप्राप्त होतहै नाबनै तौ चित्तविक्षेपादि है अन्त में नरकप्राप्त होत है तैसे याहूको सावधानह्वै जनकादि सम सेवनकरै तौ स्व र्ग ताईं परंतु सावधान ह्वै सेवननहीं बानिपरत तासों केतने भूप वेणु आदिक स्वर्ग मगसोंपेलिकै नरकको गयेहैं तासोंहम राज्य श्री ग्रहण नाकरिहैं इतिभावार्थः ४१ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जन निजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजन जानकीप्रसादनिर्मि तायांरामभक्ति प्रकाशिकायांत्रयोबिंशःप्रकाशः २३ ॥

दोहा ॥ चौबीसयेंप्रकाशमेंरामबिरक्तबखानि ॥ बिश्वामित्रवशिष्ठसोंबोधकहीशुभआनि १ राम–अमृतगतिछंद ॥ सुमतिमहाऋषिसुनिये । जगमहँसुक्खनगुनिये ॥ मरनहिंजीवनतजहीं । मरिमरिजन्मनभजहीं २ उदरनिजीवपरतहै । बहुदुखसोंनिसरतहै ॥ अन्तहुपीरअनतहीं । तनउपचारसहतहीं ३ दोधकछन्द ॥ पोचभलीनकछूजियजानै । लैसबवस्तुनआननआनै ॥ शैशवतेंकछुहोतबढ़ेई । खेलतहैंतेअयानचढ़ेई ४ हैंपितुमातनितेदुखभारे । श्रीगुरुतेअतिहोतदुखारे ॥ भूखनप्यासननींदनजोवैं । खेलनकोबहुभांतिनरोवैं ५ ॥

बशिष्ठसोंबोध जो ज्ञानहै ताके कहिबेको विश्वामित्रकही कहे कह्यो १ राजश्रीको दुःख कहि अब यामें संसारकोदुःख देखावत हैं जीव जे हैं ते मरणको नहींतजत मरिकै फिरि जन्मनकोभजहीं कहे प्राप्तहोतहैं २ यामेंजनन मरण जीवनको दुःख देखावतहैं प्रथम तौ जीव उदरमें परतहै गर्भमें आवतहै तहांसे बहुत दुःखसों निसरतहै अर्थ जन्म में बडो दुख होत है औ अन्त जो मरणहै ताहूमें बड़ी पीर कहे कष्टहोत है औ अनतही कहे जनन मरण ते अन्यत्र अर्थ जीवतमें तनके अनेक जे उपचार कहे व्योहार हैं तिनको सहत जीवको पीर है सो आगे कहैं ॥ उपचारस्तुसेवायांव्यवहारोपचारयोरित्यभिधानचिंतामणिः ३ द्वै छन्दनमों शिशुता अवस्थाके देह व्यवहारमें प्राप्त जीवको दुख कहतहैं ते कहे तेई जीवशैशवकहे बाल्य अवस्थामें पोचकहे बुरो विषादि औ भली द्राक्षादि कछू जियमें नहीं जानत जो बस्तु पावत हैं ताको लैकै आनन कहे मुखमें आनै कहे डारिलेतहैं तहां बिषादि ग्रहणमें जीवको पीड़ा होतिहै इति भावार्थः फेरिते कहे तेई जीव कछू बढ़ेई कहे बड़े होत अयान कहे अज्ञानमें चढ़े चढ़े खेलनमें

खेलत फिरत हैं अज्ञानमें चढ़े कहि या जनायो कि जैसे बाहन में चढ़िकै कोऊ धावै तौ थकतनहीं तैसे अज्ञानरूपी बाहनमें चढ़ि खेलमें धावत जीव थकत नहीं है ४ ता खेलिबेके लिये माता पिता मनेकरतहैं तासों बड़ोदुख होतहै औ गुरु खेलिबो छड़ाइ पढ़ाइबो चाहतहैं तासों अतिदुखी होतहैं औ भूख औ प्यास औ नींदको नहीं जोवतकहे देखत अर्थ अपने पास आइ भूख प्यास नींदको नहीं गनत अथवा भूख प्यास नींदको नहीं जोवतकहे चाहत तैसे सब अवस्थाके ऐसे देह व्यवहारनमें जीवको ऐसी पीड़ाहोतिहै इति भावार्थः ॥ शिशुत्वंशैशवंबाल्यमित्यमरः ५ ॥

जारतिचित्तचितादुचिताई । दीहतुचाअहिकोपचबाई ॥ कामसमुद्रझकोरनिझूल्यो । यौवनजारमहाप्रभुभूल्यो ६ धूमसोनीलनिचोलमेंसोहै । जाइछुईनविलोकतमोहै ॥ पावकपायशिखाबनचारी । जारतिहैनरकोपरनारी ७ ॥

तीनिछन्दनमें युवाअवस्थाके व्यवहारको दुख कहतहैं यौवनके जोरमें अर्थ युवाअवस्थामें चित्तरूपी तो चिताहै तामें जीवको कहे दुचिताई जो संशयहै सो जारतिहै जैसे चितामें मरे प्राणीको जारियतहै तैसे चित्तरूपी चितामें जीवको दुचिताई जारतिहै इत्यर्थः औ अहिकहे सर्पसम जो कोपहै सो दीहकहे बहुत अर्थ नीकीबिधि जीवके त्वचाचर्मकीचबाईकहे चबातहै अर्थ काटतहै अथवा त्वचासम अहिकोपचबातहै अर्थ सर्पत्वचामें काटत है तब जीवको परम पीड़ा होतिहै औ कोप तौ जीवही को काटत है ताको पीड़ा तौ अकथनीय है औ जब कामकंदर्प अथवा अभिलाषरूपी जो समुद्र है ताके तरंगके झकोरनमें झूल्यो इत उत आयो गयो तब हे महाप्रभु जीव जो है सो भूल्यो अर्थ अपनपौ को भुलान्यो महाप्रभु ऋषिनको संबोधन है चिता दाह सर्पदंश समुद्र तरंग के झकोरन में सबको बिकल तासों

अपनपौकी सुधिभूलिजातहै ६ यौवनजोरमें और कहाहोतहै सो कहतहैं धूमसम जो नील निचोल कहे श्यामबस्त्र है तामें सोहतिहै इहां केवल धूमकी समताके लिये नील निचोल कह्यो अग्निदाह भयसों परनारी लोकभयसों छुइ नहीं जाति देखतही मनकी दुवौ मोहतहैं परनारी मोहतिकहे बशकरतिहै अग्नि मोहतिकहे भयसों अथवा तेजसोंमूर्छित करतिहै सो पापरूपी यौवनहै तामें चारिकहे गामी अर्थ जैसे अग्नि बनमें बिहरति है तैसे परनारी पापहीमें बिहरतिहै ऐसी परनारी रूपी जो पावक शिखाहै सो नरको जोरतिहै पर स्त्रीको देखि जीव बिकल होत है इत्यर्थः ७ ॥

बंकहियेनप्रभासरसीसी । कर्दमकामकछूपरसीसी ॥ कामिनिकामकिडोरिग्रसीसी । मीननमनुष्यनकोबनसीसी८॥

मनुष्यनके जे हियहैं तिनकी जो प्रभा शोभाहै सोई बंक कहे कुटिल अर्थ घाटरहित अथवा गहिर सरसी कहे तड़ागसी है अर्थ हृदय तड़ागसम है औ काम अभिलाषरूपी जो कर्दमकीचहै तासों कछु कहे कछु अर्थ थोरीहू परसी कहे युक्तहै यासों या जनायो कि अधिक काम युक्तकी का कथाहै तासरसीमें कामिनि कहे स्त्रीरूपी जो काम कंदर्प शिकारीकी डोरी है सो ग्रसी है कहेलगी है ते स्त्री मीनरूपी जे मनुष्यहैं इहां मनुष्यपदते मनुष्यनके जीव जानौ तिनको कहे तिनके बशकरिबेको बनसीसी है जैसे तड़ागमें कीच बीचबसे मीननकी बंसी बशकरतिहै तैसे हृदय रूपी तड़ागमें कामरूपी कीचमें बसे जे जीवहैं तिनको बंसी डोरिसम हृदयमोंग्रसी जो कामिनी स्त्री है सो बशकरती है इत्यर्थः अथवा बंक कुटिल जे हृदयकहे मन हैं तिन करिकै प्रभा शोभा सरसी कहे बढ़ी है जाके अर्थ जैसे बंसी कुटिल लोह कटकसों युक्त रहतिहै तैसे कुटिल हृदयकरिकै युक्त स्त्री है औ काम कहे अभिलाषरूपी जो कर्दम कर्दम कहे पिसानका गंधादि युक्त कीच

है सान्यो पिसान तासों कछू परसी कहे युक्तहै अर्थ जैसे कुटिल कण्टक गंधादि युक्त साने पिसानसों युक्तहोतहै तैसे स्त्रीनके मन अभिलाषसों युक्त हैं औ कामिनी जो स्त्री है सोई काम कन्दर्प शिकारीकी डोरी है सो ग्रसी है कहे लगी है सो मीनसम मनुष्यनको बंसी समहै अर्थ जैसे सागरमें बंसीके पिसानको गंधपाइ मीन बंसी के बशहोतिहै तैसे संसार सागरमें स्त्रीनके मनके अभिलाषको गन्ध पाइ अर्थ स्त्रीनको अभिलाष समुझि मनुष्य बश होत हैं ८ ॥

विजय ॥ खैंचतलोभदशौदिशिको महिमोहमहाइतयाशिकडारे। ऊंचेतेगर्बगिरावतक्रोधसोंजोबहिलूहरलावतभारे ॥ ऐसेमोंकोउकिखाजुज्योंकेशवमारतकामकेबाणनिनारे । मारतपांचकरेपंचकूटहिकासोंकहेंजगजीवबिचारे ९ ॥

यामें लोभादिक जो पांचहैं तिन करिकै प्राप्त जीवको दुःख कहते हैं लोभ तौ लक्ष्मी के लिये दशौदिशिको खैंचतहै औ इत कहे इहां स्थलमें स्त्री पुत्रादिकन प्रति जो मोहहै सो पासिकै कहे फांसिकै डारे है कहे डारि राख्यो है तासों जाइ नहीं सकत औ गर्ब जो है सो ऊँचेमें चढ़ाइकै गिरावतहै अर्थ गर्ब संग जीव उन्मत्त ह्वै रह्यो है अपमानादिसों नत ह्वै गिरे सम दुःख पावत है तब क्रोध उत्पन्न ह्वै जीवहिमें लूहर कहे लुकेठ लावतहै अर्थ जर्यो ईंधन काठको लूहर कहत हैं अर्थ क्रोधसों जीव जरत है लोभ मोह गर्ब क्रोधकी व्यथा कोढ़ समहै काम बाण व्यथा खाजु सम है या प्रकार लोभादिक पांचौ पंचभूतको कूट पर्वत जो शरीरहै तामें करे कहवारि पाये जीवको मारतहैं सो आपनी पीड़ा जीव विचारे कासों कहैं जैसे पर्वतमें पाइकै ठग बटोही को मारतहैं तैसे शरीरमें पाइकै लोभादिक जीवको मारतहैं इत्यर्थः ९

भूलतहैंकुलधर्मसबैतबहींजबहींबरुआनियसैजू । के

शवबेदपुराणनकोनसुनैसमुझैनत्रसैनहँसैजू ॥ देवनिते नरदेवनितेनरतेबरबानरज्योंबिलसैजू । यंत्रनमंत्रनमूरि गनैजगयौवनकामपिशाचबसैजू १० ज्ञानाबिकेतनत्रान निकोकहिफूलकेबाणनिबेधवकोतो । बाइलगाइविवेकन कोबहुशोधककोकहिबाधकजोतो ॥ औरकोकेशवलूटतो जन्मअनेकनकेतपसानकोयोतो । तौममलोकसबैजग जातोजोकामबड़ोबटपारनहोतो ११ ॥

यामें यौवनकृत दुःखकहतहैं वेदपुराणनको प्रथम तौ सुनत नहीं औ सुनतहैं तो समुझत नहीं औ समुझतहैं तौत्रसत कहे डरत नहीं और बेदबचनहींको निंदाकरि हँसतहैं बानरसम विलसत कहि या जनायो कि पशुसम बुद्धिह्वैजातिहै १० यामें काम व्यौहारकृत पीड़ाकहतहैं साधक प्राणायामादिएतो कहे जहाज पचीसयें प्रकाशमें यकतालिसयें दोहामों रामचन्द्र कह्यो है मोहिंनहु तो जनाइबे सबहीं जान्यो आज यासों या जानौ रामचन्द्र ईश्वरत्वको छपायेरहे हैं औ यामें ममलोक सबै जग जातो या उक्तिसों ईश्वरत्व प्रकटहोतहै तहां कबिको भ्रमजानब अथवा तौ ममलोक कहे ममतावशिष्ट जे लोक मर्त्यलोकादिहैं तिनसों सबै जगकहे सब जगत्के जीव आपने स्थानको ब्रह्मपदको इति शेषः जातो प्राप्तहोतो ११ ॥

मकरंदविजया ॥ कंपैबरबानीडगैउरडीठितुचातिकु चैसकुचैमतिबेली । नवैनवग्रीवथकैगतिकेशवबालकते सँगहीसँगखेली ॥ लियेसबआधिनव्याधिनसंगजराज बआवैज्वराकिसहेली । भगैसबदेहदशाजियसाथरहैदु रिदौरिदुराशाअकेली १२ ॥

यामें वृद्धताको व्यवहार कहतहैंपुत्रादिके कटु बचनादि सों

जनित जो आधि कहे मानसी व्यथा औ व्याधि शरीर व्यथा ज्वरादि तिनके संगमें लिये ज्वरा जो मृत्युहै ताकी सहेली सखी जो जरा वृद्धताहै सो जब देहमें आवतिहै तब ताके उरसों वाणी कांपै लागतिहै अर्थ मुखसों व्यक्तबचन नहींकढ़त औ डीठि डगै कहे डगमगातिहै औ त्वचा कहे चर्म अति कुचै कहे बहुत सिकुरिजाति है औ मति बुद्धिरूपी जो बेलीलताहै सो सकुचै कहे संकोच को प्राप्तहोतिहै अर्थ बुद्धिहीन होति जातिहै औ नव कहे नवीन प्रकारसों ग्रीवानवै कहे नत होतिहै नवपद यासों कह्यो कि और जो कोऊ काहूको नवतहै अर्थ प्रणाम करतहै सो नयोई नहीं रहत ग्रीवा जबसों नवतिहै तबसों नईही रहतिहै उठतिही नहीं अथवा भयसों अनित्यको छोड़ि नतहोतिहै औ जो जीवके संगही संगमें बालकहीसे खेली है सो गति गमनजीवकी सहाय छोड़ि जराके भयसों थकिरहतिहै औ देहकी जो दशाकहे शुभ दशाहै सुन्दरतादि सो सब भागति है जियके साथमें दुरिकै केवल दुराशाकहे दुष्ट आशा रहिजातिहै वृद्धतामें इनकी सबको सुभावहीसों यह होतिहै तामें जराके भयको तर्कहै तासों असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षाहै यह वस्तु हमको इते दिनमें मिलिहै ऐसी जो बुद्धिहै सो दुराशा कहावतिहै १२ ॥

त्रिलोकिशिरोरुहश्वेतसमेततनोरुहकेसबकोगुणगायो। उठेकिधौंआपुकेऔधिकेअंकुरशूलकिशुष्कसमूलनशायो॥ जरैंकिधौंकेशवब्याधिनकीकिधौंआधिकेआखरअंतनपायो। जराशरपंजरजीवजरयोकिजराजरकंबरसोपहिरायो १३ मनोहरबिजयाछंद ॥ दिनहींदिनबाढ़तजाइहियेजरिजाइसमूलसोओषधिखैहै। किधौंयाहिकेसाथअनाथज्योंकेशवआवतजातसदादुखसैहै॥ जगजाकीतुज्योतिजगैजड़जीवनपायेतुतापहँजाननपैहै। सुनिबाल

दशागइज्वानीगईजारिजैहैजराऊदुराशानजैहै १४ ॥

यामें प्रसंगबश वृद्धताको बर्णनहै तनोरुहकहे तनके रोम तिन सहित शिरोरुह शिरके बारनको श्वेत बिलोकिकै या प्रकार सों गुण गायो है कि आयुर्बलकी अवधि मर्यादा जो आई है ताके अंकुरउठे हैं औ कि शूलनामा आयुध बिशेषहै शूलहूलगै शुष्क समूलकहे पूर्ण नाशको प्राप्तहोतहै वृद्धताहूमें तासों जानो औ कि अनेक जे व्याधी शरीर व्यथाहैं तिनकी अनेकजरें हैं औ कि अनेक आधी जे मानसी व्यथा लिखी हैं तिनके आखर अक्षर हैं जिनको अंत नहीं पाइयत अर्थ बहुतहैं वृद्धतामें अनेक आधि व्याधि होती हैं इति भावार्थः औ कि जरा जो बुढ़ाई है तानेशर बाण तिनके पंजरमें जीवको जरयो कहे डारयो है औ कि जरा जर कहे जरबाफी कंबर सो जीवको पहिरायो है १३ यामें जीव प्रति काहूको उपदेश है सो उपदेशकहि रामचन्द्र दुराशा कृत पीड़ा देखावतहैं जाकी कहे जा ब्रह्मकी १४ ॥

दोहा ॥ जहांभामिनीभोगतहँबिनभामिनिकहँभोग ॥ भामिनिछूटेजगछुटैजगछूटेसुखयोग १५ जोईजोईजोक रैअहंकारकेसाथ ॥ स्नानदानतपहोमजपनिष्फलजानो नाथ १६ तोटकछंद ॥ जियमांभअहंपदजोदमिये । जिनहींजिनहींगुणश्रीरमिये ॥ तिनहींतिनहींलखिलोभडसै । पटतंतुनिउंदुरज्योंतरसै १७ ॥

यामें स्त्री व्यवहारकृत पीड़ाकहत हैं जहां भामिनी स्त्रीहै त-हांई दुःखरूपी संसारको भोगहै सोभामिनी जब छूटे जब संसार छूटै तब सुखको योगहै अर्थ दुःखमयी संसारको बंधन दुराशा-दिसमस्त्रीहूहै १५ यामें अहंकारको व्यवहार कहतहैं अहंकार के साथ जो करिये सो निष्फल होतहै १६ ताही अहंकारको जो काहू प्रकारसों दमिये दूरिये तो जिन जिन मिथ्या भावनादि गु-णनसों श्री जो द्रव्यहै तासों रमिये अर्थ द्रव्यको प्राप्तहूजियतहै

तिन तिन गुणनको देखिकै लोभ जो है सो जीवको डसतहै का-
टतहै अर्थ काहूको अनुत्तमकर्मसों द्रव्य पावत देखि लोभ जीव
को प्रेरतहै कि यहै कर्मकरौ जामें द्रव्य लाभहोइ अहंकारहीन
प्राणी योग्यायोग्यको विचार नहीं करत जा प्रकार द्रव्य मिलै
सोई ऊँच नीच कर्मकरतहै इति भावार्थः लोभ कैसे डसतहै जै-
से पट बस्त्रके तंतु कहे सूत्रनको उंदुरकहे मूषकतरसै कहे काटत
है आशय कि जैसे मूषक पटतंतुनको वृथा काटतहै कछू ताको
काम नहीं है तैसे लोभ वृथा जीवको सतावतहै १७ ॥

विजयछंद ॥ दानसयाननिकेकलपद्रुमटूटतज्योंऋण
ईशकेमांगे । सूखतसागरसेसुखकेशवज्योंदुखश्रीहरिके
अनुरागे ॥ पुण्यबिलातपहारनसेपलज्योंअघराघवकी
निशिजागे।ज्योंद्विजदोषतेसंततिनाशतित्योंगुणभाजत
लोभकेआगे १८ ॥

सो लोभ कैसोहै ताको व्यवहारकहत हैं जैसे ईश महादेव हैं
तिनके मांगेते ऋण टूटिजातहै अर्थ जब महादेवसों मांगौ तब
महादेव एती द्रव्यदेते हैं जामें केतऊबड़ो ऋणहोइ सो दूरिहोत
है तैसे तालोभके आगे दान औ सयाननके जे कल्पद्रुम कल्प-
तरुहैं ते टूटिजातहैं अर्थ लोभसों दानको अभिलाष नशिजात
है औ उचितानुचित करिबेमें जो सयान चातुरी है सो नहींरहति
औ जैसे श्रीहरि जे विष्णु हैं तिनके अनुरागे सों भक्ति किये सों
सागर ऐसे संसार दुःख सूखतहैं तैसे ता लोभके आगे जो जीव
के सागरसे सुख सो सूखिजातहैं अर्थ लोभवश इत उतप्राणी
धायो धायो फिरतहै धन पुत्र कलत्रादिको सुख नहीं करनपावत
औ जैसे राघवकी निशिकहे राघवसम्बन्धी व्रत दिन रामनवमी
आदिकी निशिमें पलहूभरि जागेते अघ पाप बिलातहैं तैसे लो-
भके आगे पहारनसे बड़ेबड़े पुण्यबिलात हैं अर्थ लोभसों ऐसे

ब्रह्म द्रव्यहरणादि पातक प्राणी करतहैं जासों केतेऊ बड़े पुण्य होइँ तौ नशिजातहैं यामें केशवको रामोक्तिमें अपनी उक्तिको भ्रमहै औ जैसे ब्रह्मदोषते संतति जो बंशहै सो नशिजात है तैसे लोभके आगे अनेक गुण भागतहैं अर्थ अनेक गुणको त्यागकरि प्राणी लोभवश जन जनसों दीनहोत हैं ॥ गुणशतमप्यर्थिताहरति इतिप्रमाणात् १८ ॥

दानदयाशुभशीलसखा बिझुकैगुणभिक्षुककोबिझुकावैं । साधुसुधीसुरभीसबकेशवभाजिगईभ्रमभूरिभजावैं ॥ सज्जनसंगबछेरूडरैंबिडरैंवृषभादिप्रवेशनपावैं । बारबड़ेअघबाघबँधेउरमंदिरबालगोबिन्दनआवैं १९ ॥

यामें पापको व्यवहार कहतहैं उररूपी जो मंदिर घरहै ताके बारकहे द्वारमें बड़े अघपापरूपी अनेक बाघ बँधेहैं तासों उरमें जीवको परमसुखद बालगोविन्द जे भगवान् हैं ते नहीं आवत युक्ति यह कि द्वारपै बाघबँध्यो देखि बालक घरमें कैसे आइसकैं कैसे हैं अघबाघ कि दान औ दया औ शीलये जे जीवके सखाकहे हितहैं तिनको बिझुकै कहे डेरवाइके आवन नहीं देत औ शूरतादि जे अनेक गुणरूपी भिक्षुक हैं तिनको बिझुकावैं क्रोधित करिदेते हैं अर्थ ऐसे डेरवाबतहैं जासों गुणहू क्रुद्धह्वै फिरिजातहैं औ सुष्टु जे धीबुद्धिहैं अर्थ पुण्यमार्गमें प्रवृत्त जे बुद्धीहैं तेई साधु सुरभी गौवै हैं ते सबभाजिगईं काहेते भूरिकहे बड़ोभ्रम देखाइके भजाइ देते हैं औ सज्जनन के सत्संगरूपी जे बछेरू हैं तेऊ जिनको डरत हैं डरिकै डर मंदिर मन्दिरमें नहीं आवत औ वृषभ पदश्लेषहै बैल औ धर्मसों जैसे बाघको देखिकै बैल बिडरैंकहे भागिजात हैं तैसे अघ बाघनको देखि धर्मादि भागत हैं पापके संयोगते जीवके हितसाधक जे दान दयादि हैं ते सब नशिजात हैं इतिभावार्थः १९ ॥

दोहा ॥ आंखिनअक्षतआंधरोजीवकरैबहुभांति ॥

धीरनधीरजबिनकरैतृष्णाकृष्णाराति २० तृष्णाकृष्णा षटपदीहृदयकमलमोंबास ॥ मत्तदंतिगलगंडयुगनर्कअनर्कबिलास २१ ॥

तीनिछन्दन में तृष्णाको व्यवहार कहत हैं तृष्णारूपी जो कृष्णारातिकहे कृष्णपक्षकी रातिहै सो आंखिन अक्षतकहे आंख तोहै पर जीवको आँधरो करतिहै अर्थ तृष्णायुक्त प्राणीको आंखिनसों आपनो अपमानादि नहीं देखिपरत औ कृष्णारातिहू में अंधकार में घटपटादि वस्तु आँखिनसों नहीं देखिपरत औ धीरनको धर्य्यविना करिदेति है अर्थ कहूंकछु पाइबो होइ तौ तृष्णायुक्त प्राणी कैसोऊ धीरहोइ तौ धीरछोंड़ि धावतहै औ रातिमें अंधकारमें चोरादि भयसों बड़ेधीरऊ धर्य्यबिन ह्वैजातहैं २० कृष्णाकहे श्यामजो तृष्णारूपी षट्पदी भ्रमरीहै ताको हृदयरूपी कमलमें बासहै तातृष्णाको नरक औ अनर्ककहे स्वर्गको बिलासदुवौ मत्तदंतीके गलकहे गलतअर्थ मदसों चुवतदुवौ गंडस्थलहैं अर्थ जैसे भ्रमरी कमलमों बसतिहै औ गजनके गंडस्थलनप्रति धायो करतिहै तैसे तृष्णा नरकभोग स्वर्गभोग प्रति धायो करतिहै सो उपाउ जीवको नहीं करनदेति जासों जीव मुक्तहोइ २१ ॥

बिजय ॥ कौनगनै यहिलोकतरी नबिलोकिबिलोकि जहाजनबोरै । लाजबिशाल लतालपटी तनधीरजसत्य तमालनितोरै ॥ बंचकताअपमानअपानअलाभभुजंग भयानककृष्णा । पाटुबड़ोकहुंघाटुनकेशव क्योंतरिजाइ तरंगिनितृष्णा २२ ॥

फेरि कैसीहै तृष्णासो कहत कि ऐसी तृष्णारूपी जो तरंगिणी नदी है सो कौनीतरहसे जीवसों तरिकहे उतरिजाइ कैसीहै तृष्णा नदी कि याहिलोककहे मृत्युलोककी जे तरीकहे नौकाहैं

तिन्हैं कौनगनै अर्थ तिनकोतो बोरिहीदेतिहै ॥ स्त्रियांनौस्तरणि स्तरिः इत्यमरः ॥ इहांतरी पदते मनुष्यदेह जानो अर्थ मनुष्य देहको प्राप्तह्वैकै तौजीव तृष्णाको पारपावतहीनहींहै मनुष्यदेहमें तृष्णा कैसेहू नहींमिटति इत्यर्थः बिलोकि बिलोकिकहे ढूंढ़िढूंढ़ि जहाजको बोरतिहै यहां जहाजपदते देवशरीर जानो अर्थ देवताहू तृष्णाको पारनहीं पावत अथवा लोकतरी पदतेलोक व्यवहार युक्त मनुष्य देहजानो औजहाजपदते संसारको त्यागकिये जे योगीजनहैं तिनके शरीरजानो अर्थ योगीजन तृष्णाको पारनहीं पावत संसार बिशिष्ट प्राणिनकी कहां गिनती है औ लाजरूपी जोबिशाललताहै सो लपटीहै तनमें जिनके ऐसे धैर्य्य औ सत्य रूपी तमाल वृक्षहैं तिन्हैं अति बेगसों तोरैकहे उखारि डारतिहै नदीहूकूलके वृक्षउखारि डारतिहै इहांतमालपद उपलक्षण है तासों वृक्षमात्र जानो अर्थ तृष्णासों लाज औ सत्यप्राणीकोदूर ह्वैजातहै औ वञ्चकता कहे छल औ अपमान औ अथान अज्ञानता औ अलम्भ कहे याचित वस्तुकी अप्राप्तिरूपी जेभुजंग सर्पहैं तिनकरिकै अति भयानकहै नदीहूमें सर्प रहतहैं अर्थ बंचकतादि जेचारोंहैं तिनसों युक्त सदा तृष्णारहतिहै औ कृष्णा कहे श्यामरूपाहै औ जाको पाटुबड़ोहै अन्तनहीं पाइयत औ दुहूँ कूलमें कहूं घाट नहीं है जहां बिश्रामहूँ पावैं २२ ॥

पैरतपापपयोनिधिमेंमनमूढ़मनोज जहाजचढ़ोई । पेलतऊ नतजै जड़जीव जऊबड़वानलक्रोधडढ़ोई ॥ झूठतरंगिनिमेंउरझै सुइतेपरलोभप्रबाहबढ़ोई । बूड़त है तेहितेउबरै कहिकेशवकाहेनपाठपढ़ोई २३ ॥

यामें जीवप्रति काहूकी शिक्षाहै सो प्रसंगपाइ रामचन्द्र कहतहैं हेमन मूढ़ जड़जीवतू मनोजकंदर्प रूपी जो जहाजहै तामें चढ़्यो पापरूपी पयोनिधि समुद्रमें पैरतहै अर्थ कामबश परस्त्री गमनादि पाप करत फिरतहै तहां अनेक अपमानादिते उत्पन्न

जो क्रोधरूपी बड़वानलहै तामें जऊ कहे यद्यपिडढ़ोई कहे ज- रिहूगयोहै तऊकहे ताहूपर मनोज जहाजमें चढ़ि कामसमुद्रमें पैरिबो यह जोखेलहै ताको तूनहीं तजतो एतेहूपर लोभरूप प्रवाह बढ़योहै जामें ऐसी जोझूठरूपी तरंगिणी नदीपाप समुद्र में मिलीहै तामें उरझतहै अड़िजातहै अर्थ लोभवश अनेक झुठाई करत फिरत सोया प्रकार है या समुद्र में तुम बूड़त हौ सो जासों उबरै कहे निकरै सो केशव यह जो पाठ है ताको आजुतक काहे न पढ्यो अर्थ भगवान्को न कहे न जप्यो अबहूं भगवान्को नाम जपिबो तोको उचित है इतिभावार्थः॥ केशव पदके कहिबे को आशय यह कि केजलेशेते इति केशवः अर्थ वे समुद्रके जलहीमें सोयो करत हैं तासों समुद्र सों उबा- रिबो उनको सहजहै और नामके जपहूसों या समुद्रसों न कढ़ि है इति भावार्थः २३ ॥

दोहा ॥ जोकेहूंसुखभावना काहूकोजगहोति ॥ काल आयुपटतंतुज्यों तबहींकाढ़त ज्योति २४ ब्रह्म बिष्णु शिवआदिदै जितनेदृश्यशरीर ॥ नाशहेतुधावत सबै ज्योंबड़वानलनीर २५ ॥

यामें समयके व्यवहार कहतहैं जो केहू कहे कौनेहूँ प्रकारसों सुख भावना कहे मोक्षकी बासना जगमें काहू प्राणीके होति है तो काल कहे समयरूपी जो आयुसूप कहे सो ता भावनाकी ज्योति कहे डोरि अथवा अंकुरको पटवस्त्रके तन्तुसूत्रसम तबहीं कहे ताही समय काढ़िदेतहै अर्थसमय मति फेरि देत है जासों सुख भावना दूरि ह्वैजाति है २४ देह व्यवहार कहि अबयामें मृत्युकृत पीड़ा कहत हैं ब्रह्मा औबिष्णु औ शिव आदिक जितने दृश्यशरीर हैं ते अनेक यज्ञादि कर्मकरि उत्पत्तिपालन संहार करनादि प्रभुत्वपाइ पुनिपुनि या संसारमें नाशहीके हेतु धावत

हैं कहे प्राप्त होतहैं अर्थ या संसारमें इनको सबको नाश होतहै मृत्युकृत पीड़ाको ये सब प्राप्त होतहैं इति भावार्थः कैसे धावत हैं जैसे बड़वानलमें समुद्रकोनीर जलनाशके हेतु धावतहै यथा योगवशिष्ठे ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चसर्वेयेभूतजातयः । मृत्युर्नश्यतिभूपालसलिलानीववाडवः २५ ॥

सुन्दरीछंद ॥ दोषमयीजोदवारिलगीअति देखतहीत्यहितेजोजरीमति ॥ भोगकीआशनगूढ़उजागर ज्यों रजसागरमेंमुनिनागर २६ बिजयाछन्द ॥ माछीकहै अपनोघरमाछरु मूसोकहैअपनोघरऐसो । कोनेघुसी कहैघूसिघरौराबिलारिऔब्यालबिलेमहँवैसो ॥ कीटक श्वानसोपक्षिऔभिक्षुक भूतकहैअमिजासहजैसो । हौंहू कहौंअपनोघरतैस्यहिताघरसोंअपनोघरकैसो २७ ॥

हे मुनिनागर या संसारमें दोषमयी कहे दूषण अपवाद इति तत्स्वरूप जो दवारि डाढ़ाहै अथवा दोषमयी कहे दूषणाधिक्य रूपी जो दवारि है सो अतिलगी है अति कहि या जनायो कि सब संसारभरेमें लगी है ऐसो स्थान या संसारमें कोऊनहीं है कि जहां प्राणीको दोष न लगै अथवा जहां कोऊको दोष न लगावै अर्थ या संसारमें वृथा सब सबको दोषलगावतहै अथवा दोषकहे परस्पर बिरोधमयी जो दवारि लगी है ताको देखतही तासों हमारी मति जरिगईहै दवारिके छुये सों जरियतहै याके देखतही जरीकहे अतितेज जनायो तामतिमें या संसारमें राज्यादि भोग की आशकहे इच्छा न गूढ़कहे अंतरमें है न उजागरकहे प्रसिद्ध है जैसे सागर समुद्रमें रजधूरि गूढ़ उजागर नहीं है जा स्थान में जो जीव दवारिमें जरतहै ता स्थानमें ताके भोगकी इच्छा नहीं होति यह रीतिही है २६ जैसे ये सब अपनो अपनोघर कहत हैं तैसे ता घरसोंकहे ताही घरकोहौंहू अपनो कहौं सो घर

अपनो कैसो कहे कौन बिधिहै यासंसारमें कछू काहूको नहीं है वृथा ममत्वहै इतिभावार्थः २७ ॥

सुंदरीछन्द ॥ जैसहिहौंअबतैसहिहौंजग । आपद सम्पदकेनचलौंमग ॥ एकहिदेहतियागबिनासुनि । हौं नकछूअभिलाषकरौंमुनि २८ जोकछुजीवउधारणको मत । जानतहौतोकहौतनुहैरत ॥ योंकहिमौनगहीजग नायक । केशवदासमनोबचकायक २९ चामरछंद ॥ साधुसाधुकैसभाअशेषहर्षहर्षियो । दीहदेवलोकतेप्रसू नवृष्टिबर्षियो ॥ देखिदेखिराजलोकमोहियोमहाप्रभा । आइयोतहांतुरन्तदेवकीसबैसभा ३० ॥

राज्यादि जे आपद बिपत्ति औ संपद संपत्तिके मगयहहैं तिनमेंहौं न चलिहौं हेमुनि एक देहत्यागबिना और कछू अभिलाष नहीं करतो अर्थ केवल देहत्याग करिबेही की इच्छाहै २८ रत कहे अनुरक्त २९ देवकी सबैसभा आइयो कहे आवत भई सो राजलोककहेराजभवनकी प्रभादेखि मोहियोकहे मोहितभई ३०

बिश्वामित्र ॥ ब्यासपुत्रकेसमानशुद्धबुद्धिजानिये । ईशकोअशेषतत्त्वतत्त्वसोबखानिये ॥ इष्टहौबशिष्टशिष्ट नित्यवस्तुशोधिये । देवदेवरामदेवकोप्रबोधबोधिये३१

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां जगानिन्दावर्णनं नामचतुर्विन्शतितमःप्रकाशः २४ ॥

बिश्वामित्र वशिष्ठसों कहतहैं कि हमतुमको ब्यासपुत्र जे शुकाचार्यहैं तिनके समान शुद्धबुद्धि कहे ज्ञानयुक्तहै बुद्धि जिनकी ऐसे जानियतहै अर्थ अतिज्ञानी हौ औ ईशजे ईश्वर हैं तिनको जो अशेषकहे संपूर्ण तत्त्वकहे स्वरूपहै ताको तत्त्वकहेसिद्धांत सो

अर्थ निश्चयात्मक बखानि एकहेतु कहतहौं ॥ तत्त्वस्वरूपेपरमात्मनीतिमेदिनी ॥ हे शिष्टकहे श्रेष्ठ वशिष्ठ तुमइष्टकहे रघुबंशके गुरूहौ औ नित्य जो बस्तुहै ताको शोधिये कहे ढूंढ़ोकरतहौ सो सबबिधिसों तुमको उचितहै तासों देवके देवजे रामदेवहैं तिनको प्रबोध जोज्ञानहै तासों बोधियेकहे बोध करौ अर्थ जीवोद्धार को मत रामचन्द्र पूंछतहैं सोकहौ ३१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादा-
यजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशि-
कायांचतुर्विंशतितमःप्रकाशः २४ ॥

दोहा ॥ कथापचीसप्रकाशमेंऋषिवशिष्ठसुखपाइ ॥ जीवउधारणरीतिसबरामहिंकह्योसुनाइ १ बशिष्ठ–पद्धटिकाछन्द ॥ तुमआदिमध्यअवसानएक । अरुजीवजन्मसमुझौअनेक ॥ तुमहींजोरचीरचनाबिचारि । त्यहिकौनभांतिसमुझौमुरारि २ सबजातिबूझियतमोहिं राम । सुनियेजोकहौंजगब्रह्मनाम ॥ तिनकेअशेषप्रतिबिम्बजाल । त्यइजीवजानिजगमेंकृपाल ३ निशिपालिकाछन्द ॥ लोभमदमोहबशकामजबहींभये । भूलिगयेरूपनिजबेधितिनसोंगये ॥ राम ॥ बूझियतबातयहकौनबिधिउद्धरें ॥ बशिष्ठ ॥ वेदबिधिशोधिबुधयत्नबहुधाकरें ४ राम–दोहा ॥ जितलैजैहैवासनातिततितकैहैलीन ॥ यत्नकहौकैसेकरैजीवबापुरोदीन ५ वशिष्ठ–दोधकछन्द ॥ जीवनकीयुगभांतिदुराशा । होतिशुभाशुभरूपप्रकाशा ॥ यत्ननसोंशुभपंथलगावे । तोअपनोतबहौयदयावे ६ ॥

१ जीवनके जे अनेक जन्म हैं तिनको समुझौ कहे जानत

हौ अथवा अनेक जे जीवहैं तिनके जन्मको अर्थ जा प्रकारसों जीवनकी उत्पत्ति है ताको समुझौ कहे मोसों बूझतहौ २ सब वस्तु जानिहूकै जो हमसों बूझियत कहे पूंछतहौ तौ सुनौ हम कहियतहै जगमें जो ब्रह्मनाम कह्यो है अर्थ जिनको ब्रह्मनामहै तिनके जे प्रतिबिम्ब जो प्रतिबिंब समूहहैं तेई जीवहैं यह मत प्रतिबिम्ब वादिन को वेदांतमें प्रसिद्धहै ३ अपनो जो रूप ब्रह्म है ताको भूलिगये तिनसों लाभादिसों ४ बासना दुराशा ५ शुभ दुराशा जो ईश्वर पूजनादिकी आशा है ताके पंथमें जीवको अथवा मनको लगावै तो अपनो जो पद स्थानहै ब्रह्मस्थान ताको पावै अर्थ शुभ बासनाको ग्रहणकरै ताके बादि ताहू बासनाको त्यागकरि ब्रह्मपदको प्राप्तहोय ६ ॥

हौंमनतेंनिधिपुत्रउपायो । जीवउधारणमंत्रबतायो ॥ हैपरिपूरणज्योतितिहारी । जाइकहीनसुनीननिहारी ७ दोहा ॥ ताकीइच्छातेभयेनारायणमतिनिष्ठ ॥ तिनतेचतुराननभयेतिनतेजगतप्रतिष्ठ ८ दोधकछंद ॥ जीवसबै अवलोकिदुखारे । आपनेचित्तप्रयोगबिचारे ॥ मोहिंसुनायेतुम्हैंतसुनाऊं । जीवउधारणगीतगुनाऊं ९ दोहा ॥ मुक्तिपुरीदरबारके चारिचतुरप्रतिहार ॥ साधुनकोसतसंगसम अरुसंतोषबिचार १० यहगजचक्रब्यूहकियकज्जलकलितअगाधु ॥ तामहँपैठिजोनीकसैअकलंकितसोसाधु ११ ॥

ज्योति ब्रह्मज्योति ७ । ८ तिन चतुरानन जगत्के जीवन को संसारमें दुखारे देखिकै अपने चित्तमें तिन जीवन के उद्धार को प्रयोगकहे यत्न बिचारयो सो सब हमको सुनायो है सो तुम को सुनाइयत है ९।१० यामें साधुको लक्षण कहत हैं जैसे कज्जल कलित चक्रव्यूहमें शपथार्थ पैठिकै अकलंकित कहे क-

ज्जल चिह्नरहित निकसै सो साधु कहे दोष रहित होतहै तैसे कज्जल सम दोषयुक्त जो संसारहै तामें पैठि अकलंकितकहे अदोष निकसै सो प्राणी साधु है ११ ॥

दोधकछंद ॥ देखतहूंएककालछियेहूं। बातकहैसुनैभोग कियेहूं ॥ सोवतजागतनेकनक्षोभै । सोसमतासबहीमहँ शोभै १२ जोअभिलाषनकाहूकोआवै । आयेगयेसुखदुःखनपावै ॥ लैपरमानंदसोंमनलावै। सोसबमांझसंतोषकहावै १३ आयोकहांअबहौंकहिकोहौं। ज्योंअपनोपदपाऊंसोठोहौं ॥ बंधुअबंधुहियेमहँजानै। ताकहँलोगबिचार बखानै १४ ॥

यामें समताको लक्षण कहत हैं संसारको जो स्रक् चंदन बनितादि बिषय भोग है ताको देखतहूं औ छुयेहू औ ताही की बातकहै औ सुनै औ भोगहूकरै परन्तु सोवत औ जागत नेकहू तामें क्षोभै नहीं अर्थ लीन न होय औ सबहीमें कहे अग्नि जलादिमें समताशोभै सोई समताहै १२ यामें संतोषको लक्षण कहतहैं जो काहूबस्तुकी अभिलाष जीमें न आवै औ काहूबस्तुके आये सों प्राप्तभये सों सुख न पावै औ गये सों दुःखनपावै औ मनको लैकै परमानन्द जो ब्रह्महै तामें लगावै सोई सबमांझ कहे चारोंके मध्यमें संतोष कहावतहै १३ यामें बिचारको लक्षण कहत हैं मैं कौनहौं औ कहां आयोहौं अब जा उपाय सों अपने पदस्थानको पाऊं सो ठोहौंकहे ढूंढ़ौं या प्रकारसों बिचारकरै औ बंधुकहेहित शम दमादि अबंधुकहे अहित कामक्रोधादिको हियेमें जानै सोई बिचारहै १४ ॥

चारिमेंएकहुजोअपनावै । तोतुमपैप्रभुआवनपावै ॥ राम ॥ ज्योतिनिरीहनिरंजनमानी । तामहँक्योंऋषिइच्छ बखानी १५ बशिष्ठ – दोहा ॥ सकलशक्तिअनुमानिये

अद्भुतज्योतिप्रकाश ॥ जातेजगकीहोतहै उत्पतिथिति अरुनाश १६ श्रीराम--दोधकछंद ॥ जीवबँधेसबआपनी माया । कीन्हेंकुकर्ममनोबचकाया ॥ जीवनचित्तप्रबोधन आनो । जीवन्मुक्तकेभेदबखानो १७ ॥

जैसे चोबदारको अपनाइकै राजाकेपास सब जात हैं तैसे इन चारिमें एकहूको अपनावै तौ तुमपै जानपावै फेरि राम ऋषिसों पूंछ्यो कि ज्योतिको ता निरीहकहे इच्छारहित औ निरंजन कहे रागरहित मान्यो औ कह्यो कि ॥ ताकी इच्छाते भये नारायण मति निष्ठ ॥ तौ ज्योतिमें इच्छा क्योंकही सो कहौ १५ वशिष्ठ कह्यो कि अद्भुत जो ज्योतिको प्रकाशहै तामें इच्छादिक हैं तौ नहीं परन्तु इच्छादिकनकी सबकी शक्ति अनुमानियत है जा शक्तिसों संसारकी उत्पत्ति स्थिति नाशहोतहै १६ जीव जे हैं ते आपनी मायामें बंधे मनसा बाचा कर्मणा कुकर्म कुत्सित कर्म कीन्हे हैं तिन जीवनको जो प्रबोधन कहे ज्ञान तुम कह्यो सो हम चित्तमें आन्यो अर्थ ल्यास जान्यो इति अब जीवन्मुक्तके भेदकहौ १७ ॥

वशिष्ठ ॥ बाहरहूंअतिशुद्धहियेहू । जाहिनलागतकर्म कियेहू ॥ बाहरमूढ़सोंअंतसयानो । ताकहँजीवन्मुक्तबखानो १८ दोहा ॥ आपुनसोंअवलोकियेसबहीयुक्तायुक्त ॥ अहंभावमिटिजाहिजोकौनबद्धकोमुक्त १९ श्रीराम---दोधक ॥ सोसिगरेगुणहोतसोजानो । स्थावरजीवनमुक्तबखानो ॥ बशिष्ठ ॥ जानिसबैगुणदोषनछंडै । जीवनमुक्तनकेपदमंडै २० राम - दोहा ॥ साधुकहावतकरतहैंजग मेंसबब्योहार ॥ तिनकोमीचुनछ्वैसकैकहिप्रभुकौनाबिचार २१ ॥

यामें जीवन्मुक्तको लक्षणकहत हैं बाहर कहे तनमें औ हिये-हूमें कहे मनहूँमें शुद्धहोय औ पाप पुण्य कर्मकरै सो लागै नहीं औ बाहर मूढ़ अज्ञानरहै अर्थ बावरे समरहै औ अन्तमें सयानो रहै ताहीको जीवन्मुक्त कहियतहै १८ युक्तकहे योग्य मनुष्यादि अयुक्तकहे अयोग्य शूकरादि तिनको आपुनसों कहे आपने सम अवलोकिये देखिये अर्थ अपनेसम सबको जानिये औ अहंभाव मिटिजाय तौ कौन बद्धहै कौन मुक्तहै अर्थ सबही मुक्त हैं १९ योग्यके गुण अयोग्यके दोष जानिकै त्यागकरै २० रामचन्द्र क-हतहैं कि ज्ञानसों जीवनकी मुक्ति कह्यो सो जान्यों अब यह कहौ कि जे प्राणी साधु कहावतहैं औ जगमें स्त्री पुत्रादिके सब व्यो-हारकरत हैं तिनको मीचु नहीं छुइसकति अर्थ तिनकी मृत्यु नहीं होतिहै ताको बिचार हे प्रभु हे वशिष्ठ कहौ २१ ॥

वशिष्ठ--पद्धटिकाछंद ॥ जगजिनकोमनतवचरणलीन । तनतिनकोमृत्युनकरतिक्षीन ॥ तेहिक्षणहींक्षणदुख क्षीणहोत । जियकरतअमितआनँदउदोत २२ जोचाहै जीवनअतिअनंत । सोसाधैप्राणायामयंत्र ॥ शुभरेचक पूरकनामजानि । अरुकुम्भकादिसुखदानिमानि २३ जो क्रमक्रमसाधैसाधुधीर । सोतुमहिंमिलैयाहीशरीर॥ राम॥ जगतुमतेनाहिंसर्वज्ञआन।अबकहौदेवपूजाविधान २४॥

हे राम जिन प्राणिनको मन तुम्हारे चरणनमें लीनहै ते सा-धु जगमें सब व्योहारहू करतहैं ताहूपर तिनके तनको मृत्युक्षीण नहीं करिसकति औ तिहि प्राणीके क्षणमें संसाररूपी दुःख क्षीण होतहैं औ मुक्तिरूपी जो अमित आनन्दहै सो उदोत प्रकाश क-रतहै २२ अंगुष्ठते तृतीय अंगुलीको नाम अनामिकाहै तासों नासाको बामरंध्र अंगुष्ठसों रोंकि बामरन्ध्रसों बायुको छोड़िये सो पूरक प्राणायाम है औ दक्षिण रंध्र अंगुष्ठसों औ बाम रन्ध्र

अंगुष्ठसों औ बामरन्ध्र अनामिकासों साथही रोंकि बायुको हृद-यमें स्थापन करिये सो कुम्भक है यथा वायुपुराणे । प्राणायाम स्त्रिधाप्रोक्तोरेचकःपूरकस्तथा ॥ कुम्भकोरेचकस्तत्रनासारन्ध्राच्चद क्षिणात् । निरुध्यबामरन्ध्रञ्चानामिकयाविसर्जनं ॥ निरुध्यदक्षि णंरन्ध्रंवामरन्ध्राच्चपूरणम् । तथैवानामिकांगुल्यापूरणंतुतदुच्य ते ॥ रेचकात्पूरणात्पश्चाद्द्वेपुटेनासयोस्तथा ॥ सन्निरुध्यहृदि स्थाप्यवायुंतिष्ठेत्सकुम्भकः २३ । २४ ॥

वशिष्ठ-तारकछन्द ॥ हमएकसमयनिकसेतपसाको । त बजाइभजेहिमवन्तरसाको ॥ बहुभांतिकरयोतपक्योंक हिआवै । सितकण्ठप्रसन्नभयेजगगावै २५ दण्डक ॥ ऊजरेउदारउरबासुकीबिराजमान हारकेसमानआनउप मानटोहिये । शोभिजैजटानबीचगंगाजूकेजलबुंदकुंद कीसीकलीकेशौदासमनमोहिये ॥ नखकीसीरेखाचन्द्रचं दनसीचारुरजअंजनशृँगारहूगरलरुचिरोहिये । सबसु खसिद्धिशिवासोहैशिवजूकेसाथजावकसोंपावकलिलार लाग्योसोहिये २६ ॥

रसा पृथ्वी जगगावै अर्थ जिनको जगत्के प्राणी गानकरत हैं २५ उजरे औ उदारकहे बड़े उरमें हार मालाके समान बा-सुकी नाम सर्प विराजमान है और उपमा को नहीं टोहिये कहे ढूंढ़ियत अर्थ और उपमाके सदृश नहीं हैं तासों खोज नहीं क-रियत रज कहे विभूति अंजन जो शृंगार है ताकी रुचि गरल जो विषहै ता करिकै रोहिये कहे धारण करियतहै अर्थ लागिगयो पार्वतीके नेत्रांजन सम गरल शोभितहै सब सुखकी सिद्धि शिवा जो पार्वतीजी हैं ते संगमें शोभती हैं औ जावक कहे महाउरसम लिलारमें लाग्यो पावक अग्नि शोभितहै ऐसे सदा सुरत चिह्न युक्त प्रसन्नह्वै हमारे समीप आये इति शेषः २६ ॥

महादेव--तारकछन्द ॥ बरमांगिकछूऋषिराजसयाने । बहुभांतिचलेतपपंथपयाने ॥ वशिष्ठ ॥ पुजवोपरमेश्वरसोमनइक्षा । सिखवोप्रभुदेवप्रपूजनशिक्षा २७ शिव-दोहा ॥ रामरमापतिदेवनहिंरंगनरूपनभेव ॥ देवकहतऋषिकौनकोसिखऊंजाकीसेव २८ वशिष्ठ--तोमरछन्द ॥ हमकहाजानहिंअज्ञ । तुमसर्बदासर्बज्ञ ॥ अबदेवदेहुबताइ । पूजाकहौससुझाइ २९ शिव ॥ सतचित्प्रकाशप्रभेव । तेहिवेदमानतदेव ॥ तेहिपूजिऋषिरुचिमंडि । सबप्राकृतनकोछंडि ३० पूजायहैउरआनु । निर्व्याजधरियेध्यानु ॥ योंपूजिघटिकाएक । मनुकियोयज्ञअनेक ३१ ॥

चले तप पंथ में अर्थ उचित तप पंथमें तुम बहुभांति पयाने कहे गमनकरयो है अर्थ बड़ो तपकरयो है २७ । २८ । २९ सत् कहे सत्यरूप चित्कहे चैतन्यरूप जो प्रकाशकहे ज्योति जो रामचन्द्रको प्रभेव कहे भेदहै अर्थ रूपांतरहै ताको वेद देव मानत हैं प्राकृत कहे लघु गणेशादि ३० निर्व्याज कहे निःकपट ध्यान को धरिये यहै ता देवकी पूजाहै अर्थ ताकी पूजा केवल ध्यानही है और नहीं है ३१ ॥

जियजानयहईयोग । सबधर्मकर्मप्रयोग ॥ सबरूपपूजिप्रकास । तबभयेहमसेदास ॥ यहबचनकारिपरमान । प्रभुभयेअन्तर्द्धान ३२ दोहा ॥ यहपूजाअद्भुतआगिनि सुनिप्रभुत्रिभुवननाथ॥सबैशुभाशुभबासनामैंजारीनिज हाथ ३३ भूलनाछन्द ॥ यहिभांतिपूजापूजिजीवजोभक्तपरमकहाइ । भवभक्तिरसभागीरथीमहँदेहिडुबानिबहाइ ॥ पुनिमहाकर्त्तामहात्यागीमहाभोगीहोइ । अति

शुद्धभावरमैरमापतिपूजिहैंसबकोइ ३४ दोहा ॥ रागद्वेष बिनकैसहूधर्माधर्मजोहोइ ॥ हर्षशोकउपजैनमनकर्त्ता महासोलोइ ३५ ॥

धर्मके जे दानादि कर्महैं तिनको प्रयोगकहे यत्नसबप्राणीप्रकाश जो रूपहै ज्योतिरूप ताको पूजिकै हमारेसमदासभयेहैं परिमाण कहेनिश्चय ३२।३३ जोजीव याप्रकारसों पूजापूजिकै परमभक्त कहायकै भवजो संसारहै ताके दुःखनको भक्तिरसकी जोभागी-रथी गंगाहैं तामें बहाइदेइ अर्थ दूरिकरै फेरि महाकर्त्ता औ महा त्यागी औ महाभोगीहोइ औ शुद्धभावसों रमापति में ईश्वरमें रमैकहे प्राप्तहोइ औ ताको सबकोऊ पूजन करिहैं ३४ महाकर्त्ता-दिकनके तीनहूंके लक्षण क्रमसों कहतहैं जाके रागकहे प्रीति बिना जीवरक्षणादि कछूधर्म अकस्मात् ह्वैजाइ ताको हर्षकहे सुखनहोइ औद्वेषकहे बिरोधबिना जीवहिंसादि अधर्महोइ ताको शोक दुःख नहोइ सो प्राणीमहाकर्त्ताहै ३५ ॥

भोजअभोजनरतबिरतनीरससरससमान ॥ भोग होइअभिलाषबिनमहाभोगतामान ३६ जोकछुआंखिन देखियेबाणीबर्णोजाहि॥महातियागीजानियेभूठेजानो ताहि ३७ तोमरछंद ॥ जियज्ञानबहुब्योहार । अरुयो गभोगबिचार ॥ यहिभांतिहोइजोराम । मिलिहैसोते रेधाम ३८ सवैया ॥ निशिबासरबस्तुबिचारकरैमुखसां चहियेकरुणाधनुहै । अघनिग्रहसंग्रहधर्मकथानपरिग्र हसाधुनकोगनुहै । कहिकेशवयोगजगैहियभीतरबाहर भोगनसोंतनुहै । मनुहाथसदाजिनकेतिनकोबनहीघरहै घरहीबनुहै ३९ ॥

भोज कहे भक्ष्य औ अभोज कहे अभक्ष्य पदार्थ में रत अनुरक्त

औ विरत विरक्त न होइ अर्थ भोज्य अभोज्यको समान भक्षण करै औ निरसकहे स्वादरहित सरसस्वादयुक्त वस्तु जाको समान होइँ औ भोग जाको अभिलाष बिना होइ सो महाभोक्ताहै ३६ । ३७ जाके जियमें ज्ञानको बहुत प्रकारको व्योहारहै औ योग औ भोगको वहु विचारहै ऐसो जब होइ तब तुम्हारो जो धाम तेजहै ज्योतिरूप ताको मिलिहै अथवा धामकहे घर बैकुंठ ताको मिलिहै प्राप्तह्वै है ३८ वस्तु बिचार कहे ब्रह्म बिचार अथवा सत् असद्वस्तु को विचार निग्रह ताड़न परिग्रह कहे परिजन निकट वासी इति ॥ परिग्रह परिजने इति मेदिनी ३९ ॥

दोहा ॥ लेइजोकहियेसाधुअनलीन्हेकहियेबाम ॥ सबकोसाधनएकजगरामतिहारोनाम ४० राम ॥ मोहिं नहुतोजनाइबोसबहीजान्योआजु ॥ अबजोकहौसोकरे बनैकहेतुम्हारेकाजु ४१ इतिश्रीमत्सकललोकलोचन चकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विर चितायांजीवोद्धारबर्णनंनामपंचबिंशःप्रकाशः २५ ॥

वाम कहे कुटिल साधनकहे उपाय अर्थ मुक्तिको उपाय केवल तुम्हारे नामको जपहै ४० जो अपनो ईश्वरत्व मोहिं काहूको जनाइबोई नहीं रह्यो सो सबही जान्यो तासों जो कहौ सो अब करिये अर्थ राज्य लीबेको कहतहौ सो लैहैं ४१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायांरामभक्ति प्रकाशिकायांपञ्चविंशःप्रकाशः २५ ॥

दोहा ॥ कथाछबीसप्रकाशमेंकह्योवशिष्ठविवेक ॥ राम नामकोतत्त्वअरुरघुबरकोअभिषेक १ मोटनकछंद ॥ बोलेऋषिराजभरत्थतबै । कीजैअभिषेकप्रयोगसबै ॥

शत्रुघ्नकह्योचुपक्यौंनरहौ । श्रीरामकेनामकोतत्त्वगहौ २ ॥

१ जब रामचन्द्र राज्य अंगीकारकरयो तब ऋषिराज वशिष्ठ सों भरत बोले प्रयोग यत्न शत्रुघ्न भरतसों कह्यो कि चुप क्यों नहीं ह्वैरहते अर्थ राज्याभिषेक तौ रामचन्द्र अंगीकारकरयोहै तौ ह्वैहैई जो ऋषिराजकह्योहै कि सबको साधन एक जग राम तिहारो नाम ॥ ता राम नामको तत्त्व ऋषिसों गहौ अर्थ सुनिकै धारण करौ २ ॥

राम ॥ श्रद्धाबहुधाउरआनिभई । ब्रह्मासुतसोंबिनतीविनई ॥ श्रीरामकोनामकहौरुचिकै । मतिमानमहामनकोशुचिकै ३ वशिष्ठ--स्वागताछन्द ॥ चित्तमांझजबआनिअरूझी । बाततातकहँमैंयहबूझी ॥ योगयागकरिजाहिनआवै । स्नानदानबिधिमर्मनपावै ॥ हैअशक्तसबभांतिविचारो । कौनभांतिप्रभुताहिउधारो ४ ॥

शत्रुघ्नके उरमें बड़ी श्रद्धाभई ३ अरूझी अर्थ सन्देहभई तात ब्रह्मा मर्म सिद्धांत ४ ॥

ब्रह्मा--भुजंगप्रयातछन्द ॥ जहींसच्चिदानन्दरूपैधरैंगे।सुत्रैलोक्यकोतापतीनोंहरैंगे ॥ कहैंगेसबैनामश्रीरामताको । सदासिद्धहैशुद्धउच्चारजाको ५ कहैनामआधोसोआधोनशावै । कहैनामपूरोसोबैकुण्ठपावै ॥ सुधारैंदुहूंलोककोवर्णदोऊ । हियेछद्मछांड़ेकहैवर्णकोऊ ६ सुनावैसुनैसाधुसंगीकहावै । कहावैकहैपापपुंजैनशावै ॥ स्मरावैस्मरैबासनाजारिडारै । तजैछद्मकोदेवलोकैसिधारै ७ तामरसछंद ॥ जबसबवेदपुराणनशैहैं । जपतपतीरथहूमिटिजैहैं ॥ द्विजसुरभीनहिंकोउबिचारै । तबजगकेवलनामउधारै ८ दोहा ॥ मरणकालकाशीबिषेमहादेवनिज

धाम ॥ जीवनकोउपदेशिहैंरामचन्द्रकोनाम ९ मरणका लकोऊकहैपापीहोइपुनीत ॥ सुखहीहरिपुरजाइहैसबजग गावैगीत १० ॥

और मन्त्र पुरश्चरणादिसों सिद्धकियेजातहैं औ याके शुद्ध उच्चार सदाहीं सिद्धहैं ५ आधो नाम रा अथवा म अधोगति नरक इति पूरे नामके जपसों बैकुण्ठ प्राप्तहोतहै मृत्युलोकमें कहा होतहै ता लिये फेरि कहतहैं कि राम ये जे दुवौ अंक बर्ण हैं ते मृत्युलोक स्वर्गलोक दुवौ सुधारत हैं मृत्युलोक में यश गौरवादिको लाभ होत है बैकुण्ठ में देव सुख प्राप्त होत है इत्यर्थः ६ । ७ । ८ । ९ । १० ॥

रामनामकेतत्त्वको जानतवेदप्रभाव ॥ गंगाधरकैधरणिधरबालमीकिमुनिराव ११ दोधकछंद ॥ सातहुसिंधुनकेजलरूरे । तीरथजालनिकेपयपूरे ॥ कंचनकेघटबानरलीने । आइगयेहरिआनँदभीने १२ दोहा ॥ सकलरत्नमयमृत्तिकाशुभऔषधीअशेष ॥ सातद्वीपकेपुष्पफलपल्लवरससविशेष १३ दोधकछंद ॥ आंगनहीरनकोमनमोहै । कुंकुमचन्दनचर्च्चितसोहै ॥ हैसरसीसमशोभप्रकासी । लोचनमीनमनोजबिलासी १४ दोहा ॥ गजमोतिनयुतशोभिजैंमरकतमणिकेथार ॥ उदकबुन्दसोंजनुलसतपुरइनिपत्रअपार १५ बिशेषकछंद ॥ भांतिनभांतिनभाजनराजतकौनगनै । ठौरहिठौररहेजनुफूलिसरोजघने ॥ भूपनकेप्रतिबिम्बबिलोकतरूपरसे । खेलतहैंजलमांझमनोजलदेवबसे १६ पद्धटिकाछन्द ॥ मृगमदमिलिकुंकुमसुरभिनीर । घनसारसहितअम्बरउसीर । घसिकेसरिसोंबहुबिबिधनीर । क्षितिछिरकेचरथा

वरशरीर १७ बहुबर्णफूलफलदलउदार । तहँभरिराखे भाजनअपार ॥ तहँपुष्पवृक्षशोभैंअनेक । मणिवृक्षस्वर्णकेवृक्षएक १८ त्यहिउपररच्योएकैबितान । दिविदेखतदेवनकेबिमान । दुहुंलोकहोतपूजाबिधान । अरुनृत्यगीतवादित्रगान १९ ॥

धरणिधर शेष ११ हरि जेरामचन्द्रहैं तिनके अभिषेकोत्सव के आनन्दमें भीने इत्यर्थः १२ रस घृतादि १३ भांतिन भांति तीनि छन्दमें एक बाक्यताहै सरसी तडाग ता आंगनमें प्रतिबिंबित जे सबके लोचनहैं तेई मनोजके कामके मीनमत्स्यहैं अथवा मनोजबिलासी कहे कामके खेलिबेके मीनहैं १४ ताहीतडागमें पुरइनि पत्रसमहैं १५ ताही तडागमें भाजनकहेपात्र सरोज सम फूलिरहेहैं प्रतिबिंब जल देवसमहैं १६ सुरभि सुगंधितअथवा सुन्दर ॥ सुरभिर्हेम्निचंपकेजातीफलेमातृभेदेरम्येचैत्रवसंतयोः। सुगन्धौगविशल्लक्यामितिहेमचन्द्रः ॥ अम्बरसुगन्धवस्तुविशेष॥ अंबरंनद्वयोर्व्योम्निसुगन्ध्यंतरवस्त्रयोरितिमेदिनी ॥ सरिसों बराबरिसों अर्थ मृगमदादि सबसमघसिकै १७दलपत्रभाजनपात्र १८ एकै अपूर्ब बादित्रबाजने १९ ॥

तरुऊमरिकोआसनअनूप । बहुरचितहेममयबिरुवरूप ॥ तहँबैठेआपुनआइराम । सियसहितमनोरतिरुचिरकाम २० जनुघनदामिनिआनन्ददेत । तरुकल्पकल्पबल्लीसमेत ॥ हैकैधौंबिद्यासहितज्ञान । कैतपसंयुतमनसिद्धिजान २१ कैबिक्रमयुतकीरतिप्रबीन । कैश्रीनारायणशोभलीन ॥ कैअतिशोभितस्वाहासनाथ । कैसुंदरताशृंगारसाथ २२ सुन्दरीछंद ॥ केशवशोभनछत्रबिराजत । जाकहँदेखिसुधाधरलाजत ॥ शोभितमोतिनकेमति

केगन । लोकनकेजनुलागिरहेमन २३ दोहा ॥ शीतल ताशुभतासबैसुन्दरताकेसाथ ॥ अपनीरबिकीअंशुलैसे वतजनुनिशिनाथ २४ ॥

ऊमरि गूलरि हेममयकहे सुबर्णमयी बिश्वकहे संसारके रूप अर्थ संसारके बस्तु स्वरूपन करिकै रचितहै चित्रितहै २० कै तप संयुक्त सिद्धिकहे तपसिद्धि है यहमनमें जानु इत्यर्थः २१ श्री लक्ष्मीसनाथकहे अग्निसहित शृंगाररस अथवा भूषणनकोशृंगार कियेसों सुन्दरताबढ़ति है तासों जानों २२ । २३ ताही छत्रमें तर्क है शीतलता औशुभताकहे मांगल्य औ सुन्दरता जो सबकहे पूर्णहै तिनके संगअपनी औ रविकी अंशुकिरणि लैकै मानों निशिनाथ चन्द्रमा रामचन्द्रको सेवतहै चन्द्रकिरणिसम मुक्तनकी किरणिहैं रवि किरणिसम औ जटित जेमाणिकादि मणिहैं तिनकीकिरणि हैं औ शीतलतादिहैहीहैं २४ ॥

सुन्दरीछन्द ॥ ताहिलियेरबिपुत्रसदारत । चमरबि भीषणअंगदढारत ॥ कीरतिलैजगकीजनुवारत । चन्द्र कचन्दनचन्दसवाँरत २५ लक्ष्मणदर्पणकोदिखरावत । पाननिलक्ष्मणबन्धुखवावत ॥ भर्थलैलैनरदेवसदारत । देवअदेवनिपायनपारत २६ दोहा ॥ जामवंतहनुमंत नलनीलमरातिबसाथ ॥ छरीछबीलीशोभिजैदिग्पालन केहाथ २७ रूपबहिक्रमसुरभिसम बचनरचनबहुभेव ॥ सभामध्यपहिंचानिये नरनरदेवनदेव २८ आईजब अभिषेककीघटिकाकेशवदास ॥ बाजेएकहिबारबहुदुंदु भिदीहअकास २९ ॥

रतकहे अनुरक्तहै कीर्तिसम चमर हैं फिरि चमरकैसेहैं कि चंद्रकजोकपूरहै औ चंदन औ चन्द्रमाहै सदाआर्त्तकहे पीड़ित

जिनसों अर्थ जिनकी श्वेततासों अपनी श्वेतताहीन समुझि चन्द्रकादि दुःखीहोतहैं २५ । २६ माहीमरातिब प्रसिद्ध है छरी आशा २७ सुरभि सुगंधि २८ । २९ ॥

झूलनाछन्द ॥ तबलोकनाथबिलोकिकैरघुनाथको निजहाथ ।सबिशेषसोंअभिषेककीपुनिउच्चरीशुभगाथ॥ ऋषिराजइष्टबशिष्ठसोंमिलिगाधिनन्दनआइ । पुनिबाल्मीकिबियासआदिजितेहुतेमुनिराइ ३० रघुनाथशंभुस्वयंभुकोनिजभक्तिदीसुखपाइ । सुरलोककोसुरराजकोकियदीहनिर्भयराइ ॥ बिधिसोंऋषीशनसोंबिनयकरिपूजिऔपरिपांइ । बहुधादईतपवृक्षकीसबसिद्धसिद्धसुभाइ ३१ ॥

लोकनाथ जे ब्रह्माहैं तिन अभिषेककी घटिकाआई बिलोकिकै निजहाथसों रघुनाथको अभिषेक कीकहे करयो पुनिफेरि शुभगाथकहे वेदबिहित गाथको उच्चारकरयो इत्यर्थः पुनिकेहब्रह्माके अभिषेक किये बादिबशिष्ठादिक जेते मुनिराय ताठौरहुते तिनहुंन अभिषेककरिशुभगाथउच्चरी इत्यर्थः ३० स्वयंभुकहेब्रह्मा ३१ ॥

दोहा ॥ दीन्होमुकुटबिभीषणैअपनोअपनेहाथ ॥ कंठमालसुग्रीवकोदीन्होश्रीरघुनाथ ३२ चञ्चरीछन्द ॥ मालश्रीरघुनाथकेउरशुभ्रसीतहिसोदई। आफिय्योहनुमन्तकोतिनदृष्टिकैकरुणामई ॥ औरदेवअदेवबानरयाचकादिकपाइयो । एकअङ्गदछोड़िकैज्वइजासुकेमनभाइयो ३३ अंगद ॥ देवहौनरदेवबानरनैऋतादिकधीरहौ॥ भरतलक्ष्मणआदिदैरघुबंशकेसबबीरहौ ॥ आजुमोसनयुद्धमाड़हुएकएकअनेककै । बापकोतबहौंतिलोदकदीहदेहुंबिबेककै ३४ राम–दोहा ॥ कोऊमेरेबंशमेंकरि

हैतोसोंयुद्ध॥तबतेरोमनहोयगोअंगदमोसोंशुद्ध ३५ बिधिसोंपायँपखारिकैरामजगतकेनाह ॥ दीन्हेउगाँवसनौढियनमथुरामण्डलमाह ३६ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्री रामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यराज्याभिषेकवर्णननामषड्विंशःप्रकाशः २६ ॥

आफियो कहे दियो तिन सीताजू ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानि प्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्ति प्रकाशिकायांषड्विंशःप्रकाशः २६ ॥

दोहा ॥ सत्ताइसेप्रकाशमेंरामचन्द्रसुखसार ॥ ब्रह्मादिकअस्तुतिबिबिधनिजमतिकेअनुसार १ ब्रह्मा—भूलनाछन्द ॥ तुमहोअनन्तअनादिसर्वगसर्वदासर्वज्ञ । अबएकहौकिअनेकहौमहिमानजानतअज्ञ ॥ भ्रमिबोकरैंजगलोकचौदहलोभमोहसमुद्र । रचनारचीतुमताहिजानतहौंनब्रह्मनरुद्र २ ॥

१ सर्वगकहे सर्वत्रव्याप्त लोभमोहके समुद्रअर्थ लोभमोहसों भरे जे चौदहलोक कहे चौदहौ लोकके प्राणी जारचनामें भ्रमिबो करतहैं अर्थ सन्देहको प्राप्तभयो करतहैं ता रचनाको नहीं जानतहौं न ब्रह्मवेद जानत हैं न रुद्रजानत हैं अथवा चौदहौ लोकमें लोभ औ मोहके समुद्रमें हम भ्रम्योकरत हैं तासों तुम्हारी रचनाको नहीं जानत २ ॥

शिव—दण्डक ॥ अमलचरिततुमबैरिनमलिनकरौ साधुकहैंसाधुपरदारप्रियअतिहौ । एकथलथितपैबसतजगजनप्रियकेशौदासद्विपदपैबहुपदगतिहौ । भूषणसक

लयुतशीशधरेभूमिभारभूतलफिरतपै अभूतभुविपतिहौ राखौगायब्राह्मणनराजसिंहसाथ चिररामचन्द्रराजकरौ अदभुतगतिहौ ३ इन्द्र ॥ बैरीगायब्राह्मणकोग्रन्थनमें सुनियतकविकुलहीकेसुबरणहरकाजहै । गुरुशय्यागामीएकबलकै बिलोकियतमातंगनहींकेमतवारेकैसोसाज है । अरिनगरीनप्रतिहोतहैअगम्यागौनदुर्गनाहिंकेशौदासदुर्गतिसीआजहै । देवताईदेखियतगढ़निगढ़ोईजीवोचिरचिररामचन्द्रजाकोऐसोराजहै ४ ॥

याहूमें बिरोधाभासहै अमल निर्मलचरितनसों बैरिनको मलिनकरतहौ इत्यर्थः पर कहे उत्कृष्ट दार अर्थ लक्ष्मीजू ॥ राघवत्वेभवेत्सीता रुक्मिणीकृष्णजन्मनीति पुराणात् ॥ जा भूमिको शीशमेंधरे हैं ताहीपर फिरिबो बिरोधहै गाय सदृश जे ब्राह्मणहैं तिनहूंको राखतहौ रक्षाकरत अथवा गाय औ ब्राह्मणनको राखत हौ औ राजसिंह कहे राजरूपी जेसिंहहैं तिनसों साथकहे मित्रता है तौ सिंहसों मित्रता औ गायकी रक्षा यहबिरोधहै ३ यामें परिसंख्या लंकारहै ग्रंथनमें लिख्यो है कि गाय ब्राह्मणके बैरसों ऐसोपापहोतहै सुन्दर बर्ण अक्षर कवितामें धरिबेको देवताईकहे देवताकी प्रतिमाहींढांकी आदिकी गढ़ानिसों गढ़ोदेखियत है और कोऊप्राणी नहीं गढ़योजात अर्थ ताड़नाको नहीं प्राप्तहोत ४ ॥

पितर ॥ बैठेएकछत्रतरछाँहसबक्षितिपरसूरकुलकलशसुराहुहितमतिहौ । त्यक्तबामलोचनकहतसबकेशौदासबिद्यमानलोचनद्वैदेखियतआतिहौ ॥ अकरकहावतधनुषधरेदेखियतपरमकृपालुपैकृपाणकरपतिहौ । चिरचिरराजकरौराजारामचन्द्रसबलोककहै नरदेवदेवदेवगतिहौ ५ अग्नि ॥ चित्रहीमेंआजबर्णसंकरबिलोकियत

ण्याहहींमेनारिनकेगारिनसोंकाजहैं । ध्वजैकंपयोगीनि शिचक्रैहैवियोगीद्विजराजमित्रद्वेषीएकजलदसमाजहैं । मेघैतोगगनपरगाजतनगरघेरिअपयशडरयशहीकोलो भआजहैं। दुःखहीकोखंडनहैमंडनसकलजग चिरचिर राजकरौंजाकोऐसोराजहैं ६ ॥

यामें विरोधाभास है बिरोधपक्ष राहुग्रह अविरोध सुराह कहे सुमार्ग त्यक्तकहे त्यागे बामलोचन औ बामकहे कुटिल लोचन अर्थ काहूसों टेढ़ेलोचन करि नहीं ताकत विद्यमान कहे प्रत्यक्ष अकरकहे दंडरहित अर्थ काहूको तुम दंडद्रव्य नहीं देते कृपाण जो करवालहै सोहै कर हाथमें जिनके ५ यामें परिसंख्या है वर्ण जे अरुणादि हैं तिनको संकर मिलाइबो द्विजराज चन्द्रमा मित्र सूर्य जाको राज सकलजगकोमण्डन भूषणहै ऐसे जेतुमहौ ते चिर चिरकहे बहु काल पर्यंत राजकरौ ६ ॥

वायु ॥ राजारामचंद्रतुमराजहुसुयशजाकोभूतलके आसपाससागरकोपाससो । सागरमेंबड़भागबेषशेष नागजूकोजपैसुखदानिखानिबिष्णुकोनिवाससो । विष्णु जूमेंभूरिभावभावकोप्रभावजैसो भवजूकेभालमेंबिभूति कोबिलाससो । भूतिमाहचंद्रमासोचंद्रमेंसुधाकोअंशुअं शुनिमेंकेशौदासचंद्रिकाप्रकाससो ७ देवगण ॥ राजा रामचंद्रतुमराजकरौसबकाल दीरघदुसहदुखदीननको दारिये । केशौदासमित्रदोषमंत्रदोषब्रह्मदोषदेवदोषरा जदोषदेशतेनिकारिये। कलहकृतघ्नमहिमंडलकेबरिबं डपाखँडअखण्डखंडखंडकरिडारिये । बंचककठोरठेलि कीजैबाटआटआट झूठपाठकंठपाठकारी काठमारिये ८ ऋषिगण ॥ भोगभार भागभारकेशवबिभूतिभारभूमि

भारभूरिअभिषेकनकेजलसे । दानभारगानभार सकल सयानभार धनभारधर्मभारअक्षतअमलसे ॥ जयभा रयशभारराजभारराजतहै रामशिरआशिषअशेषमंत्रब लसे। देशदेशयत्रतत्रदेखिदेखितेहिदुखफाटतहैं दुष्टनके शीशदाह्योफलसे ६ ॥

पासकहेफांस अंशु किरणि ७ दारिये कहे नाशकरतहौ बंचक ठग कठोर निर्दय झूठ रूपी जो पाठहै ताके जे कराठ पाठकारी हैं अर्थ जे गूढही कह्योकरतहैं विभूति ऐश्वर्य ८ । ९ ॥

केशव--बिजयाछन्द ॥ जाइनहींकरतूतिकही सब श्रीसबिताकबिताकरिहारो । याहीतेकेशवदासअशीश पढ़ैअपनोकरिनेकुनिहारो । कीरतिदेवनकीदुलहीयश दूलहश्रीरघुनाथतिहारो । सातौरसातल सातहुलोकन सातहुसागरपारबिहारो १० किन्नर,यक्ष,गन्धर्ब--राम लीलाछन्द ॥ अजरअमरअनन्त जयजयचरित श्री रघुनाथ । करतसुरनर सिद्धअचरज श्रवणसुनिसुनि गाथ॥ कायमनबच नेमजानत शिलासमपरनारि। ।शि लातेपुनिपरमसुन्दरि करतनेकनिहारि ११ चमरढारत मातुऊपरपाणिपीड़ाहोइ । बिषदंडज्योंकोदंडहरकोटूक कीन्होहोइ ॥ साधुहोइअसाधुराखत द्विजनहींकोमान । सकलमुनिगणमुकुटमणिको मर्दियोअभिमान १२ ॥

सविता सूर्य १० शिलाते सुन्दरी अहल्याको कर्यो है ११ विषदराड कहे पवनारी को दराड मुनिगण मुकुट मुनिनारदकी कथा तुलसीकृत रामायणमों प्रसिद्धहै बानरसदृश मुखकरिदियो है अथवा परशुराम छन्द उपजातिहै १२ ॥

सूरसुन्दर सरस रविरति करतरातिकहँलालि । एक

पत्नीव्रतनिबाहतमदनकोमदघालि ॥ सुखदसुहृदसपूत सोदरहनतनृपजाकाज । पलकमेंसोइराजछांड्यो मातु पितुकीलाज १३ मंथरासोंमोदमानत बिपिनपठयोपेलि। शूर्पणखाकी नाककाटी करनआईकेलि ॥ चंचुचापत अंगुरीशुकऐंचिलेतडराइ। वन्धुसहितकबन्धकेउरमध्य पैठेधाइ १४ सर्बथासर्बज्ञसर्बगसर्बदारसएक। अज्ञज्यों सीताविलोकी व्यग्रभ्रमतअनेक ॥ बाणचूकत लक्ष्यको कोगनैकेतिकबार । तालसातौबेधियोशरएकएकहिबार १५ सापराधअसाधुआति सुग्रीवकीन्होमित्र। अपराध बिनअतिसाधुबालिहि हन्योजानिअमित्र ॥ चलतजब चौगानकोलै चलतदलचतुरंग । देवशत्रुहिचलेजीतन ऋक्षवानरसंग १६ मूलिहूजातननिहारतगरुसोगिरि नसमान। निगरुदेखोभयेगिरिगण जलधिमेंज्योंपान ॥ यतनयतननितरपासरयू डोडिडोलतडीठि। गयेसागर पारदैपगु प्रकटपाहनपीठि १७ ॥

सबपर रति प्रीति रचिकै सब कीर्तिकी प्रीतिकी लालिकहे लालसा इच्छाकरतहौ औ आश्चर्य पक्षमें रति जो कामकी स्त्री है ताको लालिकहे लालसाकरतहौ अर्थ रतिकी लालसाकरत हौ औ मदनको मद घालतहौ यह आश्चर्य है ताही सोदर के लिये अर्थ भरतके लिये राज्यही छांड्यो इतिशेषः १३ मन्थरा कूबरी १४ व्यग्रविकल अनेक स्थाननमों इतिशेषः भ्रमत कहे घूमत तौ सर्वग औ सर्वज्ञकी अज्ञ सम स्थल ढूँढिबो आश्चर्य है औ सर्वदा एक रसकहे आनन्दरूप जो रहनिहै ताको विकल ह्वैबो आश्चर्यहै लक्ष्यनिशाना वारकहे चोट १५ । १६ निगरु कहे हरुये पानपात्र १७ ॥

बाजिगजरथबाहिनीचढ़ि चलतअमितसुभाय।लंक में बिनपानहींनिजगयेअपनेपाय ॥ यज्ञकोफल गहत यत्नानि यज्ञपुरुषकहाय । बैरजूंठेदियोशवरी भक्षियो सुखपाय१८ कुसुमकन्दुकलगतकाँपतमूंदिलोचनमूल। शत्रुसन्मुखसहेहँसिहँसिशैलअसिशरशूल ॥ दूरिकरत नदयादर्शतदेरदंशतदंश । भईबारनकरतरावणबंशको निर्बंश १९ बाणबेझहिआनकोलगिनाम अपनोलेत । कालसोंरिपुआपुहाति जयपत्रऔरहिदेत ॥ पुण्यकाल नदेताबिप्रन तौलितौलिकनंक । शत्रुसोदरकोदई सब स्वर्णहीकीलंक २० होइमुक्तसोजाहिइनकोभरत आवै नाम ।मुक्तएकनभयेबानरमरेकरिसंग्राम ॥ एकपलबिन पानखाये बारबारजम्हात । बर्षचौदहनींदभूख पियास छोड़ीगात२१ क्षमेबरुअपराधअपनेकोटिकोटिकराल। अपराधएकनछम्यो गोद्विज दीनकोसबकाल ॥ यदपि लक्ष्मणकरीसेवासबभांतिसभेव । तदपिमानतसर्बथा करिभरत हीकीसेव २२॥

१८ कुसुम जे फूलहैं तिनको कंदुकगेंद १९ बेझहिनिशाना २० मुक्तकहे मुक्ति औ मरे २१ छन्द उपजातिहै २२ ॥

कहतइनकोसर्बसाँचे सकलरानाराय । तनकसेवा दासकीकहैंकोटि गुणितबनाय॥ डरनयकअपलोकतेये जीवचौदहलोक । ठौरजाकहँ कहुँनताकहँ देतअपनो ओक २३ छांड़िऋषिद्विजदेवऋषि ऋषिराज सब सुखपाइ ॥ प्रकटसकलसनौढियनके प्रथमपूजेपाइ ॥ छोड़िपितरात्रिशंकुहैबिपरीतयद्यपिदेह । अवधकेशव

जातशूकरश्वानस्वर्ग्गसदेह २४ एकपलउरमांभक्रआ येहरतसबसंसार । आयकैसंसारमेंइनहरेउभूतलभार ॥ शेषशम्भुस्वयम्भुभाषतनिगमनेतिनजास । ताहिलघुमतिबरणिकैंसेसकतकेशवदास २५ याहिविधि चौदहभुवनकेगावमुनियशगाथ । प्रेमसहपहिराइसब कोबिदाकियरघुनाथ २६ भूलनाछंद ॥ अभिषेककी यहगाथश्रीरघुनाथकीनरकोइ । पलएकगावतपाइहैबहु पुत्रसम्पतिसोइ ॥ जरिजाहिंगीसबबासनाभवविष्णुभक्तकहाइ । यमराजकेशिरपाउंदैसुरलोकलोकनिजाइ २७ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्राजिद्विरचितायां ब्रह्मादिस्तुतिवर्णनंनामसप्तविंशःप्रकाशः २७॥

अपलोक कहे अपगतलोक अर्थ छोटोलोक औ कलंक २३ ऋषिसामान्य तपस्वी द्विज ऋषिकहे ब्राह्मण श्रेष्ठ देवऋषिब्रह्म ऋषिराज वशिष्ठादि २४ । २५ । २६ । २७ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादा यजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांसप्तविंशःप्रकाशः २७ ॥

दोहा ॥ अट्ठाइसेप्रकाशमेंबर्णनबहुविधिजानि ॥ श्री रघुबरकेराजकोसुरनरकोसुखदानि १ भुजंगप्रयातछंद॥ अनन्तासबैसर्बदाशस्ययुक्ता। समुद्रावधिःसप्तईतीविमुक्ता ॥ सदावृक्षफूलेफलेतत्रसोहैं । जिन्हेंअल्पधीकल्पसाखीविमोहैं २ सबैनिम्नगाक्षीरकेपूरपूरी । भईकामगोसीसबैधेनुरूरी ॥ सबैबाजिस्वर्बाजितेतेजपूरे । सबैद

न्तिस्वर्दन्तितेदर्पस्रूरे ३ सबैजीवहैंसर्वदानन्दपूरे । क्ष मीसंयमीविक्रमीसाधुशूरे ॥ युवासर्बदासर्बविद्याविला सी । सदासर्बसम्पत्तिशोभाप्रकासी ४ चिरंजीवसंयोग योगीअरोगी । सदाएकपत्नीव्रतीभोगभोगी ॥ सबैशील सौन्दर्य्यसौगन्धधारी।सबैब्रह्मज्ञानीगुणीधर्म्मचारी ५ ॥

१ जारामचन्द्र के राज्यमें समुद्रावधि कहे समुद्रपर्यंत अनंत जो पृथ्वी है सो सप्त जे शुकादि ईतिहैं तिनसों विमुक्तारहित श-स्यधान्यसों युक्तहै ॥ अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाःशलभाःशुकाः । स्वचक्रंपरचक्रश्चसप्तैताईतयः स्मृताः ॥ जिन वृक्षनको देखि अ-ल्पबुद्धि जे कल्पसाखी कल्पवृक्षहैं ते बिमोहैं कहे मोहित होत हैं कि ऐसे हम न भये अथवा अल्पकी बुद्धिसों अर्थ हम इनसों लघुहैं या बुद्धिसों मोहतहैं २ निम्नगा नदी क्षीर जल स्वर्बाजि उच्चःश्रवा स्वर्दन्ति ऐरावत दर्पमद ३ । ४ संयोगी कहे सदा स्त्री संयोगसों युक्त सौगन्धपदते स्वाभाविक अंगसुगंधिजानौ ५ ॥

सबैन्हानदानादिकर्म्माधिकारी । सबैचित्तचातुर्य्य चिन्ताप्रहारी ॥ सबैपुत्रपौत्रादिकेसुक्खसाजैं । सबैभक्त मातापिताकेबिराजैं ६ सबैसुंदरीसुंदरीसाधुसोहैं । शची सीसतीसीजिन्हेंदेखिमोहैं ॥ सबैप्रेमकीपुण्यकीसाद्मिनी सी । सबैचित्रिणीपुत्रिणीपद्मिनीसी ७ भ्रमैसंभ्रमीयत्र शोकैसशोकी । अधर्म्मैअधर्म्मीअलोकैअलोकी ॥ दु खैतौदुखीतापतापाधिकारी । दरिद्रैदरिद्रीविकारैबिकारी ८ चौपाई ॥ होमधूममलिनाईजहां । अतिचंचलचल दलहैंतहां ॥ बालनाशहैचूड़ाकर्म्म । तीक्षणताआयुध केधर्म्म ९ लेतजनेऊभिक्षादानु । कुटिलचालसरिता निवखानु ॥ व्याकरणैद्विजवृत्तिनहरैं । कोकिलकुलपुत्र

नपरिहरै १०फागुहिनिलजलोगदेखिये । जुवादेवारीको लेखिये॥नितउठिबेझोईमारिये।खेलतमेंकेहूंहारिये११॥

चित्तकी चातुर्यकरिकै और की चिन्ताके प्रहारी कहे हर्त्ता हैं ६ सुन्दरी स्त्री सुन्दरी कहे सुन्दरता युक्त साधुकहे पतिव्रता सद्मिनीकहे हवेली चित्रिणी कहे चित्रिणी जातिहै पुत्रिणी कहे पुत्रवती हैं औ पद्मिनी कहे पद्मिनी जाति है यासों या जनायो कि हस्तिनी शंखिनी एकौनहीं हैं ७ अलोककहे अपलोक ८ चलदलपिप्पल वृक्ष बारशिरोरुह इति औ बालक चूड़ाकर्म क्षौर कर्म ९ द्विजजे ब्राह्मणहैं तेई व्याकरण शास्त्रहीमो वृत्तिको हरत हैं हरिलेत हैं अर्थ पढ़तहैं और कोऊ काहूकी वृत्ति जीविका को नहीं हरत व्याकरण शास्त्रमों सूत्रवृत्ति प्रसिद्ध है १० बेझा निशाना खेलतही में काहू विधिसों हारि होतिहै अन्यत्र हारि नहीं होति ११ ॥

दंडक ॥ भावैजहांव्यभिचारी वैदैरमैपरनारीद्विजैंगन दंडधारीचोरीपरपीरकी।मानिनीनहींकेमनमानियतमान भंगसिंधुहिउलंघिजातिकीरतिशरीरकी । मूलैतौअधो गतिनपावतहैंकेशौदासमीचहीसोंहै वियोगइच्छागंगनी रकी । बंध्याबासनानिजानुबिधवासुबाटिकाईऐसीरीति राजनीतिराजैरघुबीरकी १२ दोहा ॥ कबिकुलहीकेश्री फलनउरअभिलाषसमाज ॥ तिथिहीकोक्षयहोतहैराम चंद्रकेराज १३ दंडक ॥ लूटिबेकेनातेपापपट्टनैतौलूटि यततोरिबेकोमोहतरुतोरिडारियतहै । घालिबेकेनातेग बंघालियतदेवनकेजारिबेकेनाते अघओघजारियतहै । बांधिबेकेनातेतालबांधियतकेशौदास मारिबेकेनातेतौद

रिद्रमारियतहै । राजारामचन्द्रजूकेनामजगजीतियत हारिबेकेनातेत्र्प्रानजन्महारियतहै १४ ॥

निर्वेदादिते इतिसव्यभिचारी भावरसग्रंथनमें प्रसिद्धहै नारी नाटिका दंड ब्रह्मलकुट औ डांडु अर्थ और कोऊ काहूसों डांड न हीं लेत मीचुसों बियोगकहि जनायो कि सबकी मुक्ति होति है बासनाई बन्ध्याहै अर्थ बासनाको जो शुभाशुभफल स्वर्ग नरका दि भोगहै सो काहू प्राणीको नहीं होत सबप्राणी मुक्त होत हैं १२ । १३ पापकहे कष्ट पट्टन शहर पाप नामकष्टको बिहारी की सतशैयामोंहै ॥ सीरेयत्ननिशिशिरानिशि सहिबिरहिनितनता प ॥ बसिबेकीग्रीषमदिननिपरयोपरोसिनिपाप ॥ समनामसोंए-क संसारहीको सब जीततहै अर्थसंसारबन्धनसोंछूटिजात है और कोऊ काहू को हरावतनहीं १४ ॥

चंद्रकलाछंद ॥ सबकेकल्पद्रुमकेबनहैंसबकेबरबारन गाजतहैं । सबकेघरशोभितदेवसभासबकेजयदुंदुभिबा जतहैं । निधिसिद्धिबिशेषत्र्प्रशेषनिसोंसबलोगसबैसुख साजतहैं। कहिकेशवश्रीरघुराजकेराजसबैसुरराजसेराज तहैं १५ दंडक ॥ जूझहिमेंकलहकलहप्रियनारदैकुरूपहै कुबेरैलोभसबकेचयनको । पापनकीहानिडरगुरुनको बैरीकामत्र्प्रागिसर्बभक्षीदुखदायकत्र्प्रयनको । विद्याहीमें बादुबहुनायकहैबारिनिधि जारजहैहनुमन्तमीतउदयन को। त्र्प्रांखिनत्र्प्राछतत्र्प्रंधनारिकेरकृशकटिऐसोराजराजै रामराजिवनयनको १६ ॥

कल्पद्रुमके अर्थ कल्पद्रुम सरिस द्रुमवृक्षनके बनहैं देवस भा सम सभा महापद्मादि जेनवौ निधिहैं औ अणिमादि जेअ-ष्टसिद्धिहैं तिनअशेषन पूर्बन सहित बिशेष पूर्वक सबलोग और जे सबै सुखहैं तिन्हैं साजतहैं अर्थकरतहैं १५ पार्बतीके शापसों कुबेर

कुरूपभये हैं सोकथा बाल्मीकीय रामायणउत्तरकांडमों प्रसिद्धहै चयन कहे आनन्द अयनकहे घरको दुखदायक अर्थ दाहक औसबै भक्षी आगिहीहै बहुनायक बहुत स्त्रीनको अर्थ नदिनको नायक स्वामी और सब एकपत्नी भोगीहैं इति भावार्थः सबके उदयन प्रकाशनको मीत कहे हितहै अर्थ सबके शुभाकांक्षी हैं नारिकेर कहे नारिकेरकेफल औ कटिही कृश दुर्बलहै १६ ॥

दोहा ॥ कुटिलकटाक्षकठोरकुचएकैदुःखअदेय ॥ द्विस्वभावअश्लेषमेंब्राह्मणजातिअजेय १७ तोमरछंद ॥ बहुशब्दबंचकजानि । अलिपश्यतोहरमानि ॥ नरछांहईअपवित्र । शरखड्गनिर्दयमित्र १८ सोरठा ॥ गुणतजिअवगुणजालगहतनित्यप्रतिचालनी ॥ पुंश्चलीतितेहिकालएकैकीरतिजानिये १९ दोहा ॥ धनदलोकसुरलोकमयसप्तलोककेसाज ॥ सप्तद्वीपवतिमहिबसीरामचंद्रकेराज २० दशसहस्रदशसैबरषरसाबसीयहिसाज ॥ स्वर्गनरककेमगथकेरामचंद्रकेराज २१ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकाया मिन्द्रजिद्विरचितायांरामराज्यवर्णनंनामाष्टविंशःप्रकाशः २८॥

द्विस्वभावकहे द्वै प्रकारको स्वभाव श्लेष कवितामों है एक समय और अर्थ कहतहैं एकसमय और कहतहैं औरसबको एकई स्वभावहै इतिभावार्थः १७बहुकहे बहुत बिधिसों शब्द जो है सोई बंचक कहे ठगहै अर्थ बंचक यह जो शब्द है सोई है और कोऊ प्राणी ठग नहीं है अथवा बहुत जेपरस्पर कोमल भाषित शब्दहैं तेई ठगहैं अर्थ ठग सम मोहित करतहैं औ अलि जे भ्रमरहैं तेई पश्यतोहर कहे देखतहू चोरी करत हैं अर्थ सबके देखत भ्रमर पुष्पनसों मधु चोरतहैं १८ गुण रूप पिसानको त्यागि अवगुणरूपी भूसीको ग्रहण करति हैं पुंश्चली परकीया १९ । २०

रसापृथ्वी स्वर्ग नरकके मग थके कहे नहींचलत अर्थ न कोऊप्राणी स्वर्गजाइ न नरक जाइ सब मुक्तिपुरीको जातहैं २१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां अष्टाविंशःप्रकाशः २८ ॥

उनतीसयेंप्रकाशमेंबरणिकह्योचौगान ॥ अवधदीपशुककीबिनतिराजलोकगुणगान १ चौपाई ॥ एककालअतिरूपनिधान । खेलनको निकरेचौगान ॥ हाथधनुषशरसन्मथरूप । संगपयादेसोदरभूप २ जाकोजबहींआयसुहोइ । जाइचढ़ैगजबाजिनसोइ ॥ पशुपतिसेरघुपतिदेखिये । अनुगतशेषमहालेखिये ३ बीथीसबअसवारिनभरी । हयहाथिनसोंसोहतखरी ॥ तरुपुंजनसोंसरिताभली । मानोंमिलनसमुद्रहिचली ४ ॥

१।२जा गजपर औ जा बाजिपर चढ़िकै चलिबे को रामचन्द्र को आयसु जाकोहोतहै सो तापरचढ़तहै रामचन्द्रके अनुकहे पाछे गतकहे प्राप्त शेष लक्ष्मण हैं औ महादेवके अनु पश्चाद्भागमें गत प्राप्त शेषकहे शेषनागहैं शेषको महादेव ग्रीवामें पहिरे हैं सो पृष्ठभागमें उरमतहैं इत्यर्थः कहूं अनुगण सैनपाठहै तौ अनुपश्चाद्गणसमूह सैनको पेखियत है औ महादेव के अनुपश्चाद्गणबीरभद्रादिकनकी महासैन पोखियत ३ बीथीगली ४ ॥

यहिबिधिगयेरामचौगान। सावकाशसबभूमिसमान॥ शोभनएककोशपरिमान । रच्योरुचिरतापरचौगान ५ एककोदरघुनाथउदार । भरतदूसरेकोदबिचार ॥ सोहतहाथलीन्हेंछरी । कारीपीरीरातीहरी ६ देखनलग्यो सबैजगजाल।डारिदियोभुवगोलाहाल॥गोलाजाइजहाँ

जहँजबै। होततहींतिततहींतिततसबै ७ मनोंरसिकलोचन रुचिरचे। रूपसंगबहुनाचनिनचे ॥ लोकलाजछांड़ेअँगअंग। डोलतजनुजनमनकेसंग ८ गोलाजाकेआगे जाइ। सोईताहिचलैअपनाइ ॥ जैसेतियगणकोपतिरयो। जेहिपायोताहीकोभयो ९ उततेइतइततेउतहोइ। नेकहुढीलनपावैसोइ ॥ कामक्रोधमदमद्यौंअपार। मानोंजीवभ्रमैसंसार १० ॥

सावकाशकहे फैलाव सहित और समान कहे नीच उच्चरहित ५ कोदकहे ओर ६ जाहींकहे तबै ७ रुचिकहे इच्छारूप सुन्दरता ८।९।१० ॥

जहांतहांमारैसबकोइ। ज्योंनरपंचबिरोधीहोइ ॥ घरीघरीप्रतिठाकुरसबै। बदलतबासनबाहनतबै ११ दोहा ॥ जबजबजीतैंहालहारितबतबबजतानिशान ॥ हयगयभूषणभूरिपटदीजतलोगनिदान १२ चौपाई ॥ तबतेहिसमयएकबेताल। पढ्योगीतगुनिबुद्धिबिशाल ॥ गोलनकीबिनतीसुखपाई। रामचन्द्रसोंकीन्हीआई १३ दण्डक ॥ पूरबकीपूरापूरीपापरपूरीसेतनबापुरीवैदूरिहीतेपांयनपरतिहैं। दक्षिणकोपक्षिनीसीगच्छैंअंतरिक्षमगपश्चिमकोपक्षहीनपक्षीज्योंउरतिहैं ॥ उत्तरकीदेतीहैंउतारिशरणागतनिबातनउतायलीउतारउतरतिहैं। गोलनकीमूरतिनदीजियेजूभैदानरामवैरकहांजाइँबिनतीकरतिहैं १४ ॥

बासन बस्त्र ११।१२ बेताल भाट गोलनकी बिनती कहे गोलनकी तरफसों बिनती रामचन्द्रसों करयो १३ यामें समय

विचारि स्तुतिपूर्वक गोलनकी बिनतिनके व्याजखेल खेलिबो मने करतहैं कहतहैं कि हेराम पापर पूरी भेदप्रसिद्धहै औ पूरी कहे पूरिसमहैं तन जितेकहे ऐसी जे पूर्बदिशाकी पूराकहे ग्राम पूरीकहे लघुग्राम हैं ते बापुरी दूरिहींते भयसों तुम्हारे पांयन परती हैं औ दक्षिणकी पूरापूरी अंतरिक्ष आकाशके मगपक्षिणी सम गच्छती हैं पक्षहीनकहि या जनायो कि उड़िजाइबो चाहती हैं पै पक्षहीनहैं तासों रहिजाती हैं औ उत्तरकी पूरापूरी तुम्हारो विरोधी जो शरणागतहै ताको उतारिदेतीहैं अथवा उत्तरमें पर्वत पर बसतीहैं सो पर्वतसों उतारिदेतीहैं कैसे उतारिदेतीहैं कि बातनहूं करिकै उतायली जो जल्दी है ताके उतारमें उतरतीहैं अर्थ यह कहतीहैं कि तुम इहांसों जल्दीजाउ नहीं तौ रामचन्द्र जानिहैं तौ हमको बिदारिहैं यासों या जनायोकि उत्तरकीपुरी दुर्गम पर्वतनहूंपरहैं तहांऊ तुम्हारे बैरीको नहीं राखिसकतीं तासों गोलनकी मूरतिबिनती करती हैं कि राम बैरसोंहमकहांजाइँ तासों हे राम अभयदानदीजे खेलको समयह्वैआयो तासों अबखेल बंद करो इतिभावार्थः १४ ॥

चौपाई ॥ गोलनकीविनतीसुनिईश । घरकोगमन कर्योजगदीश ॥ पुरपैठतअतिशोभाभई । बीथिनअस वारीभरिगई १५ मनोंसेतुमिलिसहितउछाह । सरित नकेफिरिचलेप्रवाह ॥ ताहीसमयद्योसनशिगयो । दीप उदोतनगरमहँभयो १६ नखतनकीनगरीसीलसी । मा नोंअवधदेवारीवसी ॥ नगरअशोकवृक्षरुचिरयो । मधु प्रभुदेखिप्रफुल्लितभयो १७ अधअधफरऊपरआका श । चलतदीपदेखियतप्रकाश ॥ चौकीदैजनुअपनेभे व । चहुरेदेवलोककोदेव १८ बीथीबिमलसुगंधसमान । दुहुंदिशिदीसतदीपप्रमान ॥ महाराजकोसहितसनेह ।

निजनैननजनुदेखतगेह १९ बहुविधिदेखतपुरकेभाइ । राजसभामहँबैठेजाइ ॥ पहरएकनिशिबीतीजहीं । बिनतीकोशुकआयेतहीं २० ॥

१५प्रथम जातसमयकह्योहै कि॥ तरुपुंजनसोंसरिताभली। मानहुंमिलनसमुद्रहिचली ॥ सो अब आवतमें ताहीमें तर्ककरत हैं कि मानों सेतुमें मिलिकै उछाह आनन्द सहित सरितनके तेई प्रवाह फिरिचले हैं जैसे लंकाजातमें रामचन्द्र सेतुबांध्योहै तामें लागिकै सरितन के प्रवाह फिरिचले हैं तैसेजानो १६ रुचिकहे सुन्दरतासों रयोयुक्त नगररूपी जोअशोक वृक्ष है सो मधुकहे बसंत सम जे रामचन्द्रहैं तिन्हैं देखि प्रफुल्लितभयोहै १७ यामें आकाशदीपनको वर्णनहै एकैआकाशके अधकहे अधोभागमें हैं औ एकै अधफरकहे मध्यभागमों हैं एकैऊपरहैं या प्रकार ज्यों ज्यों क्रमक्रम डोरिखींची जातिहै त्यों त्यों आकाशको चलत प्रकाशदीप देखियतहै सो मानों येसब दीपनहीं देवताहैं अवधपुरीकी चौकीदेतहैं तिनके मध्य मानों आपने भेवकहे समय प्रमाण चौकीदैकै ये देव आपने लोकजातहैं १८ बिमल तृणादि रहित सुगंध गंधयुक्त समान उच्च नीचरहित दुहुंदिशि कहेगैलके याहूओर वाहूओरसनेह प्रेम औ तैल १९ भाइकहे चेष्टा २० ॥

शुक–हरिप्रियाछन्द ॥ पौढ़ियेकृपानिधानदेवदेवराम चंद्रचंद्रिकासमेतिचन्द्रचित्तरैनिमोहै। मनहुंसुमनसुमति संगरचेरुचिरसुकृतरंग आनँदमयअंगअंगसकलसुखनिसोहै ॥ ललितलतनकेबिलासभ्रमरवृन्दकैउदासअमलकमलकोशआसपासबासकीन्हे। तजितजिमायादुरंतभक्तरावरेअनन्ततवपदकरनैनबैनमानहुंमनदीन्हे २१ घरघरसंगीतगीतबाजेबाजेंअजीत कामभूपआगमजनु होतहैंबधाये । राजभौनआसपासदीपवृक्षकेबिलासजग

तिज्योतियौबनजनुज्योतिवन्तआये॥ मोतिनमयभीतिन ईचंद्रचंद्रिकानिमईपंकअंकअंकितभवभूरिभेदसोकरी । मानहुं शशिपण्डितकरिजोन्हज्योतिमण्डितश्रीखण्डशै लकीअखण्डशुभ्रसुन्दरीदरी २२ एकद्वीपद्युतिबिभाति दीपतिमणिदीपपांतिमानहुंभुवभूपतेजमंत्रिनमयराजै । आरेमणिखचितखरेवासनबहुबासभरे राखतगृहगृहअ नेकमनहुंमैनसाजै॥ अमलसुमिलजलनिधानमोतिनके शुभवितानतापरपलिकाजरायजड़ितजीवहरषै । कोम लतापररसालतनसुखकीसेजलालमनहुसोमसूरजपरसु धाबिंदुबरषै २३ फूलनकेविविधहारघोरिलनिउरमतउ दारबिचबिचमणिश्यामहारउपमाशुकभाखी । जीत्योस बजगतजानितुमसोंहारिहारिमानिमनहुं मदनधनुषनिते गुणउतारिराखी॥ जलथलफलफूलभूरिअम्बरघटबास धूरिस्वच्छयच्छकर्दमाहियदेवनिअभिलाखे।कुंकुममेदोय वादिमृगमदकर्पूरआदिबीराबनितनबनाइभाजनभरिरा खे २४ पन्नगीनगीकुमारिआसुरीसुरीनिहारिविविधबी नकिन्नरीनकिन्नरीबजावैं । मानोंनिःकामभक्तिशक्तिआय आपनीनदेहनधरिप्रेमनभरिभजनभेदगावैं ॥ सोदरसा मन्तशूरसेनापति दासदूतदेशदेशकेनरेशमन्त्रिमित्रले- खिये। बहुरेसुरअसुरसिद्धपण्डितमुनिकबिप्रसिद्धकेशव बहुरायराजराजलोकदेखिये २५ ॥

पांचछन्दको अन्वयएकहै रैनि में चंद्रिकासमेत चन्द्रचित्तको मोहतहै प्रसन्नकरतहै अर्थ रात्रिके संगसों चन्द्रिकासमेतहै चंद्र चित्तमोहतहै सो मानों सुष्टुजोमतिहै ताके संगसों सुष्टु जोमन

है ताके अंग आनन्दमयकहे स्वच्छ सुकृत सुकर्मकेरंगसों रचेहैं सुकृतको रंगश्वेत कविप्रिया में श्वेतगणनामें कह्योहै ॥ शेष सुकृतशुचिसत्वगुणसंतनके मनहास॥ सो मन सकलकहे पुत्रधनादिके सुखनसहित सोहतहैं सुकृतीको सबसुख प्राप्तहोतहैं यहप्रसिद्धहै सुमतिसम रात्रिहै सुमनसम चन्द्रमाहै सुकृतसम चांदनी है ललित लतनके बिलासलसों उदासह्वैकै अर्थ त्याग करिकै मायासम लता हैं भक्तसम भ्रमर हैं कर औ नयन औ बैनसम कमलहैं बैनपदते इहां मुखजानौ छंदउपजातिहै आसपास जे दीप वृक्षकहे झाऊहैं तिनके विलाससों राजभवन की ज्योति जगति है जानों यौवनके आये शरीरकीज्योति जगतिहै इतिशेषः ॥ ताही राजभवनकी चन्द्र चन्द्रिकानिमयी कहे चन्द्रिकनसों युक्त जो मोतिनमयभीतिहै ताहि भवजो संसार है ताके जे भूरिभेद हैं अर्थ अनेकविधि चित्रहैं तिन सहितपंकजो चन्दन पंकहै तासों सेवकन चित्रितकरी है अर्थ भीतिनमें चित्रविचित्र चंदनपंकलग्योहै सो श्रीखण्ड जो चन्दनहै ताको शैल मलयाचल अथवा चंदनहीको निर्मित जो शैलहै ताकी शुभ्रकहे श्वेत औ सुन्दरीरुचिरदरी कन्दराको पण्डितकहेचतुरजो शशिहै सोजोन्ह ज्योतिसों मण्डितकरीहै चन्दनलेपसों युक्त है तासों राजभवनको श्रीखण्ड शैलसमकह्योहै दरीसम गृहको उदरहै ताभूप भवनमें येदीपकी द्युतिविभाति कहे शोभितहै औ मणिदीप कहे भीतिन में जटित मणिनमें प्रतिबिंबितजेदीपहैं तिनहूंकी पांतिदीपति है सो मानों भुवमें अर्थ भुवमंडलमें मन्त्रिनमयकहे मन्त्रिनके तेजमय अर्थ मन्त्रिनके प्रतापसोंयुक्त राजाको तेजराजतहै भूपतेजसम एकदीपहै मन्त्रिनके तेजसम प्रतिबिंबदीपहैं मन्त्रिनको तेज राजतेजके प्रतिबिंबसमहोतही है अथवा मानोंराजाकोतेजहै मन्त्रिनमें व्याप्त राजतहै मन्त्रिनसममणि हैं भूपतेज समदीपहै औ आरे कहे ताख मणिन करिकै खरेकहे नीकीबिधि चित्रितहैं तिनमें बहुबास कहे सुगंधनसों भरे अनेक बासन कहे पात्रगृहगृह में कहे स्थानस्था-

नमें स्त्रीजन राखती हैं तेमानों मैन जो कामहै ताको साजैहै अर्थ कामके लाइवेके सुगंध हैं औ अमल कहे निर्मल सुमिल कहे गोल औ जल कहे पानी के निधानजे मोती हैं तिनके शुभ वितान कहे चंदोवा हैं तनसुख तन जो लाल अरुण सोमसम मोतिनको वितान है सुधाबिंदु सममोती हैं सूर्य्यसम अरुण सेज है घोरिला धनुषके गोसा सदृश होतहै औ धनुष सों गुण उतारयो जातहै तब एक गोसामों लग्योरहतहै गुणरोदा मौर्वीज्या-सिंजिनीगुणः इत्यमरः ॥ औ जल औ थलके भूरिकहे अनेक विधिके फल औ फूल औ अंबर वस्त्र औ पटवास कहे सुगंध चूर्णताकी धूरि ॥ पिष्टातः पटवासकः इत्यमरः ॥ औ जाको हिय में देवता अभिलाष करतहैं सो ऐसो स्वच्छ यच्छ कर्दम ॥ कर्पूरागरुकस्तूरी कंकोलैर्यच्छकर्दमः ॥ औ कुंकुम केसरि औ मेदज वादि कहे उबटन औ मृगमद कस्तूरी औ कर्पूर आदि औ बीरा बनाइ बनाइकै भिन्नभिन्न भाजन पात्रनमें बनिता जे दासीजन हैं तिनभरिराखे हैं किन्नरीन कहे सारंगीन की आपनी आपनी शक्ति सों कहे अणिमादि सिद्धिके बल सों देहनको धरिकै बहुरे कहे आज्ञापाइ रावरी सभा सों अपने धामन को जातहैं तासों अब आपहूचलिकै राजलोकको देखिये औ तहां पौढ़िये इत्यन्वयः२१।२२।२३।२४।२५॥

दोहा ॥ कहिकेशवशुककेवचनसुनिसुनिपरमबिचित्र ॥ राजलोकदेखनचलेरामचन्द्रजगमित्र २६ नाराच छंद ॥ सुदेशराजलोकआसपासकोटदेखियो । रचीबिचारिचारिपौरिपूरबादिलेखियो ॥ सुबेषएकसिंहपौरिए कदंतिराजहै । सुएकबाजिराजएकनांदिबेषसाजहै २७ दोहा॥ पांचचौकमध्याहिरच्योसातलोकतरहारि॥ षटऊपरातिनकेतहांचित्रेचित्रबिचारि २८ चामरछंद ॥ भोज

एकचौकमध्यदूसरेरचीसभा । तीसरेबिचारमंत्रऔरनृत्यकीप्रभा ॥ मध्यचौकमेंतहांबिदेहकन्यकाबसै । सर्बभावरामचन्द्रलीनसर्बथालसै २९ ॥

राजलोक कहे राजभवन २६ रामचन्द्रजू राजलोकके आसपास सुदेश कहे आछोकोट देखतभये अर्थ आसपास कोट है ताके मध्यमें राजलोक है ताकोट के पूर्वादि दिशामों क्रमसों चारों ओर चारिपौरि कहे द्वारहैं पूर्वदिशामों सिंहपौरिहै दक्षिण दिशामों दंतिपौरि है पश्चिम दिशामों बाजिपौरिहै उत्तर दिशामों नंदिपौरि है इहां सिंहादिपौरिसों सिंहादि स्वरूपयुक्तपौरि जानौ २७ ताकोटके मध्यहि कहे मध्यमें सातलोक के तरहारि कहे सतमहलाके तरे पांचचौक अँगनाई रचोहै अर्थ अँगनाई विशिष्ट पृथक् पांचभवन बने हैं तेसतमंजिलाहैं तिनके कहे तिनभवननके षट्ऊपर कहे छठयें लोकके जेऊपर कहे छतिहै तहां बिचारिकै कहे जहां जैसो चाहिये तैसो तहां समुझिकै चित्रचित्रे हैं और अर्थ पांच चौक मध्यमें रच्योहै ते कैसेहैं सातों लोकजे अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ हैं तरहारि कहे अधन्यून जिनते अर्थ सातौंलोक में ऐसेधाम नहीं हैं औषट्कहे छःलोक जे भू १ अंतरिक्ष २ स्वर्ग ३ ब्रह्मलोक ४ पितृलोक ५ सूर्यलोक ६ तिनहूंके ऊपरहै अर्थश्रेष्ठहै यासोंयाजनायो कि सातवोंलोक जो बैकुण्ठहै ताके सदृशहै तहां विचारिकै अर्थ यथोचितस्थान में चित्रचित्रे हैं अथवासातलोक जे तरहारिकहे तरेके हैं अतलादि औ षट्जे भूलोकादि हैं तिनहू के ऊपर जोलोकहै बैकुण्ठसो बिचारिकैतिनके कहे ता बैकुण्ठके धामनके चित्रसम चित्रे हैं अर्थ बैकुण्ठ धामन के प्रतिमाबने हैं अथवा बिचारिकै तिनके बैकुण्ठधामनके चित्र चित्रेहैंअर्थ जे चित्र बैकुण्ठधामनमें हैं तेई इनमें चित्रे हैं २८ यामें पांचहूचौकनको प्रयोजन कहतहैं और चौथेचौकमें नृत्यकीप्रभारची इत्यर्थः २९॥

दोधकछन्द ॥ मन्दिरकंचनकोयकसोहै । श्वेततहां छतुरीमनमोहै ॥ सोहतशीरषमेरुहमानों । सुन्दरदेव दिवानबखानों ३० मन्दिरलालनकोयकसोहै । श्यामत हांछतुरीमनमोहै ॥ ताहियहैउपमासबसाजै । सूरजअं कमनांशनिराजै ३१ मन्दिरनीलनकोयकसोहै । श्वेतत हांछतुरीमनमोहै ॥ मानहुंहंसनकीअवलीसी । प्राविट कालउड़ाइचलीसी ३२ मन्दिरश्वेतलसैअतिभारी । सोहतिहैछतुरीअतिकारी ॥ मानहुंईश्वरकेशिरसोहै । मू रतिराघवकीमनमोहै ३३ तोटकछन्द ॥ सबधामनमेंय कधामबन्यो । अतिसुन्दरश्वेतस्वरूपसन्यो ॥ शनिसूर बृहस्पतिमण्डलमें । परिपूरणचन्द्रमनोंबलमें ३४ चौ पाई ॥ बहुधामन्दिरदेखेभले । देखनशुभ्रशालिकाचले ॥ शीतभीतज्योंनेकनत्रसे । पलुकबसनशालामहँलसे ३५ जलशालाचातकज्योंगये । अलिज्योंगन्धशालिकाठये ॥ निपटरङ्कज्योंशोभितभये । मेवाकीशालामेंगये ३६ ॥

तिन पांचहू मन्दिरनको रूप क्रमसों पांच छंदनमों कहत हैं मेरुहकहे मेरु के शीर्षकहे अग्रभाग में देवदिवानकहे देव स-भाहै ३० । ३१ मेघनकरि आच्छादित श्याम प्राविटकाल कहे वर्षाकालसम नीलमणिनको मंदिरहै हंसावलीसम श्वेत छतु-रीहै ३२ ईश्वर महादेव ३३ शनैश्चरादिके मण्डलमें परिद्दष्टयादि दोषसों संयुक्तह्वैकै चंद्रमाहीनबलहू ह्वैजातहै तासों बलमेंकहे ब-लाधिक्यसों युक्तकह्यो इहां शनि सूर बृहस्पति मंडलमेंकहे शनि सूर बृहस्पतिआदिके मंडलमें जानो श्याम मंदिर शनैश्चरहै अ-रुणमंदिर सूर्यहै सुवर्ण मंदिर बृहस्पतिहै श्वेतमंदिर शुक्रहै ३४ शीत जो जाड़ो है तासों भीत जोप्राणी हैं सो जैसे अनेक बस्त्रन

में प्रसन्नचित्त होत हैं या प्रकार वस्त्रन के देखिबे में नेत्रसेकहे न ऊंचे अर्थ प्रसन्नचित्तह्वै सब बसन शालाके बस्त्रदेख्यो इत्यर्थः याही विधि जलशालादिमें चातकादि सम जाइबेमें केवल चित्तचोप की समता जानौ ३५ । ३६ ॥

चतुरचोरसेशोभितभये । धरणीधरधनशालागये ॥ माननीनकैसे मनमेव । गयेमानशालासेंदेव ३७ मंत्रिन स्योंबैठेसुखपाइ । पलुकमंत्रशालामेंजाइ ॥ शुभशृंगार शालाकोदेखि । उलटेललितबयनसेलेखि ३८ तोटक छन्द ॥ जबरावरमें रघुनाथगये । बहुधाअवलोकत शोभभये ॥ सबचन्दनकी शुभशुद्धकरी । मणिलाल शिरानिसुधारिधरी ३९ बरँगाअतिलाल सुचन्दनके । उपजेबनसुन्दरनन्दनके ॥ गजदन्तनकी शुभसींकनई । तिनबीचनबीचनस्वर्णमई ४० तिनकेशुभछप्परछाजत हैं । कलशामणिलालबिराजतहैं ॥ अतिअद्भुतथम्भन कीदुगई । गजदन्तसुचन्दन चित्रमई ॥ तिनमांझलसैं बहुभायनके । शुभकंचनफूलजरायनके ४१ ॥

माननीनके सदृश इत्यर्थः ३७ जाशालामें स्त्रीजन शृंगार करती हैं अथवा भूषणादि शृंगार वस्तु जा शालामें धरेहैं ताको देखतही प्रेमातुरह्वै रावरमें जाइबेकी इच्छाकरि नयनसम कहे नयन पूतरीसम उलटेकहे फिरे नयन पूतरी अतिशीघ्र फिरति है तैसे अतिशीघ्र फिरे जानौ ३८ रावर स्त्री भवन शिरा टोपी ३९ । ४० तिनके कहे गजदन्त सुवर्णादि के अथवा तृणके दुगई द्विकनाई अथवा द्वैखम्भ एकमें मिलाइ लागत हैं सो दुगई कहावत है ४१ ॥

रूपमालाछन्द ॥ बर्णबर्णजहांतहांबहुधातनेसोभि

तान । भालरैंमुकुतानकीअरुभूमकाबिनमान ॥ चौकठैंमणिनीलकीफटिकानकेसुकपाट । देखिदेखिसोहोत हैंसबदेवताजनुभाट ४२ श्वेतपीतमणीनकीपरदारचीरुचिलीन । देखिकैतहँदेखियेजनुलोललोचनमीन ॥ शुभ्रहीरनकोसुआँगनहैंहिंडोरालाल । सुन्दरीजहँभूलहींप्रतिबिम्बकेजहँजाल ४३ स्वागताछन्द ॥ धामधामप्रतिआसनसोहैं । देखिदेखिरघुनाथबिमोहैं ॥ बरणिशोभकबिकौनकहैजू । यत्रतत्रमनभूलिरहैजू ४४ दोहा ॥ जाकेरूपनरेखगुण जानतवेद नगाथ । रंगमहल रघुनाथगेराजाशिरीकेसाथ ४५ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां लोकबर्णनंनामैकोनत्रिंशःप्रकाशः २९ ॥

भूमका भव्वा बिनमानकहे बहुत ४२ तिनको देखिकै सबके लोचन मीनसम लोलहोतहैं यह देखियतहै ४३ । ४४ जाके रूपादि एकौ नहीं हैं ते राज श्रीके साथहै रंगमहलगये तो रूपादि युक्त प्राणिनको तौ लैजायोई चाहै इतिभावार्थः ४५ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांएकोनत्रिंशःप्रकाशः २९ ॥

दोहा ॥ यातीसयेंप्रकाशमें बरण्योबहुबिधिजानि ॥ रङ्गमहलसंगीतअरुरामशयनसुखदानि १ पुनिसारिका जगाइबो भोजनबहुतप्रकार ॥ अरुबसन्तरघुबंशमणि वर्णनचन्दउदार २ चतुष्पदीछन्द ॥ द्युतिरंगमहलकी सहसबदनकी वर्णैमतिनाविचारी । अधऊरधराती रंग

सँघातीरुचिबहुधासुखकारी ॥ चित्रीबहुचित्रनिपरमबि चित्रनिरघुकुलचरितसुहाये। सबदेवअदेवनि अरुनर देवनि निरखिनिरखिशिरनाये ३ आईबनिबालागुण गणमालाबुधिबलरूपनबाढ़ी। शुभजातिचित्रिनी चित्र गेहतेनिकसिभईजनुठाढ़ी ॥ मानोंगुणसंगनियोंप्रति अंगनिरूपकरूपबिराजै । बीणानिबजावैं अद्भुतगावैं गिरारागिनीलाजै ४ ॥

१। २ संघाती कहे सघन है रुचिशोभा ३ मानों गानादि जे गुणहैं तिनके संगनि समूहनिसों युक्त जे प्रतिअंगहैं तिनसों युक्त रूप जो सुन्दरताके रूपक कहे विचित्र बिराजतहैं ४ ॥

पद्धटिकाछन्द ॥ स्वरनादग्रामनृत्यतिसताल। मुख वर्गविविधआलापकाल॥बहुकलाजातिमुर्च्छनामानि। बड़भागगमकगुणचलतजानि ५ ॥

षड्जादि जे सप्तस्वर हैं तिनको जो काल औ तार तीनि प्रकारको नादहै औ तीनिप्रकारके जे ग्रामहैं औ देशीआदि जे अनेकबिधि ताल हैं तिन सहित नृत्यतिकहे नाचती हैं स्वरादीनां सर्वेषांलक्षणमुक्तंसंगीतदर्पणे ॥ तत्रस्वरलक्षणं ॥ श्रुत्यनन्तरभावित्वंयस्यानुरणनात्मकः। स्निग्धश्चरंजकश्चासौस्वरइत्यभिधीयते १ अथवा ॥ स्वयंयोराजतेनादः सस्वरःपरिकीर्त्तितः २ श्रुतिभ्यःस्युःस्वराःषड्जर्षभगांधारमध्यमाः। पंचमोधैवतश्चाथ निषादइतिसप्तते ३ अथत्रिधानादः॥ ध्वनौतुमधुरास्फुटे कलोमंद्रस्तुगंभीरेतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु॥इत्यमरः। अथग्रामलक्षणं॥ग्रामः स्वरसमूहःस्यान्मूर्छनादेःसमाश्रयः ॥ तौद्वौधरातलेतत्रस्यात् षड्जग्रामआदिमः १ द्वितीयोमध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते । षड्जग्रामः पंचमेचचतुर्थश्रुतिसंस्थिते २ स्वोयांत्यश्रुतिसंस्थोसि मध्यमग्रामइष्यते। यद्वाधस्त्रिश्रुतिः षड्जेमध्यमेचचतुःश्रुतिः ३

ऋमयोः श्रुतिमेकेकांगांधारश्चेत्समाश्रयेत् । यःश्रुतिंधोनिषादस्तु धश्रुतिंसश्रुतिंसृतः ४ गांधारग्राममाचष्टेतदातंनारदोमुनिः । प्रवर्त्ततेस्वर्गलोकग्रामोसौनमहीतले ५ अथताललक्षणंविनोदाचार्येणोक्तं ॥ हस्तद्वयस्यसंयोगेवियोगेवापिवर्त्तते । व्याप्तिमान्योदशप्राणैः सकालस्तालसंज्ञकः ॥ तथाचसारोद्धारे । कालस्तालइतिप्रोक्तःसोऽवच्छिन्नोद्रुतादिभिः । गीतादिमानकर्त्तास्यात्सत्रेधा कथितोवुधैः ॥ तथाचसंगीतार्णवः ॥ कालःक्रियाचमानंचसंभवंतियथासह । तथातालस्यसंभूतिरितिज्ञेयंविचक्षणैः ॥ मार्गदेशीगतत्वेनतालोसौद्विविधोमतः । शुद्धशालंगसंकीर्णास्तालभेदाःक्रमान्मताः ॥ तालःकालक्रियामानमित्यमरः १ ॥ औ आलापके कालमों कहे समयमों मुख विविध वर्णकहे अनेकरूप होतहैं आलापलक्षणं ॥ रागालापमालाप्तिःप्रकटीकरणंमतं २ औ बहुकहे वहुत प्रकारकी जेकलाहैं औ पांच जेजाति हैं औ एकईस जे मूर्च्छना हैं औ बढ़कहे बढ़ेअर्थ नीको जो चारिप्रकारको भागहै औ पंचदशप्रकारकी जो गमक हैं इनके सरकेते गुण हैं तिनसहित नृत्यमों चलातिकहे चलती है यह जानिकहजानौ । अथकलाः चूड़ामणिः ॥ दक्षिणोवार्त्तिकश्चित्रोभुवचित्रतरस्तथा । अथचित्रतरश्चेतिषण्मार्गाः शास्त्रसंमताः ॥ ध्रुवादिककलाष्टौचमार्गेदक्षिणसंज्ञके । ध्रुवकासर्पिणीचैवपताकापतितास्तथा ॥ चतस्रोवार्तिकेज्ञेयाश्चित्रेथपुनरुच्यते । ध्रुवकापतिताचेतियोजनीयाविशेषतः ध्रुवेकलैकाविज्ञेयाशार्ङ्गदेवेनकीर्तिता । अथचित्रतरेमार्गे कलाचद्रुतसंमिता । मार्गेचित्रतमेज्ञेयाकलाकरजसंगिता ॥ अथजातयः ॥ चतुरस्रस्तथातिस्रःखण्डोमिश्रस्तथैवच । संकीर्णापंचविज्ञेयाजातयःक्रमशोबुधैः ॥ चतुर्वर्णैस्त्रिभिर्वर्णैःपंचवर्णैस्तथैवच । सप्तवर्णैश्चनवभिर्जातयःक्रमशोदिताः ॥ अथमूर्छनालक्षणं ॥ क्रमात्स्वराणांसप्तानामारोहश्चावरोहणं । मूर्च्छनेत्युच्यतेग्रामत्रयेताःसप्तसप्तच ॥ अथभागलक्षणं ॥ धातुप्रबंधावयवःसचोद्ग्राहादिभेदतः । चतुर्धाकथितोभागस्तदानुद्ग्राहसंज्ञकः ॥ आदावुद्ग्राह्यते

गीतंयेनोद्ग्राहस्ततोभवेत् । मेलापकोद्वितीयस्तुग्राहकध्रुवमेल नात् ॥ ध्रुवत्वाद्ध्रुवसंज्ञस्तुतृतीयोभागउच्यते । आभोगस्त्वांतिमो भागोगोतपूर्णत्वसूचकः ॥ अथगमकलक्षणं ॥ स्वरस्यकंपोगमकः श्रोतृचित्तसुखावहः । भेदाःपंचदशैवास्यकथितास्तिरियादयः ५ ॥ बहुबर्णबिबिधआलापकालि । मुखचालिचारुअरुश ब्दचालि ॥ बहुउडुपतिर्यगपतिपतिअड़ाल ॥ अरुलागधा उरायरंगाल ६ उलथाटेंकीआलमसदिण्ड ॥ पदपलटिहु रुमयीनिशंकाचिण्ड ॥ असुतिनकिभ्रमनिदेखिमतीधी र । अभिसीखतहैंबहुधासमीर ७ मोटनकछन्द ॥ नाचैं रसवेषअशेषतबै । बरषैंसुरसैंबहुभांतिसबै ॥ नवहूंरस मिश्रितभावरचैं । कोनोंनहिंहस्तकभेदबचैं ८ दोहा ॥ पाइंपखाउजतालसों प्रतिधुनिसुनियतगीत ॥ मानहुं चित्रबिचित्रमतिपढ़तसकलसंगीत ९ अमलकमलकर अंगुलीसकलगुणनिकीमूरि ॥ लागतमूठमृदंगमुखशब्द रहतभरिपूरि १० ॥

प्रथम गानको विषय निरूपणकरि अब द्वैछन्दमों नृत्यको बि- षय निरूपण करतहैं द्वैछन्दको अन्वय एकहै आलापकालि कहे आलापकाली अर्थ आलाप काल के योग्य बहुवर्ण कहे अनेक रंगकी अर्थ अनेकतरहकी औ विविध कहे अनेक जे चारु कहे सुं- दर मुखचालि नृत्यहैं औ शब्दचालि औ बहुतप्रकारके जे उड़ुप हैं औ तिर्यगपतिकहे पक्षिशार्दूल नृत्य औ पति औ अड़ाल औ उलथा औटेंकी औ आलम नृत्य सदिंडकहे दिंड नृत्यसहित औ पदपलटी औ हुरुमयी औ निशंक औ चिंडये जे नृत्यहैं औ कहूं उड़ुपति रियपति बट अड़ाल पाठहै तौतिरिय औ बट येऊ नृत्य के भेदजानौ तिनमें तिनस्त्रिनकी असुकहे शीघ्र भ्रमनिकहे घूम- नि देखिकै मतीधीरकहे धीरमतिसों अर्थ मतिमों धीर्य्यधरिकै

एकाग्रचित्तह्वैकै इति भ्रमिकहे वघरुराके व्याज घूमि२ कै समीर जे वायु हैं ते सीखत हैं अथवा तिनकी भ्रमनि देखिकै अपनी शीघ्रताके गरूर करिकै मतिहै धीर जिनकी ऐसे जे समीर हैं ते भ्रमिकहे संदेहको प्राप्तह्वैकै अर्थ अपनासों अधिक जानि आतुर ह्वैकै शीघ्रता सीखत हैं नृत्यानांलक्षणमुक्तंसंगीतदर्पणे अथमुखचालिः ॥ नृत्यादौप्रथमंनृत्यंमुखचालिरितिस्मृता १ अथशब्दचालिः ॥ प्राग्वत्कृत्वास्थानहस्तौमध्यसंचेननर्त्तकः । यत्रस्थित्वैकपादेनशब्दवर्णानुगामिनीं । गतिंनयेद्द्वितीयेनदक्षिणात्ध्वनिशोभनाम् । तद्वत्पादांतरेणाथक्रमेणैतद्द्वयोर्यदा । पर्यायेणगतिंकुर्याद्वार्त्तिकादिषुपञ्चसु । मार्गेष्वसौशब्दचालिःपण्डितैश्चनिरूपिता२ अथोडुपानि॥ नेरिःकरणनेरिश्चमित्रंचित्रंतथाभवेत् ॥ नत्रंचज्ञारमानंचमुरुरिंडमुरुंतथा । हुल्लंचल्लावणीज्ञेयाकर्त्तरीतुल्लकंतथा । प्रसरंचद्वादशस्युरुडुपानियथाक्रमात् ३ अथपक्षिशार्दूलनृत्यलक्षणम् ॥ यदिमंडीमाधिष्ठायप्रसृतौभ्रमतःकरौ । तदातंनरशार्दूलाःपक्षिशार्दूलमूचिरे ४ अथपतिनृत्यलक्षणम् ॥ कूटाक्षराभ्यांकान्यांचिन्निमिषात्यन्तकोमलाः । एकरूपाक्षरःचञ्चत्पुटताल्लानुगापदा । वाद्यतेयोवाद्यखण्डोविरामैर्भूरिभिर्मुहुः । योनिर्मितोवाद्यपाठैर्वाद्यभेदापतिःस्मृतः५ अथाडालक्षणम्॥ सुलूंवध्वातदोत्प्लुत्यचरणैःपक्षिपक्षवत् । भ्रमित्वानियतेभूमौतदडालमितीरितम् ६ अथलागनृत्यलक्षणम् ॥ लागशब्देनकर्णाटभाषयाउत्प्लुतिरिति ७ अथधाउनृत्यलक्षणम् ॥ आकाशचार्योद्वित्राश्चेत्ततश्चतिरियम्भवेत् । अन्तेमुरुतदोदिष्टंधाउनृत्यंनटोत्तमैः ८ अथरापरंगालनृत्यलक्षणम् ॥ शूलंवध्वैकपादेनसहैवानुपतेद्यदि । द्वितीयोऽपितदारापरंगालंतद्विदोविदुः ९ अथउलथानृत्यलक्षणम्॥ उत्प्लुत्याद्यैर्यदानृत्येत्करणैस्तालसन्मितैः।तदोत्प्लुत्याद्यकरणंनृत्यंनृत्यविदोविदुः ॥ अथवाउलथानृत्यकोलक्षणनामार्थहीहै १० अथटेंकीनृत्यलक्षणम ॥ पादौसमौयदान्यस्मिन्पार्श्वेचापरपार्श्वता । उत्प्लुत्योत्पादयेच्चित्रंतदाटेंकीतिकथ्यते ११ अथालमनृत्य

लक्षणम् ॥ भूमावेकंसमास्थायद्वितीयंपूर्ववद्यदा ॥ पातयेच्चरणं चारुतंवीशंचतुराविदुः ॥ याहीकोनामान्तरभ्रमलहै १२ अथदिंड नृत्यलक्षणम् ॥ उत्प्लुत्यचरणद्वन्द्वमस्वस्त्रानिष्पीडनोपमम् । परिभ्राम्यावनीयातियदितद्दिंडमुच्यते १३ अथपदपलटीनृत्यलक्षणम् ॥ पुरःप्रसार्य्यचरणंलंघयेदपरांघ्रिणा । सुलूपूर्वंतदान्वर्थाप्रोक्तालंघितजंघिका ॥ याहीकोअन्वर्थपदपलटीहै १४ अथहुरुमयी नृत्यलक्षणम् ॥ अलातांपरिवृत्यांगंपादपृष्ठंगतंयदा । अलातांघ्रौपृष्ठगतेशीघ्रमन्यांघ्रिलंघयेत् । लंघयेत्दक्षिणौन्येनप्रोक्ताहुरुमयीनटैः १५ अथनिशंकनृत्यलक्षणम् ॥ सुलूपूर्वंपदोत्प्लुत्यमिलितौचरणौसमौ । दूरम्भूमौनिपतितःसनिशंकःप्रकीर्त्तितः १६ अथचिंडनृत्यलक्षणम् ॥ विडचिंडुःकालचारद्वितिर्चिंडुर्द्विधाभवेत् । यदुपिल्लमुरूयत्रनिवद्धोविडचिंडुकः ॥ तत्तज्जात्यनुकारेणकालचारीतिकीर्त्तितः । तालतानसुलूतुंग घर्घरीध्वनिपेशलम् ॥ वादतेतुडतेकेचिद् गीतेनयतिपूर्वकम् । तत्तज्जातियुतंनृत्यंनानागतिविचित्रितम् ॥ चारुपाटानुचंचत्रकिंकिणीध्वनिपेशलम् । कालासैरपिलास्यांगैरंकजैरंतरांतरा ॥ धृतहस्तत्रिशूलादि यत्रनित्यंसमाचरेत् । तदाधीरैःसमाख्यातंचिंडनृत्यंमनोहरम् ॥ १७ ॥ ६ । ७ रसवेष कहे रस स्वरूप अर्थ श्रृंगारादि जे नवरस हैं तिनमें जारसको प्रबंधगावती तारसके रूप आप ह्वैजाती हैं औ बहुत प्रकारसों रस स्वादको वर्षती हैं भावकहे चेष्टाहस्तक हस्तक्रिया रंगमहलमें तिनके पाँवकी औ पखावजकी तालसहित प्रतिधुनि जोभाई शब्दहै ताहूको गीतसुनियत है सो मानोंविचित्र मति जे स्त्री पुरुषनके चित्रहैं ते ताहीविधि पाँवकी औ पखावजकी तालदैकै ताहीविधि गीतकोगाइ सबसंगीतको पढ़तहैं ८।९।१०॥

घनाक्षरी ॥ अपघनघायनबिलोकियतघायलनिघने सुखकेशवदासप्रकटप्रमानहै । मोहैमनभूलैतन नयन रुदनहोतसूखै शोचपोचदुखमारण बिधानहै । आगम

आगमतंत्रशोधिसबयंत्रमंत्र निगमनिवारिबेको केवल अयानहै । बालनकोतनत्राणअमितप्रमाणसब रीझि रामदेवकामदेवकेसोबानहै ११ ॥

रीझि रामदेव कहतहैं इतिशेषः कहा कहतहैं कि कामदेव के बाणनकोत्राणहै बरुतर बालकनकोतनहै अर्थजबलौं जीव बालकन के तनरूपी त्राणमेंरह्यो तबलौं कामबाण नहीं लागत औ गानजो है ताको त्राण बालकनहूं को तनही है अर्थ बालकनहूं को व्यापहोतहै इतनोई भेदहै और अमित कहे अनंत सब बात प्रमाण कहे तुल्यहै तासों गान कामदेवको ऐसो बाणहै कैसोहै कामदेवको बाण औगान जाकेवायु अपघन जो शरीरहै तामें नहीं बिलोकियत औघायलनकेघनोसुखहोतहै औमनमोहकीमूर्च्छाको प्राप्तहोतहै औ तनकी सुधि भूलिजातिहै औनयननमें रोदनहोतहै औ पोचकहे नागा जोराज्यादि वस्तुको शोचहै सोसूखिजातहै औ मारणहीहै बिधान जाको ऐसोदुःखहोतहै अथवा दुःखको मारण कहे नाशकर्त्ता है बिधानजाको औ अगमकहे अनंत आगम जे धर्मशास्त्र हैं औ अगम जे तंत्रशास्त्र हैं तिनके जे शोधिकहे ढूंढ़िकै अथवा शुद्धकरिकै यंत्र औ मंत्र हैं औ निगम जे वेद हैं ताके जे यंत्र मंत्रहैं ते सबताके निवारण करिबेको केवलअयान अज्ञानहै केवलपदकोअर्थ यहकिया कि निवारणकीबिधिवेजानतनहीं११॥

दोहा ॥ कोटिभांतिसंगीतसुनिकेशवश्रीरघुनाथ ॥ सीताजूकेघरगयेगहेप्रीतिकोहाथ १२ सुन्दरीछन्द ॥ सुन्दरिमन्दिरमेंमनमोहति । स्वर्णसिंहासनऊपरसोहति ॥ पंकजकेकरहाटकमानहु । हैकमलाविमलायहजानहु १३ फूलनकोसुबितानतन्योवर। कञ्चनकोपलिकायकलातर ॥ ज्योतिजरायजरेउअतिशोभनु। सूरजमण्डलते निकस्योजनु१४॥

जैसे सखीको हाथगहि स्त्री के पाससबजातहै तैसे प्रीतिरूपी जो सखीहै ताको हाथगहे रामचन्द्र सीताके घरगये १२।१३।१४॥

कुसुमविचित्राछन्द ॥ दर्शतहीनैननिरुचिबनै । बसनन्निछायेसबसुखसनै ॥ अतिरुचिसोहैकबहुंनसुन्यो । मानोंतनुलैशशिकरचुन्यो १५ चम्पकदलद्युतिकेगेडुये । मनहुँरूपकेरूपकउये ॥ कुसुमगुलाबनकीगलसुई । बरणीजायननयननछुई १६ दोहा ॥ रामचन्द्ररसपीयतर तापरपौढ़ेजाइ ॥ पदपंकजपखराइकैकहिकेशवसुखपाइ॥ १७ तोमरछन्द ॥ जिनकेनरूपनरेख। तेपौढ़ियोंनरबेख ॥ निशिनाशियोत्यहिबार । बहुबन्दिबोलतद्वार १८ ॥

शुचिकहेश्वेतमानोंशशिको चन्द्रमाको तनुकहे त्वचालैचुन्यो कहे बनायो है अथवा मानों शशि जो चंद्रमाहै तेहितनु कहे सूक्ष्म जे कहे किरणिहैं तिनको लैकै ता वसनको बनायोहै १५ गेडुआ तकिया चंपकदल द्युति के गेडुआ धरिबेको हेतु यह कि सीताजू पद्मसुखीहैं तासों मुखको पद्मजानि सोवतमें गेडुआनको देखि चंपकदल के भयसों भ्रमर मुखमें दंशनाकरैं चंपकदलके निकट भ्रमर नहींजात यह प्रसिद्धहै रूपककहे प्रतिमा कुसुमकहे फूल जे गुलाबनकेहैं तिनकी गलसुई गेडुआ भेदहै ते बचनकरि बर्णी नहीं जातीं औ नयननकरिछुई नहींजातीं अर्थ अतिसुन्दरी हैं १६।१७।१८॥

दोहा ॥ राजलोकजाग्योसबै बन्दीजनकेशोर ॥ गये जगावनरामपैसारिकादिउठिभोर १९ सारिका-हरिप्रिया छन्द ॥ जागियेत्रिलोकदेवदेवदेवरामदेवभोरभयोभूमिदेवभक्तदर्शपावै। ब्रह्मासनमंत्रवर्णविष्णुहृदयचातकघन रुद्रहृदयकमलमित्र जगतगीतगावै ॥ गगनउदितर-

विअनंतशुक्रादिकज्योतिवंत क्षणक्षणछबिक्षीणहोतलो नपीनतारे। मानहुंपरदेशदेशब्रह्मदोषकेप्रवेशठौरठौरते बिलातजातभूपभारे २० ॥

राजलोक कहे राजलोकके सबजन जागे १६ पांचछन्दको अन्वयएकहै भूमिदेव अर्थ हेभूपाति ब्रह्माको मनरूपी जोमंत्र है ताके तुम वर्ण कहे अंकहौ जैसे अंकनमें मंत्रबस्यो रहत है तैसे ब्रह्माको मन तुममें सदा बसो रहत है औ बिष्णुको जो हृदयरूपी चातक यहहैताके घनकहे सजलमेघहौ जैसे घनचातक की तृषा बुझावतहै तैसे तुमविष्णुके हृदयकी तृषा बुझावतहौ औ रुद्रको हृदयरूपी जो कमलहै ताके मित्र सूर्यहैं जैसे कमलको सूर्य प्रफुल्लित करतहैं तैसे तुम रुद्रहृदयको प्रफुल्लित करतहौ या प्रकारसों तुम्हारो गीत जगत् गान करत है गगनमें रवि उदित भये तासों अनन्तकहे अनेक जे शुक्रादिक ज्योतिवंतन के पीनकहे बड़ेतारे नक्षत्र हैं ते क्षणक्षणमें छबि क्षीणह्वै गगन में लीन होतजात हैं अर्थ बिलातजात हैं मानों ब्रह्मदोषके प्रवेशसों जे भूप भयमानि परदेशगयेहैं तेऊ औ जे आपने देशमें हैं तेऊ बिलात जात हैं तैसे जे नक्षत्र स्थानमांहैं ध्रुवादि औ स्थानसों चलितहैं ते सब बिलातजात हैं इत्यर्थः २० ॥

अमलकमलतजिअमोलमधुपलोलटोलटोलबैठत उड़िकरिकपोलदानमानकारी। मानहुंमुनिज्ञानबद्धछोड़ि छोड़िगृहसम्बद्धसेवत गिरिगणप्रसिद्ध सिद्धिसिद्धिधारी। तरणिकिरणिउदितभई दीपज्योतिमलिनगई सदयहृदय बोधउदयज्योंकुबुद्धिनासै । चक्रवाकनिकटगई चकई मनमुदितभई जैसेनिजज्योतिपाइजीवज्योतिभासै २१ अरुणतरणिकेबिलास एकदोइउड़अकासकलिकैसेसंत ईशदिशनअंतराखै । दीखतआनंदकंदनिशिबिनद्युति

हीनचंदज्योंप्रबीनयुवतिहीनपुरुषदीनभाखै॥ निशिचर
चपकेबिलासहासहोतहैनिरासशूरकेप्रकास त्रासनाशत
तमभारे । फूलतशुभसकलगात अशुभशैलसेबिलात
आवतज्योंसुखदरामनाममुखतिहारे २२ सारोशुकशुभ
मराल केकीकोकिलरसाल बोलतकलपारावत भूरिभेद
गुनिये । मनहुंमदन पंडितऋषिशिष्यगुणन मंडितकरि
अपनीगुदरैनिदेनपठयेप्रभसुनिये॥ सोदरसुतमंत्रिमित्र
दिशिदिशिकेनृपविचित्र पंडितमुनिकवि प्रसिद्धसिद्धद्वा
रठाढ़े । रामचन्द्रचंद्रओर मानहुँचितवतचकोरकुबल
यजलजलधिजोरचोपचित्तबाढ़े २३ नचतरचतरुचि
रएकयाचकगुणगणअनेकचारणमागधअगाध बिरदब
न्दिटेरे । मानहुँमंडूकमोरचातकचपकरतशोर ताड़ितब
सनसंयुतघनश्यामहेततेरे॥ केशवसुनिबचनचारु जागे
दशरथकुमारुरूपप्याइज्याइलीनजन जलथलओकके।
बोलिहँसिबिलोकिवीर दानमानहरीपीर पूरेअभिलाष
लाखभांतिलोकलोकके २४ ॥

टोलटोल कहे झुंडझुंड कैसेहैं करिदान जोमदहै ताकेकर्त्ता औ श्लेषसोंदाता औमानकहे आदरकर्त्ता भ्रमरजात हैं तिन्हें शिरपर बैठावतहैं दाताहै आदरकरै ताके समीप सबप्रसन्न है जातहैं इतिभावार्थः ॥ समृद्धकहे संपत्तियुक्त कैसेहैं मुनिगण सिद्ध कहे आपनेवश्य जो सिद्धिकहे तपसिद्धि अथवा अष्टसिद्धिहैं तिन्हें धरेहैं अथवा गिरिगणनहीं को विशेषण है सिद्धिजोसिद्धि तपसिद्धिहै तिनकोधरे हैं अर्थ जिनपर्वतनमों जातहीबिन तप कियेही तपसिद्धिप्राप्त होतिहै मलिनगईकहे मलिनताको प्राप्तभई बोधकहे ज्ञानसमतरणि जेसूर्यहैं तिनकी किरणेंहैं कुबुद्धिसम दीप

ज्योति है हृदयसम भूमण्डलजानो निजज्योति अर्थ ब्रह्मज्योति उडुनक्षत्र आनन्दकन्द चन्द्रको बिशेषणहै सूर्यकेप्रकाशके त्राससों निशिचरकहे चोर परस्त्रीगामी कुलटादिके जेविलास औहासहैं ते निराशकहे नाशहोतहैं औ भार जेतमअंधकारहैं ते नाशतहैं औ शुभकहे तपस्वी आदिप्राणी पूजादिकर्म तिनके सकलगात फूलतकहे प्रफुल्लितहोतहैं हेराम जैसे तिहारेनामको मुखमें लेत शुभजे मंगलादि हैं तिनके गातप्रफुल्लित होतहैं औशैल कहे पर्वत सम अशुभ अमंगल बिलातहैं मदनरूपी जोपंडित ऋषि कहे पण्डित श्रेष्ठहैं गुदरैनि परीक्षा रामचन्द्ररूपी जेचन्द्रतुमहौ तिनकी ओर दर्शनके चोप चित्तनमें जोर कहे अति बाढ़हैं जिनके ऐसेचकोर औकुवलयकोई औ जलधिके जलहैं मानों या प्रकारसों दरादिद्वारपरठाढ़े चितवतहैं एकेअर्थ नृत्यकारी नचतहैं औ और जेअनेक याचकहैं ते अपने गुणगणरचतहैं छंदउपजाति है २१।२२।२३।२४॥

दोहा॥ जागतश्रीरघुनाथकेबाजेएकहिंबार॥ निगर नगारेनगरकेकेशवआठहुद्वार २५ मरहट्टाछन्द॥ दिन दुष्टनिकन्दनश्रीरघुनन्दनआँगनआयेजानि। आईनव नारीसुभगशृंगारीकंचनभारीपानि॥ दात्योनिकरतहैंम ननगहतहैंऔरिबोरिघनसार। सजिसजिबिधिमूकानि प्रतिगंडूषनिडारतगहतअपार २६ दोहा॥ सन्ध्याकरि रविपांयपरिबाहरआयेराम॥ गणकचिकित्सकआशिषा बंधुनकियेप्रणाम २७ मरहट्टाछन्द॥ सुनिशत्रुमित्रकी नृपचरित्रकीरथ्यतिरावतबात। सुनियाचकजनकेपशुप क्षिनकेगुणगणअतिअवदात॥ शुभतनमज्जनकरिस्ना नदानकरिपूजेपूरणदेव। मिलिमित्रसहोदरबन्धुशुभोदर कीन्हेभोजनभेव २८॥

निगर कहे मौन बिधिको सजिकै प्रतिगंडूषनि कहे प्रतिकुल्लन को डारतहैं औ गहतहैं असारअनेक अथवा प्रतिगंडूषनि कहे कुल्लाकुल्ला प्रतिअर्थ हरि कुल्लामूकानि कहे कुल्लाके त्यागन की विधिको सजिकैडारतहैं त्यागतहैं फेरि औरगहतहैं २५।२६ गणक ज्योतिषी चिकित्सक वैद्य २७ भज्जनकहे उबटनादि सहोदर भरतादि बन्धुजातिजनबिरादरी इति शुभोदरकहे नीकीविधि उदरपूर्त्ति करिकै अथवा शुभोदर बड़े भोजनकर्त्ता २८ ॥

दण्डक॥ निपटनवीनरोगहीनबहुक्षीरलीनपीनअच्छ पीनतनतापनहरतहैं। तांबेमढ़ीपीठिलागेरूपकेखुरनडी ठिडीठिस्वर्णश्रृंगमनआनँदभरतहैं॥ कांसेकीदोहनीइथा सपाटकीललितनोइघटनसोंपूजिपूजिपाँयनिपरतहैं। शोभनसनैौढिथनरामचन्द्रदिनप्रति गोशतसहस्रदैकैभोजनकरतहैं २९ तोटकछन्द ॥ तहँभोजनश्रीरघुनाथकरैं। षटरीतिमिठाइनचित्तहरैं ॥ पुनिखीरसोंचौबिधिभातबन्यो। तकितीनिप्रकारनिशोभसन्यो ३० षटभांतिपहीति बनाइसची। पुनिपाँचसोब्यंजनरीतिरची ॥ बिधिपांच सोरोटिनमांगतहैं। बिधिपांचबराअनुरागतहैं ३१ ॥

२९ चौविधिको अन्वय दूनोंओरहै अर्थ चारि विधिकी खीर बनीहै औ चारिविधिको भातबन्यो है ३० सचीकहे संचित करचो अर्थ एकत्र करचो ३१ ॥

बिधिपांचअथानबनाइकियो। पुनिद्वैबिधिक्षीरसोमांगिलियो ॥ पुनिक्षारिसोद्वैविधिस्वादघने। बिधिदोइपक्ष्यावरिसातपने ३२ दोहा ॥ पांचभांतिज्योनारसबषट रसरुचिरप्रकास॥ भोजनकरिरघुनाथजूबोलेकेशवदास ३३ हरिलीलाछन्द॥ बैठेबिशुद्धगृहअग्रजअग्रजाइ। दे

खीवसन्तऋतुसुन्दरमोददाइ ॥ बौरेरसालकुलकोयलके लिकाल । मानोंअनंगध्वजराजतश्रीबिशाल ३४ ॥

अथान अचार झारि आम्र के चूर्ण में जीरजकादि डारि जल में घोरि बनतिहै पश्चिममों प्रसिद्ध है पछ्यावरि शिखरनि को भेदहै कहूं मूगनि कहतह या सबप्रकार भोजनके मिलाइ छप्पन होतहैं ३२ शर्करादि मधुर १ आम्रादि अम्ल २ करैला आदि तिक्त ३ मरिचादि कटु ४ लवणादि लवण ५ हर्रादि कषाय ६ ये जे षट् छःरस हैं तिनकी है रुचिर प्रकाशजामें ऐसी जो चोष्य आम्रादि १ पेय दुग्धादि २ भोज्य भक्तादि ३ लेह्य अवलेहादि ४ चर्व्य पिस्ता बदामादि ५ पांचभांतिकी जेवनारहै ताको भोजन करिकै रामचन्द्र बाले भोजनसमयमों बोल्यो न चाहिये यहधर्म शास्त्रोक्त है ३३ रामचन्द्रजू भोजन करिकै गृहअग्रजकहे गृहमें अग्रजश्रेष्ठ जो गृहघरहै ताके अग्रभागमों बसन्त बहारदेखिबेको जाइकै बैठनभये कोमलकहे सुगन्धयुक्त रसाल आम्रवृक्षबौरे हैं सो मानोंयह कलिकोकाल कहे समयहै या प्रसिद्ध करिबेके लिये मानोंअनंग जो कामहै ताके बिशाल ध्वजाराजतहैं जा कछूवस्तु प्रसिद्ध करिबो होतहै तालिये सबध्वजा बांधतहैं प्रसिद्धहै ३४ ॥

फूलीलवंगलवलीलतिकाबिलोल । भूलेजहांभ्रमर विभ्रममत्तडोल ॥ बोलैंसुहंसशुककोकिलकेकिराज । मानोंवसन्तभटबोलतयुद्धकाज ३५ सोहैपरागचहुंभागउडैसुगन्ध । जातेबिदेशबिरहीजनहोतअन्ध ॥ पालाशमालबिनपत्रबिराजमान । मानोंवसन्तादियकामहिंअग्निबान ३६ सवैया ॥ फूलेपलाशबिलासथलीबहुकेशवदासप्रकाशनथोरे । शेषअशेषमुखानलकीजनुज्वालबिशालचलीदिविओरे ॥ किंशुकश्रीशुकतुंडनकीरुचिराचेरसातलमेंचितचोरे । चोंचनचापिचहूंदिशिडोलतचारु

चकोरअंगारनभोरे ३७ मौक्तिकदामछन्द ॥ जरैंबिरही जनजीवतगात। उघरेउरशीतलसेजलजात ॥ किधौंमन मीननकोरघुनाथ । पसारिदियोजनुमन्मथहाथ ३८ ॥

लवली हरफारयोरी पुष्परस पानसों मत्त जे भ्रमरहैं ते बि-भ्रममें भूले डोलकहे डोलत हैं ३५ । ३६ बिलास स्थलिन में वहुत पलाश फूले हैं रसातल भूतल दिवि आकाश किंशुककहे पलाश अर्थ पलाश पुष्प ३७ सीताजूकी उक्ति रामचन्द्र प्रतिहै उघरे हैं उरकहे हृदय अर्थ सिफाकन्द जिनके ऐसे जे शीतलसे कहे शीतल जलजात कमल हैं तिनको देखत बिरहीजननके गातजरतहैं सो हेरघुनाथ मनमीननके गहिबेकेअर्थ मानों मन्मथ काम हाथपसारिदियो है अर्थ जाकोमन कमलनमें जातहै ताको गहि राखतहै मन्मथ हाथ समकहि कमलनकी अति सुन्दरता जनायो छन्द उपजाति है ३८ ॥

जितेनरनागरलोगबिचारि । सबैधरनैरघुनाथनिहारि ॥ किधौंपरमानंदकोयहमूल । बिलोकतहीसोहरैसबशूल ३९ किधौंबनजीवनकोमधुमास । रचैजगलोचनभौंरबिलास ॥ किधौं मधुकोसुखदेतअनंग । धरेउमनमीननिकारणअंग ४० किधौंरतिकीरतिबेलिनिकुंज । बसैगुणपक्षिनकोजहँपुंज ॥ किधौंसरसीरुहऊपरहंस । किधौंउदयाचलऊपरहंस ४१ दोहा ॥ प्राचीदिशिताहीसमय प्रकटभयोनिशिनाथ ॥ वर्णतताहिविलोकिकै सीतासीतानाथ ४२ ॥

नागरलोग कहे नगर श्रेष्ठ जो नरहैं ते रामचन्द्रको बैठे देखि परस्पर वर्णत हैं मूलके भक्षणसों शूल दूरिहोतहै औ रामरूपी जो आनन्द मूलहै ताके देखतही शूलदूरि होतहै ३९ की बनरूपी

जे जीव प्राणीहैं तिनको मधुमास चैत्रमास है जैसे चैत्र बनको फुलावनको फुलावत है तैसे रामचन्द्र जगत्के प्राणिनको प्रफुल्लित करत हैं औ मधुमासमें भ्रमर अनुरागत हैं इहां जगके लोचन भ्रमरके बिलाससों रचेकहे अनुरागे हैं औ कि रामचन्द्र नहीं हैं अनंग कामहैं बनमें बिराजमान जो मधुबसंत ताको दरशदैकै सुखदेत है कैसोहै अनंग सबके मनरूपी जे मीन मत्स्य हैं तिनके कारणकहे गहिबेके अर्थ अंगनको धारण करचो है देखतही रामचन्द्र सबके मनको गहिराखत हैं तासों जानों ४० रति प्रीति औ कीर्ति यशरूपी जो वेलिहै तिनको निकुंज है कुञ्जमें पक्षी वसतहैं रामचन्द्रमें गुणरूपी जे पक्षी हैं तिनके पुञ्जसमूह वसतहैं ॥ निकुंजकुंजोवाक्लीवेल्लतादिपिहितोदरे इत्यमरः ॥ सरसीरुह औ उदयाचल समगृह है हंसपक्षी औ हंस सूर्य्यसम रामचन्द्र हैं ४१ प्राचीपूर्ब ४२ ॥

हरिणीछन्द ॥ फूलनकीशुभगेंदनई । सूंघिशचीजनु डारिदई ॥ दर्पणसोंशशिश्रीरतिको । आसनकाममहीपतिको ४३ मोतिनकोश्रुतिभूषणभनो । भूलिगईरविकीतियमनो ॥ अंगदकोपितुसोसुनिये । सोहततारहिंसंगलिये ॥ भूपमनोभवछत्रधरेउ । लोकबियोगिनकोबिडरेउ ४४ देवनदीजलरामकह्यो । मानहुफूलिसरोजरह्यो ॥ फेनकिधौंनभसिन्धुलसै । देवनदीजलहंसबसै ४५ दोहा ॥ चारुचन्द्रिकासिन्धुमें शीतलस्वच्छसतेज ॥ मनोशेषमयशोभिजैहरिणाधिष्ठितसेज ४६ ॥

शशि जो चन्द्र है सो श्रीरति जो कामकी स्त्रीहै ताको दर्पण सों है ४३ तारा नक्षत्र औ बालिकी स्त्री मनोभव काम बियोगी स्त्री पति परस्पर बियोगी औ विरोधी छंद उपजातिहै ४४ या प्रकार सीताको वर्णन सुनिकै रामचन्द्र कह्यो नभसिंधु आकाश

गंगा ४५ हरिणाधिष्ठितहै तासों चारु चंद्रिकारूपी जो सिन्धुकहे क्षीरसिन्धुहै तामें शीतल औ स्वच्छमलरहित सतेजकहे कान्तियुक्त मानों शेषमय कहे शेषस्वरूप सेजहै शेषमयसेज हरिविष्णु करसन्ते अधिष्ठित युक्तहै हरिणा तृतीयान्त पदहै चन्द्रमा हरीण करिकै अधिष्ठित है मृग अंकमें प्रसिद्ध है ४६ ॥

दण्डक ॥ केशौदासहैउदासकमलाकरसों करशोषकप्रदोषतापतमोगुणतारिये । अमृतअशेषकेविशेषभाववर्षत कोकनदमोदचण्डखण्डनबिचारिये ॥ परमपुरुषपदविमुखपरुषरुख सुमुखसुखदबिदुषनउरधारिये । हरिहैरीहियमेंनहरिणहरिणनैनी चन्द्रमानचन्द्रमुखीनारदनिहारिये ४७ ॥

सीतासों रामचन्द्र कहतहैं कि हे हरिणनयनी यह चन्द्रमा नहीं है नारद हैं औ याके हियमें यह हरिण नहीं है हरि विष्णुहैं सो अश्लेषसों कहतहैं कैसाहै चन्द्रमा कमलनको जो आकर समूह है तासों उदासहै कर किरण जाके चन्द्र किरण स्पर्शसों कमल संकुचित होतहै औ प्रदोष जो रजनीमुख है औ ताप जो उष्णहै औ तमोगुण जो अन्धकार है तिनको शोषक दूरि करणहार है यहतारिये कहे जानियतहै पूर्णिमाको चन्द्र जब उदित भयो तब रात्रिको प्रवेशहोत है रजनीमुख काल व्यतीतहोतहै तासों शोषककह्यो प्रदोषोरजनीमुखमित्यमरः औ अशेषकहे पूर्ण जो अमृत है ताके जे भावकहे विभूति हैं वृद्धिइति ताको विशेषसों बर्षतहै अमृतकी बडीबर्षा करतहै इत्यर्थः औ कोक जे चक्रवाक हैं तिनको जो नदशब्दहै ताको जो मोदहै अर्थ परस्पर स्त्री पुरुष संभाषणानन्द है ताको चण्ड कहे उग्रअर्थ नीकीविधि खण्डनकहे खण्डनकर्त्ता है अर्थ चक्रवाकनको बियोगीकरि परस्पर स्त्री पुरुष संभाषणानन्दको दूरि करतहै अथवा प्रथम कमलाकर

पदकह्यो है तहां श्वेतादि कमलजानौ इहां कोकनदकहे अरुण कमलको जोमोदहै ताको चगडखगडनहै रक्तोत्पलं कोकनदमित्यमरः औ परम पुरुष जो पतिहै ताके पदसों जे स्त्री बिमुखहैं अर्थ मानकिये हैं तिन्हैं परुषरुखकहे कठोर रुखहै अर्थ तापकर्त्ता है औ जे लोगनपति सों सुमुखहैं तिनको सुखदहै औ बिदुष जे प्रवीणलोगहैं तिन करिकै उरमें धारियतहै प्रवीणकेसदा चन्द्रोदयकी इच्छारहति है चौरादिक चंद्रोदय नहीं चाहत इति भावार्थः नारद कैसे हैं कि कमला जो लक्ष्मी है अर्थ द्रव्यताके आकर समूहसों उदासहै करहाथ जाको अर्थ बहुतहू द्रव्य कोऊ देइ ताको ग्रहण नहींकरत अल्पकी का कथाहै इतिभावार्थः औ प्रकर्ष जे दोष हैं गोबधादि औ ताप जे दैहिक दैविक भौतिक त्रैताप हैं औ तमोगुणके शोषकदूरिकर्त्ता हैं तमोगुणके शोषकहिया जनायो कि सदा सत्त्वगुण युक्त रहतहैं औ अमृतकहे नाहीं है मृत्यु जिनकी अशेषकहे पूर्ण ऐसे जे विष्णुहैं तिनके जे भाव कहे अनेक लीला हैं तिनको विशेषसों बर्षतहैं अर्थ भगवान्की अनेकलीला विशेषसों गान करत हैं अथवा भावकहे अभिप्राय ताको वर्षत हैं कहत हैं अर्थ भूत भविष्य वर्त्तमान तीनों कालमें जो ईश्वरके अभिप्रायके कृत्य हैं ताहि जानतहैं सो सबसों कहत हैं त्रिकालज्ञहैं इत्यर्थः भावोभिप्रायवस्तुनोः स्वभावजन्मसत्तात्माक्रियालीलाविभूतिषु ॥ इत्यभिधानचिन्तामणिः औ कोक जो शास्त्र विशेष है ताको जो नद शब्द है बचनइति ताको जो मोद आनन्द है ताके खगडनकहे खगडनकर्त्ता हैं अर्थ कोकशास्त्रमों अनेक कामवार्त्ता हैं तिनको निंदत हैं औपरमपुरुष जे भगवान् हैं तिनके पदसों जे प्राणी विमुख हैं अर्थ विष्णुकी भक्तिनहीं करत तिन्हैं परुषरुख कठोर रुखहैं औ जे सुमुख हैं अर्थ विष्णु भक्तहैं तिन्हैं सुखद हैं औ विदुष जेपगिडतहैं तिनकरिकै जिनको उरमेंधारियतहै अथवा बिशेषसों दुख नहीं जिनकरिकै उरमें धारियत अर्थ सदाआनन्दयुक्तरहैं ४७ ॥

दोहा॥आईजानिबसंतऋतु बनहिंबिलोकतराम॥धरणिधसेसीतासहित रतिसमेतजनुकाम४८इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांबसंतदर्शनंनामत्रिंशत्प्रकाशः३०॥

बनको देखत बसन्त ऋतु आई जानिकै बनविहार करिबो मनमें निश्चयकरि सीता सहित गृह अग्रसों धरणि को धसे कहे उतरे ४८ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानि
प्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्ति
प्रकाशिकायांत्रिंशत्प्रकाशः ३० ॥

दोहा ॥इकतीसयेंप्रकाशमें रघुबरबागपयान॥ शुकमुखसियदासीनको वर्णनबिबिधबिधान १ ब्रह्मरूपकछन्द ॥ भोरहोतहीगयोसोराजलोकमध्यबाग । बाजिआनियोसुएकइंगितज्ञसानुराग ॥ शुभ्रशुद्धचारिहूनअंशुरेणुकेउदार । सीखिसीखिलेतहैं तेचित्तचंचलाप्रकार २ तोमरछन्द ॥ चढ़िबाजिऊपरराम। बनकोचलेतजिधाम ॥ चढ़िचित्तऊपरकाम ।जनुमित्रकोसुनिनाम ३ मगमेंबिलम्बनकीन ।बनराजमध्यप्रवीन ॥ सबभूपरूपदुराइ ।युवतीबिलोकीजाइ ४ ॥

१ बनविहारके अर्थ भोर होतही राजलोककहे रनिवास प्रथम बागके मध्य गयो फेरि इंगितज्ञ कहे सवारकी चेष्टा को जाननहार अर्थ जैसे सवारको मनदेखै ताहीबिधि ताड़न बिनही गमन कर्त्ता सानुरागकहे अपने अनुराग प्रेम सहित अर्थ जाके ऊपर आपनो बड़ो प्रेमहै ऐसो बाजि रामचन्द्र आनियो कहे मँगायो अथवा बन जाइबेके अनुराग सहित जे रामचन्द्र हैं तिन इंगितज्ञबाजिआ-

नियो अथवा इंगितको जाननहार जो कोऊ अनुचरहै सो राम-चन्द्र को बाजिपर चढ़िकै बागजायबेको इंगितजानिकै सानुराग कहे प्रेमसहित बाजि आनियो लायो कैसो है बाजि जाके शुभ्र कहे सुंदर औशुद्ध कहे निर्दोष चारिहू चरणमें इति शेषः रेणु जो धूरिहै ताके अंशुकहे कण चलतमें लगिगये हैं ते मानों उदार कहे चतुर चित्तहैं चरणन में लगिकै चञ्चला प्रकार कहे चञ्चलताको प्रकार सीखि सीखि लेतहैं जिनके चरणनमें चित्तहू सों अधिक चञ्चलता है इति भावार्थः २ बनमें आयो मित्र जो बसन्तहै ताकोनाम सुनिकै मानों चित्तपर चढ़िकै धाम छोड़ि काम बनको चल्यो है इत्यर्थः चित्त सम चञ्चल बाजि है काम सम सुंदर रामहैं ३ भूपरूप छत्र चामरादि को दुराइ छपे छपे युवतिन को बिलोक्यो जाइ ४ ॥

स्वागताछन्द ॥ रामसंगशुकएकप्रवीनो। सीयदासि गुणबर्णनकीनो ॥ केशपाशशुभश्यामसनेही । दासहोत प्रभुजीवविदेही ५ भाँतिभाँतिकवरीशुभदेखी । रूपभूप तरवारिविशेखी॥ पीयप्रेमप्रणराखनहारी । दीहदुष्टछल खंडनकारी ६ किधौंशृँगारसरितसुखकारि। बंचकतानि वहावनिहारि॥ कंचनपत्रपाँतिसोपान । मनोंशृँगारलो ककेजान ७॥

स्नेही स्नेहतैलयुक्त प्रभु रामचन्द्र को सम्बोधन है विदेही कहे ज्ञानी जे जनकादिसम देहधरेहैं अथवा जिनको देखि जीव उदास होतहैं औ विदेही होत हैं अर्थ देहकी सुधि भूलिजाति है ५ कवरीवेणी ॥ कवरीकेशविन्यासशाकयोरितिहेमचन्द्रः॥ अ-नेकदासीहैं तासोंभांतिभांतिपदकह्योकाहूदासीकीबेणी औरबिधि है काहूकी और विधि है कैसी है कवरी रूपकहे सौंदर्य्य रूपी जो भूप राजा है ताकी विशेष निश्चय तरवारिहै कैसीहै तरवारि

पीय जो स्वामी रूपहै ताके प्रेमकी राखनहारीहै अर्थ अति प्रेमसों सौंदर्य्य जिनको एकहु क्षण त्याग नहींकरत औसबके मनको वश्य करिबो यह जो रूप भूपको प्रणहै ताहूकी राखनहारी है सबके मनको वश्य करातिहै औ द्रोह दुष्ट सम जो छलहै ताकी खण्डनकारी है अर्थ जैसे तरवारि दुष्ट जे विरोधीहैं तिन्हैं खण्डन करि प्रजानको राजाके वश्यकरि प्रणराखतिहै तैसे छलको खण्डनकरि सबके मनको रूपके वश्यकरि प्रण राखतीहै ६ और नदी वृक्षादि बहावतिहै तैसे यहचञ्चलता छलताकी बहावनहारी है कंचनपत्र जेवेणीपानहैं तिनकी पांतिहै सो मानों शृंगारलोक के जान कहे जाइबेको सोपान कहे सीढ़ी है शृंगाररसके लोक सम केशपाश युक्त शीश हैं ७ ॥

शीशफूलअरुबेंदालसै । भागसोहागमनोंशिरबसै॥
पाटिनचमकचित्तचौंधिनी ।मानोंदमकतिघनदामिनी ८
सेंदुरमांगभरीअतिभली । तिनपरमोतिनकीअवली ॥
गंगगिरातनसोंतनजोरि । निकसीजनुयमुनाजलफोरि ९
शीशफूलशुभजरयोजराय । मांगफूलशोभैशुभभाय ॥
बेणीफूलनकीबरमाल । भालभलेबेंदायुतलाल ॥
तमनगरीपरतेजनिधान । बैठेमनोंबारहोभान १० भृकुटिकुटिलबहुभायनभरी । भाललालद्युतिदीसतिखरी॥
मृगमदतिलकरेखयुगबनी । तिनकीशोभाशोभातिघनी ॥ जनुयमुनाखेलतिशुभगाथ । परसनपितहिपसारयोहाथ ११ ॥

बेंदा भाल में रहत है सोभागकहे भाग्यसम है शीशफूल सोहागसम है इहां स्थान में बसिबेकी उत्प्रेक्षा है तासों क्रम हीन दूषणनहीं है ८ । ९ तमनगरीसम शीश के बार हैं बारहो भानुसम शीशफूलादि हैं इहां संख्याकरि उत्प्रेक्षा नहीं है बाहु-

त्यकी उत्प्रेक्षाहै १० यमुनासम भृकुटी हैं हाथसम कस्तूरी के तिलककी द्वैऊर्ध्वरेखा हैं पिता जे सूर्यहैं तिनके सम भाल लाल है भृकुटिनको बहुभायन भरी कह्यो है तासों यमुनाको खेलत कह्यो ११ ॥

पंकजबाटिकाछंद ॥ लोचनमनहुंमनोभवमन्त्रनि । भ्रूयुगउपरमनोहरमन्त्रनि ॥ सुन्दरसुखदसोअंजनअंजित । बाणमदनविषसोंजनुरंजित १२ चौपाई ॥ सुखद नासिकाजगमोहियो । मुक्ताफलनियुक्तसोहियो ॥ आनँदलतिकामनहुंसफूल । साधितजतशशिसकलकुशूल १३ पद्धटिकाछन्द ॥ जनुभालतिलकरविब्रतहिलीन । नृपरूपप्रकाशहिदीपदीन ॥ ताटंकजटितमणिश्रुतिवसंत । रविएकचक्ररथसेलसंत ॥ अतिभुलभुलीनसहझलकलीन । फहरातपताकाजनुनवीन १४ ॥

१२ मुक्ताफलनयुक्त अर्थ मुक्ताफलसहित नासिका भूषण युक्त फल सहित आनन्द लतिका कोकै मानों शशि जो चन्द्र हैं सो सब शूल जो दुःखहै ताको दूरिकरत हैं आनन्दलतिका सम नासिका भूषण हैं फूलसम मोतीहैं शशि सम मुखहै १३ भाल में तिलककहे टीका मणिजटित ऊर्ध्व पुंड्रहोत है सो जानों रूप कहे सौंदर्यरूपी जोनृपराज है सो रविके ब्रतमें लीनह्वैके रविके अर्थ आकाशको दीपदीन्ह्यो है जे प्रथम शीशफूलादि कह्योहै तेई रविहैं केशयुक्त शीश आकाश है औ मणिजटित ताटंककहे ढार श्रुतिमें श्रवणमें लसत हैं ते मानों रविके एकचक्रकहे एक पहिया के रथसे हैं रविको रथ एकही पहियाकोहै औ भुलभुली जे पात नामा कर्णभूषणहैं तिनकी झलक शोभा सहकहेसाथ अर्थ ताटंकनकेसाथ लीन है युक्तहै मानों ताही एकचक्र रथके पताका हैं अथवा रूप नृप जो है सो रबिको दीप दीन्हों है औ या प्रकारके

पताकासों युक्त एकचक्र रथहू दीन्हों समर्पणकरयोहै इत्यर्थः १४॥

अतितरुणअरुण द्विजद्युतिलसंति । निजदाड़िम बीजनकोहसंति ॥ संध्याहिउपासतभूमिदेव । जनुबाक देवकीकरतसेव ॥ शुभतिंनके सुखमुखकेबिलास । भयो उपवनमलयानिलानिवास १५ चौपाई ॥ मृदुमुसकानि लतामनहरैं । बोलतबोलफूलसेझरैं ॥ तिनकीबाणीसुनु मनहारि । बाणीबीणाधरेउउतारि १६ लटकैंअलिकअ लकचीकनी । सूक्षमअमलचिलकसोंसनी ॥ नकमोती दीपकद्युतिजानि । पाठीरजनीहीउनमानि १७ ॥

तरुण कहे नवीन द्विजदंत मानों भूमिदेव ब्राह्मणहैं ते मुख में वासकिये वाकदेव जा सरस्वतीहैं ताकी सेवा करतहैंते ब्रा- ह्मण संध्यासमयमों संध्याकी उपासना करतहैं इहां दांतनकी औ ब्राह्मणनकी द्विजशब्दसों साम्यहै संध्यासम दांतनकी अरु- णद्युतिहै दांतनपक्ष वाकदेव जिह्वाजानौ १५ ताही मुसकानि लताके फूलसेजानौ १६ द्वैछंदको अन्वय एकहै अलिकलिलार दशाबाती मनोंरबि सींक पसारिकै ज्योति बढ़ावतहै रविपदको सम्बन्ध याहूमोंहै कबिजे शुक्रहैं तिनके हितकहे बढ़ाइ लीबेके अर्थ इत्यर्थः शुक्रसम नाक मोतीहैं रबिसम शीशफूलहैं १७ ॥

ज्योतिबढ़ावतदशाउतारि । मानहुंश्यामलसींकपसा रि ॥ जनुकविहितरबिरथतेछोरि । श्यामपाटकीबांधीडोरि १८ रूपअनूपरुचिररसभीनि । पातुरनैननकीपुतरीनि ॥ नेहनचावतहितरतिनाथ । मरकतलकुटिलियेजनुहाथ १९ दोहा ॥ गगनचन्द्रते अतिबड़ो तियमुखचन्द्रबिचा रु ॥ दईबिरंचिविचारिचितकलाचौगुनीचारु २० ॥

१८ ताहीं अलकमें दूसरी उत्प्रेक्षा करतहैं पुतरिनको जो अनूपरूपहै ताप्रतिजो रुचिर रसकहे प्रेमहै तामें भीनिकहे भीजिकै अर्थ वश्य ह्वैकै पातुरकहे वेश्या अर्थ कामकी वेश्यारूपी जे नयनकी पुतरीहैं तिनको रतिनाथ जो कामहै ताके हितसों मानों मर्कतकहे श्याम लकुट हाथमों लैकै स्नेहनचावतहै शिक्षक लकुटके तालमें वेश्याको नृत्य सिखावत हैं यहप्रसिद्धहै अथवा कहूं भीनीपाठहै तो अनूप रूपकहे अतिसुंदर औ रुचिर जो रसप्रेमहै तामें भीनीकहे युक्त पातुररूपी जेनयनकी पुतरीहैं तिनको रतिनाथके हितसों नेह नचावतहै इत्यर्थः १९ चन्द्रमा में सोरहकलाहैं मुखमें चौंसठिहैं चौंसठि कला प्रसिद्धहैं २० ॥

दंडक ॥ दीन्हींईशदंडबल दलबलद्विजबलतपबल प्रबलसमेतिकुलबलकी । केशवपरमहंसबलबहुकोषबलकहाकहौंबड़ीपैबड़ाईदुर्गजलकी । बिधिबलचन्द्रबल श्रीकोबलश्रीशबल करतहैंमित्रबलरक्षापलपलकी । मित्रबलहीनजानिअबलासुखनिबल नीकेहीछड़ाइलई कमलाकमलकी २१ दोहा ॥ रमनीमुखमंडलनिरखि राकारमणलजाइ ॥ जलदजलधिशिवसूरमें राखतबदन दुराइ २२ ॥

ईश जे ईश्वरहैं तिन दण्ड जोनालहै ताको बलदीनहै औ श्लेषसों परिघादि दण्ड आयुधजानों दलपत्र औ चमूद्विज चक्रवाकादि पक्षी अथवा दंत इहां दंतपदते बीजजानों औ ब्राह्मण जलशायित्वादि तपजानों कुलकहे ज्ञाति समूह परम हंस पक्षी औ तपस्वी विशेष कोषकहे सिफाकन्द औ खजाना औ दुर्ग कोटरूपी जो लता है ताके बलकी कहा बड़ाई कहौं इत्यर्थः बिधि ब्रह्माको आसनहै तासम्बन्धसों बिधिबलजानों जलज चन्द्रहूह कमलहूहै तासों तासम्बन्धसों चंद्रबल जानों लक्ष्मीको

कमलमें सदाबास रहत है तासम्बन्धसों श्रीकोबल जानौ श्री शबिष्णु सदाकरमें लियेरहतहैं तासों श्रीशबलजानौ औ मित्र जेसूर्यहैं तिनहूंको बलपलपलमें रक्षाकरतहै यद्यपियेतेसबबलहैं परन्तु मित्र जेतुमहौ तिनके बलसों कमलनको हीनजानिकैयेजे अबलासीयदासीहैं तिनकेमुखनबलसोंकमलकी जोकमलाकांति रूपा लक्ष्मी है ताहि छड़ाइ लीन्हों है अबला पदकहि राम बल- की अति उत्कृष्टता जनायो २१ पूर्ण चंद्रयुक्त जो पूर्णिमाकी रात्रि है सोराका कहावती है ॥ पूर्णेराकानिशाकरे इत्यमरः ॥ याहूमें असिद्ध बिषय हेतूत्प्रेक्षाहै २२ ॥

विशेषकछन्द ॥ भूषणग्रीवनकेबहुभांतिनसोहतहैं । लालसितासितपीतप्रभामनमोहतहैं ॥ सुंदररागनकेब हुबालकआनिबसे । सीखनकोबहुरागिनिकेशबदासलसे २३ चौपाई ॥ हरिपुरसीसुरपूरदूषिता । मुक्ताभरण प्रभाभूषिता ॥ कोमलशब्दनिवंतसुवृत्त । अलंकारमय मोहनमित्र ॥ काव्यापद्धतिशोभागहे । तिनकेबाहुपाश कबिकहे २४ ॥

राग भैरवादि २३ आपनी छबि करिकै सुरपुरकी अर्थ सुरपुर बासिनकी दूषिताकहे निंदा करनहारी हैं औ मुक्ता जे मोती हैं तिनके जे आभरण भूषणहैं तिनकी प्रभासों भूषित हैं तासों हरि पुर विष्णुलोकसों हैं हरिपुर कैसोहै कि आपनी छबिसों देवलोक को निंदतहै अर्थ देवलोकसों अधिकहै औ मुक्तकहे मुक्तिको प्राप्त जे जीवहैं तेई हैं आभरण भूषण तिनकी प्रभासों भूषित हैं अर्थ अनेक मुक्त जीवनसों युक्तहै फेरिकैसीहैं कि मलशब्दनिवंतहैं अर्थ मधुरबचनबोलतीहैं औसुष्ठुहैं सुवृत्तकहे चरित्रजिनके औमाल्यादि अलंकार युक्तहैं औ मित्र जो स्वामी हैं ताको मोहनकहे मोहकर्त्ता हैं औ तिनके बाहुनको पाशकहे फांससमकविजन कहतहैं यासों काव्यकी जो पद्धति रीतिहै ताकी शोभाको गहे हैं काव्य पद्धति

कैसी है कोमलकहे कोमलाक्षर युक्त जे शब्द हैं तिनसों युक्तहै सुष्ठुवृत्त पद जाके औ उपमादि अलंकारसों युक्तहै औ मित्र जे काव्य पाठी हैं तिनको मोहनहै औ तिनके बाहुनको कविपाश सम कहतहैं अर्थ बाहुपाशसम होतनहीं है परन्तु कविनको नियम है कि काव्य रीतिसों स्त्री पुरुषके बाहु पाशसम कहतहैं ॥ वृत्तः छन्दश्चारित्र वृत्तिषु इतिमेदिनी २४ ॥

नवरँगबहुअशोकके पत्र । तिनमेंराखतराजकलत्र ॥ देखहुदेवदीनकेनाथ । हरतकुसुमकेहारतहाथ २५ सुंदरअँगुरिनमुंदरीबनी । मणिमयसुबरणशोभासनी ॥ राजलोककेमनरुचिरये । मानोंकामिनिकरकरिलये २५ अतिसुंदरउरमेंउरजात । शोभासरमेंजनुजलजात । अखिललोकजलमथ्यकरिधरे । बशीकर्णचूरणचयमरे ॥ कामकुंवरअभिषेकनिमित्र । कलशरचेजनुयौवनमित्र २७ दोहा ॥ रोमराजशृंगारकीललिततलतासीराज।ताहिफले कुचरूपफललैजगज्योतिसमाज २८ ॥

द्वै छंदको अन्वय एकहै हे देव हे दीनकेनाथ यहदेखो जे हाथ कुसुम फूलनके हरतमें तोरतमें हारतकहे थकतहैं अर्थ जिनसों फूलऊनहीं तूरिजात ऐसे कोमल जे हाथ हैं तेई नवरंग बहुत अशोक के पत्रहैं तिनमें कहे तिनहाथनमें राजकलत्र जे सीता हैं तिनको राखती हैं तासों मानों सुंदर जे अंगुरी हैं तिनमें सुबरण शोभासों सनी मणिमय मुंदरीबनी हैं तेई रुचि कहे सुन्दरतासोंरये युक्त राजलोक कहे अंतःपुर के अर्थ सीतादिकनके मनहैं तिनको मानों करमें हाथमें करिलीन्होंहै अतिसे वाकरि सीतादिकनके मन मानों आपने हाथमें करि लीन्हों है इत्यर्थः २५।२६।२७।२८ ॥

चौपाई ॥ सूक्षमरोमावलीसुवेष । उपमादीन्हीशुक

सविशेष ॥ उरमेंमनहुँमदनकीरेख । ताकीदीपतिदिप तिअशेख २९ दोहा ॥ कटिकेतत्त्वनजानियेसुनिप्रभु त्रिभुवनराव ॥ जैसेसुनियतजगतकेसतअरुअसतसु भाव ३० नाराचछंद ॥ नितंबबिंबफूलसेकटिप्रदेशक्षी नहै । विभूतिलूटिलीसबैसोलोकलाजलीनहै ॥ अमो लऊजरेउदारजंघयुग्मजानिये । मनोजकेप्रमोदसोंवि नोदपत्रमानिये ३१ ॥

रेखकहे लीक अर्थ हृदयमों मदनबस्योहै ताकीछबि बाहर कढ़िकै देखि परतिहै कामको रूप श्यामहै २९ तत्त्व स्वरूप ॥ तत्त्वं स्वरूपे परमात्मनीतिमेदिनी ॥ सतस्वभाव पुण्यादि ३० नितम्ब विम्बकहे नितम्बमण्डल नितंबस्वरूप इति ॥ बिंबंतु प्रतिबिंबेस्यान्मण्डलेपुंनपुंसकमितिमेदिनी ॥ फूल से कहे प्रफुल्लितहैं अर्थ आनन्द सहितहैं औ कटिप्रदेश अतिक्षीणहै सो मानों नितम्बन कटिकी विभूति संपत्ति लूटिलीन्ही है तासों आनंद सहितहैं औ कटिलोकके लाजसों लीनकहे छपीहै ऊजरे मलरहित प्रमोदसों कहे प्रसन्नता सहित अर्थ अति प्रशस्त मनोज जो कामहै ताके मानों विनोद यंत्रकहे विनोदके अर्थ यंत्र हैं और यंत्रके बंधनसों आनन्द होतहै इनके देखतही आनन्द होतहै ३१ ॥

छवानकीछुईनजातिशुभ्रसाधुमाधुरी । विलोकिभूलि भूलिजातिचित्तचालिआतुरी ॥ विशुद्धपादपद्मचारु अंगुलीनखावली । अलक्तयुक्तमित्रकीसोचित्रबैठकीभ ली ३२ दोहा ॥ कठिनभूमिअतिकोवरेजावकयुतशुभ पाइ ॥ जनुमानिकतनत्राणकीपाहिरीतरीबनाइ ३३ चौ पाई ॥ बरणबरणअँगियाउरधरे । मदनमनोहरकेमन

हरे ॥ अंचलअतिचंचलरुचिरचैं । लोचनचलजिनके सँगनचैं ३४ दोहा ॥ नखशिखभूषितभूषणनपटिसुबरणमयमंत्र ॥ यौवनश्रीचलजानिजनुबांधेरक्षायंत्र ३५ चित्रपदाछंद ॥ मोहनशक्तिनऐसी । मकरध्वजध्वजजैसी । मंत्रबशीकरसाजैं । मोहनमूरिबिराजैं ३६ ॥

छवाकहे एंड़ी तिनकी शुभ्रकहे मलरहित साधुकहे श्रेष्ठमाधुरी कहे सुन्दरता नयननकरि छुईनहीं जाति अर्थ अतीन्द्रियहै अति सुन्दरताहै इति भावार्थः जिनको बिलोकि कै चित्तकी जो आतुरी शीघ्र चालिकहे चालुहै सो भूलिजातहै अर्थ चित्त अचल ह्वैजाताहै पाद औ अंगुली औ नखावली चित्र विचित्र अलक्तकहे महावरसों युक्तहैंते मानों मित्रको कहे मित्रजो स्वामी है ताके मनकी बैठकीहैं इत्यर्थः अथवामित्र कहे सूर्यकि सूर्यसम नखहैं ३२ जानों मानिककी तनत्राणके अर्थ पहिरे हैं इत्यर्थः ३३।३४ भूषणसुबर्णमयकहे कंचनमयी हैं औमन्त्रपक्ष सुष्ठुबर्णमयअक्षरमयजानों ३५।३६ ॥

रूपमालाछंद ॥ भालमेंभवराखियोशशिकीकलाभुतएक । तोषताउपजावहींमृदुहासचन्दअनेक ॥ मारएकबिलोकिकैहरजारिकैकियोछार । नयनकोरचितैकरैंपतिचित्तमारअपार ३७ चौपाई ॥ कंटकअटकतफटिकटिजात । उड़िउड़िबसनजातबशबात ॥ तऊनतिनकेतनलखिपरे । मणिगणअंगअंगप्रतिधरे ३८ दोहा ॥ उपमागणउपजाइहरिबगरायेसंसार ॥ तिनकोपरसपरोपमारचिराखीकरतार ३९ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्र जिद्विरचितायांसीतासखीजनवर्णनंनामैकत्रिंशःप्रकाशः ३१ ॥

तोषताकहे संतोषके लिये इत्यर्थः नतिवादी सों अधिक को करिये तब संतोषहोतहै यह प्रसिद्धहै औ महादेव एकमार जारयो तालिये नयन कोरसों चितैकै पतिनके चित्तमें अपार मारकहे काम उत्पन्न करती हैं अथवा महादेव कामको एकई मारकरयो कि जारिहीडारयो औ येकाम सरिस जे पतिहैं तिनके चित्तमों अपार कहे अनेक बिधिको मार ताड़न करतीहैं ३७।३८ हे हरि कर्त्ता और उपमागण उपजाइकै संसारमें बगरायो फैलायो है औ तिन दासिनको परस्पर उपमाकहे एकदासीकी उपमा एकको एककी एकको रचि राख्यो है और उपमा इनके सादृश्य नहीं है इत्यर्थः ३९ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां एकत्रिंशःप्रकाशः ३१ ॥

दोहा ॥ बत्तीसयेंप्रकाशमेंउपबनबर्णनजानि ॥ अरु बहुबिधिजलकेलिकोकेरहुरामसुखदानि १ सुन्दरीछंद॥ अचानकदृष्टिपरेरघुनायक । जानकिकेजियकेसुखदायक ॥ ऐसेचलेसबकेचललोचन । पंकजवातमनोमनरोचन २ रामसोंरामप्रियाकह्योयोंहँसि । बागदेखावहुलोकनकेशशि ॥ रामबिलोकतबागअनन्तहि । ज्योंअवलोकतकामदसन्तहि ३ बोलतमोरतहांसुखसंयुत । ज्यों बिरदावलिभाटनकेसुत ॥ कोमलकोकिलकेकुलबोलत । ज्ञानकपाटकुँजीजनुखोलत ४ फूलतजैबहुवृक्षनकोगनु। छोड़तआनंदआंशुनकोजनु ॥ दाड़िमकीकलिकामनमोहति।हेमकुपीजनुबन्दनसोहति५ दोहा॥ मधुबनफूल्योदेखिशाकबर्णतहैंनिःशंक ॥ सोहतहाटकघटितऋतुयुवति

नकेताटंक ६ दोधकछंद ॥ बेलकेफूललसैंअतिफूले । भौंरभवैंतिनकेरसभूले ॥ योंकरबीरकरीवनराजे । मन्मथवाणनकीगतिसाजे ७ केतकपुंजप्रफुल्लितसोहैं । भौंरउड़ैंतिनमेंअतिमोहैं ॥ श्रीरघुनाथहिंआवतभागे।जेअपलोकहुतेअनुरागे ८दोहा॥श्यामशोणद्युतिफूलकीफूले वहुतपलास॥जरैंकामकैलामनोंमधुऋतुबातबिलास ९

१ रामचन्द्र भूपरूप दुराइकै ये छपे जो युवतिनको देखतरहे सो उपबनकी छबिनिरखत अचानक सीतादिकन की दृष्टिमोंपरे सो रामचन्द्रकी ओर सबके चंचल लोचन ऐसे चलतभये जैसे बातकहे बायुसों मनसेचनकहे मनको सुखद पंकज कमल चलै २।३ कुंजीसों मानों ज्ञानके कपाट खोलत हैं ज्ञानिनके कामोद्भवकरि ज्ञानको दूरिकरत हैं इत्यर्थः ४ बंदन रोरी ५ मधुजो वसंतहै तामें बन जो बागहै ताकेमध्य दाड़िमको फूलदेखिकै शुक निश्शंक वर्णत हैं दाड़िमपदको संबंध इहांऊ है मानों हाटक जो सुवर्ण है तासों घटितकहे रचित षटऋतु रूपी जे युवती स्त्री हैं तिनके ताटंक ढारहैं भाषामें ऋतु शब्द स्त्रीलिंग है यथा रसराज काव्ये ॥ आई ऋतु सुरभिसुहाई प्रीतिवाके चित्त ऐसे में चलै तौ लालरावरी बड़ाई है ॥ अथवा ऋतु करिकै घटित बनाये ६ बेल कहे बेला करबीर कनैल ७ केतक कहे केंवराते भ्रमर श्रीरामचन्द्रको निकट आवतदेखिकै भागतभये जेभ्रमरप्राणीमें अपलोक पापकेसम केतक पुंजमें अनुरागेहैं जैसेध्यानमें अथवा साक्षात् रामागमनसों प्राणीके अपलोक दूरिहोत हैं ते केतकके निकट आवतभ्रमर भागतभये इत्यर्थः ८ शोण अरुण मधुकहे बसंत ऋतुरूपी जो वायुहै ताके बिलास सों मानों महादेव करिकै जारयो जो काम है ताके कैलाफेरि जरैंकहे सुपचतहैं ९ ॥

तोटकछन्द ॥ बहुचम्पककीकलिकाहुलसी । तिनमें

अलिश्यामलज्योतिलसी ॥ उपमाशुकसारिकचित्तधरी ।
जनुहेमकुपीरससोंधभरी १० चौपाई ॥ अलिउड़िधरत
मंजरीजाल । देखिलाजसाजतिसबबाल ॥ अलिअलि
नीकेदेखतभाई । चुम्बतचतुरमालतीजाई ११ अद्भुत
गतिसुन्दरीविलोकि । बिहँसतिहैं घूंघुटपटरोकि ॥ गिरत
सदाफलश्रीफलओज । जनुधरधरतदेखिबक्षोज १२
तारकछन्द ॥ उदरेउरदाडिमदीहबिचारे । सुदतीनके
शोभनदन्तनिहारे ॥ अतिमंजुलबंजुलकुंजबिराजैं । बहु
गुंजनिकेतनपुंजनिसाजें ॥ नरअन्धभयेदरशेतरुमौरे ।
तिनकेजनुलोचनहैंयकठौरे १३ ॥

हुलसी कहे फूलीशृंगाररस सदृशभ्रमरहैं औ सोंधु सुगंधहै
हीहै चंपक पै भंवर बैठिबेको वर्णनकबिनियम बिरुद्धहै परन्तु
केशवबड़ेकबिहैंहीहैं कछू विचारहीके कह्यो ह्वैहै तासोंदोषनहीं है
अथवा गंधहीन होतिहै कलीतासों कह्यो है १० । ११ सदाफल
जेश्रीफल बिल्वहैं तेगिरतहैं सोमानों तिनस्त्रिनके बक्षोज को
ओज कहे प्रतापकांतिको देखिकै भयसोंमानों उन्नत आसनको
त्यागकरि धरपृथ्वीको धरतहैं अर्थनत होतहैं १२ दाडिमफलन
के उरपाकिके उदर कहे फाटिगये हैं सो मानों सुदती कहे सुन्द-
रहैं दंतजिनके ऐसी जेसीताकी दासीहैं तिनके सुन्दर दंतहो नि-
हारिकै स्पर्द्धा सों फाटिगयेहैं बंजुल अशोक गुंजन के तनकहे
भ्रमरमौरेकहे बौरे अर्थ अशोक वृक्षनके दरशे नर अंधकहे कामां-
धभये तिननरनके मानों लोचनहीं एकठौरे हैं बौरे अशोक वृ-
क्षन को जन देख्यो तिनके लोचन तहांई लागिरहे ताहीसों ते
अधमभयेहैं इत्यर्थः १३ ॥

थलशीतलतप्तस्वभावनिसाजें । शशिसूरजकेजनु
लोकबिराजैं ॥ जलयंत्रबिराजतभांतिभलीहै । धरतेजल

धारअकाशचलीहै ॥ यमुनाजलसूक्षमबेषसँवारेउ । ज नुचाहतहैरविलोकबिहारेउ १४ चंचरीछंद ॥ भांतिभां तिकहौंकहांलगिबाटिकाबहुधाभली । ब्रह्मघोषघनेतहां जनुहैंगिरावनकीथली ॥ नीलकंठनचैंबनेजनुजानियेगि रिजावनी । शोभिजैंबहुधासुगन्धमनोमलैबनकीधनी १५ ॥ चौपाई ॥ करुणामयबहुकामनिफली । जनुकम लाकीबासस्थली ॥ शोभेरम्भाशोभासनी । मनोशचीकी आनँदवनी १६ ॥

उष्णसमय बैठिवेकेजेस्थल हैं ते शीतलस्वभावको साजत हैं शीतसमय बैठिकहे तप्तस्वभावसाजतहैं शशिकोलोकशीतलहै सूर्यको तप्तहै जलयंत्र फुहारे १४ बाटिकामें ब्रह्मघोषकहे वेदशब्द पाठशालाबनी हैं तिनमें शिष्य पढ़तहैं अथवा तपस्वीटिके हैं ते वेद पाठकरतहैं अथवा अन्यत्रऋषिनके आश्रमनमों सीखिकै शु-कादि पक्षी बेद इहांआइ पढ़त हैं औगिरा सरस्वती के उपबन में ब्रह्माको शब्दनीलकराठ बाटिकामें मोर गिरिजाबनीमें महा-देवधनी कहेरानी १५ बाटिकाकरुणाजेवृक्ष बिशेषहैं तिनसों युक्त हैं औबहुत जेकाम कहेअभिलाषितफल हैं तिनसों फलीहै क-मलाकी वासस्थली कैसीहै करुणामयजे भगवानहैं ते हैं जहां औ बहुत जे काम्य पदार्थ तिनसों फलीयुक्तहै अर्थ जहां सब अभिला-षित पदार्थ मिलतहैं कामःस्मरेच्छाकाम्येषु इतिहेमचन्द्रः ॥ बा-टिका पक्षरंभाकेरा आनन्द बनी यक्षअप्सरा १६ ॥

कमलछंद ॥ तरुचन्दनउज्ज्वलतातनधेरै । लपटी नवनागलतामनहरे ॥ नृपदेखिदिगम्बरबन्दनकरे । चित चंद्रकलाधररूपनिभरे १७ अतिउज्ज्वलतासबकालहु बसै । शुककेकिपिकादिककंठहुलसै ॥ रजनीदिनआनँद कंदनिरहै । मुखचन्दनकीजनुचन्दनिअहै १८ ॥

जा बाटिकामों चंदनवृक्ष चिर कहे बहुतकालसों चन्द्रकला-धर जे महादेवहैं तिनके रूपनको धरे हैं कैसे हैं चन्दनवृक्ष औ महादेव उज्ज्वलता जो श्वेतताहै ताको तनमें धारणकरे हैं चन्दन वृक्षहू श्वेतहैं महादेवके अंगऊश्वेतहैं नागलताकहे नागबेलि औ नाग सर्परूपीलता औ दिगंबर नग्नदुवौ हैं महादेवको ईश्वरता सों औ वृक्षनको अतिअद्भुततासों नृपसब बन्दना करत हैं १७ फेरि बाटिका कैसी है कि जानो सीताकी दासिनके मुख चन्दन की चांदनी है कैसी है बाटिका औ चांदनी सब कालहूकहे सब समयमों उज्ज्वलता कहे स्वच्छता औ शुक्लताबसति है कैसी है बाटिका शुकादि पक्षिनके कटकहेशब्द सहित लसतिहै अर्थ अनेक शुकादि पक्षी जामें बोलतहैं औ चांदनी शुकादिकनके शब्द सरिसजे अनेक विधि परस्पर बोलती हैं तिन सहितहै औ रातौ दिन दुवौ आनन्दकी कन्दनि कहे जरहै अर्थ रातौदिन सुखदहै वा चन्दकी चांदनी रातिहीं को सुखद होतिहै मुखचन्दकी चांदनी रातौदिन सुखदेतिहै इतिभावार्थः शुक केकि पिकादिकके मुख बसै कहूं यहपाठहै तहांऊंमुखकहे शब्दजानो अर्थ वही है ॥ मुख-निश्शरणेवक्त्रेप्रारंभोपापयोरपि। सन्ध्यंतरेनाटकादिःशब्देपिचन-पुंसकमितिमेदिनी १८ ॥

तोटकछंद ॥ सबजीवनकोबहुसुक्खजहां । बिरहीज नहींकहँदुःखतहां ॥ जहँआगमपौनहिंकोसुनिये । नित हानिअसौंधहिकोगुनिये १९ दोहा ॥ तपहीकोताउन जहांतृषचातककेचित्त ॥ पातफूलफलदलनिकोभ्रमभ्र मरनिकेमित्त २० तारकछंद ॥ तिनमेंइककृत्रिमपर्वत राजै । मृगपक्षिनकीसबशोभाहिसाजै ॥ बहुभांतिसुगंध मलयागिरिमानों । कलधौतस्वरूपसुमेरुबखानों २१ अ तिशीतलशंकरकोगिरिजैसो । शुभश्वेतलसैउदयाचल

ऐसो ॥ द्युतिसागरमेंमैनाकमनोहै । अजलोकमनोअज लोकबनोहै २२ तोटकछंद ॥ सरितातिनतेशुभतीनि चली । सिगरीसरितानकिशोभदली ॥ इकचंदनकेजल उज्ज्वलहै । जगजह्नुसुताशुभशीलगहै २३ चौपाई ॥ सुरगजकीमारगछबिछायो । जनुदिवितेभूतलपरआयो ॥ जनुधरणीमेंलसतिबिशाल । त्रुटितजुहीकीघनवनमाल ॥ २४ दोहा ॥ तज्योनभावैएकपलकेशवसुखदसमीप ॥ जासोंसोहततिलकसोदीन्हेजंबूदीप २५ दोधकछंद ॥ एणनकेमदकैजनुदूजी । हैयमुनाद्युतिकैजनुपूजी ॥ धार सनोंरसराजबिशाला । पंकजजालमयीजनुमाला २६ दोहा ॥ दुखखंडनतरवारिसीकिधौंशृंखलाचारु ॥ क्रीड़ा गिरिमातंगकीयहहैकहैसंसारु २७ क्रीड़ागिरितेअलिन कीअवलीचलीप्रकास ॥ किधौंप्रतापानलनकीपदवीके शवदास २८ दोधकछंद ॥ औरनदीजलकुंकुमसोहै । शुद्धगिरामनमानहुँमोहै ॥ कंचनकेउपवीतहिसाजै । ब्रा ह्मणसोंयहखंडबिराजै २९ ॥

सब जीवनको असौध दुर्गन्ध १९ पातकहे पतन २० कृत्रिम कहे बनायो कलधौत स्वरूप कहे सुवर्णमयहै अर्थ सुवर्णहीको बन्योहै २१ मैनाक सागरमेंहै यह द्युति शोभारूपी सागरमें है अज जे दशरथकेपिताहैं तिनके लोकमें मानों अज जे ब्रह्माहैं तिनको लोक ब्रह्मलोक बन्योहै २२ शीलकहेस्वभाव ताप दूरि करणादि २३ सुरगज ऐरावतकी राह आकाशमों रात्रिकै उवति है प्रसिद्ध है जुही कहे जाही जूही पुष्प विशेष हैं २४ तिलक सों अर्थ रा-ज्याभिषेक तिलकसों २५ एणनको मद कस्तूरी पूजी कहे पूरित अर्थ मानों यामें यमुनाकी शोभा आइ बसीहै रसराज शृंगार रस

पंकज इहां श्याम कमलजानौ २६ क्रीड़ा गिरिरूपी जो मातंग है ताकी शृंखला क्षुद्रघंटिका है अथवा आंदूहै २७ किधौं रघुबंशिनके इतिशेषः प्रतापाग्निकी पदवीराहहै अग्निकी राह श्याम होतीहै २८ नदिनमें सेवटि परि जातिहै कहूँ सेवटाकरि प्रसिद्धहै एला इलायची केरिकहे केराके फूलके जे दल पत्र हैं तेई नाव हैं तिनमें सुगंध जो है सोई श्रीकहे बाणिज्य द्रव्य है २९ ॥

स्वागताछन्द ॥ लौंगफूलमयसेवटिलेखी । एलबीज बहुबालकदेखी ॥ केरिफूलदलनावनमाहीं । श्रीसुगन्ध तहँहैबहुधाहीं ३० दोहा ॥ खेवतमत्तमलाहअलि कोबर णैवहज्योति ॥ तीन्योसरिता मिलितजहँ तहांत्रिवेणीहोति ३१ सीताश्रीरघुनाथजू देखीअमितशरीर ॥ द्रुमअवलोकनछोड़िकै गयेजलाशयतीर ३२ चौपाई ॥ आई कमलबासुसुखदेन । मुखबासनआगेह्वैलेन॥ देख्योजाइ जलाशयचारु । शीतलसुखदसुगन्धअपारु ३३ मरहट्टाछन्द ॥ बनश्रीकोदर्पनुचन्द्रातपजनुकिधौंशरदआबास । मुनिजनगनमनसोंबिरहीजनसोंबिशबलयानिबिलास॥ प्रतिबिम्बितथिरचरजीवमनोहरमनुहरिउदरअनन्त।बन्धुनयुतसोहैंत्रिभुवनमोहैंमानोबलियशवन्त३४

३० । ३१ जलाशय तड़ाग ३२ जबकोऊ बड़ो आपने इहां आवत है ताको आगे चलिकै लेबो उचित है ३३ बनकी जो श्री लक्ष्मी है ताको दर्पण है कि चन्द्रातप कहे चांदनी है कि शरद-ऋतुको आवास घरहै मुनिजन के मनसम विमलहै इत्यर्थः ॥ तड़ागबिश जो कमलकी जर है ताके बलय समूह युक्तहै औ विरही शीतलताकेलिये अनेक कमल जर धारण करेहैं हरिके उदरहूमें चौदहोलोक बसत हैं तड़ाग पाषाणादि सों बांध्योहै बलिको बामन बांध्यो है ३४ ॥

चौपाई ॥ विषमयययहसबसुखकोधाम । शम्बररूप बढ़ावैकाम ॥ कमलनमध्यभ्रमरसुखदेत । सन्तहृदय जनुहरिहिसमेत ३५ बीचबीचसोहैंजलजात । तिनतें अलिकुलउड़िउड़िजात ॥ सन्तहियनसोंमानहुंभाजि । चंचलचलीअशुभकीराजि ३६ दण्डक ॥ एकदमयन्ती ऐसीहरैहंसिहंसबंसएकहंसिनीसी बिशहारहियेरोहिये । भूषणगिरतएकैलेतींबूड़िबूड़िबीचमीन गतिलीनहीनउ पमानटोहिये ॥ एकपतिकंठलागिलागिबूड़िबूड़िजाति जलदेवतासीदृगदेवताबिमोहिये । केशौदासआसपास भंवरभवतजल केलिमेंजलजमुखीजलजसीसोहिये ३७ दोहा॥क्रीड़ासरवरमेंनृपति कीन्हीबहुबिधिकेलि॥ निकसे तरुणिसमेतजनु सूरजकिरणिसकेलि ३८ हाकलिका छन्द॥नीरनितेनिकसींतियसबै ।सोहतिहैंबिनभूषणतबै॥ चन्दनाचित्रकपोलननहीं । पंकजकेसरशोभततहीं ३९॥

द्वैचरणमें विरोधाभासहै विषजल शंबररूप कहै शम्बरजो म- त्स्यभेदहै तन्मयहै अर्थ अति शंबर मत्स्ययुक्तहै शंबरो दैत्यहरिण मत्स्यशैलजिनांतरे इतिमेदिनी ३५ । ३६ हरैंकहे गहिलेती हैं दमयंतीहू राजानलको पठायो जो हंसहै ताको गहिलियो है हंसहूपवनारी को काढ़िगरे में डारिलेत है ३७। ३८ ताहीअर्थ कपोलनमेंलगे कमलनकेकेसर किंजल्क सोहत हैं ३९ ॥

मोतिनकीबिथुरीशुभछूटें । हैंउरभीउरजातनलटैं ॥ हासशृंगारलतामनुबनी। भेंटतिकल्पलताहितघनी ४० केशनिओरानिसीकररमैं। ऋक्षनकोतमयीजनुबमैं॥ सज्ज लअम्बरछोड़तबने । छूटतहैंजलकेकणघने ॥ भोग भलेतिनसोंमिलिकरे । बिछुरतजानितेरोवतखरे ४१

भूषणजेजलमध्यहिंरहे । तेबनपालबधूटिनलहे ॥ भूषणवस्त्रजबैसाजिलये।चारिहुद्वारनदुन्दुभिभये ४२ दोहा॥ गूंगेकुब्जेबावरे बहिरेबावनवृद्ध ॥ यानलयेजनआइगे खोरेखंजप्रसिद्ध ४३ चौपाई ॥ सुखदसुखासनबहुपालकी । फीरकबाहिनिसुखचालकी ॥ एकनजोतेहयसोहिये । वृषभकुरङ्गअङ्गमोहिये ॥ तिनचढ़िराजलोकसबचल्यो । नगरनिकटशोभाफलफल्यो ४४ ॥

हास रसलतासम मोतिनकी लरै हैं शृंगार रसलतासम लटैं हैं कल्पलतासम स्त्री हैं ४० केशनके भोरनकहे अंतमें सीकर जे अंबुकण हैं ते रमैंकहे शोभितहैं ऋक्षनक्षत्र ४१ बाटिकाके चारिहू द्वारनमें कूचके नगारेभये इत्यर्थः ४२ स्त्रीजनके निकट ऐसेही जन चाहिये जिनपै स्त्रीजन प्रीति न करैं ४३ सुखासनकहे कोमल बिछावनेयुक्त फिरक बाहिनी सेजगाडी एकन फिरक बाहिनीनमें जोते हैं शोभितहैं एकनमें वृषभशोभितहैं ते आपने अंगनकरि कुरंग अंगनको मोहतहैं अर्थ अतिचंचलहैं ४४ ॥

मणिमयकनकजालिकाघनी । मोतिनकीझालरिअतिबनी ॥ घण्टाबाजतचहुंदिशिभले । रामचन्द्रत्यहिगजचढ़िचले ॥ चपलाचमकतचारुअगूढ़ । मनहुंमेघमघवाआरूढ़ ४५ आसपासनरदेवअपार । पाइपियादेराजकुमार ॥ बन्दीजनयशपढ़तअपार । यहिबिधिगयेराजदरबार ४६ बिजयाछन्द ॥ भूषितदेहबिभूतिदिगम्बरनाहिंनअम्बर अंगनवीने।दूरिकैसुन्दरसुन्दरिकेशवदौरिदरीनमेंआसन कीने॥ देखियेमण्डितदण्डनसों भुजदण्डदुवौअसिदण्ड बिहीने।राजनश्रीरघुनाथकेबैर कुमण्डलछोड़िकमण्डल लीने ४७ दोहा ॥ कमलकुलनमेंजातज्यों भँवरभयोरस

चित्र ॥ राजलोकमेंत्योंगये रामचन्द्रजगमित्र ४८ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र चन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां बनविहारवर्णनंनामद्वात्रिंशःप्रकाशः ३२ ॥

हौदामें मणिमयी कनकजालिका झांझरी घनी हैं इत्यर्थः ॥ अथवा झालरिकी जारी मणिमयी कनककी घनी बनी हैं अगूढ प्रसिद्ध ४५ । ४६ असिदण्ड तरवारि कुमण्डल पृथ्वी मण्डल ४७ । ४८ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांद्वात्रिंशत्प्रकाशः ३२ ॥

दोहा ॥ त्रयतीसयेंप्रकाशमें ब्रह्माविनयबखानि ॥ शम्बुकबधसियत्यागअरु कुशलवजन्मसोजानि १ ॥

शंबुकनामा शूद्र १ ॥

त्रिभंगीछन्द ॥ दुर्जनदलघायकश्रीरघुनायकसुखदायकत्रिभुवनशाशन । सोहैंसिंहासनप्रभाप्रकाशनकर्मबिनाशनदुखनाशन ॥ सुग्रीवविभीषणसुजनबंधुजनसहिततपोधनभूपतिगन । आयेसँगमुनिजनसकलदेवगनमृगतपकाननचतुरानन २ तोटकछंद ॥ उठिआदरसों अकुलाइलयो । अतिपूजनकैबहुधाबिनयो ॥ सुखदायकआसनशोभरये । सबकोसोयथाविधिआनिदये ३ दोहा ॥ सबनपरस्परबूझियो कुशलप्रश्नसुखपाय ॥ चतुराननबोलेबचन श्लाघाबिनयबनाय ४ ब्रह्मा—मनोरमाछन्द ॥ सुनियेचितदैजगकेप्रतिपालक । सबकेंगुरु हौहरि

यद्यपिबालक ॥ सबकोसबभाइसदासुखदायक । गुणगा
वतवेदमनोबचकायक ५ ॥

त्रिभुवन के शासन कहे शिक्षक पापपुण्य कर्मको नाशकै
आपने धाम पठावतहैं इत्यर्थः ॥ तपरूपी जो काननबनहै ताके
मृगकहे आरण्य पशु जैसे अरण्यको मृग अवगाहनकरत है तैसे
अनेक तपस्याके अवगाहनकर्त्ता इत्यर्थः २ आनिकहे मँगाइकै
३ श्लाघास्तुति ४ । ५ ॥

तुमलोकरचेबहुधारुचिकैतब । सुनियेप्रभुऊजरहैंसि
गरेअब ॥ जगकोउनभूलिहुजाइनिरथमग ॥ मिटिगेसबपा
पनपुण्यनकेनग ६ दोहा ॥ बरुणपुरीधनपतिपुरीसुरपति
पुरसुखदानि ॥ सप्तलोकबैकुंठसबबस्योअवधमेंआनि ७
तोमरछन्द ॥ हँसियेंकह्योरघुनाथ ॥ सुमुनीसबैबिधिगाथ ॥
ममइच्छएकसुजानि । कबहूंनहोइसुआनि ८ तवपुत्रजे
सनकादि । ममभक्तजानहुआदि ॥ सुतमानसिकतिनकेति ।
भुवदेवभुवप्रगटेति ९ हमदियोतिनशुभठांउं । कछुऔर
दीबेगांउं ॥ अबदेहिंहमकोहठौर । तुमकहौसुरशिरमौर १०
ब्रह्मा–मरहट्ठाछन्द ॥ सबवैमुनिरूरेतपबलपूरेबिदितस
नाढ्यसुजाति । बहुधाबहुबारनि प्रतिअवतारनिदैआये
बहुभांति ॥ सुनिप्रभुआखंडलमथुरामंडलमेंदीजै शुभ
ग्राम । बाढ़ैबहुकीरतिलवणासुरहतिअतिअजेयसंग्राम
११ ॥ दोहा ॥ जिनकेपूजेतुमभयेअंतरयामीश्रीप ॥ तिन
कीबातहमैंकहापूछतात्रिभुवनदीप १२ द्विजआयोताही
समैमृतकपुत्रकेसाथ ॥ करतबिलापकलापहारामचन्द्र
रघुनाथ १३ मल्लिकाछन्द ॥ बालकैमृतैसोदेखि । धर्म

राजसोंविशोखि ॥ बातयोंकहीनिहारि । कर्मकौनकोबिचारि १४ धर्मराज--मनोरमाछंद ॥ निजशूदनकीतपसाशिशुघालक । बहुधाभुवदेवनकेसबबालक । करिबेगिबिदासिगेरेसुरनायक। चढ़िपुष्पकआशुचलेरघुनायक १५

नग पर्वत ६ । ७ । ८ । ९ । १० आखण्डल इन्द्र ११ श्रीपति कहे लक्ष्मीपति १२ कलाप कहे समूह १३ धर्मराज न्यायदर्शी अथवा यमराज १४ । १५ ॥

दोधकछन्द ॥ रामचलेसुनिशूद्रकिगीता। पंकजयोनिगयेजहँसीता ॥ देखिलगीपगरामकिरानी।पूजिकैबूझतिकोमलबानी १६ सीता ॥ कौनहुपूरबपुण्यहमारे । आजुफलेजोइहाँपगुधारे ॥ ब्रह्मा ॥ देवनकोसबकारजकीन्हो । रावणमारिबड़ोयशलीन्हो १७ मैंबिनतीबहुभांतिनकीनी । लोकनकीकरुणारसभीनी ॥ ऊतरुमोहिंदियोसुनिसीता । जाकिनजानिपरैजियगीता १८ मांगतहौंवरमोकहँदीजै । चित्तमेंऔरबिचारनकीजै॥आजुतेचालचलौतुमऐसे । रामचलैंबैकुंठहिजैसे १९ सीयजहींकछुनैननवाये। ब्रह्मतहींनिजलोकसिधाये ॥ रामतहींशिरशूद्रकोखंड्यो । ब्राह्मणकोसुतजीवनमंड्यो २० सुन्दरीछंद ॥ एकसमयरघुनाथमहामति।सीतहिदेखिसगर्भबढ़ीरति॥सुंदरिमांगुजोजीमहँभावत । मोमनतोनिरखेसुखपावत २१ सीता ॥ जोतुमहोतप्रसन्नमहामति।मेरेबढ़ैतुमहींसोंसदारति॥अंतरकीसबबातनिरंतर । जानतहौसबकीसबतेपर २२ दोहा ॥ राम ॥ निर्गुणतेसगुणोभयोसुनिसुंदरितवहेत ॥ औरकछूमांगौसुमुखि रुचैजोतुम्हरेचेत २३॥

१६ द्वैछन्दको अन्वय एकहै उत्तरुकहे जवाबदियो अर्थ बैकुंठ चलिवेको न कह्यो १७ । १८ । १९ नयन नवायेते ब्रह्माको कह्यो अंगीकार करयौ जानो २० यहकह्यौ इतिशेषः २१ हमारे तुमहीं सों सदारतिप्रीतिबद्धै यहबरहमको दीजै इत्यर्थः२२।२३॥

सीताजू--सुंदरीछंद ॥ जोसबतेहितमोकहँकीजत । ईशदयाकरिकैवरुदीजत ॥ हैंजितनेऋषिदेवनदीतट । हौंतिनकोपहिरायफिरौंपट २४ राम-दोहा ॥ प्रथमदोहदैक्योंकरोंनिष्फलसुनियहबात ॥ पटपाहिरावनऋषिनकोजैयोसुंदरिप्रात २५ सुंदरीछंद ॥ भोजनकैतबश्रीरघुनंदन । पौढ़िरहेबहुदुष्टनिकंदन ॥ बाजेबजेअधरातभईजब । दूतनआइप्रणामकरीतब २६ चंचलाछन्द ॥ दूतभूतभावनाकहीकिहीनजायबैन । कोटिधाबिचारियोपरैकछूबिचारमैन ॥ सूरकेउदोतहोतबंधुआइयोसुजान । रामचन्द्रदेखियोप्रभातचंद्रकेसमान २७ संयुताछन्द ॥ बहुभांतिबंदनताकरी । हँसिबोलियोनदयाधरी ॥ हमतेकछूद्विजदोषहै । जेहितेकियोप्रभुरोषहै २८ दोहा ॥ मनसावाचाकर्मणाहमसेवकसुनुतात । कौनदोषनहिंबोलियतज्योंकहिआयेबात २९ ॥

देवनदी गंगा २४ दोहद कहे गर्भ २५।२६ यामें केशवकहतहैकि दूतकीकही जो भूतकहे व्यतीत भावनाकहे क्रियाहै रजकबचनादि कथासो कहिवेकोहम कोटिप्रकारसों बिचारयो कछूबिचारमेंनहीं परततासों बैनसों हमसों नहींकही जातिइत्यर्थः २७।२८।२९॥

राम--संयुताछन्द ॥ कहियेकहानकहीपरै । कहियेतौज्योंबहुतैउरै ॥ तबदूतबातसबैकही । बहुभांतिदेहदशादही ३० भरत--दोहा । सदाशुद्धअतिजानकीनिन्दत

त्योंखलजाल ॥ जैसुश्रुतिहिस्वभावहीपाखंडीसबकाल ३१भवअपबादनितलज्योंज्योंचाहतसीताहि ॥ ज्योंजगकेसंयोगतेयोगीजनसमताहि३२मूलनाछन्द ॥ मनमानिकैअतिशुद्धसीतहिंआनियेनिजधाम। अवलोकिपावकअंकज्योंरविअंकपंकजदाम॥क्यहिभांतिताहिनिकारिहौंअपवादबादिबखानि । शिवब्रह्मधर्म्मसमेतश्रीपितुसाखिबोलयहुआनि ३३ यमनादिकेअपवादक्योंछिजछोड़िहैंकपिलाहि । विरहीनकोदुखदेतक्योंहरडारिचंद्रकलाहि ॥ यहहैअसत्यजोहोइगोअपवादसत्यसुनाथ । प्रभुछोडिशुद्धसुधानपीवहुआपनेविषहाथ ३४ दोहा ॥ प्रियपावनिप्रियबादिनीपतिव्रताअतिशुद्ध ॥ जगकोगुरुअरुगुर्व्विणीछांड़तवेदविरुद्ध ३५ वेमातावैसेपितातुमसोंभैयापाइ॥भरतभयेअपवादकोभाजनभूतलआइ३६

३० पाखगडी नास्तिक ३१ अपवाद निंदा समताको लक्षण पचीसयें प्रकाशमें कह्यो है ३२ दाम जेवरी बादि वृथा ३३ यह जो ब्रह्मादिकनकी साक्षी है सोई जो असत्यहै तो हेनाथ रजककृत यह अपवाद कैसे सत्यह्वै है इत्यर्थः सुधासम ब्रह्मादिकनकी साक्षीहै विषसम रजकको अपवादहै ३४ । ३५ । ३६ ॥

राम-हरिलीलाछन्द ॥ सांचीकहीभरतबातसबैसुजान । सीतासदापरमशुद्धकृपानिधान ॥ मेरीकछूअबहिंइच्छयहैसोहेरि । मोकोहतोबहुरिबातकहौजोफेरि ३७ लक्ष्मण–दोधकछन्द ॥ दूषतजैनसदाशुभगंगा । छोडहुगेबहुतुंगतरंगा ॥ मायहिनिन्दतहैसबयोगी । क्योंतजिहैंभवभूपतिभोगी ३८ग्यारसिनिन्दतहैंमठधारी । भावति

हैहरिभक्तनिभारी ॥ निन्दतहैंतवनामनिवामी । काकहि येतुमअन्तर्थ्यामी ३९ दोहा ॥ तुलसीकोमानतप्रियागौतमातियअतिअज्ञ ॥ सीताकोछोड़नकहौकैसेकैसर्बज्ञ४० शत्रुघ्न-रूपमालाछन्द ॥ स्वप्नहूंनहिंछोडियेतियगुर्ब्बिणीपलदोइ । छोड़ियोतबशुद्धसीतहिंगर्भमोचनहोइ ॥ पुत्रहोइकिपुत्रिकायहबातजानिनजाइ । लोकलोकनमेंअलोकनलीजियेरघुराइ ४१ दोहा ॥ रामचन्द्रजगचन्द्र तुमफलदलफूलसमेत ॥ सीतायावनपद्मिनीन्यायनहीं दुखदेत ४२ ॥

फेरि कहे पलटिकै ३७ जैन नास्तिक ३८ ग्यारसि एकादशी बामी वाम मार्गी ३९ । ४० अलोक निंदा ४१ । ४२ ॥

घरघरप्रतिसबजगसुखीरामतुम्हारेराज ॥ अपनेही घरकरतकतशोकअशोकसमाज ४३ राम–तोटकछन्द ॥ तुमबालकहौबहुधासबमें । प्रतिउत्तरदेहुनफेरिहमें ॥ जोकहैंहमबातसोजाइकरो । मनमध्यनऔरबिचारधरो४४ दोहा ॥ औरहोइतौजानिजैप्रभुसोंकहाबसाइ ॥ यहबिचारिकैशत्रुहाभरतउठेअकुलाइ ४५ राम-दोधकछन्द ॥ सीतहिलैअबसत्वरजैये । राखिमहाबनमेंपुनिऐये ॥ लक्ष्मणजोफिरिउत्तरदैहौ । शासनभंगकोपातकपैहौ ४६ लक्ष्मणलैबनसीतहिंधाये ॥ स्थावरजंगमहूंदुखपाये ॥ गंगहिंदेखिकह्योयहसीता ॥ श्रीरघुनायककीजनुगीता ४७ ॥

अशोक जो आनन्दहै ताकेसमाजकहे समूहमें ४३ । ४४ जानिजै अर्थ दोष अदोषको निर्णय समुझिये ४५ शासन आज्ञा राजाको आज्ञा भंग बधके सम होतहै यथा माधवानल नाटके ॥ आज्ञाभं

गोनरेंद्राणांविप्राणांमानखण्डनं । पृथक्शय्यावरस्त्री णामशस्त्र वधउच्यते ४६ सीताकोलैकै लक्ष्मण बनहूं को गये तहां पर्यंत कहूँ कौशल्या वशिष्ठादि के वचन नहीं हैं सो ऋष्य शृंगऋषि के यज्ञ रह्यो तहां कौशल्यादि माता औ अरुंधती सहित बशिष्ठ सब नि-मन्त्रण में गयेरहैं यह कथा उत्तर रामचरित्र नाटक मों लिखी है सो जानौ ४७ ॥

पारभयेजबहींजनदोऊ। भीमबनीजनुजन्तुनकोऊ॥ निर्ज्जलनिर्ज्जनकाननदेख्यो । भूतपिशाचनकोघरलेख्यो४८सीताजू-नगस्वरूपिणीछन्द॥सुनोंनज्ञानकारिका।शुकीपढैंनसारिका ॥ नहोमधूमदेखिये। सुगंधबंधुलेखिये ४९ सुनोंनवेदकीगिरा। नबुद्धिहोतिहैथिरा ॥ ऋषीनकीकुटीकहां। पतिव्रताबसैंजहां ५० मिलेनकोउवेकहूं। नआवतेनजातहूं ॥ चलेहमैंकहांलिये। डरातिहैंमहाहिये ५१ दोहा॥ सुनिसुनिलक्ष्मणभीतअतिसीताजूकेबैन ॥ उत्तरमुखआयोनहींजलभरिआयेनैन ५२ नाराचछन्द॥बिलोकिलक्ष्णैभईबिदेहजाबिदेहसी ॥गिरीअचेतह्वैमनोघनैबनैतड़ीतसी ॥ करयोजुछांहएकहाथएकबातबासंसों। सिंच्योशरीरबीरनैननीरहीप्रकाशसों५३

जनकहे मनुष्य जन्तुकहे जीव अर्थ मनुष्य जीव केवल बन जीवही देखिपरतहैं इति भावार्थः ४८ सुगन्धको बंधुकहे हित अर्थ सुगन्धयुक्त होम धूमनहीं देखियत अथवा सुगन्ध बन्धुकहे दुर्गंध कहूँ सुगन्ध बंध पाठहै तहां अर्थ सुगन्ध को बंधकहे बन्धन है यामें ऐसो होम धूम नहीं देखियत ४९।५०।५१।५२ मानों घनैबनै कहे घन बनको देखि तड़ित जो बिजुरी है सोई त्रसीकहे डरी है सो डरिकै अचेतह्वै गिरिपरी है इत्यर्थः कहूँ घनेघने तड़ी त्रसी पाठहै अर्थ मानों घने जे घनमेघहैं ५३ ॥

रूपमालाछन्द ॥ रामकीजपसिद्धिसीसियकोचले बनछांड़ि । छांहएकफनीकरीफनदीहमालनिमांड़ि ॥ बालमीकिबिलोकियोबनदेवताजनुजानि । कल्पवृक्षलता किधौंदिवितेगिरीभुवआनि ५४ सींचिमंत्रसजीवयौ बनजीउठीतेहिकाल । पूंछियोमुनिकौनकीदुहिताबहू अरुबाल॥सीताजू॥ हौंसुतामिथिलेशकीदशरत्थपुत्रकलत्र । कौनदोषतजीनजानतिकौनआपुनुअत्र ५५ मुनिपुत्रिकेसुनिमोहिंजानहिं बालमीकिद्विजाति । सर्वथा मिथिलेशकोगुरुसर्वदाशुभभांति ॥ होहिंगेसुतद्वैसुधीपगुधारियेममओक । रामचन्द्रक्षितीशकेसुतजानिहैंतिहुंलोक ५६ सर्वथागुणिशुद्धसीताहिंलैगयेमुनिराइ । ओपनीतपसानकी शुभसिद्धिसीसुखपाइ ॥ पुत्रद्वैभयेएक श्रीकुशदूसरोलवजानि । जातकर्महिआदिदैकियवेदभेद बखानि ५७ दोहा ॥ वेदपढ़ायोप्रथमहींधनुर्वेदसाबिशेष। अस्त्रशस्त्रदीन्हेघनेदीन्हेमंत्रअशेष ५८ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां जानकीत्यागबर्णनंनामत्रयस्त्रिंशत्प्रकाशः ३३ ॥

तिनमें त्रसी कहे डरानी तडी अचेतहै गिरीहै मेघसम बन है बिजुरीसम सीताहैं ५४ सजीव मंत्र सों जीवनजल सींच्यो तबसीताजी उठीं अत्रकहे या स्थानमें आपनो कौन दोष है जासों मोको तजी यहहौं नहीं जानाति इत्यर्थः ५५ ओककहे घर ५६ । ५७ । ५८ ॥

इतिश्रीजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांत्रयस्त्रिंशत्प्रकाशः ३३ ॥

दोहा ॥ आयोश्वानफिरयादिकोचौंतीसयेंप्रकाश ॥ अरुसनाढ्यद्विजआगमनलवणासुरकोनाश १ ॥ दोधक छंद ॥ एकसमयहरिधर्मसभामें । बैठहुतेनरदेवप्रभामें ॥ संगसबैऋषिराजविराजैं । सोदरमंत्रिनमित्रनसाजैं २ कूकरएकफिरयादिहिआयो । दुंदुभिधर्मदुवारबजायो ॥ बाजतहीउठिलक्ष्मणधाये । श्वानहिकारणबूझनआये ३ कूकर ॥ काहुकेक्रोधविरोधनदेखो । रामकोराजतपोमयलेखो ॥ तामहँमैंदुखदीरघपायों । रामहिंहौंसोनिवेदनआयों ४ लक्ष्मण ॥ धर्मसभामहँरामहिंजानो । श्वानचलोनिजपीरबखानो ॥ श्वान ॥ हौंअबराजसभानहिंआऊं । आऊंतोकेशवशोभनपाऊं ५ दोहा ॥ देवअदेवनृदेवघरपावनथलसुखदाइ । बिनबोलेआनंदमतिकुत्सितजीवनजाइ ६ ॥

१ धर्मसभा न्यायसभा २ । ३ निवेदन कहन ४ । ५ । ६ ॥

दोधकछंद ॥ राजसभामहँश्वानबुलायो । रामहिंदेखतहीशिरनायो ॥ रामकह्योजोकछूदुखतेरे । श्वाननिशंककहोपुरमेरे ७ श्वान-तारकछंद ॥ तुमहौसर्वज्ञसदासुखदाई । अरुहौसबकोसमरूपसदाई ॥ जगसोहतहैजगतीपतिजागे । अपनेअपनेसबमारगलागे ८ नरदेवनपांयपरैपरजाको । निशिबासरहोइनरक्षकताको ॥ गुणदोषनकोजबहोइनदर्शी । तबहींनृपहोइनिरयपदपर्शी ९ दोहा ॥ निजस्वारथहीसिद्धिद्विजमोकोकर्योप्रहार ॥ बिनअपराधअगाधमतिताकोकहाबिचार १० तारकछंद ॥ तबताकहँलेनतबैजनधाये । तबहींनगरीमहँतेगहिल्याये ॥

राम ॥ यहकूकरक्योंबिनदोषहिमारयो । अपनेजिय त्रासकछूनबिचारयो ११ ब्राह्मण-दोहा ॥ यहसोवतहो पंथमेंहौंभोजनकोजात ॥ मैंअकुलाइअगाधमतियाको कीन्होंघात १२ ॥ राम-स्वागताछंद ॥ ब्रह्मब्रह्मऋषिरा जबखानो । धर्मकर्मबहुधातुमजानो ॥ कौनदंडद्विजको द्विजदीजे । चित्तचेतिकहियेसोइकीजै १३ ॥

पुर कहे ७।८।९।१०।११।१२ हे ब्रह्म ऋषिराज जो वेद बदै है ताकेमतसों बखानौकहो १३ ॥

कश्यप ॥ हैअदंडयभुवदेवसदाई । यत्रतत्रसुनियेर घुराई ॥ ईशशीषअबयाकहँदीजे । चूकहीनअरिकोउन कीजै १४ राम-तोमरछंद ॥ सुनिश्वानकहितूदण्ड । हम देहिंयाहिअखण्ड ॥ कहिबाततूडरडारि । जियमध्यआ पुबिचारि १५ श्वान--दोहा ॥ मेरोभायोकरहुजोरामच न्द्राहितमंडि । कीजैद्विजयहिमठपतीऔरदंडसबछंडि १६ निशिपालिकाछंद ॥ पीतपहिराइपटबांधिशिरसोंपटी । बोरिअनुरागअरुजोरिबहुधागटी ॥ पूजिपरिपायँमठता हितबहींदियो । मत्तगजराजचढ़िबिप्रमठकोगयो १७ दोहा ॥ भयोरंकतेराजद्विजश्वानकीनकरतार । भोगनला ग्योभोगवैदुन्दुभिबाजतद्वार १८ सुंदरीछंद ॥ बूझतलो गसभामहँश्वानहिं । जानतनाहिंनयापरिमानहिं ॥ विप्रहि तैजोदईपदवीवह । हैयहनिग्रहकैधोंअनुग्रह १९ श्वान-दोधकछंद । एककनौजहुतोमठधारी । देवचतुर्भुजकोअ- धिकारी ॥ मन्दिरकोउबड़ोजबआवै । अंगभलीरचनानि बनावै २० जादिनकेसवकोउनआवै । तादिनपालिकतेन

उठावै॥भेटनिलैबहुधाधनकीनो॥नित्यकरैबहुभोगनवीनो २१एकदिनायकपाहुनआयो भोजनतौबहुभांतिबनायो॥ ताहिपरोसनकोपितुमेरो । बोलिलियोहितहौसबकेरो २२ ताहितहांबहुभांतिपरोस्यो । केहूंकहूंनखमाहँरह्योस्यो ॥ ताहिपरोसिजहांघरआयो। रोवतहौंहँसिकंठलगायो २३ चामरछन्द ॥ मोहिंमातुतत्तदूधभातभोजकोदियो। बात सोंसिराइतातक्षीरअंगुलीछियो ॥ घ्योद्रयोभय्योगयोअ नेकनर्कवासभो। हौंभ्रम्योअनेकयोनिअवधआनिश्वान भो २४ दोहा ॥ वाकोथोरोदोषमेंदीन्होंदंडअगाध ॥ राम चराचरईशतुमक्षमियोयहअपराध २५ लोककरेउअपवि त्रवहिलोकनरककोबास ॥ छुवैजोकोऊमठपतीताकोपु ण्यबिनास २६ ॥

विनदोषकाहूको घात न करै १४ । १५ । १६ गजरथाश्वादि की गढ़ीकहे समूहजोरि यत्नकरिकै दियो औ मठदियो कृपादुहूं ओर लगति है अथवा मठधारिनकी गढ़ीमें जोरिकहे मिलाइकै कालंजर दुर्ग जो प्रसिद्धहै ताको मठपति कियो यह वाल्मीकीय रामायणमें लिख्यो है यथा ॥ कालंजरेमहाराज कौलपत्यंप्रदी- यतां । एतच्छ्रुत्वातुरामेणकौलपत्येभिषेचितः १७ । १८ या जो मठपति है ताके प्रमाणको नहीं जानत १९ । २० । २१ । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ ॥

रामायणे यथा ॥ ब्रह्मस्वंदेवद्रव्यंचस्त्रीणांबालधनं चयत् ॥ दत्तंहरातियोमोहात्सपचेन्नरकेध्रुवम् २७ स्कन्द पुराणेयथा ॥ हरस्यचान्यदेवस्यकेशवस्यविशेषतः ॥ मठपत्यंचयःकुर्यात्सर्वधर्म्मबहिः कृतः २८ पद्मपुराणे यथा ॥ पत्रंपुष्पंफलन्तोयंद्रव्यमन्नंमठस्यच । योऽश्नाति

सपचेत्घोरान्नरकानेकाविंशतिः २९ देवीपुराणेयथा ॥ अभोज्यंमठिनामन्नं भुक्त्वाचान्द्रायणंचरेत् । स्पृष्ट्वामठपतिं विप्रंसवासाजलमाविशेत् ३० ॥ दोहा ॥ औरौएककथा कहौंविकलभूपकीरास ॥ वहौअयोध्याप्रसतहैवंशकारके धाम३१ ॥ वसन्ततिलकछन्द ॥ राजाहुतोप्रबलदुष्टअनेकहारी।वाराणसीविमलक्षेत्रनिवासकारी ॥ सोसत्यकेतुयहनामप्रसिद्धशूरो । विद्याविनोदरतधर्मविधानपूरो ३२॥

ब्रह्मस्व ब्राह्मणको द्रव्य औ देवताको द्रव्य और स्त्रीको द्रव्य और बालकको द्रव्य और आपनी दीन्ही जो द्रव्यहै इनको मोह वशह्वैकै जो हरतहै सो प्राणी ध्रुवकहे निश्चयकरि नरकेकहे नरक में पचेत्कहे पाकतहै अर्थ जरतहै दुखपावतहै इति कहिबेको हेतु यह कि देव द्रव्यहारी मठपति है सो नरकको प्राप्तहोतहै २७ जो प्राणी काहूदेवको मठपतिहोइ सो धर्मरहित ह्वैजातहै इत्यर्थः २८ अश्नाति कहेभोगकरतहै घोरभयानक जे एकविंशति नरकहैं तिन में पाकत है २९ मठिनको अन्न अभोज्य है खाइबे योग्य नहीं है जो खाइयेतो चान्द्रायणव्रतको करिये औ मठपति ब्राह्मणको स्पृष्ट्वा कहे छुइकै सवासा कहे बस्त्र सहित जलंकहे जलमें आविशेत् कहे प्रवेश करिये बस्त्रसहित स्नान करि डारिये इत्यर्थः ३० जो पाछे कह्यो है कि॥गुणदोषनकोजबहोइनदर्शी । तबहीं नृपहोइ निरयपदपर्शी ॥ सो बात पुष्ट करिबेके लिये सत्यकेतु की कथा कहतहैं जो वंशकार कहे डोमके घरमें बिकल कष्टयुक्त बसतहै ता भूपकीकथा कहतहौं ३१।३२ ॥

धर्माधिकारपरएकद्विजातिकीन्हों । संकल्पद्रव्यबहुधात्यहिचोरिलीन्हों ॥ बंदीबिनोदगणिकादिबिलासकर्त्ता । पावैदशांशद्विजदानअशेषहर्त्ता ३३ राजाविदेश बहुसाजिचमूगयेहो । जूझेउतहाँसमरयोधनसोंभयेहो ॥

आयेकरालकिलदूतकलेशकारी । लीन्हेगयेनृपतिकोज हैंदंडधारी ३४ धर्मराज—भुजंगप्रयातछन्द ॥ कहाभोग वैगोमहाराजदूमें । किपापैकिपुण्यैकरेउभूरिभूमें ॥राजा॥ सुनोदेवमोकोकछूसुद्धिनाहीं । कहौआपहीपापजोमोहिं माहीं ३५ धर्मराज ॥ कियोतैंद्विजोतीजोधर्माधिकारी । सोतोनित्यसंकल्पवित्तापहारी॥ दियोदुष्टरण्डानिमुंडानि लैलै । महापापमाथेतिहारेसोदैदै ३६ ॥

बन्दीजननकी जो विनोद कहे स्तुतिहै तामें औ गणिकादि कनको अनेक बिलासको कर्त्ता रह्यो औ जोदान द्रव्यराजाके इहां सों कढ़तरह्योहै तामेंदशांश ब्राह्मणपावैं औअशेष सम्पूर्ण को हर्त्ता आप रह्यो ३३ । ३४ । ३५ । ३६ ॥

हुतोतैंसबैदेशहीकोनियंता । भलेकीबुरेकीकरीतैंन चिंता ॥ महासूक्ष्महै धर्मकीबातदेखो । जितोदानदी न्होंतितोपापलेखो ३७ दोहा ॥ कालसर्प्पसेसमुझिये सबैराजकेकर्म । ताहूतेअतिकठिनहै नृपतिदानकोधर्म ३८भुजंगप्रयातछंद॥भयोकोटिधानकैसम्पर्कताको॥हुते दोषसंसर्गकेशुद्धजाको ॥ सबैपापभेक्षीणभोमुक्तलेखो । रह्योऔधमेंआनिकैकोलदेखो ३९ तारकछंद ॥ तबबो लिउठोदरबारबिलासी । द्विजद्वाररलसैयमुनातटबासी ॥ अतिआदरसोंतेसभामहँबोल्यो । बहुपूजनकैमगकोश्रम खोल्यो ४० राम—रूपमालाछंद ॥ शुद्धदेशयेरावरेसो भयेसबैयहिबार।ईशआगमसंगमादिकहीअनेकप्रकार। धामपावनकैगयेपदपद्मकोपयपाय। जन्मशुद्धभयेछुयेकु लदृष्टिहीमुनिराय ४१ ॥

३७। ३८ जाको जाशुद्ध राजाको केवल संसर्गहीके दोष रहे तासों नरकको संपर्क कहे संयोग भयो यासों राजाको भ-लेबुरेकी चिन्ताकरिबो उचितहै इतिभावार्थः जबनरकभोगसों सबै पापक्षीण भये तबनरकते मुक्तभयो छूट्यो तबअवधमें कोल कहे चांडाल भेद अथवा शूकरवेषी रूपधारी रह्यो है ३९ दरबा रजो बहिर्द्वारहै ताको बिलासी द्वारपाल खोल्योदूरिकरयो ४० रामचन्द्र ब्राह्मणन सों कहतहैं कि हेईश रावरे आगम आइबेसों औ संगम बैठिबो पौढ़िबो आदि सों तिन्हैं आदि जे और स्नान भोजनादिहैं तिनसों येहमारे देश अनेकप्रकारसों शुद्धभये औ तु-म्हारे पदपद्मके छुये सों जन्मशुद्धभये औ तुम्हारी दृष्टिसों कुल शुद्धभयो अथवा आगमसों देशशुद्ध भये औसंगम जो स्पर्शहै त्य-हिआदिदै सोजन्मादिअनेकप्रकारसों शुद्धभयेतेआगेकहतहैं४१॥

पादपद्मप्रणामहीभयेशुद्धसीरखहाथ। शुद्धलोचन रूपदेखतहीभयेमुनिनाथ॥ नासिकारसनाबिशुद्धभयेसु गंधसुनाम। कर्णकीजतशुद्धशब्दसुनायपीयुषधाम ४२ दोधकछंद॥ आयकहँसोइआयसुदीजे। आजुमनोरथ पूरणकीजे॥ ब्राह्मण॥ जीवतिसोसबराज्यतिहारी॥ निर्भयह्वैभुवलोकबिहारी ४३ ऋषि–मरहट्टाछंद॥ तु महौसबलायकश्रीरघुनायकउपमादीजैकाहि। मुनिमान सरंताजगतनियंताआदिनअन्तनजाहि॥ मारोलवणा सुरजैसेमधुमुरमारेश्रीरघुनाथ। जगजयरसभीनेश्रीशि वदीनेशूलहिलीनेहाथ ४४ दोहा॥ जाकेमेलतशूल यहसुनियेत्रिभुवनराय॥ ताहिभस्मकरिसर्बथावाहीके करजाय ४५ दोधकछन्द॥ देवसबैरणहारिगयेजू। औरजितेनरदेवभयेजू॥ श्रीभृगुनन्दनयुद्धनमांड्यो। श्रीशिवकोगानिसेवकछांड्यो ४६॥

४२ तुम्हारो जो सबराज्यहै अर्थ राजबासीहैं सो जीवति जीवनसों निर्भय ह्वैकै भुवलोकमें बिहारी कहे बिहार करतहैं अर्थ तुम्हारो राजबासीको कहूंभय नहीं है तामें हमको जीवितकी भयप्राप्तहै इतिभावार्थः ४३।४४।४५।४६ ॥

दोहा ॥ पादारघहमकोदियोमथुरामंडलआप ॥ वासोंवसनन पावहींबिनाबसेअतिपाप ४७ राम ॥ रक्षहिंगेशत्रुघ्नसुतऋषितुमकोसबकाल ॥ बासुदेवकैरक्षिहौं हँसिकहदीनदयाल ४८ भुजंगप्रयातछन्द ॥ चलौबेगिशत्रुघ्नताकोसँहारो ॥ वहैदेशतौभावतोहैहमारो ।सदाशुद्धवृन्दाबनोभूमलीहै।तहांनित्यमेरीबिहारस्थलीहै४९ यहैजानिभूमेंद्विजन्मानदीनी । बसैयत्रवृन्दाप्रियाप्रेमभीनी ॥ सनाढ्यानकीभक्तिजोजीयजागै । महादेवको शूलताकेनलागै ५० बिदाह्वैचलेरामपैशत्रुहंता । चले साथहाथीरथीयुद्धरंता ॥ चतुर्द्धाचमूचारिहूओरगाजैं । बजैदुन्दुभीदीहदिग्देवलाजैं ५१ दोहा ॥ केशववासर बारहेंरघुपतिकेशवबीर ॥ लवणासुरकेयमनिज्योंमेलेय मुनातीर ५२ ॥ मनोरमाछन्द ॥ लवणासुरआइगयो यमुनातट । अवलोकिहँस्योरघुनन्दनकेभट ॥ धनुबाण लियेनिकसेरघुनन्दनु।मदकेगजकोसुतकेहरिकोजनु५३ लवणासुर–भुजंगप्रयातछंद ॥ सुन्योतैंनहींजोइहांभूलि आयो । बड़ोभागमेरोबड़ोभक्षपायो॥शत्रुघ्न ॥ महाराज श्रीरामहैंक्रुद्धतोसों । तजोदेशकोकैसजोयुद्धमोसों ५४

पाप कष्ट अथवा पातक ४७ वासुदेव कृष्ण ४८ वृन्दा तुलसी ४९।५०।५१ लवणासुरके यमनि कहे यमराजनकेसम ५२ मदके गजेको कहे मदयुक्त गजको ५३।५४ ॥

लवणासुर ॥ वहैरामराजादशग्रीवहंता। सोतोबन्धु मेरोसुरस्त्रीनरंता॥ हतौंतोहिंवाकोकरौंचित्तभायो। महादेवकीसोंबड़ोभक्ष्यपायो ५५ भयेक्रुद्धदोऊदुवोयुद्धरंता। दुवोअस्त्रशस्त्रप्रयोगीनिहंता॥ बलीबिक्रमीधीरशोभाप्रकाशी। नश्योहर्षदोऊसबर्षैविनाशी ५६ शत्रुघ्न॥ दोहा ॥लवणासुरशिवशूलबिनऔरलानगैमोहिं। शूललियेविनभूलिहूंहौंनमारिहौंतोहिं ५७॥

रंताभोगी सरस्वती उक्तार्थः सुरस्त्रिनि रंता कहि या जनायो जो रावण इन्द्रहूको जीति देवांगणनको लैआयो ताहूको रामचन्द्रमारयो तो अतिबलीहैं तिनके तुमबन्धुहौहौतो कहे तौहकिहे निश्चयकरि हमको हतौ मारौ वाको रामचन्द्रको चित्तभायो करो महादेवकी सौंहहै जोतू रामचन्द्रको बंधुहीहै तोबड़ोभक्ष्यकहे मेरे जेभक्ष्य या ठौरकेवासी हैं तिनको पालनहार तू आयो है५५प्रयोगी कहे चलावनहार सबर्षै कहे बाण वर्षा सहित जेदोऊ बिनाशी कहे परस्पर हंता हैं तिनकोहर्ष नशिगयोहै अर्थबिकलहैं५६।५७

मोटनकछन्द ॥ लीन्हौंलवणासुरशूलजहीं। मारेउरघुनन्दनबाणतहीं ।काट्योशिरशूलसमेतगयो। शूलीकरसुःखत्रिलोकभयो ५८ बाजेदिविदुन्दुभिदीहतबै। आयेसुरइंद्रसमेतसबै॥ देव॥ कीन्होबहुबिक्रमयारनमें। मांगौबरदानरुचैमनमें ५९ शत्रुघ्न॥ प्रमाणिकाछंद ॥सनाढ्यवृत्तिजोहरै। सदासमूलसोजरै॥ अकालमृत्युसोमरै। अनेकनर्कसोपरै ६० सनाढ्यजातिसर्वदा। यथापुनीतनर्मदा॥ भजैंसजैंजेसंपदा। बिरुद्धतेअसंपदा६१ दोहा। मथुरामंडलमधुपुरी केशवस्वबशाबसाइ ॥ देखे

तबशत्रुघ्नजूरामचंद्रकेपाइ ६२इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोर चिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विर
चितायांलवणासुरबधबर्णननंनामचतुस्त्रिंशत्प्रकाशः ३४

५८ । ५९ । ६० कहिबेको हेतु यह कि ऐसे जे सनाढ्य हैं
तिनकी भक्ति हमको बरदीजै ६१ । ६२ ॥ इतिश्रीमज्जगज्ज-
ननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद नि
र्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां चतुस्त्रिंशत्प्रकाशः ३४ ॥

दोहा ॥ पैंतीसयेंप्रकाशमें अश्वमेधकियराम ॥ मोहन
लवशत्रुघ्नकोह्वैहैसंगरधाम १ विश्वामित्रबशिष्ठसोंएकस
मयरघुनाथ ॥ आरम्भोकेशवकरनअश्वमेधकीगाथ २
राम–चामरछंद ॥ मैथिलीसमेततौ अनेकदानमेंदियो ।
राजसूयआदिदै अनेकजन्ममेंकियो॥सीयत्यागपापतेहि
येसोहौंमहाडरौं।औरएकअश्वमेधजानकीबिनाकरौं ३॥

संगरधाम कहे समरभूमि में १ । २ सो ताके त्याग पाप के
मोचनार्थ बिना जानकी एक अश्वमेध करतहौं इत्यर्थः ३ ॥

कश्यप-दोहा ॥ धर्मकर्मकछुकीजईसफलतरुनकेसा
थ ॥ ताबिनजोकछुकीजईनिष्फलसोईनाथ ४ तोटकछ
न्द ॥ करियेयुतभूषणरूपरयी । मिथिलेशसुताइकस्वर्ण
मयी ॥ ऋषिराजसबैऋषिबोलिलिये । शुचिसोंसबयज्ञ
विधानकिये ५ हयशालनतेहयछोरिलियो । शशिवर्णसो
केशवशोभरयो॥अतिश्यामलएकबिराजतहै । अलिस्यो
सरसीरुहलाजतहै ६ रूपमालाछंद ॥ पूजिरोचनस्वच्छ
अक्षतपट्टबाँधियभाल । भूषिभूषणशत्रुदूषणछोड़ियोते
हिकाल ॥ संगलैचतुरंगसेनहिशत्रुहन्तासाथ । भांति
भांतिनमानदैपठयेसोश्रीरघुनाथ ७ जातहैजितबाजिके

शवजातहैंतितलोग । बोलिबिप्रनदानदीजतयत्रतत्रस भोग ॥ बेणुबीणमृदंगबाजत दुंदुभीबहुभेव । भांतिभां तिनहोतमंगलदेवसेनरदेव ८ कमलछन्द ॥ राघवकी चतुरंगचमूचपकोगनैकेशवराजसमाजनि ॥ शूरतुरंग नकेउरझैंपगतुंगपताकनकीपटसाजनि । टूटिपरैंतिनते मुक्ताधरणीउपमाबरणीकबिराजनि । बिंदुकिधौंमुखफे ननकेकिधौंराजश्रीस्रवै मंगललाजनि ९ ॥

४ शुचिसों पवित्रतासों ५ इहां श्वेत कमलजानो ६ शत्रु- दूषण रामचन्द्र ७ सभोग कहे अनेक भोग्य बस्तु सहित ८ स- साज समूह स्रवैकहे बर्षति हैं राजनके प्रयाणमों पुरस्त्री लाज कहे लावा मंगलार्थ बर्षतीहैं यह प्रसिद्धहै ९ ॥

राघवकीचतुरंगचमूचपधूरिउठीजलहूथलछाई । मा नोंप्रतापहुताशनधूमसोकेशवदासअकाशनमाई ॥ मेटि कैपंचप्रभूतकिधौं बिधुरेणुमयीनवरीतिचलाई । दुःखनि वेदनकोभवभारको भूमिकिधौंसुरलोकसिधाई १० ॥ दंडक ॥ नादपूरिधूरिपूरितूरिबनचूरिगिरिशोषिशोषिज लभूरिभूरिथलगाथकी । केशवदासआसपासठौरठौरर खिजनतिनकीसंपतिसबआपनेहीहाथकी ॥ उन्नतनवाइ नतउन्नतबनाइभूपशत्रुनकोजीविकातिमित्रनकेहाथकी । मुद्रितसमुद्रसातमुद्रानिजमुद्रितकै आई दिशिदिशिजी तिसेनारघुनाथकी ११ ॥

पंचप्रभूत पृथ्वी अप तेज वायु आकाश १० नाद कोलाहल नदी तड़ागादिकनको भूरि जलशोषिकै औ भूरिजलहीकीथलमें गाथ प्रसिद्धताकरयो अर्थ चमूके चरणसों चपि मेघादिकनको जल शोषिगयो औ थलदबातभये तासों पातालसों जलकाढि

आयो औ ठौरठौर कहे देशदेशमें जनकहे आमिलराखिकै तिन देशनकी संपति आपने हाथकहे काबूमें कीन्हों अर्थ तिन देशनमें अमलकियो औ तिन देशनके उन्नतकहे बड़ेभूपरहैं तिन्हैं नवाइ दियो जासों समयपाय विरुद्ध करिबे लायक नरहैं औ नतकहे छोटे जे भूपरहैं तिन्हैं उन्नत बनायो जासों तावेदार बनेरहैं औ शत्रु राजनकी जीविका राज्य अतिमित्र जे राजाहैं तिन्हैं सौंपि दियो औ सातों समुद्रन सों मुद्रित चिह्नित जो पृथ्वी है अर्थ सप्त समुद्र पर्य्यंत पृथ्वी में आपनी मुद्रा जो मोहरहै ताको मुद्रितकै कहे छापिकै अर्थ गज सिक्का चलाइकै ११ ॥

दोहा ॥ दिशिविदिशनिअवगाहिकैसुखहीकेशवदास ॥ बालमीकिकेआश्रमहिंगयोतुरंगप्रकास १२ दोधकछन्द॥दूरिहितेमुनिबालकधाये। पूजितबाजिबिलोकनआये॥भालकोपट्टजहाँलवबाँच्यो । बाँधितुरंगमजयरसराच्यो१३ श्लोक ॥ एकवीराचकौशल्यातस्याःपुत्रोरघूद्वहः ॥ तेनरामेणमुक्तोसौवाजीगृह्णात्विमम्बली १४ दोधकछंद॥घोरचमूचहुँओरतेगाजी। कौनहिरेयहबाँधियबाजी॥बोलिउठेलवमैंयहबाँध्यो॥योंकहिकैधनुशायकसांध्यो मारिभगाइदियेसिगरेयों॥मन्मथकेशरज्ञानघनेज्यों१५॥

अवगाहि मँझाइकै १२।१३ एको वीरःपतिर्यस्याः सा एकवीरा अर्थ भूमंडलमें जेतेप्रसिद्धबीरहैं तिनकेमध्यमें एक बीरमुख्यबीर अर्थ सबसों अधिकबीरहै पति जाको औ फेरि कैसी हैं कौशल्या कोशलाधिपकी कन्याहैं तिनके पुत्र रघूद्वह कहे रघुबंशके राज्यादि भारके धारणकर्त्ता रामचन्द्रहैं इतिशेषः इनतीनोंपदनसों एकवीरात्मजत्व सुकुलजात्मजराज्याभिषिक्तत्व जनायोतेनरामेण कहे तिनराम करिकैअसौकहे यहवाजीमुक्तः कहेछोड़ोगयोहै जो बली होयसोइमंकहेयाकोगृह्णातुकहेग्रहणकरैअथवाबाँधै १४ । १५

धीरछन्द ॥ योधाभगेबीरशत्रुघ्नआये । कोदंडलीन्हें महारोषछाये ॥ ठाढ़ोतहाँएकबालैबिलोक्यो । रोक्योतहीं जोरनाराचमोक्यो १६ शत्रुघ्न–सुन्दरीछन्द ॥ बालकछांड़िदेछांड़ितुरंगम । तोसोंकहाकरौंसंगरसंगम ॥ ऊपरबीरहियेकरुणारस । बीरहिविप्रहतेनकहूंयस १७ लव–तारकछन्द ॥ कछुबातबड़ीनकहौमुखथोरे । लवसोंनजुरौलवणासुरभोरे ॥ द्विजदोषनहींबलताकोसँहास्यो ॥ मरिहीजोरहासोकहातुममास्यो १८ चामरछन्द ॥ रामबन्धुबाणतीनिछोड़ियेत्रिशूलसे । भालमेंबिशालताहिलागियोतेफूलसे ॥ लव ॥ घातकीनराजतातगाततैंकिपूजियो । कौनशत्रुतैंहत्योजोनामशत्रुहालियो १९ ॥

मोक्योकहेछोड़िहीसेचुकेरहैंतानाराचकोरोंक्यो १६।१७।१८।१९

निशिपालिकाछन्द ॥ रोषकरिबाणबहुभांतिलवछंडियो । एकध्वजसूतयुगतीनिरथखंडियो ॥ शस्त्रदशरत्थसुतअस्त्रकरजोधरै । ताहिसियपुत्रतिलतूलसमखंडरै २० तारकछन्द ॥ रिपुहाकरबाणवहैकरलीन्हो । लवणासुरकोरघुनंदनदीन्हो ॥ लवकेउरमेंउरझयोवहपत्री । मुरझाइगिरयोधरणीमहँक्षत्री २१ मोटनकछन्द ॥ सोहैलवभूमिपरेजबहीं । जयदुन्दुभिबाजिउठेतबहीं ॥ भुवतेरथऊपरआनिधरे । शत्रुघ्नसोयोंकरुणानिभरे २२ घोड़ोतबहींतिनछोरिलयो । शत्रुघ्नहिआनंदचित्तभयो ॥ लैकेलवकोतेचलेजबहीं । सीतापहंबालगयेतबहीं २३ बालक–भूलनाछंद ॥ सुनुमैथिलीनृपएककोलवबांधियोबरबाजि । चतुरंगसैनभगाइकैतबजीतियोवहआजि ॥ उरलागिगो

शरएककोभुवमेंगिरयोमुरझाइ । वहबाजिलैलवलैच
ल्योनृपदुंदुभीनवजाइ २४ दोहा ॥ सीतागीतापुत्रको
सुनिसुनिभईअचेत ॥ मनोंचित्रकीपुत्रिकामनक्रमबचन
समेत २५ सीता—झूलनाछंद ॥ रिपुहाथश्रीरघुनाथके
सुतक्योंपरेकरतार । पतिदेवतासबकालजोलवजोमिलै
यहिबार ॥ ऋषिहैंनहींकुशहैनहींलवलेइकौनछड़ाइ ।
बनमांझटेरसुनीजहींकुशआइयोअकुलाइ २६ ॥

एकबाणसों ध्वजाखंड्यो औद्वै बाणसों सूत सारथी खंड्यो औ
तीन बाणसों रथ खंड्यो तिल औतूलरुई सम खंडरैकहेखण्डन
करतहै २० पत्री बाण २१। २२। २३। २४।२५। २६॥

कुश—दोहा ॥ रिपुहिमारिसंहारिदलयमतेलेउंछड़ा
इ ॥ लवहिमिलेहौंदेखिहौंमातातेरेपाइ २७ सवैया ॥
गाहियोंसिंधुसरोवरसों जेहिबालिबलीबरसोबरपेरयो ।
ढाहिदियेशिररावणके गिरिसेगुरुजातनजातनहेरयो ॥
शूलसमूलउखारिलियोलवणासुरपीछेतेआइसोटेरयो ।
राघवकोदलमत्तकरीसुरअंकुशदैकुशकैसबफेरयो २८
दोहा ॥ कुशकीटेरसुनीजहींफूलिफिरेशत्रुघ्न ॥ दीपवि
लोकिपतंगज्योंयदपिभयोबहुबिघ्न २९ मनोरमाछन्द ॥
रघुनंदनकोअवलोकतहीकुश । उरमांझहयोशरशुद्धनि
रंकुश ॥ तेगिरेरथऊपरलागतहीशर । गिरिऊपरज्योंग
जराजकलेवर ३० सुंदरीछंद ॥ जूझिगिरेजबहींअरिहा
रन । भाजिगयेतबहींभटकेगन । काढ़िलियोजबहींलव
कोशर । कंठलग्योतबहींउठिसोदर ३१ दोहा ॥ मिले
जोकुशलवकुशलसोंबाजिबांधितरुमूल ॥ रणमहिठाढ़े

शोभिजैंपशुपतिगणपतितूल ३२ इतिश्रीमत्सकललोक लोचनचकोर चिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजि द्विरचितायांशत्रुघ्नसम्मोहोनामपंचत्रिंशःप्रकाशः ३५॥

यमते लेउँछड़ाइ कहि या जनायो कि जो मरयो है है तो यमपुरते फेरि ल्याइहौं २७ मत्तकरि समकह्यो सो मत्तकरीको कत राघवदलमें स्थापितकरतहैं गाहियो मँझाइयो बालिबलीको जो वरवलहै ताहि बर कहे बटवृक्षसों पेरयो कहे मर्देउ औ शूल-रूपी जो मूल जर रह्यो त्यहि सहित लवणासुर को वृक्षसों इति शेषः उखारि लीन्हों जैसे वृक्षमूलके आधार सों सबल रहत है तैसे शूलसों लवणासुर सवल रह्यो तासों मूल सम कह्यो २८ पतंग पांखी २९ निरंकुश निर्भय कलेवर देहै३०। ३१। ३२॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसा
दाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्र
काशिकायां पंचत्रिंशःप्रकाशः ३५॥

दोहा ॥ छत्तीसयें प्रकाशमें लक्ष्मण मोहन जानि ॥ आयसु लहि श्रीरामको आगम भरत बखानि १ ॥ रूपमालाछन्द ॥ यज्ञमण्डलमेंहुते रघुनाथजू तेहिकाल ॥ चर्मअंगकुरंगको शुभस्वर्णकी सँग बाल ॥ आसपास ऋषीशशोभित शूरसोदरसाथ ॥ आइभग्गुललोगवर णे युद्धकी सबगाथ २ भग्गुल— स्वागताछन्द ॥ बालमीकि थल बाजिगयोजू । विप्रबालकन घेरिलयो जू ॥ एकबांचि यदुघोटकबांध्यो । दौरिदीह धनुशायक सांध्यो ३ भांतिभांति सबसैनसँहारयो । आपुहाथजनु ईशसँवारयो ॥ अस्त्रशस्त्रतबबन्धु जो धारयो । खण्डख ण्डकरिताकहँडारयो ४ रोषवेषवहबाणलयोजू । इन्द्रजी

तलगिआपुदयोजू ॥ कालरूपउरमांहहयोजू । बीरमूर्छि तबभूमिभयोजू५ तोमरछन्द ॥ बहुबीरलैअरुबाजि । ज बहींचल्योदलसाजि ॥ तबऔरबालकआनि । मगरोंकि योतजिकानि ६ तेहिमारियोतवबन्धु । तबकैगयो सब अन्धु ॥ वहबाजिलैअरुबीर । रणमेंरच्योरुपिधीर७ ॥

१ । २ घोटक घोड़ा ३ । ४ पैंतीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि ॥ रिपुहाकर बाण वहै कर लीन्हों । लवणासुरको रघुनन्दन दीन्हों ॥ औ इहां कह्योहै कि ॥ इन्द्रजीतलगि आपदयोजू ॥ तहां या जानौ कि वहै बाण इन्द्रजीतके मारिबेको लक्ष्मणको दियो रहै औ वहै लवणासुरके मारिबेको शत्रुघ्नहूको दियोरहै अथवा इन्द्रजीत लवणासुरही को नाम जानौ इन्द्रको लवणासुरहू जीत्यो है सो चौंतीसयें प्रकाशमें कह्योहै कि ॥ देवसबैरणहारि गयेजू ॥ भूमि भयो कहे भूमिमें पर्यो कानिमर्यादा५। ६ । ७ ॥

दोहा ॥ बुधिबलविक्रमरूपगुण शीलतुम्हारेराम । काकपक्षधरिबालहै जीतेसबसंग्राम ८ राम–चतुष्पदी छन्द ॥ गुणगणप्रतिपालक रिपुकुलघालक बालकते रणरन्ता । दशरथनृपको सुत मेरोसोदर लवणासुरको हन्ता ॥ कोऊहैमुनिसुतकाकपक्षयुतसुनियतहैजिनमारे । यहिजगतजालकेकरमकालके कुटिलभयानकभारे ९ ॥

काकपक्षजुलुफ ८ बालकते बाल अवस्थाही सों रणरन्ता कहे रणमें रमत रह्योहै यह जो जगत् जाल कहे संसार समूह है अथवा जगत् रूपी जाल फांस है औ काल कहे समयहै तिनके जे कुटिल कहेटेढ़ेकर्महैं तेभारे कहे अतिभयानकहैं या जगत् में समय के फेरसों ऐसी अनुचित बात ह्वैजातिहै जाको देखिके बड़ो भय होत है इत्यर्थः ९ ॥

मरहट्टाछन्द ॥ लक्ष्मणशुभलक्षण बुद्धिविचक्षण

लेहुबाजिकरशोधु । मुनिशिशुजनिमारहु बन्धुउधारहु क्रोधनकरहुप्रबोधु ॥ बहुसहित दक्षिणा दै प्रदक्षिणा चल्यो परसरणधीर । देख्यो मुनिबालक सोदर उपज्यो करुणाअद्भुतबीर १० कुश—दोधकछन्द ॥ लक्ष्मणको दलदीरघदेख्यो । कालहुतेअतिभीम विशेख्यो ॥ दोमें कहौसो कहालवकीजै । आयुधलेहौकिघोटकदीजै ११॥

प्रबोध क्षमा मुनि बालकनको लघुबेषदेखि करुणारसभयो औ सोदर शत्रुघ्न को मूर्च्छित देखि आश्चर्य भयो कि एतो बड़ो वीर ताको बालकन मूर्च्छित करयो शत्रुघ्न को मूर्च्छितकरयोहै तासोंइनकोमारोचाहियै यासोंबीररसभयो १० । ११ ॥

लवबूझतहौतौयहप्रभुकीजै । मोअसुदैबरु अश्वनदीजै लक्ष्मणकोदलसिंधुनिहारो । ताकहंबाणअगस्त्यतिहारो १२ कौनयहैघटिहैअरिघेरे । नाहिंनहाथशरासनमेरे ॥ नेकुजहींदुचितोचितकीन्हों । सूरबड़ोइषुधीधनुदीन्हों १३ लैधनुबाणबलीतबधायो । पल्लवज्योंदलमारिउड़ायो योंदोउसोदरसेनसंहारैं । ज्योंबनपावकपौनविहारैं १४ भागतहैंभटयोंलवआगे । रामकेनामतेज्योंअघभागे ॥ यूथपयूथयोंमारिभगायो । बातबड़ेजनुमेघउड़ायो १५ सवैया॥अतिरोषरसेकुशकेशवश्रीरघुनायकसोंरणरीतिरचै । त्यहिबारनबारभईबहुबारनखड्गहनैनगणैबिरचै। तहंकुंभफटैंगजमोतीकटैंतेचलेबहुशोणितरोचिरचै । परिपूरणपूरपनारनतेजनुपीककपूरनकीकिरचै १६ ॥

बूझत कहे पूँछत असुप्राण १२ कौनकहे कहा अरिकेघेरेमें याही बात ना घाटि है कि हमारे हाथमें शरासन धनुष नहीं है या प्रकार कहत लव नेक चित्तको दुचित्तो करयो अर्थ युद्धहूको बि-

चार विचारतरहे औ सूर्यकी स्तुतिहू में चित्तको लायो तबसूरकहे सूर्य बड़ो इपुधी तर्कस औ धनुषदीन्हों यथा जैमिनिपुराणे (जैमिनिरुवाच) स्तोत्रेणानेनसंतुष्टो रविर्दिव्यंशरासनं ॥ ददौलवायशौरंच जयतिश्रेयमुत्तमं १ सुवर्णपट्टैरुचिरैर्निबद्धंसगुणंदृढं ॥ धनुःप्राप्यमहाबाहुर्लवःकुशमथाब्रवीत् २ उपादिष्टंहियत्स्तोत्रं मुनिनाकरुणात्मना॥ शौरंतज्जपितंभ्रातस्तस्माल्लब्धंमयाधनुः १ ३। १४ रसेकहे युक्त तेहिबारकहे समयमों बारकहे बेर ना भई अर्थ थोरिही बेरमें बहुत बारण जे हाथी हैं तिनको खड्ग तरवारिसों हनत हैं औ काहूको गनतनहीं हैं औ चिरचैकहे बिरुझातहैं पीकके पूरकहे धारसमरुचिरहै कपूर किरचसममोतीहैं १५।१६ ॥

नाराचछन्द ॥ भगेचयेचमूचमूयछोड़िछोड़िलक्ष्मणै। भगेरथीमहारथीगयंदवृन्दकोगणै ॥ कुशैलवैनिरंकुशैबिलोकिबंधुरामको । उठ्योरिसाइकैबलीबंध्योसोलाजदामको १७कुश-मौक्तिकदामछंद॥नहौंमकराक्षनहौंइंद्रजीत। बिलोकितुम्हैंरणहोहुंनभीत ॥ सदातुमलक्ष्मणउत्तमगाथ । करौजनिआपनिमातुअनाथ १८ लक्ष्मण ॥ कहौ कुशजोकहिआवतिबात । बिलोकतहौंउपबीतहिगात ॥ इतेपरबालबहिक्रमजानि । हियेकरुणाउपजैअतिआनि १९ बिलोचनलोचतहैं लखितोहिं । तजौहठआनिभजो किनमोहिं ॥क्षम्योंअपराधअजौंघरजाहु । हियेउपजाउ नमातहिंदाहु २० दोधकछन्द ॥ हौंहतिहौंकबहूंनहिंतोहीं । तूअरुबाणनबेधहिमोहीं ॥बालकविप्रकहाहनियेजू। लोकअलोकनमेंगनियेजू २१ ॥

एकोदशसहस्राणि योधयेद्यस्तुधन्विनां ॥ शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्चसमहारथउच्यते १७ । १८ । १९ हमारेलोचन तुम्हारे देखिवेको लोचनकहे चाहत हैं भजो मिलौ २० । २१ ॥

हरिणीछन्द ॥ लक्ष्मणहाथहथ्यारधरौ । यज्ञरथाप्र भुकोनकरौ ॥ हौंहयकोकबहूंनतजौं । पट्टलिख्योसोइबांचिलजौं २२ स्वागताछन्द॥ बाणएकतबलक्ष्मणछंड्यो॥ चर्मवर्मबहुधातिनखंड्यो ॥ ताहिहीनकुशचित्तहिमोहै । धूमभिन्नजनुपावकसोहै २३ रोषवेषकुशबाणचलायो । पौनचक्रजिमिचित्तभ्रमायो॥मोहमोहिरथऊपरसोये। ताहिदेखिजड़जंगमरोये २४ नाराचछन्द॥ बिरामरामजानिकैभरत्थसोंकथाकहैं । बिचारिचित्तमांभबीरबीरवेकहांरहैं ॥ सरोषदेखिलक्ष्मणैत्रिलोक्यतौबिलुप्तह्वै । अदेवदेवतात्रसैंकहातेबालदीनह्वै २५ राम-रूपमालाछन्द॥ जाहुसत्वरदूतलक्ष्मणहैंजहांयहिबार । जाइकैयहबातबर्णहुरक्षियोमुनिबार ॥ हैंसमर्थसनाथवेअसमर्थऔरअनाथ । देखिबेकहँल्याइयोमुनिबालउत्तमगाथ २६ सुन्दरीछन्द ॥ भग्गुलआइगयेतबहींबहु । बारपुकारतआरतरक्षहु ॥ वेबहुभांतिनसैनसंहारत । लक्ष्मणतोतिनकोनहिंमारत २७ बालकजानितजैंकरुणाकरि । वेअतिढीठभयेदलसंहरि ॥ केहुंनभाजतगाजतहैंरण । बीरअनाथभयेबिनलक्ष्मण २८ जानहुजेउनकोमुनिबालक । वेकोउहैंजगतीप्रतिपालक । हैंकोउरावणकेकिसहायक । कैलवणासुरकेहितलायक २९ ॥

याछन्दको सारवतीहू कहतहैं २२ तिनको कुशको धूमसम चर्मवर्म खण्डितह्वैगयो क्रोध औ प्रतापसों अग्निसम कुशके अंग शोभितहैं २३ पवन चक्र बौंड़र २४ विराम बेर त्रैलोक्य के अदेव दैत्य औ देवता बिलुप्तह्वै कहे लुकिकै त्रसैंकहे डरातहैं अर्थ

लुकिहू रहतहैं ताहूपर भयनहीं मिटत यासों अतिभय जानौ
२५ । २६ वारकहे बारबार २७ । २८ जैकहे जानि जगती प्रति
पालक ईश्वर अथवा राजा सहायक कहेबली २९ ॥

भरत--बालकरावणकेनसहायक । नालवणासुरकेहि
तलायक ॥ हैंनिजपातकवृक्षनकेफल । मोहतहैंरघुबंशि
नकेवल ३० जीतहिकोरणमांभरिपुघ्नहि । कोकरैलक्ष्म
णकेबलबिघ्नहि ॥ लक्ष्मणसीयतजीजबतेबन । लोकअ
लोकनपूरिरहेतन ३१ छोड़ोइचाहततेतबतेतन । पाइनि
मित्तकरेउमनपावन ॥ शत्रुघ्नतज्योतनसोदरलाजनि ।
पूतभयेतजिपापसमाजनि ३२ दोधकछन्द ॥ पातककौ
नतजीतुमसीता । पावनहोतसुनेजगगीता ॥ दोषविहीन
हिदोषलगावै । सोप्रभुयेफलकाहेनपावै ३३ हमहूंत्यहि
तीरथजाइमरैंगे । सतसंगतिदोषअशेषहरैंगे ॥ बानररा
क्षसऋक्षतिहारे । गर्बचढ़ेरघुबंशहिभारे ॥ तालगियहकै
बातबिचारी । हौप्रभुसंततगर्बप्रहारी ३४ चंचरीछन्द ॥
क्रोधकैअतिभरतअंगदसंगसंगरकोचले । जामवन्तच
लेबिभीषणऔरबीरभलेभले ॥ कोगनैचतुरंगसेनहिरोद
सीन्रपताभरी । जाइकैअवलोकियोरणमेंगिरेगिरिसेकरी
३५ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि
श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां भरतसमा
गमोनामषट्त्रिंशःप्रकाशः ३६ ॥

मोहतकहे मूर्छित करत हैं अर्थहीनो करत हैं ३० लोकमें
घातन करिकै अलोकन दोषनसों पूरिरहे हैं ३१ जबतेअलोक
प्राप्तभयो तबते ता अलोकके मिटिबे के यतनको छोड़ोई चा-
हतरहे सो युद्धरूपी निमित्त कारण पाइकै तनको छोड़ि मन

को पावन करयो शत्रुघ्नके बंधु लक्ष्मण सीताको बनमें छोड़ि आये याविधि लोकापबाद लाजनसों शत्रुघ्नहू तनको छोड़यो पूत पवित्र छन्दउपजातिहै ३२ पातक कौन एतोभरतसों रामचन्द्रको प्रश्नहै ३३ तेहितीर्थ अर्थ युद्धतीर्थ में छन्द उपजाति गाथाहै ३४ संगरयुद्ध रोदसीकेहभू आकाश नृपताकहे नृपसमूहनसोंभरी द्यावाभूमीचरोदसी इत्यमरः ३५ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानि
प्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभ-
क्तिप्रकाशिकायांषट्त्रिंशःप्रकाशः ३६ ॥

दोहा ॥ सैंतीसयेंप्रकाशमेंलवकटुबैनबखान । मोहन बहुरिभरत्तकोलागेमोहनबान ॥ १ ॥ रूपमालाछंद ॥ जामवंतविलोकिकैरणभीमभूहनुमंत । शोणकीसरिताबहीसुअनंतरूपदुरंत ॥ यत्रतत्रध्वजापताकादीहदेहनिभूप । टूटिटूटिपरेमनोबहुबातवृक्षअनूप २ पुंजकुंजरशुभ्रस्यंदनशोभिजैसुठिशूर । ठेलिठेलिचलेगिरीशनिपेलिशोणितपूर ॥ ग्राहतुंगतुरंगकच्छपचारुचर्मबिशाल । चक्रसेरथचक्रपैरतगृद्धवृद्धमराल ३ केकरेकरबाहुमीनगयंदशुंडभुजंग । चीरचौरसुदेशकेशशिबालजानिसुरंग ॥ बालकाबहुभांतिहैंमणिमालजालप्रकास । पैरिपारभयेतेहैंमुनिबालकेशवदास ४ ॥

१ जामवन्त औ हनुमन्त दुरन्तकहे दुःख करिकै पाइयतहै अन्तपार जिनको अर्थ अतिबड़ी औ अनन्तकहे अनेकश्रोण रुधिरकी सरिता बहीहैं जामें ऐसीजो रणकी भीम भयानकभूहै ताको विलोक्यो बड़े पताका ध्वजा कहावतहैं छोटे पताका कहावत हैं २ सुठि शूर अर्थ अतिशूर जे सन्मुख घावसहि मरेहैं ठेलिकहे

टारि पेलिकहे दबाइकै जैसे शिलनको टारि नदिनको पूर प्रवाह चलतहै तैसे इहां पर्वत समजे गजरथहैं तिनको टारिकै शोणितके पूरचले यासों अति गंभीरता औ बेगता जोनदीहू तीरगृध्र रहतहैं इहांऊँहैं औश्वेत ह्वैरहेहैं अंगलोम जिनके ऐसे जेवृद्ध प्राणी हैं तेई हंसहैं ३ केकरे गेंगटा भुजंग सर्प ४ ॥

दोहा ॥ नामबरणलघुबेषलघुकहतरीभिहनुमन्त ॥ इतोबड़ोविक्रमकियोजीतेयुद्धअनन्त ५ भरत--तारक छंद ॥ हनुमन्तदुरंतनदीअबनाखौ । रघुनाथसहोदरजी अभिलाखौ ॥ तबजोतुमसिंधुहिनांघिगयेजू । अबनांघ हुकाहेनसीतभयेजू ६ हनुमान्--दोहा ॥ सीतापदसन्मुखहुतेगयोसिंधुकेपार ॥ बिमुखभयेक्योंजाहुंतरिसुनोभरतयहिबार ७ ॥ तारकछंद ॥ धनुबाणलियेमुनिबालक आये । जनुमन्मथकेयुगरूपसुहाये ॥ करिबेकहँशूरनके मदहीने । रघुनायकमानहुंद्वैबपुकीने ८ भरत ॥ मुनिबालकहौतुमयज्ञकरावो । सुकिधौंबरबाजिहिबांधनधावो ॥ अपराधक्षमौसबआशिषदीजै । बरबाजितजोजियरोषन कीजै ९ दोहा ॥ बांध्योपट्टजोशीशयहक्षत्रिनकाजप्रकास ॥ रोषकरेउबिनकाजतुमहमबिप्रनकेदास १० ॥

वर्णकहे नामके अक्षर ५ रघुनाथ सहोदर जे शत्रुघ्न औ लक्ष्मणहैं तिनको जीमें अभिलाषौ अर्थ या नदीनांघि लक्ष्मण शत्रुघ्न को देखो जाइ ६ । ७ । ८ मुनिनके बालकनको यज्ञकराइबो उचितहै अश्व बांधियज्ञ रोंकिबोउचित नहींहै इतिभावार्थः ९ । १०

कुश--दोधकछंद ॥ बालकबृद्धकहौतुमकाको । देहनिकोकिधौंजीवप्रभाको ॥ हैजड़देहकहैसबकोई । जीवसोबालकबृद्धनहोई ११ जीवजरैनमरैनाहिंछीजै । ताकहँ

शोककहाकरिकीजै ॥ जीवहिविप्रनक्षत्रियजानो । केव
लब्रह्महियेमहँआनो १२ जोतुमदेहुहमैंकछुशिक्षा । तौ
हमदेहिंतुम्हैंयहभिक्षा ॥ चित्तबिचारपरैसोइकीजै । दो
षकछूनहमैंअबदीजै १३ ॥ स्वागताछन्द ॥ विप्रबाल
कनकीसुनिबानी । क्रुद्धसूरसुतभोअभिमानी १४ सुग्री
व ॥ विप्रपुत्रतुमशीशसँभारो । राखिलेहिअबताहिपुका
रो ॥ १५ लव–गौरीछन्द ॥ सुग्रीवकहातुमसोंरणमां
डों । तोकोअतिकायरजानिकैछांड़ों ॥ बालितुम्हैंबहुना
चनचायो । कहारणमंडनसोसनआयो १६ ॥

भरत मुनि बालक पद कह्यो है तासों कुश यह कहत हैं ११ । १२ शिक्षादै हमारो बोधकरौ इत्यर्थः १३ । १४ छन्द उपजाति है १५ फल कहे गांसी ता बाणके लागे बात सम अर्थ औ उर सम बहुत भ्रमत भये औ मुरझातभये १६ ॥

तारकछन्द ॥ फलहीनसोताकहँ बाणचलायो । अ
तिवातभ्रम्यो बहुधामुरझायो ॥ तबदौरिकैबाण विभीष
णलीन्हो । लवताहिविलोकतहीहँसिदीन्हो १७ सुन्द
रीछन्द ॥ आउविभीषणतूरणदूषण । एकतुहींकुलको
कुलभूषण ॥ जूझजुरेजेभलेभयजीके । शत्रुहिआइमि
लेतुमनीके १८ दोधकछन्द ॥ देवबधूजबहींहरिल्यायो ।
क्योंतबहींतजिताहिनआयो ॥ योंअपनेजियके उरआ
ये । क्षुद्रसबैकुलछिद्रबताये १९ दोहा ॥ जेठोभैया अन्न
दा राजापितासमान । ताकीपत्नीतूकरी पत्नीमातुसमा
न २० कोजानीकैबारतूकहीनक्वैहैमाइ ॥ सोईतैंपत्नीकरी
सुनुपापिनकेराइ २१ ॥ तोटकछन्द ॥ सिगरेजगमांझ

हँसावतहै । रघुबंशिनपापनसावतहै ॥ धिकतोकहँतूअ जहूँजोजियै । खलजाइहलाहलक्योंनपियै २२ ॥

जूझ जुरे पर भले जीके भयसों शत्रुको भाइमिलै १७ देव वधू सीता १८ । १९ । २० । २१ । २२ ॥

कछुहैअबतोकहँलाजहिये । कहिकौनबिचारहथ्यार लिये ॥ अबजाइकैरोषकिआगिजरौ । गरुबांधिकैसा गरबूड़िमरौ २३ ॥ दोहा ॥ कहाकहौंहौंभरतको जानत हैसबकोय ॥ तोसोपापीसंगहै क्योंनपराजयहोय २४ ब हुतयुद्धभोभरतसों देवअदेवसमान ॥ मोहिमहारथपर गिरे मारेमोहनबान २५ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचन चकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्राजिद्विरचि तायांभरतमोहनोनाम सप्तत्रिंशत्प्रकाशः ३७ ॥

करीष सूख्योगोबर बिनुआकरढाकरि प्रसिद्धहै २३ । २४ । २५ श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजान कीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांसप्तत्रिंशत्प्रकाशः ३७ ॥

दोहा ॥ अड़तीसयेंप्रकाशमें अंगदयुद्धबखान । ब्या जसैनरघुनाथको कुशलवआश्रमजान १ भरतहिभयो बिलम्बकछु आयेश्रीरघुनाथ । देख्योवहसंग्रामथल जूझिपरेसबसाथ २ तोटकछंद ॥ रघुनाथहिआवतआ इगये । रणमेंमुनिबालकरूपरये ॥ गुणरूपसुशीलनसों रणमें । प्रतिबिंबमनोनिजदर्प्पणमें ३ मधुतिलकछंद ॥ सीतासमानमुखचंद्रबिलोकिराम । बूझ्योकहांबसतहौ तुमकौनग्राम ॥ मातापिताकवनकौन्यहिकर्मकीन । बि द्याविनोदशिषकौन्यहिअस्त्रदीन ४ ॥

१ । २ गुण औ रूप औ शील स्वभावन सहित रणमें अर्थ रणकरनेमें मानों दर्पणमें आपने प्रतिबिंबही आइगये हैं जैसे दर्पणके निकट जातही दर्पणमें आपनेही स्वभावादिसों युक्त आपने प्रतिबिंब आइजात हैं ता विधि रणभूमिरूपी दर्पण के निकट रामचन्द्रके आवतही रामचन्द्रहीके स्वभावादि सों युक्त प्रतिबिंब सम लवकुश आये इत्यर्थः ३ भाग्यवान् पुत्रको मुख माताको ऐसो होतहै ॥ धन्योमातृमुखःसुतः इतिप्रमाणात् कहो कहे कौन स्थानमें कर्म जातकर्मादि ४ ॥

कुश--रूपमालाछन्द॥ राजराजतुम्हैंकहामम्बंशसों अब्रकाम। बूझिलीन्हेहुईशलोगनजीतिकैसंग्राम॥राम॥ हौंनयुद्धकरौंकहेबिनाबिप्रबेषबिलोकि। बेगिबीरकथाकहौ तुमआपनीरिसरोकि ५ कुश ॥ कन्यकामिथिलेशकीहम पुत्रजायेदोइ। बालमीकिअशेषकर्मकरेकृपारसभोइ॥ अ स्त्रशस्त्रसबेदयेअरुवेदभेदपढ़ाइ। बापकानहिंनामजान तआजुलौंरघुराइ ६ दोधकछन्द ॥ जानकिकेमुखअक्षर आने। रामतहींअपनेसुतजाने॥ बिक्रमसाहसशीलउ चारे। युद्धकथाकहिआयुधडारे ७ राम ॥ अंगदजीतिइ न्हैंगहिल्यावो। कैअपनेबलमारिभगावो॥ बेगिबुझाव हुचित्तचिताको। आजुतिलोदकदेहुपिताको ८ अंगद लोअँगअंगनिफूले। पौनकेपुत्रकह्योअतिभूले॥ जाइजु रेलवसोंतरुलैके। बातकहीशतखण्डनकैके ९ ॥

५ । ६ जानकी को नाम लीन्हो तासों औ अपने सदृश बि क्रमसाहस शीलहूसों बिचारयो कि हमारेही पुत्रहैं ७ हम तुम सों कहि राख्यो है कि कोऊ हमारे बंशमें तुम सों युद्ध करिहै सो ये हमारेही पुत्र हैं तासों इनको जीतिकै ता समय सों क्रो- धाग्निसों जरत चित्तरूपी जो चिताहै ताको बुझावो औ रघुबं-

शिनसों युद्धकरि पिताको तिलोदक देनकह्योहै सो देउ अथवा हमारेही पुत्र ह्वैकै हमारे अश्वबांधि वृथा युद्धकरयो ता क्रोधसों जरत जो चित्तरूपी चिताहै ताको बुझाओ औ पिताको तिलोदक देहु ८ । ९ ॥

लव ॥ अंगदजोतुमपैबलहोतो । तौवहसूरजकोसुत कोतो ॥ देखतहीजननीजोतिहारी । वासँगसोवतिज्योंब रनारी १० जादिनतेयुवराजकहाये । विक्रमबुद्धिविवेक बहाये ॥ जीवतपैकिमरेपहँजैहै । कौनपिताहितिलोदक दैहै ११ अंगदहाथगहैतरुजोई । जाततहींतिलसोंक टिसोई ॥ पर्बतपुंजजितेउनमेले । फूलकेतूललैबाणन झेले १२ बाणनबेधिरहीसबदेही । बानरतेजोभयेअब सेही ॥ भूतलतेशरमारिउडायो । खेलिकेकंदुककोफलपा यो १३ सोहतहैअधऊरधऐसे । होतबटानटकोनभजैसे ॥ जानकहूंनइतेउतपावै । गोबलचित्तदशोदिशिधावै १४ बोलघट्योसोभयोसुरभंगी । ह्वैगयोअंगात्रिशंकुकोसंगी ॥ हारघुनायकहौंजनतेरो । रक्षहुगर्बगयोसबमेरो १५ दीन सुनीजनकीजबबानी । जोकरुणालवबाणनआनी ॥ छांड़ि दियोगिरिभूमिपरयोई । बिह्वलह्वैअतिमानोमरयोई १६ ॥

वरनारी अर्थ बिवाहिता स्त्री १० जो रामचन्द्र कह्यो कि इन को जीतिकै आजु पिताको तिलोदकदेहु सो सुनिकै लव कहत हैं कि हमको जीतिकै जो तिलोदक तुमदेहौ सो जीवत पिता जे सुग्रीव हैं तिनको प्राप्तह्वैहै कि मरेपिता जे बालि हैं तिनको प्राप्तह्वैहै ११ झेले दूरिकिये १२ सेही शल्लकीनाम बनजंतु बिशेष १३ । १४ त्रिशंकुको संगी अर्थ त्रिशंकुसम शीशनीचे चरण ऊपरभये १५ । १६ ॥

विजयछंद ॥ भैरवसेभटभूरि भिरेबल खेतखड़े कर तारकरेकै । भारेभिरेरणभूधरभूप नटारेटरेइभकोटिञ्अरेकै ॥ रोषसोंखड्गहनेकुशकेशव भूमिगिरेनटरेडूंगरे कै। रामविलोकिकहैरसअद्भुत खायेमरेनगनागमरेकै १७ दोधकछंद ॥ बानरऋक्षजितेनिशिचारी । सेनसबैयकबाणसँहारी ॥ बाणबिंधेसबहीजबजोये । स्यन्दन में रघुनंदनसोये १८ गीतिकाछंद ॥ रणजोइकै सबशीशभूषणसंग्रहेजेभलेभले । हनुमंतकोअरुजामवंतहि बाजिसोंग्रसिलैचले ॥ रणजीतिकैलवसाथलैकरिमातुके कुशपांपरे । शिरसूंघि कण्ठलगाय आननचूमि गोद दुवौधरे १९ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां कुशलवजयवर्णनंनामाष्टात्रिंशत्प्रकाशः ३८ ॥

भैरव ऐसे जे भूरिभट हैं ते बलसों भिरे हैं सो इन भटनको कहे कैधौं याहीपरे कहे अतिबिकट खेत कहे युद्धकेलिये कर्त्तार विधातैं करेकहे बनायो है अर्थ त्रिकालज्ञ विधाता यह अति बिकट युद्धभावी जानिकै ताकेलिये ऐसे प्रबल बीर आपने हाथसों बनायो है या युद्धमें एईबीर भिरेहैं और बीर न भिरि सक्के इति भावार्थः अथवा बलसों खड़े जे खेतहैं तिनके कर कहे कर्त्ता अर्थ जिन रावणादि सों रण कीन्हों है ऐसे जे भैरव ऐसे भूरि भट हैं तेकरे कहे अति कठोर मारु मारु इत्यादि तार कहे उच्चस्वर कै कहे करिकै रणमें भिरेहैं कोऊ कादरस्वर नहीं बोलत इति भावार्थः औ भूधर पर्वत सम अचल जे भारे भूपहैं अथवा भूधर कहे भूमिके धरनहार अर्थ जेती भूमिधरैं तेती कैसेहू न छोड़ैं ऐसे जे भारे भूप हैं ते कोटिन इभ जे हाथी हैं तिनको अरे कहे हठे करिकै अर्थ पगनमें जंजीरादि डारिजामेंटरैं नहीं ऐसे करके

युद्धमें भिरे हैं तेभट औ भूपमरेकै कटेहूँ अर्थ शिर कटिगयो है ताहूपर भूमिमें न गिरे अर्थ जिनको कबंधहू लरत रह्यो औ तिन हाथिनको परे देखिकै अद्भुतरस युक्त है रामचन्द्र कहत हैं कि नगजे पर्वत हैं तिनके खायें कहे खावां मारेहैं कि नाग कहे हाथी मरे हैं अर्थ ऐसे मरे हाथिनके कतारे परे हैं मानों पर्वतनके खावां मारे हैं अथवा नागनग जे गजमुक्ताहैं तिनके खायें सममारिगये हैं अर्थ यह जहां गजमुक्तन के खावां मारि गयेहैं तहां हाथिन की कौन कहे १७ तैंतीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि रामकी जय सिद्धि सों सियको चले बन छांड़ि सो जय सिद्धिरूप जे सीता हैं तिन को तौ वन में छोंड्यो जय सिद्धि कैसे प्राप्त होय सो त्रिकालज्ञ जे रामचन्द्र हैं ते यह बिचारिकै सोई रहे १८।१९ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसा-
दायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रका-
शिकायामष्टत्रिंशत्प्रकाशः ३८ ॥

दोहा ॥ नवतीसयेंप्रकाशसियरामसँयोगनिहारि ॥ यज्ञपूरिसबसुतनकोदीन्हीराजबिचारि १ रूपमालछन्द ॥ चीन्हिदेवरकोबिभूषणदेखिकैहनुमंत । पुत्रहौंबिधवाकरीतुमकर्मकीनदुरंत ॥ बापकोरणमारियोअरुपितृभ्रातसँहारि । आनियोहनुमंतबांधिनआनियोम्बाहिंगारि २ दोहा ॥ मातासबकाकीकरीविधवाएकहिबार ॥ मोसेऔरनपापिनीजायेबंशकुठार ३ दोधकछन्द ॥ पापकहांहतिबापहिजैहो । लोकचतुर्दशठौरनपैहो ॥ राजकुमारकहैनहिंकोऊ । जारजजाइकहावहुदोऊ ४ कुश ॥ मोकहँदोषकहासुनिमाता । बांधिलियोजोसुन्योउनिभ्राता ॥ हौंतुमहींत्यहिबारपठायो । रामपिताकबमोहिंसुनायो ५ दोहा ॥ मोहिंबिलोकिविलोकिकैरथपर

पौढ़ेराम ॥ जीवतछोड़्योयुद्धमेंमाताकरिबिश्राम ६ ॥

१ दुरन्त भनुत्तम गारि कलंक २।३।४।५ बिश्रामक्षमा ६ ॥

सुंदरीछन्द ॥ आइगयेतबहींमुनिनायक । श्रीरघुनंदनकेगुणगायक ॥ बातबिचारिकहीसिगरीकुश । दुःखकियोमनमेंकलिअंकुश ७ रूपवतीछंद ॥ कीजैनबिडंबनसंततसीते । भावीनमिटैसुकहूंजगगीते ॥ तूतोपतिदेवनकीगुरुबेटी । तेरीजगमृत्युकहावतिचेटी ८ तोटकछन्द ॥ सिगरेरणमंडलमांझगये । अवलोकतहींअतिभीतभये ॥ दुहुँबालनकोअतिअद्भुतबिक्रम । अवलोकिभयोमुनिकेमनसंभ्रम ९ ॥

कैसेहैं मुनिनायक कलि जो कलियुग है ताके अंकुश हैं ७ बिडम्बन दुःख हे बेटी तू पतिदेव कहे पतिब्रतन की गुरुहै चेटी दासी तेरीआज्ञासों मृत्युमरे बीरनको जियाइहै २ इतिभावार्थः ८ छन्द उपजातिहै ९ ॥

दंडक ॥ शोणितसलिलनरबानरसलिलचरगिरिबालिसुतबिषबिभीषणडारेहैं । चमरपताकाबड़ीबड़वाअनलसमरोगरिपुजामवंतकेशवबिचारेहैं । बाजिसुरबाजिसुरगजसेअनेकगजभरतसबंधुइंदुअमृतनिहारेहैं । सोहतसहितशेषरामचंद्रकुशलवजीतिकैसमरसिंधुसाँचेहूसुधारेहैं १० ॥ सीता--दोहा ॥ मनसाबाचाकर्मणाजोमेरेमनराम । तौसबसेनाजीउठैहोहिघरीनबिराम ११ ॥ दोधकछंद ॥ जीयउठीसबसेनसभागी । केशवसोवततेजनुजागी ॥ स्योसुतसीतहिलैसुखकारी । राघवकेमुनिपाँयनपारी ॥ १२ ॥ मनोरमाछन्द ॥ शुभसुंदरिसोदरपुत्र

मिलेजहँ। वर्षाबर्षैसुरफूलनकीतहँ॥बहुधादिबिदुंदुभिके गणबाजत। दिगपालगयंदनकेगणलाजत १३॥

कविजन समरको सिंधुसम कहतई हैं औ कुश लवसमर जीतिकै अंगननसहित सांचो सिंधु सँवारयो इत्यर्थः सो कहत हैं सलिलचर ग्राहादि गिरिमैनाक रुधिररंग सों अरुण चमर जानो रोगरिपु धन्वंतरि अड़तीसयें प्रकाशमें कह्योहै कि हनुमन्तको अरु जाम्बवन्तहि बाजिसों ग्रसिलैचले। तासोंइहांदूसरे जामवन्त जानो अथवा प्रथमग्रसिलैगये हैं फेरि छोंड़िदिये हैंतेऊ तहां हैं भरत चन्द्रमाहैं शत्रुघ्नअमृतहैं१०बिरामबेर११।१२।१३॥

अंगदस्वागताछंद॥ रामदेवतुमगर्वप्रहारी। नित्य तुच्छअतिबुद्धिहमारी॥ युद्धदेवअमतैंकहिआयो। दास जानिप्रभुमारगलायो १४॥ रूपमालाछंद॥ सुंदरीसु तलैसहोदरबाजिलैसुखपाइ।साथलैमुनिबालमीकिहिदी हदुःखनशाइ॥रामधामचलेभलेयशलोकलोकबढ़ाइ॥भां तिभांतिसुदेशकेशवदुंदुभीनबजाइ १५ भरतलक्ष्मणश त्रुहापुरभीरटारतजात। चौंरढारतहैंदुवौदिशिपुत्रउत्तम गात॥ छत्रहैकरइन्द्रके शुभशोभिजैबहुभेव। मत्तदन्तिच ढ़ेपढ़ैंजयशब्ददेवनृदेव १६ दोधकछन्द॥ यज्ञथलीरघु नंदनआये। धामनिधामनिहोतबधाये॥ श्रीमिथिलेशसु ताबड़भागी। स्योसुतसासुनकेपगलागी १७॥

पच्चीसयें प्रकाशमें अंगदकह्योहै कि॥ देवहौनरदेवबानरनैऋत- तादिकवीरहौ॥ ताबातको ते कहतहैं कि हेदेव तब जो हमसों युद्धकरिवेको कहि आयोरहे अर्थ हमयुद्ध करिबेको कह्योरहैसो अमसों कह्योरहै सोदास जानिकै हमारो गर्वदूरिकरिकै हमको मारगराह लगायो रामचन्द्रहूको वचनरह्यो कि कोउमेरे बंशमें

तोसों युद्धकरिहै तबतेरो मन मोसों शुद्धह्वैहै सोइहां धंगदको मनशुद्धभयो जानो १४ । १५ । १६ । १७ ॥

दोहा ॥ चारिपुत्रद्वैपुत्रसुत कौशल्यातबदेखि ॥ पायो परमानंदमन दिगपालनसमलेखि १८ ॥रूपमालाछन्द॥ यज्ञपूरणकैरमापतिदानदेतअशेष। हीरनीरजचीरमाणिकवर्षिबर्षाबेष ॥ अंगरागतड़ागबागफलेभलेबहुभांति। भवनभूषणभूमिभाजनभूरिबासरराति १९ दोहा ॥ एक अयुतगजबाजिद्वैतीनिसुरभिशुभवर्ण ॥ एकएकबिप्रहिंदईकेशवसहितसुबर्ण २० देवअदेवनृदेवअरुजितनेजीवत्रिलोक ॥ मनभायोपायोसबनकीन्हेसबनअशोक २१ अपनेअरुसोदरनकेपुत्रबिलोकिसमान न्यारेन्यारेदेशदैनृपतिकरेभगवान २२ कुशलवअपनेभरतकेनंदनपुष्करतक्ष ॥ लक्ष्मणकेअंगदभयेचित्रकेतुरणदक्ष २३ भुजंगप्रयातछन्द॥ भलेपुत्रशत्रुघ्नद्वैदीपजाये। सदासाधुशूरेबड़ेभागपाये ॥ सदामित्रपोषीहनैंशत्रुछाती। सुबाहैबड़ोदूसरोशत्रुघाती २४ दोहा ॥ कुशकोदईकुशावतीनगरीकोशलदेश ॥ लवकोदईअवंतिकाउत्तरउत्तमबेश २५ पश्चिमपुष्करकोदईपुष्करवतिहैनाम ॥ तक्षशिलातक्षहिदईलईजीतिसंग्राम २६ अंगदकहँअंगदनगरदीन्होंपश्चिमओर ॥ चंद्रकेतुचंद्रावतीलीन्होंउत्तरजोर २७॥

१८ नीरजमोती बासर रातिकहे रातोदिन देतकहे देतभये १९ अयुत दशहजार सुवर्ण दशमाशे का स्वर्णमुद्रा सुवर्ण दशमासिक २० । २१ । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ ॥

मथुरादईसुबाहुकोपूरणपावनगाथ ॥ शत्रुघातकोनृपकरचोदेशहिकोरघुनाथ २८ तोटकछंद ॥ यहिभांतिसों

रक्षितभूमिभई । सबपुत्रभतीजनबांटिदई ॥ सबपुत्रमहा प्रभुबोलिलिये। बहुभांतिनकेउपदेशदिये २९ बोलियेन झूंठईढ़िमूढ़पैनकीजई । दीजियेजोबातहाथभूलिहूनलीजई । नेहुतोरियेनदेहुदुःखमंत्रिमित्रको । यत्रतत्रजाहुपै पत्याहुजैअमित्रको ३० नाराचछंद ॥ जुवानखेलियेकहू जुवानबेदरक्षिये। अमित्रभूमिमाहजैअभक्षभक्षभक्षिये ॥ करौनमंत्रमूढ़सोंनगूढ़मंत्रखोलिये। सुपुत्रहोहुजैहठीमठी नसोंनबोलिये३१वृथानपीड़ियेप्रजाहिपुत्रमानपारिये।असाधुसाधुबूझिकैयथापराधमारिये॥कुदेवदेवनारिकोनबालवित्तलीजिये॥बिरोधबिप्रबंशसोंसोस्वप्नहूनकीजिये३२

देशहिको अर्थ अयोध्याके समीप देशको २८ । २९ इति मित्रता जो वस्तुबात करिकै अथवा हाथकरिकै दीजिये ताको फेरिन लीजै ३० बेदको जुवान कहेबचन भूमिकहे स्थान ३१ पुत्रमानकहेपुत्रसम असाधुसदोष साधुनिर्दोष कुदेवब्राह्मण३२॥

भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ परद्रव्यकोतौविषप्रायलेखौ । परस्त्रीनसोंज्योंगुरुस्त्रीनदेखौ ॥ तजौकामक्रोधौमहामोह लोभौ । तजौगर्बकोसर्बदाचित्तक्षोभौ ३३ यशैसंग्रहौ निग्रहौयुद्धयोधा । करौसाधुसंसर्गजोबुद्धिबोधा ॥ हितू होइसोदेइजोधर्मशिक्षा । अधर्मीनकोदेहुजैवाकभिक्षा ३४ कृतघ्नीकुवादीपरस्त्रीबिहारी । करौबिप्रलोभीनधर्माधिकारी ॥ सदाद्रव्यसंकल्पकोरक्षिलीजै । द्विजातीन कोआपुहीदानदीजै ३५ सवैया ॥ तेरहमंडलमंडितभूतलभूपतिजोक्रमहीक्रमसाधै। कैसेहुँताकहँशत्रुनमित्रसुकेशवदासउदासनबाधै ॥ शत्रुसमीपपरेत्यहिमित्रसेतासु

परेजोउदासकैजोवै । विग्रहसंधिनदाननिसिंधुलौलैचहुँ ओरनतौसुखसोवै ३६ ॥

कामक्रोध मोह लोभ औगर्बकहे मद औक्षोभकहे मात्सर्य येजेछः हैं तिनको त्यागकरियो ३३ योधा कहेशत्रु अथवा जोलरिबेको उन्मुख होइ भीतादिको नमारियो इतिभावार्थः ॥ बुद्धिवोधाबुद्धि युक्त जो धर्मशिक्षादेइ सोई तुम्हारो हितूहोइ अर्थ ताहीको हितूकरियो अधर्मीनसों बोलियो ना इत्यर्थः॥ ३४ ये जेपांच हैं तिनको धर्माधिकारी न करियो संकल्पको द्रव्यजेदिये ग्रामादिहैं तिनकी रक्षाकरियो आपुही अर्थ आपनेही हाथसों ३५ आपने देशके समीपको जो राजाहै ताको शत्रुताके आगेको मित्रताके आगेको उदासीन जोवैदेखैजानै इति ॥ याहीभांति चारिहूँओर तीनतीन राजमण्डलसबद्वादशराजमण्डल जानो औ मध्यमें आपनो राजमण्डल जोरि सबतेरह मण्डल प्रसिद्धहैं तिनसोंयुक्त जो भूतलहै ताकोयाप्रकार क्रमहीक्रम साधै तौ ताको शत्रुमित्र उदासीनता बांधै कैसे साधै सोकहत हैं किशत्रु को बिग्रहकहे दण्डउपायसों औमित्रको साधिकहे सामउपाय सों उदासीनको दानउपाय सों युक्त करै इतिशेषः तो सिंधु पर्य्यन्त चारों ओर लैकै सुखसों सोवै॥विषयानन्तरोराजाशत्रुर्मित्रमतः परम् । उदासीनःपरतरइत्यमरः ३६ ॥

दोहा ॥ राजश्रीबशकैसेहूंहोहुनउरअवदात ॥ जैसे तैसेआपुबश ताकहँकीजैतात ३७ यहिबिधिशिषदै पुत्र सबबिदाकरदैराज ॥ राजतश्रीरघुनाथसँग शोभनबन्धु समाज ३८ रूपमालाछंद ॥ रामचंद्रचरित्रको जो सुनै सदासुखपाइ । ताहिपुत्रकलत्रसम्पतिदेतश्रीरघुराइ ॥ यज्ञदानअनेकतीरथन्हानकोफलहोइ । नारिकानरविप्र क्षत्रियवैश्यशूद्रजोकोय ३९ रूपकांताछंद ॥ अशेषपुण्य

पापकेकलापआपनेबहाइ । विदेहराजज्योंसदेहभक्तराम कोकहाइ ॥ लहैसुभुक्तिलोकलोकअंतमुक्तिहोहिताहि । कहैसुनैपढ़ैगुनैजोरामचन्द्रचंद्रिकाहि ४० ॥ इतिश्रीमत्सकललोक लोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकाया मिंद्रजिद्विरचितायांकुशलवसमागमोनामैकोनचत्वारिंशत्प्रकाशः ३९ ॥

३७ शोभनसुन्दर ३८ । ३९ कलापसमूह पुण्यपापकेनाशसोंमुक्ति होतिहै ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् इति प्रमाणात् अथवायाकेधारणसों प्राप्तजो यज्ञादिको अशेषसम्पूर्ण पुण्यहै तासों पापके कलाप बहाइकै ४० कवित्व ॥ कैधौंशुभसागरविराजमानजामेंपैठिपाइयत परमपदारथ कीरासिका । कण्ठमेंकरतशोभ धरतसभाके मध्य कैधौंसोहैमालउरबिमलउजासिका । सेवतहीजाकोलहै सुमनप्रबीणताई जानकीप्रसादकै धौंभारतीहुलासिका । ज्ञानकीप्रकासिकासुकुतिप्रदकासिका है सेइयेसुजनरामभगतिप्रकासिका १ दोहा ॥ रामभक्तिउरआनिकैरामभक्तजनहेतु ॥ रामचन्द्रिकासिंधुमें रच्योतिलककोसेतु २ जोसुपंथतजिसेतुकोचलहिऔरमगजोर ॥ रामचन्द्रिकासिंधुको लहहिं कौनबिधि ओर ३ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकप्रिसादानिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांएकोनचत्वारिंशत्प्रकाशः३९ ॥

कवित्त ॥ तूरयोशम्भुधनुभृगुनाथकोगरबचूरयो उरयोनिजराजपूरयोपितुकोपरनहै । बनबरवासकीन्हेनिशिचरनासकीन्हे रविसुत आसकीन्हे आवतशरनहै । कपिकरलंकजारयोपारयो सेतुसिंधुमहँमारयोदशशीशबंधुधारयोनृपधनहै।ख्यालसमकीन्हे जिनअद्भुतकामवन्दियत अभिरामनृपरामके चरनहै १ ॥

इतिश्रीरामचन्द्रिकासटीकसमाप्ता ॥

केनिंगकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपण्डित गंगाधरशास्त्रीने भी इसपुस्तकको अवलोकन कर सार्टीफिकटके तौरपर अपनी सम्मति प्रकटकी है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकोंको हितैषी है ॥

मिताक्षरा भाषाटीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का शिरोमणि है जिसमें आचारकाण्ड व्यवहारकाण्ड और प्रायश्चित्तकाण्ड नामक तीन काण्ड हैं जिन से गृहस्थादि चारों आश्रम और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के सम्पूर्ण कर्म धर्मादि और राज सम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में वादी प्रतिवादियोंके धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुकद्दमों की व्यवस्था वर्णित है ॥

योगवाशिष्ठ का विज्ञापन ॥

उस ईश्वर सच्चिदानन्दघन परमात्माका धन्यवादहै कि, जिसने संसारको उत्पन्न करके अपने प्रकाशके लिये वेदान्त आदि विद्या बनाईं जिनमें अनेक प्रकारके शास्त्र और मत प्रकट किये हैं और जो अनेक प्रकारकी वार्तायें संयुक्त हैं। कोई तो कर्मकी प्रधानता मानते हैं कोई ज्ञानको श्रेष्ठ जानते हैं और कोई कहते हैं कि, उपासनाही मुक्तिका हेतुहै परन्तु 'इस पुस्तकमें कर्म और ज्ञान दोनों की प्रधानता लीगई है। श्रीअगस्त्यजी महाराजने श्रीमुखसे वर्णन किया है कि, न केवल कर्मही मोक्षका कारण है और न केवल ज्ञानहीसे मोक्ष होताहै बल्कि दोनों मिलकर मोक्ष सिद्धि होतीहै क्योंकि अन्तःकरण निर्मल हुयेविना केवल ज्ञानसेही मुक्ति नहीं होती। कर्म करके प्रथम अन्तःकरण शुद्धहोताहै फिर ज्ञान उत्पन्न होता तब मुक्तिहोती—जैसे पक्षी आकाश में दोनों परों से उड़ताहै तैसेही मोक्ष साधनके लिये कर्म और ज्ञान दोनोंही आवश्यक हैं। इस पुस्तकमें विशेषकरके ज्ञानवार्ताविषयक परमात्मारूप दशरथकुमार आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्र और जगत्गुरु श्रीवशिष्ठजी का संवाद है। इसके धारण करने से मुक्ति होतीही है मोक्षमार्गके दिखानेको यह पुस्तक दीपकरूप है और ज्ञान और योगकी तो स्वरूपही है। इसके प्रतिवाक्य और प्रतिपद से बोधहोकर अन्तःकरण शुद्धहो जाताहै। कलियुगवासियोंके उद्धारके निमित्त आदिकवि विद्वच्छिरोमणि वाल्मीकिजी ने इसको संस्कृत पद्यमें निर्माण किया और इसके द्वारा संसारसागरके तरनेके निमित्त आत्मज्ञानरूप परमात्माकोलखाया यहबातें इस पुस्तकके पढ़ने पढ़ानेसे विदित होती हैं ॥

इस पुस्तकमें छः प्रकरण हैं १ वैराग्य, २ मुमुक्षु, ३ उत्पत्ति, ४ स्थिति, ५ उपशम और ६ निर्वाण। जिनमें नाम सदृशही विषयभी हैं ॥

मनुस्मृति सटीकका विज्ञापनपत्र ॥

सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का अग्रणी व सकल धर्मानुरागियों से पूजित यह मनुस्मृति ग्रन्थजिसकी मान्यता व मर्यादाका विस्तार अच्छेप्रकार संसार मे है—यद्यपि इस ग्रन्थके बहुतसे अनुवाद व्रज, यामिन्यादि भाषाओं में किये गये हैं परन्तु उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसमे प्रत्येक वार्त्ताओं का समाधान सबकोई सुगमतासे समझकर उसके तात्पर्य को जानलेवे इसकारण सम्पूर्ण धर्म कर्मानुरागियों व विद्यारसविलासियों के उपकारार्थ व अलीगढ़ की भाषा सम्वर्द्धिनी सभाकी सहायतार्थ सकलकर्म धर्मधुरीण मर्यादा त्वक्षलीन पुण्यपीन गुणिगणप्रवीन सर्वैश्वर्य भूषित दोषादूषित उत्तमवंशी उग्राशयदर्शी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्य व्ययकरके धर्मशास्त्राग्रगण्य सकलगुणिगणमण्डली मण्डन महामहोपाध्याय श्रीपण्डित मिहिरचन्दजी से अन्यधर्मशास्त्र ग्रन्थोंके तात्पर्य्योंसे संवलित सारोंसे मिश्रित और सकल टीकाओं के रहस्यों से युक्त उक्त ग्रन्थका पदच्छेद अन्वय तात्पर्य्य व भावार्थ से भूषित अच्छेप्रकार देशभाषा में विवरण कराय मन्वर्थभास्कर नाम तिलक मूल श्लोकोंसहित लक्ष्मणपुरस्थ स्वयन्त्रालय में मुद्रितकर प्रकाशित किया—संसार में यावत्कर्म धर्म चतुर्वर्ण अर्थात्ब्राह्मण क्षत्री,वैश्य, शूद्र व चतुराश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ वानप्रस्थ व संन्यासादि के हैं सविस्तार इसमें वर्णन कियेगये हैं—इसके सिवाय और भी सारे जगत् का वृत्त अर्थात् जगदुत्पत्ति स्वर्ग भूम्यादि सृष्टि वर्णन देवगणादिकों की सृष्टि धर्माधर्म विवेक मनुजीकी उत्पत्ति व यक्ष गन्धर्वादिकों की उत्पत्ति व मेघ पशु, पक्षी, कृमि, कीट, जरायुज, अण्डज,स्वेदज, उद्भिज वनस्पति, गुल्मलता वृक्षादिकों की उत्पत्ति, दिनरात्रि प्रमाण व युगोंका प्रमाण व्रतादिकोंके करने का नियम व फल, देशों का कथन मनुष्यों के जात कर्म व नामकरण व चूड़ाकरण यज्ञोपवीतादि की क्रिया कथन वेदके अध्ययन करने का ढंग व नियम व इन्द्रियों के संयमों के उपायों का कथन आचार्य्य उपाध्याय व गुरुआदि का वर्णन पितृकर्म में श्राद्धादि करने का नियमादि निषेध व प्रायश्चित्तादि वार्त्तायें सब इसमें उत्तम रीति से सविस्तार वर्णन कीगईहैं—आशा है कि जो विद्वद्वर धर्मशास्त्र व मर्यादाप्रिय महाशय इसको अवलोकन करेंगे वे परमानन्दितहो कृपा कटाक्ष से ग्रन्थकर्त्ता व यन्त्रालयाध्यक्ष को आशीर्वाद देंगे और कदाचित् ऐसे बृहद्ग्रन्थके मुद्रण करनेमें कोईअशुद्धि रह गईहो तो उसका अपराध क्षमाकरेंगे ॥

द० मैनेजर अवध अख़बार / लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज